एगो किताब मतारी-बाप ख़ातिर

अन्तोन मकारेंको

अनुवादः डॉ. रंजन विकास

लालन–पालन के बुनियाद

सेहत आ पढ़ाई–लिखाई (शिक्षा) दूगो अइसन बुनियादी जरूरत ह जवना के पूरा करे के जिम्मेदारी घर–परिवार में लालन–पालन से शुरू होके राज्य– समाज के वैधानिक बेवस्था ले पसरल बा। सभ्यता के विकास–क्रम में परिवार बनल आ ओकरा सरूप में तरे–तरे के उलटफेर होत रहल बा, आगहूँ होई, बाकिर मतारी–बाप के जैविक आ नैतिक लगाव के भूमिका साइत कबो अलोप ना होई। सभ्यता–संकट के मौजूदा दौर में बियाह संस्था भा मरद–मेहरारू के संबंध में आइल दरार के चलते भले ऊ अबहीं ठोस आ व्यापक ना होखे पावे। जनम से लेके जिम्मेदार नागरिक बने के लमहर डगर में एह भरोसा के पुख्ता करत जाये के सिवा, कवनो शार्टकट फिलहाल लउकत नइखे। राज्य–संचालित बेवस्था के हाल त एकदमे बेहाल बा। ओकरा देख–रेख में 'नागरिक' जवना मुकाम ले चहुँपल बा ऊ आजो सभ्य समाज के हासिल इंसानियत के कसौटी पर खरा नइखे उतरत। आज के ग्लोबल कारपोरेटी दौर में 'इंसान–नागरिक' के बीच के ई फाँक भा दोहमच सबसे बड़ समस्या बा।

पिछली सदी के तेज–रफ़्तार आर्थिक–राजनीतिक उठापटक में जवन सोवियत समाजवादी मॉडल सामने आइल ऊ तमाम विवादन के बावजूद बेवस्था का लेहाज से बेहतरी के एगो सुंदर विकल्प रहे। जे बेमौत मारल गइल। चीन अगिला बड़हन किला रहे। ऊहो सांस्कृतिक क्रांति में सेंधमारी के बाद देखते–देखत ढह गइल। दोसरा तरफ पूँजीवादी खेमा में कल्याणकारी राज्य वाला प्रयोग के हवा होत देर ना लागल। लोककल्याण के मद में मुनाफ़ा से निश्चित कटौती के जरिये चीन अपना समाजवादी "इकोनॉमिक मिरैकिल" के चाहे जतना ढोल पीटे, असली बात त ई बा जे ऊ अपना विस्तारवादी महत्वाकांक्षा में, दशकन के अपना हासिल पर पानी फेरत, पूँजीवादी होड़ में बहुत आगे निकल चुकल बा। दरअसल शीतयुद्ध के लंबा चलल रस्साकशी के बाद नवउदारवाद के जवन कारपोरेटी मॉडल सामने आइल, ऊ बड़ी तेजी से इतिहास, परंपरा, स्मृति आ लोकतांत्रिक संस्थन–मूल्यन के ध्वस्त करत चल गइल। विकास आ बेरोकटोक व्यक्तिगत आजादी के हवस आखिरकार बाजार के हवाले हो गइल। तकनीकी क्रांति से जीवन के

(शेष आखिरी फ्लैप पर जारी)

www.bhojpurisahityangan.com

पहिलका संस्करण

एगो किताब मतारी–बाप ख़ातिर

अन्तोन मकारेंको

अनुवाद : डॉ. रंजन विकास

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

पहिलका संस्करण

एगो किताब मतारी-बाप ख़ातिर

अन्तोन मकारेंको

अनुवाद : डॉ. रंजन विकास

भोजपुरी साहित्यांगन चैरिटेबल ट्रस्ट, पटना
bhojpurisahityangan.ct2023@gmail.com
+91 8340535561

www.bhojpurisahityangan.com

एगो किताब मतारी-बाप ख़ातिर

लेखक	:	अन्तोन मकारेंको
भोजपुरी अनुवाद	:	डॉ. रंजन विकास
ISBN	:	978-81-973622-8-6
पेपर बैक	:	Rs. 399.00
पहिलका संस्करण	:	2025
आवरण शिल्पी	:	सुश्री अम्बिका सिंह
लेखकीय सम्पर्क	:	204, विश्व शाकुन्तल अपार्टमेंट मन्दिर मार्ग, शिवपुरी पच्छिमी, पटना–800023 ई–मेल : dr.ranjanvikas@gmail.com मोबाइल : 91 9939592241
प्रकाशक	:	भोजपुरी साहित्यांगन चैरिटेबल ट्रस्ट 203, विश्व शाकुन्तल अपार्टमेंट मन्दिर मार्ग, शिवपुरी पच्छिमी, पटना–800023 ई–मेल : bhojpurisahityangan.ct2023@gmail.com वेबसाइट : www.bhojpurisahityangan.com मोबाइल : 91 8340535561

"EGO KITAB MATAARI - BAAP KHATIR"

Written by ***Anton Makarenko***

Translated in Bhojpuri by ***Dr. Ranjan Vikas***

Rs. 399-00 (Paper Back)

www.bhojpurisahityangan.com

प्रकाशकीय

कवनो भाषा–साहित्य के जेतना विधा होला, ऊ सगरी भोजपुरी साहित्य में भरल–पुरल बा। बाकिर समस्या ई बा जे भोजपुरी किताबन के उपलब्धता हरमेसा एगो समस्या बनल रहल। जादेतर किताब हेने–होने छितराइल बा आ कुछ के अस्तित्व के कवनो थाहे नइखे लागत। एह से ऊ किताब मिलल मोहाल बा। कवनो अइसन ठेहा नइखे, जहँवा ओह किताबन के पावल जा सके। भोजपुरी साहित्य प्रेमी लोग के एह समस्या के धेयान राखत भोजपुरी साहित्य के मौन आ सुधी साधक बाबूजी स्व. शारदानन्द प्रसाद के इयाद में 2016 के आखिरी में 'भोजपुरी साहित्यांगन' नाँव के एगो ई–लाईब्रेरी के स्थापना कइल गइल। एकर असली मकसद बा– भोजपुरी किताबन आ पत्र–पत्रिकन के धरोहर का रूप में संजोवल आ ओकरा के आम पाठक ले सुबहित तरह से पहुँचावल।

'भोजपुरी साहित्यांगन' के वेबसाइट www.bhojpurisahityangan.com पर भोजपुरी भाषा में अनुवाद, आलेख, आलोचना, उपन्यास, एकांकी, कथा, कविता, कहानी, कहावत, खण्डकाव्य, ग़ज़ल, गीत, चलचित्र, जीवनी, दोहा, नवगीत, नाटक, निबंध, निर्गुण, प्रबंधकाव्य, बाल–साहित्य, महाकाव्य, मुक्तक, मुहाबरा, रूपक, लेख, लोकगीत, लोकरागिनी, लोकोक्ति, विवाह–गीत, व्यक्तित्व–कृतित्व, व्याकरण, शब्दकोश, शोध–ग्रन्थ/ प्रबंध–ग्रन्थ, संकलन, संस्कार–गीत, संस्मरण, साक्षात्कार, सामान्य–ज्ञान, स्मारिका, हाइकु आ आउरो विधा के मोटामोटी बारह सौ किताब फ्लिप बुक का रूप में अपलोड बा, जवना के विश्व के कवनो आदमी फ़ोकट में देख–पढ़ सकत बा। ओकर पीडीफ डाउनलोड करे के सुबहितो बा।

एकरा अलावे भोजपुरी पत्र–पत्रिकन में अँजोर, अंगना, आखर, खोंईछा, तमकुही समाचार, निर्भीक सन्देश, परास, पाती, बटोहिया, भोजपत्र, भोजपुरी अकादमी पत्रिका, भोजपुरी कथा–कहानी, भोजपुरी जंक्शन, भोजपुरी दर्शन, भोजपुरी भारती, भोजपुरी माटी, भोजपुरी वार्ता, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, भोजपुरी साहित्य सरिता, भोजपुरी, लकीर, लुकार, विभोर, सँझवत आ सिरजन के कुछ अंक 'भोजपुरी साहित्यांगन' पर देखल–पढ़ल जा सकत बा।

प्रकाशन के दिसाईं 'भोजपुरी साहित्यांगन' जर जमा चार गो भोजपुरी किताब प्रकाशित कइले रहे, जवना में मजाहिया आ तंज के अंतर्राष्ट्रीय स्तर के मशहूर

www.bhojpurisahityangan.com

शायर तंग इनायतपुरी के भोजपुरी ग़ज़ल–संग्रह **'सियासत में ग़ज़ब बा नाम राउर'** (2020), **'अध्यक्षीय भाषण'** अ.भा.भो.सा. सम्मेलन (संकलन, 2021) – डॉ. रंजन विकास, कन्हैया सिंह 'सदय' के भोजपुरी कहानी–संग्रह **'समीक्षा'** (2022) आ बालेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव के भोजपुरी कविता–संग्रह **'मति हेराइल रहे'** (2022) समिलात बा। अब आगे से 'भोजपुरी साहित्यांगन' कवनो तरह के प्रकाशन ना करी।

2023 में 'भोजपुरी साहित्यांगन चैरिटेबल ट्रस्ट' के निबंधन हो गइल बा। अब एही ट्रस्ट के मार्फ़त किताब प्रकाशन के काम होखी। हमरा एह बात के ख़ुशी बा जे 'भोजपुरी साहित्यांगन चैरिटेबल ट्रस्ट' आपन प्रकाशन के शुरुआत डॉ. रंजन विकास के दूगो किताब **'फेर ना भेंटाई ऊ पचरुखिया'** (आत्म–संस्मरण : जिनिगी परत–दर–परत) क दोसरका संस्करण आ **'एगो किताब मतारी-बाप खातिर'** (भोजपुरी अनुवाद) से कर रहल बा। उम्मीद बा जे 'भोजपुरी साहित्यांगन आ 'भोजपुरी साहित्यांगन चैरिटेबल ट्रस्ट' के समरथ बनावे में राउर सहजोग मिलत रही।

रंजन प्रकाश

संचालक, 'भोजपुरी साहित्यांगन'

अध्यक्ष, 'भोजपुरी साहित्यांगन चैरिटेबल ट्रस्ट', पटना

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

अनुवादक के बात

दोसरका राउण्ड के करोना बहुते खतरनाक रहे आ ओकर कहर लम्बा समय ले चलल। कतना लोग देखते–देखत गुजर गइल। पूरा माहौल में जइसे खौफ़ आ आतंक के लहर होखे। कवनो परिवार साइते ओह असर से बचल होई। हमार आत्मसंस्मरण के किताब 'फेर ना भेंटाई ऊ पचरुखिया' ओही दौरान लिखाइल आ छप के आइल रहे। केहू से मिले–जुले भा चरचा–परिचर्चा के सवाले ना रहे। डाक से भा ऑनलाइन जतना सँपरल, तमाम लोग ले किताब चहुँपल। प्रतिक्रिया आवे लागल त हुलास बढ़ल आ साथहीं किताब में कमियो के तरफ धेयान गइल। मन पक्का होखे लागल जे ओह किताब के नया संस्करण निकालल जाव।

मनफेरवट ख़ातिर आ सलाह–मशविरा का गरज से हम इलाहाबाद सुमन भइया माने हिमांशु रंजन किहाँ गइनीं। हफ्ता भर के सोहबत में भोजपुरी भाषा आ साहित्य के ले के खूब चरचा भइल। हमार हुलास आ लगन के त भइया तारीफ़ कइले बाकिर इहो जोर दे के कहले जे आगहूँ के कुछ सोच। माने कवनो नया किताब पर काम कर। ऊ रूसी लेखक मकारेंको के मशहूर किताब "A Book for Parents" के पढ़े के आ हो सके त ओकर अनुवाद भोजपुरी में करे के सलाह देहले। उनकर कहनाम रहे जे लइकन के लालन–पालन आ शिक्षा–दीक्षा के जवन मॉडल तहार पचरुखिया वाला किताब में उभर के आइल बा, ओकर महातिम के आउर गहिराई से समझे में मकारेंको के किताब मददगार होई।

लवट के पटना अइनीं त ओह किताब के ओटियावे के धुन सवार हो गइल। लाइब्रेरी के झमेला में पड़ला ले नीमन रहे जे किताब कीनिए लियाव। नेट पर सर्च कइनीं त कईगो हाल के उल्टा–सीधा प्रकाशन लउकल। ओही में सभसे आधिकारिक प्रकाशन "A Book for Parents" पर नज़र परल। एकरा के 'रोबर्ट डग्लिस' रूसी भाषा से अँगरेजी में अनुवाद कइले रहले आ फॉरेन लैंग्वेजेज पब्लिशिंग हाउस, मास्को से 1954 में ऊ छपल रहे। ओकर पीडीएफ कॉपी डाउनलोड कइनीं। बस ओकरे के प्रामाणिक मान के अनुवाद करे के इरादा बनवनीं। जइसे–जइसे पढ़त गइनीं, हमार इरादा पक्का होत गइल। हफ्ता–दस दिन बाद जे अनुवाद के काम शुरू भइल त बरीस भर ले दोसर कवनो काम का तरफ मन ना भटकल। आपन आत्मसंस्मरण के नया संस्करण वाला काम बीच में रोक के ई

www.bhojpurisahityangan.com

अनुवाद पूरो कइनीं।

मकारेंको के जीवन आ शिक्षा के क्षेत्र में उनकर पूरा काम पर एने–ओने से सामग्री जुटावे के फेर में रहनीं तले एगो बड़ी दिलचस्प जानकारी मिलल। युनिवर्सिटी के दौर के हमार एगो पढ़ाकू आ पुस्तक–संग्रह के सवखीन दोस्त बाड़े रमेन्दर। उनका के हमनी के किताबी कीड़ा कही सन। ऊ कहीं जम के कवनो नोकरी ना कइले, बाकिर उनकर ऊ पागलपन आजो बरकरार बा। उनका से मकारेंको के चरचा कइनीं त बतवले जे तीन–चार बरीस पहिले दिल्ली में फुटपाथ से पुरान किताबन का ढेर में से छाँट के ऊ "A Book for Parents" के हिन्दी अनुवाद ले आइल रहले। 'एक पुस्तक माता–पिता के लिए' (अनुवादक– जगदीश चन्द्र पाण्डेय) सोवियत प्रकाशन रहे, बाकिर हम जब नेट पर खोजत रहनीं त एह हिन्दी अनुवाद के कवनो जिक्र ना मिलल। खैर! दोस्त अतना उपकार कइले जे ओह किताब में शामिल व कुमारिन के मकारेंको पर एगो लमहर आलेख के फोटोकॉपी भेज देहले। ओह आलेख में अतना महत्वपूर्ण जानकारी बा जे पाठक ले चहुँपावल हमरो ज़रूरी बुझाइल। ओह आलेख के भोजपुरी अनुवाद कर के हम अपना किताब के परिशिष्ट का रूप में साभार शामिल कर रहल बानीं।

हम सुमन भइया के आभारी बानीं जे मकारेंको के ओह मशहूर किताब के भोजपुरी अनुवाद करे के सलाह देहले। किताबी कीड़ा रमेन्दरो के धन्यवाद। अनुवाद के काम पूरा भइल त ओह किताब के नाँव धराइल ''एगो किताब मतारी–बाप ख़ातिर''। एकर कवर पेज के आवरण चित्र बनवावे में हमार ममेरा भाई पाण्डेय राजीवनयन के बड़हन सहजोग रहल। आवरण शिल्पी बाड़ी सुश्री अम्बिका सिंह। एह दुनू लोग के प्रति हम आभार जतावत बानीं। हमार किताब के प्रकाशन ख़ातिर 'भोजपुरी साहित्यांगन चैरिटेबल ट्रस्ट', पटना आ 'भोजपुरी साहित्यांगन' के संचालक सह संस्थापक हमार बड़ भाई रंजन प्रकाश के सादर आभार बा।

-- डॉ. रंजन विकास

***

www.bhojpurisahityangan.com

अनुक्रम

- प्रकाशकीय 5
- अनुवादक के बात 7

- पहिला अध्याय 13
- दूसरा अध्याय 28
- तीसरा अध्याय 42
- चउथा अध्याय 71
- पाँचवाँ अध्याय 89
- छठा अध्याय 137
- सातवाँ अध्याय 202
- आठवाँ अध्याय 239
- नौवाँ अध्याय 278

- **परिशिष्ट**
  मकारेंको आ उनकर "एगो किताब मतारी बाप खातिर"
  पर व. कुमारिन के आलेख 284

***

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

'एगो किताब मतारी–बाप खातिर'
हमार मेहरारू गलीना स्तखीयेल्ना मकारेंको
के सहजोग से लिखाइल रहे।

– अन्तोन मकारेंको

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

पहिला अध्याय

हो सकत बा जे एह विषय पर लिखल हमार अतिसाहसिकता होखे?

आधुनिक मतारी–बाप अपना लइकन के लालन–पालन करत घरी हमनी के देश आ दुनिया के भावी इतिहास के गढ़त बा। का हम अइसन व्यापक विषय के बोझा उठा सकत बानीं? का हमरा एकर अधिकार भा साहस बा जे हम एकर मुख्य समस्या से निबट सकीं?

सोभागवश से हमरा से अइसन साहसिक माँग नइखे कइल गइल। हमनी के क्रान्ति के आपन महान किताब बा, जवन जादे संख्या में बा आ एगो महान काम बा। ई सभ नवही मानव के नवनिर्मित शिक्षा–विज्ञान बा। हमनी के हर विचार, हर गति आ जिनिगी के हरेक साँस विश्व के नया नागरिक के महिमा से फरत–फुलात बा। का एकरा के महसूस ना कइल सम्भव बा, का ई ना जानल सम्भव बा जे हमनी के अपना लइकन के कवना तरे से शिक्षित करे के चाहीं।

बाकिर हमनी के जिनिगी के कुछ बेसवाद रोजमर्रा के पक्ष बा, जवन छोट–छोट बातन के एगो जटिल समुच्चय के जनम देत बा। कबो–कबो त एह छोट–छोट बातन में आदमी अझुरा के रह जात बा। कबहूँ हमनी के मतारी–बाप एमे इहो बिसर जात बा जे ओह लोग के लगहीं क्रान्ति के महान दर्शन बा। तबो साँच खोजिये लेत बा। मतारी–बाप के अपना माहौल के देखे–बूझे, सोचे–विचारे आ आपन आँख खोल के राखे में सहजोग कइल– एह किताब के साधारण मकसद बा।

हमनी के युवा वर्ग एगो अइसन लउके वाला विश्व महत्व के तत्त्व बा, जेकर केहू से तुलना नइखे हो सकत। एगो अइसन तत्व बा, जवना के महानता आ महातिम के समझे में हम शायद समरथ नइखीं। ओकरा के के जनम देहल, के सिखावल–पढावल आ के ओकरा के क्रान्ति के ध्येय के दायित्व सउँपल? ई दस लाख से बेसिए माहिर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, कम्बाइन–चालाक आ कमाण्डर कहँवा से आइल? का ई मुमकिन हो सकत बा जे हमनी के पुरनिया लोग एह युवा वर्ग के रचना कइले होखे? काहे हमनी के ई ना लउकल? बाकिर हमनी के लगे समयो त ना रहे। हमनी के निर्माण कइनीं, लड़ाई लड़नीं आ फेर निर्माण कइनीं आ हम अबहुँओ निर्माण कर रहल बानीं.....।

www.bhojpurisahityangan.com

बाकिर देखीं! क्रामातोर्स्क के विशाल असाधारण कार्यशाला में, स्तालिनग्राद ट्रैक्टर संयंत्र के विराट पसारा में, मकेयेव्का आ गोर्लोव्का के खदान में, हवाई जहाज में, टैंक में, पनडुब्बियन में, प्रयोगशाला में, सूक्ष्मदर्शी यंत्र पर, ध्रुव प्रदेश के वीरान में, हर सम्भव तरह के संचालक आ नियंत्रक यंत्र पर, ऊँच क्रेन पर, प्रवेश आ निकास के राहे– हर जगह, हर कोना में दसो लाख नवही युवा आ दिलचस्प लोग डटल बा।

ऊ साधारण लोग बा। ओमे कुछ लोग बतकही में परिष्कृत नइखे, ओह लोग के हास–परिहास कबो–कबो अशिष्ट होत बा... एकरा से केहू के इनकार नइखे, ई साँच बा।

बाकिर ऊ लोग जिनिगी के स्वामी बा। शान्त बा। ओह लोग में आत्म–बिसवास कूट–कूट के भरल बा। ऊ लोग बिना भावुकता के, बगैर दिखावा के, बगैर शेखी बघरले, बिना ओरहन देहले आ बिल्कुल अनपेक्षित रफ्तार से बेहिचक आपन काम कर रहल बा।

आ एह ऐतिहासिक चमत्कार के पाछे ऊ पारिवारिक महाबिपत कइसन बेहूदा लागत बा, जे बाप के भाव आ मतारी के अरमान के मटियामेट त कइलहीं बा, साथे–साथे सोवियत संघ के भावी मरद–मेहरारुअन के चरित्र के नाश करत बा।

हमनी के देश में लइकाईं के कवनो महाबिपत, विफलता आ लालन–पालन में तनिको दोष ना होखे के चाहीं। तबो कबो–कबो ई महाबिपत आइये जात बा। कबो–कबो ई एगो खुलल झगड़ा होला आ जादेतर ई झगड़ा गुप्त रहत बा : मतारी–बाप ओकरा के देखत नइखे, ओकरा के समझ नइखे पावत, ऊ लोग ओकर पहिले से कवनो लक्षणों नइखे देख पावत।

एगो मतारी से मिलल चिट्ठी में हम पढ़त बानीं :

"हमार इकलौता बेटा बा, बाकिर ऊ नाहिंये जनमल रहित त बेहतर रहे.... ई भयानक अवर्णनीय दुर्भाग हमरा के उमिर से पहिलहीं बूढ़ बना देले बा। एगो युवक, जे सर्वोत्तम लोगन में से हो सकत रहे, के नीचे आउर नीचे पतित होत देखल दुखदे भर नइखे, बलुक पीड़ाप्रद आ समझ में ना आवे वाला बातो बा। आखिर, आज के युग में युवा के मतलब बा खुशी आ हुलास!

"ऊ हमरा के दिन–प–दिन मुआ रहल बा। अपना हर बेवहार आ करनी से लगातारे मुआवत जा रहल बा।"

बाप के सूरत–सकल बेसी सुघर नइखे : उनकर चेहरा चिपइठ, एक ओर झुकल आ दाढ़ी बढ़ल बा। ऊ फूहड़ बाड़े। उनकर आस्तीन में मुर्गी के पाँख भा ओइसने कवनो चीज लागल बा। एगो पाँख अँगुरियो में चिपकल बा। अँगुरी हमरा दवात के ऊपर हाव–भाव प्रकट करत हिलत–डोलत बा आ ओकरा साथे ऊ पाँखो ओसहीं करत बा।

"हम एगो कामगार बानीं..... बुझाइल? हम काम करत बानीं..... आ हम एकरा के पढ़ावत बानीं..... पूछीं एकरा से जे ई बात साँच ह कि ना। अब बताव जे तोरा

www.bhojpurisahityangan.com

का कहे के बा : हम तोरा के पढ़वनीं कि ना?"

देवार के लगे एगो कुरसी पर तेरह बरीस के, गाढ़ करिया आँख वाला एगो सुघर आ गम्भीर लइका बइठल बा। ऊ पलक झपकवले बिना सोझे अपना बाप के आँख में देखत बा। लइका के चेहरा से हम ओकर कवनो मनोभाव के नइखीं पढ़ पावत। ओकरा में शान्त आ कोरा एकाग्रता के अलावे आउर कवनो भाव नइखे झलकत।

बाप आपन मुट्ठी हिलावत बाड़े। उनकर विकृत चेहरा लाल हो जात बा।

"एगो आउर खाली हुँह? हमरा के लूट लेहलस आ..... जे हम पहिरले बानीं, ओकरा अलावे कुछुओ बाकी नइखे छोड़ले।"

उनकर घूँसा देवार के तरफ परत बा। लइका आँख मिचकावत बा आ फेर अपना बाप के तरफ पहिलहीं जस गम्भीर भाव से देखे लागत बा।

बाप जइसे थाक के कुरसी पर पीठ ओलरा लेत बाड़े। अपना अँगुरी से मेज पर ठकठकावत बाड़े। उनकर मति साफे हेरा गइल बा। बुझाते नइखे जे ऊ का करस। भकुआइले चउतरफा निहारत बाड़े। एगो पुरान घाव से उनकर विकृत गाल के ऊपरी पेशी तेजी से फड़कत बा।

ऊ आपन बड़का मुड़ी झुका लेत बाड़े आ हताश हो के आपन बाँह फइला लेत बाड़े।

"ओकरा के कतहूँ ले जाईं..... हम, हम विफल हो गइल बानीं। ओकरा के ले जाईं....."।

ऊ एह बात के थाकल–हारल आवाज़ में गिड़गिड़ात कहत बाड़े, बाकिर अचके बिखिया के फेर से आपन घूँसा देखावे लागत बाड़े।

"बाकिर अइसन कइसे हो सकत बा? हम एगो छापामार रहनीं। हमरा ओर देखीं, ई एगो तलवार के चोट ह..... हमार माथा फाट गइल रहे! उनका खातिर, रउआ खातिर!"

ऊ अपना बेटा के ओर मुड़त बाड़े आ अपना हाथ के पाकेट में डाल लेत बाड़े। फेर ऊ बेहद करुण स्वर में, अइसन करुण स्वर में बोलत बाड़े, जइसे कवनो मुअत आदमी के मुँह से निकलत बा :

"मीशा! हमार इकलौता बेटा, तें अइसे कइले कइसे.....?"

मीशा के आँख पहिलहीं जस बिना कवनो भाव के बा। फेर अचके ओकर होठ हिले लागत बा। पल भर खातिर एगो क्षणिक विचार आपन झलक देखावत बा आ फेर गायब हो जात बा।

हम समझ गइनीं जे ई दूनों जन एक दोसरा के शत्रु बा। लमहर समय ले, शायद जिनिगी भर शत्रु बनले रही। कवनो छोट–मोट बात पर ओह लोग के चरित्र के टकराव भइल बा। मन के कवनो कोना में मूल वृत्ति जाग गइल बा। संयम के बान्ह टूट गइल बा। चरित्र के साथे लापरवाही के सामान्य नतीजा– एगो अनपेक्षित विस्फोट होखत बा। एमे सन्देह नइखे जे बाप मारपीट से काम लेत बाड़े आ उनकर

www.bhojpurisahityangan.com

बेटा, मुक्त आ गर्वीला, अपना बाप के खिलाफ बगावत क देले बा।

हम मीशा के ओर कठोर निगाह से देखनीं आ सहज भाव से कहनीं :

"तें आजे 'द्जेर्जीन्स्की कम्यून' में जइबे।"

लइका कुरसी पर बइठल–बइठल सोझ हो गइल। ओकरा आँख से हुलास के असली लपट भड़क गइल। सउँसे कमरा में पहिले से जादे अँजोर लागे लागल। मीशा कुछुओ ना कहलस। ऊ अपना कुरसी पर पाछे के तरफ पसर गइल। फेर मुसुकी छोड़त सोझे अपना बाप के थाकल–हारल आ दुखी नजर के ओर ताके लागल। तबे हम ओकरा मुसुकी में असहनीय नफरत के भाव झलकत देखनीं।

बाप दुखी हो के माथा झुका लेहले।

जब मीशा इन्स्पेक्टर के साथे चल गइल त बाप हमरा से अइसे पूछले जइसे कवनो महान आदमी से पूछत होखस :

"हम आपन बेटा काहे गँवा देहनीं?"

हम एकर कवनो जवाब ना देहनीं। ऊ फेर पूछले :

"का ओजुगिया सब ठीक–ठाक होखी?"

किताब आ छत ले गँजाइल किताबे–किताब। सुघर जिल्द में बन्हाइल नामी लेखकन के किताब। लिखे के बड़का मेज– ओह पर किताबन के ढेर, विशालकाय मसिधानी, नरसिंही मूरत, ऋक्षाकृति आ दीपदान।

एह अध्ययन कक्ष में बड़ी चहल–पहल रहत बा। किताब अपना खान्हा में परले नइखे रहत, लोग के हाथ में फड़फड़ात बा। अखबार सोफा के गद्दा पर खाली धइले नइखे रहत, बलुक खोलल आ पढ़ल जात बा। एजुगिया घटनन पर गहिर जानकारी से भरल चरचा होत बा आ ऊ सक्रिय होत जात बा। तम्बाकू के धुँआ के बीच गरदन के नस, सजल–सँवरल केश, हजामत बनल ठुड्डी आ मोंछ, आ कहरुबी सिगरेट–होल्डर के झलक लउकत बा। चश्मा के कोर का पाछे चातुर्य के चमक से भरल आँख झिलमिलात बा।

लमहर–चाकर भोजन–कक्ष में पुरान फैशन के चुल्हा पर बनल चाय आ तरे–तरे के पकवान परोसात बा। ई खाली हीक भर पीये वाला चाये भर नइखे, बलुक एगो ख़ास तरे के प्रतीकात्मक चाय बा। ऊ चीनी मिट्टी के बरतन, लेस वाला नैपकिन आ सादा बिस्कुट के प्रदर्शनी बा। तनी अल्हड़, मासूम आ सुन्दर सोनहुला केश वाली घर के मलिकाइन अपना सजल सँवरल नोंह वाला हाथ से चाय के बेवस्था करत बाड़ी। चाय पीयत बेर कलाकार आ बैले नर्तकी के नाँव, शरारत भरल लघुकथा आ जिनिगी के हलुक–फुलुक घटनन के किस्सा–कहानी के जोरदार चरचा चलत रहत बा। चाय के साथे नाश्ता के कवनो चीज पेश कइला के बाद मेजबान लोग डिकैण्टर के दू–तीन फेरा लगावत बा। ओकरा बाद सगरी मेहमान अध्ययन–कक्ष में धमक जात बा। फेर सिगरेट पीये के सिलसिला शुरू होत बा। सोफा पर अखबार पसर जात बा। गद्दा पर लुढ़क–लुढ़क के मेहमान लोग कवनो नया किस्सा सुन के हँसत–हँसत बेदम हो जात बा।

www.bhojpurisahityangan.com

का एकरा में कवनो खराबी बा? के जाने? बाकिर एह लोग का बीच आँख फरले दूबर–पातर आ फुर्तिला एगो बारह बरीस के वोलोद्या हरमेसा हेने–होने छिछियात फिरत बा। जब किस्सा–कहानी के अनवरत प्रवाह में कवनो वजह से रुकावट आवत बा त बाप वोलोद्या के "पेश करत बाड़े", बाकिर ओकर एगो छोटहन अंश में, रंगमंचीय भाषा में एकरा के अंकान्तराल कहल जाला।

बाप वोलोद्या के अपना ठेहुना के तरफ घींच के ओकर माथा सहरावत कहत बाड़े :

"वोलोद्या, तें अबहीं सुतली काहे ना?"

वोलोद्या जवाब देत बा :

"रउआ काहे नइखीं सूतल?"

मेहमान लोग खुश हो जात बा। वोलोद्या बाप के गोदी में आपन मुड़ी गोत लेत बा। फेर सकुचाइले मुसुकी छोड़त बा। मेहमान लोग के ओकर ई ढंग आउर जादे नीमन लागत बा।

बाप उचित जगह पर वोलोद्या के पीठ थपथपावत पूछत बाड़े :

"तें 'हैमलेट' पूरा पढ़ लेहले कि ना?"

वोलोद्या हामी भरत बा।

"तोरा पसन्द परल?"

अबकी बेर वोलोद्या के कवनो परेशानी ना भइल। काहेकि अब लाज खातिर कवनो जगह ना बाँचल रहे।

"ऊँह, कवनो ख़ास ना, अगर ऊ ओकरा के..... का नाँव..... ओफेलिया से प्यार करत बा त शादी काहे नइखी क लेत? तहनीं के खाली वक्त जाया करत बाड़ सन आ तें खाली पढ़ते–पढ़त रह जात बाड़े।"

मेहमान लोग फेर एक बेर ठहाका लगावत बा। सोफा के एगो कगरी से कवनो खुशमिजाज आवाज़ तड़का लगावत कहलस : 'ऊ कमबख्त, गुजारा खरची देवे के ना चाहत होखी!'

अबकी बेर वोलोद्या हँसत बा। बापो हँसत बाड़े। तले ले एगो जरूरी चुटकुला मंच ले पहुँच जात बा : "रउआ जानत बानीं, जब पादरी से गुजारा खरची देवे के कहल गइल त ऊ का कहलस?"

"अंकान्तराल" खतम हो गइल। वोलोद्या के कार्यक्रम के हिस्सा के रूप में कबो–कबो पेश कइल जात बा। बाप जानत बाड़े जे वोलोद्या के छोटहने रोल मुनासिब बा। बाकिर वोलोद्या के अइसन छोटहन रोल पसन्द नइखे। ऊ ओह भीड़ में हेने–होने भागत रहत बा। एगो मेहमान से दोसरा के लगे छिछियात रहत बा। अजनबी लोग से लासा नियर चिपकल रहत बा। ऊ अपना के देखावे, मेहमान के हँसावे आ मतारी–बाप के हुलसित राखे के मोका खोजत रहत बा।

चाय पीयत घरी एगो किस्सा का बीचे वोलोद्या के तेज आवाज़ गूँजत बा :

"ऊ ओकर रखैल ह, ह नूँ?"

www.bhojpurisahityangan.com

मतारी आपन हाथ ऊपर झटकत जोर से बोलत बाड़ी :

"सुननीं रउआ? वोलोद्या तें का कह रहल बाड़े?"

बाकिर मतारी के चेहरा पर बनावटी लाज के साथे अनचाहल हुलास आ गर्व के भाव झलकत बा। ऊ एह बालकोचित अति स्वतंत्रता के प्रतिभा के प्रमाण मानत बाड़ी। कौतुहल के रुचिगर संग्रह के सूची में वोलोद्या के प्रतिभा सँकारल बा– जापानी प्याला, नींबू काटे के छोटहन छूरी, नैपकिन आ..... अइसन अनोखा बेटा।

अपना नीच आ मूरखता भरल मिथ्या सम्मान का बीच ई मतारी–बाप ना त अपना बेटा के चरित्र के गहराई से समझ पावत बा आ ना अपना भावी पारिवारिक संकट के देखे में समरथ बा। वोलोद्या के निगाह में बड़ी जटिलता बा। ऊ अपना आँख के निष्कपट लइकन जस बनावे के कोशिश करत बा– माने अपना मतारी–बाप खातिर, "खास फरमाइश पर", बाकिर ओही आँख में ढीठपन आ आदतन झूठ बोले के मतलब ओकरा अपने खातिर–चिंगारी चमकत बा।

ऊ कवना तरे के नागरिक बनी?

प्रिय मतारी–बाप!

रउआ कबो–कबो ई बिसर जात बानीं जे रउरा परिवार में एगो अइसन आदमी पल–बढ़ रहल बा, जेकर दायित्व रउरे ऊपर बा।

एह विचार से अपना के सांत्वना मत दीं जे ई नैतिक दायित्व से जादे कुछुओ नइखे।

एगो अइसनो क्षण आ सकत बा, जब राउर हिम्मत साथ देहल छोड़ दी। फेर रउआ आपन हाथ छितार के सोझे दाँत चियार देब। तब, शायद, रउआ नैतिक दायित्व के ओह भावना के शान्त करे खातिर बुदबुदाये लागब : "वोलोद्या कइसन अद्भुत लइका रहे। ओकरा के देखते हर केहू हुलसित हो जात रहे।"

बाकिर का रउआ कबहूँ ई ना समझब जे दोष केकर बा?

एकरा बादो, हो सकत बा जे अइसन महाबिपत ना आवे।

एगो अइसन क्षण आवत बा, जब मतारी–बाप पहिला बेर ई महसूसत बा जे कवनो गड़बड़ी भइल बा। फेर इहे भाव गहिरात जात बा जे जवना के ऊ लोग आपन सुखी परिवार बूझत रहे, ओमे साँचो कुछ अस्वास्थकर चीज बा। कुछ समय ले फिकिराह मतारी–बाप एकरा के सहत बा। सुतहूँ घरी दुखी मन से एह पर फुसफुसात राय–मशविरा करत बा। बाकिर लोग के बीच आपन मान–मरजाद बनवले राखे खातिर अइसन ढोंग करत बा, जइसे सभकुछ ठीक–ठाक होखे आ कवनो त्रासदी ना भइल होखे, काहेकि परिवार के रूप–सरूप बाहर से देखे में सामान्य लउकत बा।

अइसन मतारी–बाप ठीक ओह उत्पादक जस हरकत करत बा, जे अपना घटिया किसिम के सामान के उत्पादन करत बा। फेर ओकरा के उचित वस्तु का रूप में समाज के सोझा पेश करत बा..... ।

जब रउआ परिवार में पहिला बेर छोटहन बाल–संकट पैदा होत बा, जब

www.bhojpurisahityangan.com

रउआ अपना लइका के आँख में अइसन तनिको पाशविकता देखत बानीं, जवन अबहीं बहुते छोट आ दुर्बल बा, बाकिर शत्रुता भरल बा। त रउआ अपना पछिला दिन पर नजर काहे नइखीं धउरावत, रउआ आपने बेवहार पर फेर से विचार काहे नइखीं करत?

बाकिर हमरा पकिया बिसवास बा जे रउआ कवनो बहाना खोज रहल बानीं.....।

चश्मा पहिरले, छोटहन दाढ़ी आ गुलाबी चेहरा वाला एगो खुशमिजाज आदमी अचके अपना गिलास में चम्मच घुमावत बा। फेर गिलास के एकोरा ढकेलत एके झटका में एगो सिगरेट निकालत बा।

"तूँ मास्टर लोग पद्धति के ले के हरमेसा लोग के उलाहना देत बाड़। एह बारे में केहू झगड़त नइखे। पद्धति त पद्धति ह। अरे यार, तूँ एह मूल असमंजस के त सझुराव।"

"कवन असमंजस?"

"ओहो, कवन असमंजस? तूँ इहो नइख जानत जे ई का ह त तूँ सझुरइब का?"

"ठीक बात बा, हम सुझुराइब। तूँ हेतना तउआइल काहे बाड़?"

ऊ हीक भर के सिगरेट के कश घींचले। उनकर भरल होठ से धुआँ के एगो छोटहने छल्ला निकलल। फेर..... उनका चेहरा में एगो थाकल–हारल मुसुकी झलकल।

"तूँ कुछुओ ना सझुरइब। एह असमंजस के कवनो हल नइखे। ई कहल कवनो समाधान ना ह जे हई कुर्बान कर भा हऊ कुर्बान कर। ई महज एगो औपचारिक बचाव बा। मान ल, हम एगो चीज कुर्बान नइखीं कर सकत, तब?"

"बाकिर हमरा दिलचस्पी ई जाने में बा जे असमंजस ह कवन चीज?"

हमार साथी सिगरेट के धुआँ उड़ावत हमरा ओर तिरछिया के देखले। अपना दुःख के बारीक पक्ष पर जोर देवे खातिर सिगरेट के अपना अँगुरी के बीच में ममोरले आ कहले–

"एक ओर त समाज के अन्दर राउर काम आ सामाजिक कर्त्तव्य बा। दोसरा ओर अपना लइकन आ पारिवार खातिर राउर कर्त्तव्य बा। समाज त हमार सगरी समय ले लेत बा– भोर, दुपहरिया आ साँझ। हर पल के उपयोग निश्चित आ नापल–तउलल बा। आ लइका? ई त सोझ हिसाब बा : लइकन के आपन समय देहला के मतलब बा घरे बइठल, जिनिगी से दूर रहल आ असल में एगो कूपमण्डूक बनल। रउआ अपना लइकन से बतियावे के चाहीं, ओकनी के ढेर बात समझावे के चाहीं, अपने से ओकर लालन–पालन करे के चाहीं, भाड़ में जाव ई सभ!" ऊ हमरा ओर तनी घमण्ड से देखले आ आपन आधा पीयल सिगरेट के राखदानी में रगर के बुता देहले।

"का तहरा एके गो लइका बा?" – हम तनी सचेत हो के पूछनीं।

www.bhojpurisahityangan.com

"हँ, छठवाँ क्लास में, तेरह बरीस के, अच्छा बा, ठीक–ठाक सीखत बा, बाकिर अबहिंये से हतना छोटहन उमिर में आवारा हो गइल बा। ऊ अपना मतारी से अइसन बेवहार करत बा, जइसे ऊ नोकरानी होखस। उजड्ड बा। हम ओकरा से कबहूँ ना भेंट करीं। अब तनी सोचीं, कुछुवे दिन के बात ह। ओकर एगो साथी ओकरा से भेंट करे आइल रहे। ओकनी के बगल के कमरा में बइठल रहले सन। अचके हम सुननीं जे हमार कोस्तिक गरियावत बा। ऊहो एगो दूगो गारी ना, भरपेटाहे गरियवलस। अइसन–अइसन बात बकत रहे जे अगली–बगली के हवा ले शरमा गइल।"

"का तूँ घबरा गइल?"

"घबरा गइल?" राउर मतलब का बा? तेरहे बरीस के उमिर में एको गो अइसन गोपनीय चीज नइखे, जवन ऊ ना जानत होखे। हमार खेयाल बा जे ऊ गन्दा किस्सा आ दोसरा तरे के गन्दा बातो जानत होखी।"

"बेशक, ऊ जानत बा।"

"हूँ! ई बात बा! सवाल ई बा जे हम केने रहनीं? हम, ओकर बाप, कहँवा रहनीं?"

"तूँ एह बात से झुँझलात बाड़ जे दोसर लोग ओकरा के गन्दा शब्द आ गन्दा किस्सा–कहानी सिखवले बा आ तहरा ओमे भाग लेवे के मोका ना मिलल?"

"रउआ त हमार मज़ाक उड़ावे लगनीं!" हमार बतकही के साथी तउआ गइले : "बाकिर मज़ाक कइला से असमंजस ना सझुराई।"

ऊ व्यग्र हो के चाय के दाम अदा कइले आ लगले चल देहले।

बाकिर हम कतई मज़ाक ना करत रहनीं। हम उनका से एगो सवाल कइनीं। उनकर जवाब महज बड़बड़ाहट रहे। ऊ क्लब में बइठ के चाय पीयत बाड़े आ हमरा साथे बइठल गप्प लड़ावत बाड़े– एकरो के सामाजिक काम बतइहें। आउर जादे समय दे दीं त ऊ का करिहें? गन्दा किस्सा के खिलाफ आन्दोलन चलइहें? बाकिर कइसे? जब ऊ खुदे गरियावल सिखले त उनकर उमिर का रहे? उनकर कार्यक्रम का बा? 'मूल असमंजस' के अलावे उनकर विचार का बा? ऊ कहँवा भाग के खाड़ा हो गइले? शायद अपना लइका के शिक्षा देवे भा 'मूल असमंजस' पर विचार करे खातिर शायद ऊ आउरो कतहूँ जात होखस।

'मूल असमंजस' आ 'समय के कमी' असफल मतारी–बाप के प्रिय बहाना बा। 'मूल असमंजस' से बच के ऊ कल्पना करत बाड़े जे ऊ अपना लइकन के साथे प्रभावशाली बतकही में लागल बाड़े। एगो सांत्वनाप्रद नजारा– बाप बोलत बा आ बेटा सुनत बा! बाकिर अपना लइकन के भाषण आ उपदेश देहल असाधारण रूप से कठिन काम बा। अइसन भाषण के लाभप्रद, शैक्षिक प्रभाव बनावे बदे कई गो परिस्थितियन के सौभाग्यशाली सम्मलेन के जरूरत बा। सभसे पहिले रउआ एगो रोचक विषय छाँटे के परत बा। फेर ई जरूरी बा जे रउआ ओकरा के अभिव्यक्त करे आवत होखे आ रउआ अपना बात के सही उदाहरण देवे आ हाव–भाव जतावे के जानत होखीं। एकरा अलावे बतकही सुने वाला लइका में असाधारण धीरज होखे

www.bhojpurisahityangan.com

के चाहीं।

दोसर बात, मान लीं राउर बतकही रउरा लइका के नीमन लागत बा। पहिला नजर में अइसन लागी जे ई नीमन बात बा। बाकिर अइसनो मतारी–बाप बा, जे अइसन भइला पर बिखिआइले लाल–पीयर होखे लागी। ऊ उपदेश वाला भाषण कवन काम के, जवना के ध्येय लइकन के खुश कइल बा। सभे जानत बा जे हुलास आउरो कई तरे से पावल जा सकत बा। एकरा विपरीत उपदेश देवे के मकसद श्रोता के व्याकुल कइल, ओकरा के सतावल, रोआवल आ नैतिक नज़रिया से सावधान कइल बा।

प्रिय मतारी–बाप!

कृपा क के ई मत सोचब जे लइकन से बतकही के कवनो लाभ नइखे। हम त रउआ के अइसन बतकही से जादे उम्मीद करे के खिलाफ चेतावत भर बानीं।

जे मतारी–बाप अपना लइकन के लालन–पालन बेजाँय तरे से करत बा आ जेकरा में कवनो सामान्य शिक्षात्मक गुण नइखे, ऊहे अइसन लोग बा जे शैक्षिक बतकही के मूल्य के बढ़ावत–चढ़ावत बा।

ऊ कल्पना करत बा जे शैक्षिक काम एह तरे होत बा : मास्टर 'क' बिन्दु पर खाड़ा बाड़े। तीन मीटर दूर बिन्दु 'ख' पर लइका खाड़ा बा। मास्टर अपना वाक्–पटुता से पढ़ावत बाड़े आ लइका ओकरा के सुन के शैक्षिक औषधि के रूप में ओकर सवाद लेत बा।

कबो–कबो कर्ता आ पात्र के स्थिति तनी अलग होत बा, बाकिर तीन मीटर के दूरी ऊहे रहत बा। लइका एगो जंजीर में बन्हाइल जस मास्टर के घुरियवले रहत बा आ ओही समय में वाक् तन्तु के क्रिया भा आउरो तरे के सोझ असर के अनुभव करत बा। कबो–कबो लइका जंजीर से छूट जात बा आ थोरहीं समय में जिनिगी गलत राह ध लेत बा। अइसन हाल में मास्टर आ मतारी–बाप काँपत आवाज़ में विरोध जतावत बा– 'ई त साफे बेबहरा हो गइल बा। दिन भर गलियन में छिछिआइल फिरत बा। रउआ त जानते बानीं जे हमनी के मोहल्ला में कवना तरे के लइका बाड़े सन? जवान शोहदे! के जाने ऊ कहँवा का करत बा?

भाषण देवे वाला के आवाज़ आ आँख दुनू अरज–निहोरा करत बा : हमार बेटा के धर लोग। ओकरा के गली के आवारा लइकन से बचाव, ओकरा के शैक्षिक जंजीर में बान्ह लोग, हमरा ओकरा के पढ़ावे के बा।

अइसन शिक्षा खातिर पकिया तरे से जादे फालतू समय चाहीं। एमे कवनो सन्देह नइखे जे एकर मतलब फालतू में समय के बर्बादी बा। ट्यूटर आ गवर्नेस, स्थायी रूप से देख–रेख करे वाला ओवरसियर के बेवस्था बहुत पहिलहीं थउस गइल। बेसी नीमन, जीवन्त लइका, निरपवाद, बन्धन तूर के भागत बाड़े सन।

एगो सोवियत आदमी के खाली एगो आदमी के सोझ प्रभाव से शिक्षित नइखे कइल जा सकत, चाहे ओकरा में कतनो गुण काहे ना भरल होखे। शिक्षा व्यापक रूप से एगो सामाजिक प्रक्रिया ह। हर वस्तु के शिक्षा में जोगदान बा– लोग, वस्तु

www.bhojpurisahityangan.com

आ घटना। बाकिर एमे प्रमुख आ सभसे ऊपर लोग बा। लोग में मतारी–बाप आ मास्टर के पहिलका जगह बा। लइका अपना अगली–बगली के जथारथ के समग्र जटिल संसार के साथे अनगिनत सम्बन्ध से बन्हाइल बाड़े सन। एमे हरेक सम्बन्ध बकिया सगरी सम्बन्धन से घुलल–मिलल बा आ बिना कवनो प्रतिरोध के विकसित हो रहल बा आ लइकन के शारीरिक आ नैतिक विकास के साथे जादे जटिल होत जा रहल बा।

एह उठा–पटक में कवनो चीज गणना के हिसाब से होत नइखे लागत। तबो हरेक पल विशेष पर लइकन के व्यक्तित्व में निश्चित बदलाव हो रहल बा। मास्टर के काम बा जे ऊ एह विकास के दिशा देव आ मार्गदर्शन करे।

कुछ मतारी–बाप, लइकन के जिनिगी के प्रभाव से बचावे आ सामाजिक शिक्षा के जगह व्यक्तिगत घरेलू प्रशिक्षण के लागू करे के प्रयास करत बा, ऊ बेदिमाग आ बेमतलब के बा। एकर विफलता तय बा। ऊ लइका घरेलू कैदखाना तूर के भाग जाई भा रउआ ओकरा के एगो विकृत प्राणी बना देब।

"त लइकन के लालन–पालन आ शिक्षा–दीक्षा खातिर जिम्मेदार जिनिगिये बा त फेर परिवार के मतलबे का बा?"

ना, ऊ परिवार भा मतारिये–बाप बा, जे लइकन के लालन–पालन खातिर जिम्मेदार बा। बाकिर परिवार समूह के देहल प्रशिक्षण शून्य के आधार पर लइकन के चरित्र के गढ़ नइखे सकत। तरे–तरे के पारिवारिक प्रभाव के एगो सीमित ताकत भा बाप के शैक्षिक भाषण भावी मानव के निर्माण खातिर समहुत सामग्री नइखे। अपना बहुमुखी विविधता वाला सोवियत जिनिगी ओकर भरपाई कर सकत बा।

पुरनका जमाना में लइकन के "फरिश्ता जस आत्मा" कहल जात रहे। हमनी के जमाना में लइकन के "जिनिगी के सुमन" कहल गइल बा। ई नीमन बात बा। बाकिर तुनुक मिजाज भावुक लोग एह सुन्दर शब्द के मरम नइखे बूझत । अइसन लोग सोचत बा जे जब लइका के सुमन कहल गइल बा त हमनी के ओकरा के ले के झमेला खाड़ा करे, खुशी से फूल जाये, ओकरा के सूँघे आ आह–ओह करे के अलावे आउर कुछुओ ना करे के चाहीं? शायद ऊ लोग इहो सोचत बा जे खुद फूल के ई सिखावे के चाहीं जे ऊ सुख भोगे के गुलदस्ता बा।

विचार शून्य आ खाँटी सुरुचि वाला हुलास में अपना विफलता के बीया रोपाइल बा। 'जिनिगी के सुमन' के अपना मेज पर चीनी गुलदान में परल सुख भोगे वाला गुलदस्ता ना बूझे के चाहीं। अइसन फूल पर रउआ कतनो हुलास देखाईं भा कतनो झमेला काहे ना करीं, बाकिर ई फूल पहिलहीं से मरे के कगार पर बा। ओकर विनाश तय बा आ सभ बेकार बा। काल्ह रउआ ओकरा के उठा के फेंक देब। अगर रउआ ओकरा से बेसी लगाव बा त ओकरा के सुखा के कवनो मोटहन किताब में कुछ दिन ले राखब। बाकिर ओकरा से कवनो ख़ास हुलास के उम्मीद नइखे कइल जा सकत। रउआ इयाद में कतनो खो जाईं आ ओकरा के केतनो देर ले निहारते रहीं, बाकिर रउआ भूसा के अलावे आउर कुछुओ ना भेंटाई।

www.bhojpurisahityangan.com

ना। हमनी के लइका ओह किसिम के फूल नइखन सन। ओकनी के हमनी के जिनिगी के जियतार तना पर फूलात बाड़े सन। ऊ गुलदस्ता नइखन सन। ओकनी के सेब के बगइचा बाड़े सन आ ई बगइचा हमनी के ह। हमरा पर बिसवास करीं। एजुगिया सम्पदा के अधिकार के मतलब बा कवनो सुन्दर वस्तु। बेशक, अइसन बगइचा के ना सराहल आ ओपर हुलसित ना भइल कठिन बा। बाकिर ओमे काम ना कइल आउरो जादे कठिन बा। कृपा क के ओमे सहजोग करीं– माटी खोनीं, पानी डालीं, कीट पतंग से छुटकारा दिलाईं आ सूखल डाल के काट दीं। अथाह खुशी आ चुम्मा लेवे खातिर फूल के भीरी मत आईं– आपन फावड़ा, कैंची आ पानी पटावे वाला बरतन उठाईं आ सीढ़ी ले आईं। जब राउर बगइचा में कवनो कीड़ा लउके त कीटनाशक के छिड़काव करीं। ओकरा से डेराईं मत, ओकरा के तनी छिड़कीं, फूल के कुछ देर ले तनी असुविधा महसूस करे दीं। प्रसंगतः, एगो नीमन माली के कीड़ा से कवनो कष्ट ना होखे।

हँ, हमनी के माली बने के चाहीं। ई उत्तम तुलना हमनी के एह कठिन समस्या जे लइकन के शिक्षित के बनावत बा– मतारी–बाप भा जिनिगी? एकरा बारे में कुछ बात बूझे में मदद करी।

एगो बगइचा में गाछ–बिरिछ के उगावत बा?

माटी आ हवा ओकरा के पोषण देत बा। सूरुज आक्सीकरण के बेसकीमती समरथ देत बा। हवा आ आन्ही ओकरा के प्रतिरोध सहे खातिर समरथ बनावत बा। ओकर साथी गाछ–बिरिछ ओकरा के अकेलापन से बचावत बा। गाछ–बिरिछ के अगली–बगली के माहौल में पेचीदा रासायनिक प्रतिक्रया काम कर रहल बा।

जिनिगी के एह श्रमसाध्य काम में माली का बदलाव ले आ सकत बा? का ओकरा फल के पाके आ ओकरा के सवारथवश उदासीनता से तूर के खुदे हड़प जाये ले लाचार आ असहाय हो के हाथ पर हाथ धइले चुपचाप बइठल रहे के चाहीं? कुछ जंगली लोग ठीक अइसने करत बा। असहीं कई गो मतारियो–बाप करत बा।

बाकिर असली माली अइसन हरगिज ना करी।

आदमी बहुत पहिलहीं प्रकृति के साथे सावधानी आ नरमी से पेश आइल सीख लेले रहे। ऊ प्रकृति के दोसरा रूप में बदलल, नया प्राकृतिक रूप–सरूप के रचना कइल, प्रकृति के जिनिगी में आपन कमजोरी दूर करे वाला समरथ के लागू कइल सीख लेले बा। प्रकृति से आपन ताल–मेल बइठावल एक तरे से प्रकृति के मदद कइल बा।

हमनी के शिक्षा अइसने तरे के एगो दोष निवारक बा। आ एही दिसाईं शिक्षा सम्भव बा। जिनिगी के समरथ अनेक राहे–बाटे, ओकर फूल, आँधी–बतास का बीच लइकन के बुद्धिमानी आ पूरा बिसवास के साथे आगे ले गइल एगो अइसन काम बा, जवना के हर आदमी तबे कर सकत बा, जब ऊ साँचो करे के चाहत होखे।

हमरा सभसे जादे झुँझलाहट एह घबराहट भरल चीख से होत बा :

"गली के आवारा छोकरा!"

www.bhojpurisahityangan.com

"देखीं ना, पहिले त सभ नीके रहे, बाकिर फेर सेर्योजा हमरा मोहल्ला के ढेर छोकरन से दोस्ती क लेहलस...."।

ई छोकरा सभ सेर्योजा के बिगाड़ देले बाड़े सन। केहू नइखे जानत जे ऊ आवारा नियर केने–केने छिछियात फिरत बा। ऊ कपड़ा के आलमारी से एगो पतलूनो निकाल के बेच देले बा। ऊ अधरतिया वोद्का के गन्ध फइलावत घरे आइल आ अपना मतारी के अपमान कइलस।

कवनो घोर नादान आदमी एह बात पर भरोसा कर सकत बा जे ई सभ काम गली के छोकरा कइले होखिहे सन। सेर्योजा नया किसिम के अनोखा लइका नइखे। ऊ पूरा तरे से सामान्य स्तर के एगो अइसन लइका बा, जेकरा से सभे उबिया गइल बा। ओकरा के अइसन बनावे वाला 'गली के छोकरा' ना, बलुक ओकर आलसी आ चरित्रहीन मतारी–बाप बा। ऊ एके झटका में अइसन नइखे बनल। ई प्रक्रिया अनवरत आग्रहपूर्ण प्रक्रिया बा आ ओही समय से चालू बा, जब सेर्योजा डेढ़ बरीस के रहे। पारिवारिक बेवहार के कई गो पूरा तरे से शर्मनाक लक्षण ओकर निर्माण में सहजोग कइले बा– निकम्मापन, आलसीपन, बेमतलब के दिन में सपना देखल, नीचतापूर्ण निरंकुशता आ ख़ास क के अक्षम्य गैर–जवाबदेही आ तिल भर के कर्त्तव्य भावना।

सेर्योजा साँचो एगो असली 'गली के छोकरा' बा। बाकिर ओकरा के अइसन बनावे में पूरा तरे से ओकर परिवार के हाथ बा। हो सकेला राउर मोहल्ला के दायरा में ओकरे जइसन असफल लइका भेंटा जात बाड़े सन। ओकनी के मिल के एगो गिरोह बनावत बाड़े सन। ऊ सभ बरोबर मात्रा में नैतिक नजरिया से दमित बाड़े सन आ एके जस 'गली के' बाड़े सन। बाकिर ओही मोहल्ला में रउआ अइसनो लइकन के देखब, जेकनी खातिर पारिवारिक निकाय आ पारिवारिक दोष–निवारक समरथ अइसन सिद्धान्त आ परम्परा के रचना कइले बा, जे ओकनी के गली के लइकन से दूर रहले बगैर, अपना के पारिवारिक सीमा के भीतर, जिनिगी से अलग–थलग रखले बिना ओकनी के प्रभाव के रोक–थाम में सहजोग करत बा।

सफल पारिवारिक लालन–पालन के निर्णायक कारक मतारी–बाप सोवियत समाज खातिर अपना नागरिक कर्त्तव्य के लगातारे सक्रिय आ सचेत रहत पालन करत बा। जवन मामला में मतारी–बाप एह कर्त्तव्य के महसूस करत रोजाना जिनिगी के आधार रचत बा, ओजा एह परिवार के लालन–पालन के काम में सही राह देखावत बा। अइसन मामला में कवनो तरे के विफलता भा महाबिपत सम्भव नइखे।

बाकिर, दुर्भाग से मतारी–बाप के एगो अइसनो बड़हन तबका बा, जेकरा मामला में ई नियम काम नइखे करत। ई लोग नीमन नागरिक लागत त बा, बाकिर एह लोग में सुसंगत तरे से सोचे–विचारे के समरथ नइखे भा दुर्बल दिशा–ज्ञान के चलते माहौल के ताड़े में बहुते कमजोर बा लोग। एही से ओह लोग के कर्तव्य–भावना पारिवारिक सम्बन्ध के क्षेत्र में काम नइखे करत। नतीजा ई होत बा जे ओह लोग

www.bhojpurisahityangan.com

के लइकन के लालन–पालन के कामे नइखे आवत। एकरे चलते ओह लोग के कमोबेश गम्भीर विफलता हाथे लागत बा। एही कारण से ऊ लोग समाज में नीमन गुण वाला आदमी नइखे दे पावत। बकिया लोग बेसी ईमानदार बा। ऊ लोग सँकारत बा :

"रउआ मालूम होखे के चाहीं जे लइकन के लालन–पालन कइसे कइल जाला। शायद हम एह काम के सही ढंग से नइखीं कर पावत। लइकन के लालन–पालन खातिर ज्ञान के जरूरत बा।"

दोसरा शब्द में, हरेक आदमी अपना लइकन के नीमन तरे से पाल–पोस के बड़ बनावे के चाहत बा। बाकिर एकर रहस्य के हर केहू नइखे जानत। कुछ लोग एकर खोज कइले बा। कुछ लोग एकर मोसलम उपयोग करत बा। बाकिर रउआ घोर अन्हार में बानीं। रउरा सोझा एह रहस्य के केहू उद्घाटन नइखे कइले।

अइसन भइला के चलते सभे शिक्षा–विज्ञान के मुँह निहारत बा। प्रिय मतारी–बाप!

हमनी के आपसी बात बा : हमनी के मास्टर लोग अपना–अपना परिवार में, अनुपात के मोताबिक, लगभग ओतने दोषपूर्ण वस्तु तइयार करत बा, जेतना कि रउआ। एकरा विपरीत, उत्तम कोटि के लइकन के लालन–पालन अकसरे अइसन मतारी–बाप करत बा, जे शिक्षा–विज्ञान के ना त अगिला दरवाजा देखले बा आ ना पिछला।

शिक्षा–विज्ञान लइकन के एह लालन–पालन पर कवनो ख़ास धेयान नइखे देत। इहे कारण बा जे जादेतर विद्वान शिक्षा–वैज्ञानिक, विषय के सही तरे से जानला का बादो, अपना लइकन के लालन–पालन करत घरी सहज बुद्धि आ सांसारिक ज्ञान पर जादे भरोसा करत बा। बाकिर ऊ लोग दोसरा से कहीं जादे मामला में शिक्षण–वैज्ञानिक 'रहस्य' में सहज बिसवास के दोषी बा।

शिक्षा–विज्ञान के एगो अइसने प्रोफेसर से हमार परिचय रहे। ऊ अपना इकलौता बेटा से हरमेसा अइसन बेवहार करत रहले, जइसे ऊ कवनो समस्या होखे आ जवना के किताब आ गहन मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से हल करे के होखे। अनेक शिक्षा–वैज्ञानिक जस उनका बिसवास रहे जे दुनिया में कतहूँ कवनो अइसन शिक्षा–वैज्ञानिक करामात जरूरे होखी, जे मास्टर आ लइकन के मोसलम सन्तोष देत होखे, सगरी सिद्धान्तन के अनुरूप होत होखे आ अमन–चैन आ शाश्वत सुख के माहौल बना देत होखे। लइका खाना खात बेर अपना मतारी से बेजाँय बेवहार कइलस। प्रोफेसर कुछ देर ले सोचले आ सोझे प्रेरणाप्रद समाधान पर पहुँच गइले :

"फेद्या, तें अपना मतारी के अपमान कइले बाड़े। एकर मतलब बा जे तोरा हमनी के घर पसन्द नइखे। तें एह मेज पर बइठे जोग नइखी। ठीक बा। काल्ह से हम तोरा के रोजाना पाँच रूबल देब। तोरा जहँवा मन करे, ओजुगिये खा लिहे।"

प्रोफेसर खुश रहले जे ऊ अपना बेटा के बदसलूकी खातिर बड़ी बुद्धिमत्ता से पेश अइले। फेद्या खुश रहे। बाकिर ई करामाती योजना आखिरी ले ना चलल।

www.bhojpurisahityangan.com

कुछ समय ले घर में अमन–चैन बनल रहल, बाकिर शाश्वत सुख नदारद हो गइल।

प्रोफेसर के उम्मीद रहे जे तीन–चार दिन बाद फेद्या उनका लगे आई, आपन बाँह बाप के गला में डाल के कही– "बाबूजी हम गलत रहनीं, हमरा के घर से विलग मत करीं।"

बाकिर अइसन ना भइल, बलुक जे भइल ऊ ओइसन एकदमे ना रहे। फेद्या के कहवा–घर आ भोजनालय में जाये के चस्का लाग गइल। खाली एके गो चीज जे ओकरा के परेशान करत रहे, ऊ ओकर बाप से मिले वाला राशि के कम परल। ऊ अपना योजना में एक–दू बेर हेरा–फेरी कइलस। अपने घर में बहुते देर ले चीजन के टोअल–टावल कइलस। दोसरा दिने एक भोरे कपड़ा के आलमीरा से प्रोफेसर के पतलून गायब हो गइल। साँझी के उनकर बेटा दारू के नशा में चूर हो के घरे लवटल। ऊ मर्मस्पर्शी स्वर में अपना मतारी–बाप से प्रेम प्रकट कइलस। बाकिर पारिवारिक मेज पर लवटे के कवनो बात ना कइलस। प्रोफेसर आपन पेटी खोल के कुछ देर ले आपन बेटा के सोझा हिलावत रहले।

महीना भर बादे प्रोफेसर साहेब हार मान लेहले। फेर आपन बेटा के श्रमिक बस्ती में भेजे खातिर आवेदन दे अइले। उनका हिसाब से फेद्या के ओकर कई गो साथी बिगाड़ देहले सन :

"रउआ जानत नइखीं, कवना तरे के लइका बाड़े सन हमार मोहल्ला में!"

कुछ मतारी–बाप एह वाकया के सुनला पर इहे कही : "ठीक बा! बाकिर अगर कवनो लइका खाये के मेज पर अपना मतारी के साथे बेजाँय बेवहार करत बा त ओकरा खातिर का कइल जाव?"

साथी सभे! शायद एकरा बाद रउआ हमरा से ई पूछीं जे अगर केहू के रुपया–पइसा भरल बटुआ हेरा जाव त का करे के चाहीं? एह पर विचार करीं। लगले जवाब मिल जाई : एगो नया बटुवा कीनीं, कुछ आउर धन कमाईं आ ओकरा के बटुआ में राखीं।

अगर कवनो बेटा अपना मतारी के अपमान करत बा त कवनो करामात से कुछुओ लाभ नइखे हो सकत। एकर मतलब बा जे रउआ अपना बेटा के लालन–पालन बहुते खराब तरे से कइले बानीं । लमहर समय से अइसने कर रहल बानीं। रउआ ओकर लालन–पालन के काम नया सिरे से शुरू करीं। रउआ अपना परिवार के अनेक बात–बेवहार में बदलाव करे के परी। जादेतर बातन पर विचार करीं। बारीकी से ओकरा के जाँची–परखीं। जहँवा ले ई सवाल बा जे रउआ लइका के दुस्साहस के तुरते बाद का करे के चाहीं? ई एगो अइसन सवाल बा, जवना के कवनो सामान्य जवाब नइखे देहल जा सकत। ई अलग–अलग मामला में अलग–अलग होखी। ई मालूम भइल जरूरी बा जे रउआ कवना तरे के आदमी बानीं आ अपना परिवार के साथे कइसन बेवहार कइले बानीं। हो सकेला जे रउआ अपना बेटा के सोझा अपना मेहरारू के साथे बाउर बेवहार कइले होखब। प्रसंगवश

www.bhojpurisahityangan.com

अगर अपना बेटा के अनुपस्थिति में अपना मेहरारू के साथे बेजाँय बेवहार कइले होखब त ओकरो पर धेयान दीं।

ना, परिवार में लइकन के लालन–पालन के करामात के साफे नकार देवे के चाहीं। लइकन के देखभाल आ लालन–पालन एगो गम्भीर आ बेहद जिम्मेदारी के काम बा। ई, साँचो एगो कठिन काम बा। एह मामला में कवनो आसान कारामात राउर मदद नइखे कर सकत। एक बेर, जब रउरा परिवार में लइका के जनम हो गइल त एकर मतलब बा जे रउआ आवे वाला अनेक बरिसन ले आपन पूरा चिन्तन, सगरी धेयान आ सम्पूर्ण चरित्र–बल ओकरे पर लगावे के परी। रउआ आपन बेटा के खाली बाप आ संरक्षक भर नइखीं। बलुक खुदे अपना जिनिगी के संगठनकर्ता बने के परी। काहेकि एगो नागरिक के रूप में राउर क्रिया–कलाप के साथे एगो आदमी के रूप में राउर भावना के साथे एगो मास्टर के रूप में राउर गुण पूरा तरे से बँधल बा।

***

www.bhojpurisahityangan.com

दूसरा अध्याय

पुरनका जमाना के परिवार, दस्तकारन आ छोट अधिकारियन के परिवार समेत, एगो संचयकारी संगठन होत रहे। ई साँच बा जे संचय कई तरे के होत रहे। ओकर नतीजो अलग–अलग होत रहे। पारिवारिक संचय लइकन के पढ़ाई, बेटियन के दहेज, सुखमय बुढ़ारी आ पारिवारिक लोक देखावा खातिर जरूरी रहे। पारिवारिक संचय के मेहरबानी से किस्मत वाला लोग ओह सामाजिक स्तर ले पहुँच जात रहे, जहँवा खाली गरीबी से मुक्तिये ना मिलत रहे, बलुक 'असली' समाज में पहुँचे के उम्मीद बनत रहे।

एह दिशा में जादे महत्वपूर्ण कदम सफल बियाह होत रहे। अभिजात वर्ग के परिवारे जस कामगार, कर्मचारी आ बुद्धिजीवी लोगन के परिवारो में प्रेमवश शादी कबो–कबो होत रहे। बेशक हमनी के परिवार में होखे वाला शादी में ओह दोमोस्त्रोय जस माहौल ना होत रहे, जइसन कि अभिजात–वर्ग आ बेवसायी परिवार में होत रहे। ओजा युवाजन के अपना बाप के निरंकुश आदेश पर एक–दोसरा के देखले बिना बियाह क देहल जात रहे। हमनी के युवाजन एक–दोसरा से कमोबेश स्वतंत्रता के साथे मिलत–जुलत रहे। एक–दोसरा के जानत–पहचानत रहे। एक–दोसरा किहाँ सनेह आ अरज–निहोरा के साथे आवत–जात रहे। बाकिर अस्तित्व खातिर संघर्ष के क्रूर नियम लगभग यांत्रिक रूप से काम करत रहे। शादी तय करे में भौतिक कारण जादेतर निर्णायक होत रहे। एगो बेटी के दहेज, एक ओर भावी समृद्धि खातिर एगो बीमा होत रहे त दोसरा ओर वर के आकर्षित करत रहे। शादी करत बेर, सुन्दर आँख, आकर्षक आवाज़, दयालु सोभाव जइसन महत्वहीन तर्क से निर्देशित होखे के मोका खाली गरीब लइकियन के मिलत रहे।

घर के मेठ बाप होत रहे। ऊहे घर के भौतिक नियंत्रण करत रहे। कष्टसाध्य आ दुरूह योजना बनावल, धन संचय कइल, पइसा के हिसाब–किताब राखल आ लइकन के नियति तय ऊहे करत रहे।

बाप! इतिहास के असली पात्र रहे। मालिक, निगरानी राखे वाला, मास्टर, न्याय करे वाला आ कबहूँ दण्ड देवे वाला ऊहे रहे। ऊहे परिवार के सीढ़ी के एगो सोपान से दोसरा ले ले जात रहे। जर–जायदाद के मालिक, धन–संचय करे वाला आ निरंकुश शासक, ईश्वर के अलावे सगरी संविधान खातिर अजनबी ओह बाप के लगे जबरदस्त शक्ति रहत रहे, जे प्रेमवश आउरो जादे बढ़ जात रहे।

www.bhojpurisahityangan.com

बाकिर ओकर एगो आउरो पक्ष रहे। ई ऊहे रहे, जे अपना लइकन के, ओकनी के गरीबी, बेमारी आ मुअला के, ओकनी के झंझट भरल जिनिगी आ संकट भरल अन्त के विकट जिम्मेदारी के भार अपना कान्हा पर उठवले रहे। ओकरा पर ई जिम्मेदारी जिनिगी के मालिक, बलात आर्थिक–अपहरण करे वाला आ अनाचारी, सामन्त, महाजन, जनरल आ फैक्ट्री मालिक शताब्दी–दर–शताब्दी लादत जात रहे आ ऊ शताब्दी–दर–शताब्दी ओही प्रेम के चलते बढ़त असह्य भार उठावत रहल। ऊ कराहत पीड़ा सहत रहल आ ओह ईश्वर के कोसत रहल, जे ओतने अबोध रहे, जेतना ऊ खुदे। बाकिर एह जिम्मेदारी से ऊ कबहूँ इनकार ना कर पवलस।

एही से ओकर शक्ति आउर जादे पावन आ पहिलहूँ से जादे निरंकुश हो गइल रहे। बाकिर जिनिगी के मालिक अपना अपराध खातिर जिम्मेदार एह मूरत के, शक्ति आ कर्त्तव्य के बोझा से पिसात बाप के सेवा पा के हरमेसा हुलसित रहत रहे।

एगो सोवियत परिवार पितृसत्तात्मक राजतंत्र नइखे हो सकत। काहेकि परिवार के पुरनका आर्थिक प्रेरक शक्ति बिला गइल बा। हमनी किहाँ बियाह भौतिक कारण के धेयान में राखत ना कइल जाला। हमनी के लइकन के पारिवारिक सीमा के अन्दर मूलभूत भौतिक महत्त्व के कवनो चीज विरासत में नइखे मिलत।

अब हमनी के परिवार में बाप के अधिकार के वस्तु के अलग–थलग समूह ना रहल। हमनी के परिवार में बाप से लेहले नवजात शिशु ले एगो समाजवादी समाज के सदस्य बा। ओमे हरेक आदमी एह श्रेष्ठ पद के मान–मरजाद के रखवार बा।

सभसे ऊपर परिवार के हरेक सदस्य खातिर राष्ट्रव्यापी पैमाना पर उपलब्ध राह–बाट, अवसर आ ओकर अद्‌भुत विविधता पूरा तरे से सुनिश्चित बा। अब हरेक आदमी के विजय पूर्ण प्रगति पारिवारिक ताकत के बजाय खुदे पर जादे निर्भर बा।

बाकिर हमनी के परिवार समाज के सदस्यन के संजोग से बनल सम्मेल नइखे। परिवार एगो प्राकृतिक सामूहिक निकाय बा। हरेक प्राकृतिक, सामान्य आ स्वस्थ वस्तु जस इहो ओह अभिशाप से मुक्त समाजवादी समाज में विकसित हो सकत बा। एकरा से सगरी मानव जाति आ अलग आदमी साँचो अपना के मुक्त कर रहल बा।

परिवार समाज के प्राकृतिक प्राथमिक इकाई बन जात बा। ई एगो अइसन ठेहा बा, जहँवा आदमी के जिनिगी के हुलास बेवहारिक रूप लेत बा, जहँवा आदमी के विजयी ताकत एगो नया शक्ति पावत बा, जहँवा लइकन के जिनिगी के हुलास फरत–फुलत बा।

दोसरा ओर हमनी के मतारी बाप बिना अधिकार के नइखे। बाकिर ओह लोग के अधिकार सामाजिक अधिकार के प्रतिबिम्ब बा। हमनी के देश में आपन लइकन खातिर बाप के जिम्मेदारी समाज वास्ते ओकर कर्त्तव्य के एगो ख़ास रूप बा। ई ओइसने बा, जइसे हमनी के समाज मतारी–बाप से कहत होखे :

"रउआ सद्‌भाव आ प्रेम से परस्पर एकवठ बानीं। अपना लइकन से हुलसित

www.bhojpurisahityangan.com

होत बानीं। उम्मीद बा जे राउर ई हुलास बनल रही। ई राउर आपन मसला बा आ राउर व्यक्तिगत हुलास से जुड़ल बा। बाकिर हुलास के एह प्रक्रिया में रउआ नया लोग के जनम देले बानीं। एगो समय आई, जब ई लोग रउआ खातिर खाली हुलास भर ना बनल रही, ऊ समाज के स्वतंत्र सदस्य बन जाई। ऊ कवना तरे के लोग होखी, ई समाज खातिर उदासीनता के मसला कतई नइखे। रउआ के तनी सामाजिक अधिकार दे के सोवियत राज्य रउआ से एह भावी नागरिक के सही लालन–पालन के माँग करत बा। ऊ रउआ से मिले वाला सोभाविक रूप से उपजल एगो ख़ास माहौल माने राउर वात्सल्य के भावना पर ख़ास तरे से भरोसा करत बा।

"अगर रउआ वात्सल्य के भावना के बगैर एगो नागरिक के जनम देवे के चाहत बानीं त बिना मेहरबानी कइले समाज के आगाह क दीं जे रउआ अइसन धूर्त्तई के चाल चले जा रहल बानीं। वात्सल्य के बगैर पलल–बढ़ल लोग अकसरे विरूपित लोग होत बा। चूँकि समाज में अपना हर सदस्य खातिर, चाहे ऊ कतनो छोट काहे ना होखे, वात्सल्य के भावना रहत बा। एह से अपना लइकन खातिर राउर जिम्मेदारी हरमेसा वास्तविक रूप ले सकत बा।"

सोवियत समाज में मतारी–बाप के अधिकार समाज के प्रतिनिधित सत्ता पर ना, बलुक सार्वजनिक नैतिकता के समग्र ताकत पर टिकल बा। ई नैतिकता मतारी–बाप से माँग करत बा जे कम से कम ऊ लोग चरित्र–भ्रष्ट ना होखे। मतारी–बाप अइसने प्यार आ अधिकार समेत परिवार के सामूहिक निकाय के एगो ख़ास घटक के रचना करत बा। एही नाते ओकर दोसर घटक लइकन से साफे अलग बा।

हमनी के सोवियत परिवार पहिलहीं जस एगो आर्थिक इकाई के रचना करत बा। बाकिर सोवियत परिवार के अर्थ–बेवस्था श्रम से अर्जित पारिश्रमिक के कुल योग बा। अगर ऊ बेसियो होखे, अगर ऊ परिवार के सामान्य जरूरत से जादे होखे, अगर ऊ संचित होत होखे, तबो ई संचय पूँजीवादी समाज के संचय से साफे अलग प्रकृति के संचय बा।

हमनी के परिवार के अर्थ बेवस्था आ सामाजिक अर्थ बेवस्था पूरा तरे से नवका दशा के अन्दर बा। ओकरे हिसाब से सामाजिक नैतिकता के समग्रता नवका दिशा के अधीन बनल बा। हमनी के परिवार के सोझा मौजूद सम्भावना में असाध्य गरीबी के कवनो जगह नइखे। दोसरा ओर कवनो निजी फैक्ट्री भा निजी जायदाद नइखे। एह से सोवियत राज्य में पारिवारिक आर्थिक नीति के समस्या पूरा तरे से नया रूप में प्रकट होत बा। सभसे बेसी महत्त्वपूर्ण तथ्य बा जे अब परिवार के कल्याण खातिर खाली बापे जिम्मेदार नइखे। एह कल्याण खातिर परिवार आ सउँसे सोवियत समाज जवाबदेह बा।

हमनी के देश में अइसन परिवार के कल्पना कइल जा सकत बा जे अपना जरूरत के कोशिश क के आ कबो–कबो जादे प्रयास क के पूरा कर पावत बा। हमरा कुछ अइसन परिवार से वास्ता परल बा, जवना के उदाहरण कई लोग खातिर

www.bhojpurisahityangan.com

शिक्षाप्रद हो सकत बा।

संचय के जवन सहज वृति पुरनका जिनिगी के निर्देशित करत रहे, ऊ हमनी के जिनिगी से लगभग साफे मेटा देहल गइल बा। हमनी के एको नागरिक के बारे में ई सोचल मोसकिल बा जे ऊ अपना मन के गहराई में पुरनका जमाना जस लालसा राखत होखे– "हाय, केतना दुःख के बात बा जे हम एगो छोटहन दोकान ले नइखीं खोल सकत!"

पुरनका समाज में संचय के सहज वृत्ति उपभोग के एगो स्थायी नियामक रहे। संचय के लोभ कबो–कबो अतना जादे हो जात रहे जे ऊ खुदे ओकरा के नकार देत रहे। लोभ के हाथ अतना लमहर हो जात रहे जे खाली लूट–खसोट के लायक रह जात रहे आ मालिक के उदार सेवा ले ना दे पावत रहे।

हमनी के देश में खाली पागले आदमी एह आधार पर कवनो वस्तु के उपभोग से इनकार करी जे ऊ तनी पूँजी जमा क के ओकरा के प्रचलन में ले आवे के फैसला कइले बा।

एह माहौल के विराट राजनीतिक, आर्थिक आ नैतिक महत्त्व बा। पूँजीवादी समाज के असली प्रेरक 'संगठित लोभ' के हमनी के समाज के नैतिक सूची से हरमेसा खातिर मेटा देहल गइल बा। ई उपभोक्ता–लोभ, जे तर्क के हिसाब से हमनी किहाँ सँकारे जोग नइखे, से मनोवैज्ञानिक आ उद्देश्य सम्बन्धी कारक के एगो जटिल तरे के कारण अलग बा। काहेकि ई सत्ता के उत्कट लालसा, महत्वकांक्षा, दर्प, दासता से लगाव आ आश्रित–पराश्रित के लरी में लपेटाइल बा, जे अनगिनत लोग आ वस्तु पर व्यापक अधिकार के साथे प्रकट होत बा।

एह संगठित लोभ के विश्व के इतिहास में पहिला बेर अक्टूबर क्रान्ति से मेटा देहल गइल। ई तथ्य संविधान में दर्ज बा :

जमीन, खनिज, जल–संसाधन, वन, कल–कारखाना, खदान, रेल, सड़क, बैंक, परिवहन, संचार के साधन, राज्य से संगठित बड़हन कृषि उद्यम, राजकीय फार्म, मशीन, ट्रैक्टर–टीसन, जनोपयोगी सेवा, उद्यम के सम्पत्ति आ जादेतर शहरी रिहायशी इमारत राज्य के सम्पदा बा। माने ई सगरी जनता के बा।

ई मानव जाति के नवका नैतिकता के आधार बा।

बाकिर हमनी के संविधान इहो कहत बा :

अपना आमदनी आ काम से कइल बचत पर, रिहायशी मकान पर आ सहायक घरेलू धन्धा खातिर जरूरी औजार आ आउरो सामान, रोजाना के उपयोग आ व्यक्तिगत सम्पत्ति के अधिकार आ व्यक्तिगत सम्पत्ति के उत्तराधिकार पावे के नागरिक अधिकार कानून से सुरक्षित बा।

इहे ऊ अधिकार बा, जे मानव–जाति के महान संघर्ष के वास्तविक लक्ष्य के रचना करत बा आ जवन आदमी के आदमी से शोषण के जरिये हरमेसा उलंघन होत रहल बा।

हमनी के देश में ई अधिकार कानून से सीमित नइखे। ऊ हमनी के राष्ट्रीय

www.bhojpurisahityangan.com

सम्पदा के वास्तविक अवस्था से सीमित बा। चूँकि ई सम्पदा हर दिन बढ़ रहल बा, एह से आदमी के उपभोग के अवसर रोजे बढ़ रहल बा। हमनी के राज्य अपना खातिर सार्विक सम्पदा के उपलब्धि के स्पस्ट आ स्वीकृत लक्ष्य तय कइले बा। एही से हरेक परिवार के सोझा भौतिक अवसर के व्यापक क्षेत्र भरल–परल बा।

सोवियत परिवार के समूह ओह घरेलू सम्पदा के इकलौता मालिक बा, जवन खाली श्रम से पैदा कइल बा। पारिवारिक समूह के ई आर्थिक क्षेत्र बहुते हद ले एगो शैक्षिक क्षेत्र बन जात बा।

हमनी के समाज उन्मुक्त आ सचेत रूप से कम्युनिस्ट समाज के ओर बढ़ रहल बा।

हमनी के समाज में मानवीय बेवहार के औसत स्तर के मुकाबले नैतिक माँग ऊँच होखे के चाहीं। नैतिकता सबसे जादे निर्दोष बेवहार अपनावे के माँग करत बा। हमनी के नैतिकता पहिलहीं से कम्युनिस्ट समाज के नैतिकता होखे के चाहीं। कम्युनिज्म के संघर्ष में हमनी खातिर जरूरी बा जे हमनी अपने में कम्युनिस्ट समाज के सदस्य के गुण के अबहीं विकसित करीं। जब हमनी के अइसन करब सन, तबे हमनी के ओह उच्च नैतिक भावना के बनवले राख सकत बानी सन, जवन हमनी के समाज के दोसरा से अलग बनावत बा।

बहुते लोग कम्युनिज्म के एह महान नियम के अबहुँओ बेवहार में सोच नइखे पावत : "हरेक से ओकर क्षमतानुसार, हरेक के ओकर जरूरत के अनुसार," अनेक लोग अबहुँओ वितरण के अइसन श्रेष्ठ सिद्धान्त के कल्पना नइखे कर पावत, जे ईमानदारी, न्याय, नियम निष्ठता, विवेक, बिसवास आ नैतिक चरित्र के शुद्धता के अभूतपूर्व रूप से पूर्वापेक्षा करत बा।

शैक्षिक काम के, मुख्य रूप से पारिवारिक समूह के काम के गहन अर्थ मानवीय जरूरत के चुने आ प्रक्षिक्षण में, नैतिकता के श्रेष्ठ भावना में ओह लोग के लालन–पालन में निहित बा। खाली इहे भावना आदमी के पूर्णता पावे के संघर्ष में आगे बढ़े खातिर प्रेरित कर सकत बा। असल में नैतिक नजरिया से उचित जरूरत एगो सामूहिक जरूरत बा। माने अइसन आदमी के, जे सर्वनिष्ठ लक्ष्य के, समान संघर्ष के अपना भावना से, समाज खातिर अपना कर्त्तव्य के जीवित आ निश्चित जागरूकता से अपना समूह से जुड़ल बा।

हमनी के समाज में जरूरत कर्त्तव्य, जिम्मेदारी आ योग्यता के बहिन के रूप में बा। ई सामाजिक फायदा के उपभोक्ता के सवारथ के ना, बलुक समाजवादी समाज के सक्रिय सदस्य के, ओह फायदा के जगावे वाला के हित के अभिव्यक्ति बा।

एगो किशोर लइका हमरा से मिले आइल। ऊ शायद बारह बरीस के होखी भा हो सकेला जे ओहू से तनी कमे उमिर के होखे। ऊ हमरा सामने एगो आराम कुरसी पर बइठ गइल। फेर आपन हाथ से मेज के कगरी रगरत कुछ बोले के कोशिश कइलस। बाकिर कुछुओ बोल ना पवलस। ओकर माथा गोल आ बेल–मुण्ड

www.bhojpurisahityangan.com

रहे, ओकर गाल भरल रहे आ ओकर बड़का–बड़का आँख लोर से डबडबाइल रहे। हम देखनीं जे ओकर कमीज के कालर हिम जस सफेद रहे।

ई किशोर लइका एगो अभिनेता रहे। हम ओकरा जइसन कई गो लइकन के देखले रहनीं : ओकरा चेहरा पर एगो बनावटी भाव रहे, जवना के शायद कवनो सिनेमा से सिखले रहे। ओकर भौंह सिकुरल रहे आ माथा के कोमल पेशी में बनावटी सलवट परल रहे, जवना से अइसन लागत रहे जे ऊ कवनो बूढ़ आदमी के नकल उतारत होखे।

"अच्छा? जवन चाहत बाड़े, कह। तोर नाँव का ह?" हम पैनी नजर से ओकरा ओर देखत पूछनीं।

लइका एगो नीमन आह भरलस। फेर मेज के कगरी हाथ फेरलस, अपना मुड़ी के जानबूझ के एक ओर घुमवलस आ बनावटी दुखी आवाज़ में कहलस :

"कोल्या। बाकिर कहे के का बा? हमरा लगे जीये खातिर कुछुओ हइले नइखे। खाये के कुछुओ नइखे।"

"तोर बाप नइखन?"

कोल्या के आँख से आउर जादे लोर बहे लागल आ ऊ खामोशी से हामी भरलस।

"आ मतारी?"

ऊ अपना हाथ के ठेहुना के बीच में ध लेहलस, तनी आगे झुकल, आपन आँख खिड़की के ओर घुमवलस आ शानदार अभिनय कइलस।

"मतारी! उनका बारे में का कहीं? जब ऊ महज एगो क्लब में..... काम करत बाड़ी त उनका से का उम्मीद कइल जा सकत बा!"

लइका अपना के अतना क्षुब्ध क लेहलस जे ऊ आपन मुद्रा बदले के कवनो कोशिश ले ना कइलस आ खिड़की से बाहर ताकत रहल। ओकर आँख अबहुँओ लोराइल रहे।

"ई बात बा," हम कहनीं। "तब तें हमरा से का चाहत बाड़े?"

ऊ हमरा पर नजर धउरवलस आ आपन कन्धा उचकवलस।"

कुछ करहीं के परी। हमरा के कालोनी में भेज दीं।"

"कालोनी में? ना, तें कालोनी खातिर सही नइखे। ओजुगिया के जिनिगी तोरा खातिर कठिन होखी।"

ऊ उदास भाव से अपना माथा के हाथ पर टिका लेहलस आ उदास हो के कहलस :

"हम रहेब कइसे? खायेब का?"

"बाकिर तें त आपन मतारी के साथे रहत बाड़े, रहत बाड़े कि ना?"

"का केहू पाँच रूबल में गुजारा कर सकत बा? आ फेर कुछ पहिरे खातिर होखे के चाहीं।"

हम फैसला लेहनीं जे जवाबी हमला के समय नियरा गइल बा।

www.bhojpurisahityangan.com

"अच्छा, अब तें हमरा के एगो आउर बात बताव, तें स्कूल काहे छोड़ देहले?"

हमरा ई उम्मीद ना रहे जे कोल्या एह आक्रमण के झेल पाई। हम सोचले रहनीं जे ओकर धीरज के बाँध टूट जाई आ ऊ रोवे लागी। बाकिर अइसन कुछो ना भइल। कोल्या आपन चेहरा हमरा ओर घुमावत उस्तादी से ताज्जुब करत कहलस :

"जब खाये के कुछुओ हइले नइखे त स्कूल कइसे जा सकत बानीं?"

"तें आज सबेरे नाश्ता कइले?"

कोल्या कुरसी से उठल आ वार करे खातिर तइयार हो गइल। आखिर में ऊ समझ गइल जे ओकर नवटंकी के हमरा पर कवनो असर परे वाला नइखे। हमरा जस शंकालु के खिलाफ अपना कार्रवाई में ऊ कहलस :

"रउआ हमरा से सवाल काहे करत बानीं? अगर मदद करे के नइखीं चाहत त हम दोसर कवनो जगह चल जायेब। नाश्ता! हमरा नाश्ता के बारे में रउआ फिकिराह होखे के जरूरत नइखे। कइनीं त!"

"ओहो, त तें एह किसिम के बाड़े! हम कहनीं –"तें त साफे लड़ाकू बाड़े!"

"बेशक," कोल्या फुसफुसात कहलस, बाकिर आपन आँख नीचे झुका लेहलस।

"तें त बेशरम बाड़े," हम धीरे से कहनीं। "साफे बेशरम!"

कोल्या में तेजी आ गइल। ओकरा आवाज़ में बालकोचित स्वर वापस लवट आइल आ ओकरा आँख के सगरी लोर बिला गइल।

"रऊआ हमरा पर बिसवास नइखीं करत? नइखी करत? अइसन बात बा त अइसने कहीं!"

"बेशक, हम अइसने कहब। हमरा तोरा पर भरोसा नइखे। तोर सगरी बात झूठ बा। कुछ खाये के नइखे, कुछ पहिरे के नइखे! तें भुखमरी से मुअत त नइखे!"

"अगर रउआ भरोसा करे के नइखीं चाहत त मत करीं," कोल्या दरवाजा के ओर बढ़त लापरवाही से कहलस।

"ना, रुक जो," हम ओकरा के रोकनीं, "तें एजुगिया बइठल–बइठल हमार केतना समय गँवा देहले! अब हम चलेब।"

"कहँवा चलेब?" कोल्या घबरा के कहलस।

"घरे, तोरा मतारी से भेंट करे।"

"ओह! देखीं! हम कतहूँ ना जायेब! आ हम जाईं काहे?"

"काहे से का मतलब बा, तें घरे चलबे।"

"हमरा घरे जाये के कवनो जरूरत नइखे। रउआ का चाहत बानीं, एकर हमरा कवनो परवाह नइखे।"

हम ओह लइका के देख के बिखिया गइनीं।

"बहुत बात हो गइल। हमरा के आपन पता बताव। ना बतइबे का? नीमन बात बा। बइठ जो आ एजुगिये इन्तजार कर।"

कोल्या हमरा के आपन पता ना बतवलस। बाकिर ऊ ओह आराम– कुरसी

www.bhojpurisahityangan.com

पर बइठ गइल आ चुपचाप बइठल रहल। पाँच मिनट बाद जब ऊ एगो कार के अन्दर बइठल त ना–नुकुर कइले बिना ई बता देहलस जे ऊ कहँवा रहत बा।

दमित आ दयनीय नजर आवे वाला ऊ लइका हमरा के नवका श्रमिक क्लब के लमहर–चाकर अहाता के घुमावत ले गइल। बाकिर अब ओकर दुःख एगो लइका के दुःख रहे। एह से ओकर नाक, गाल, करिया जैकेट के आस्तीन आ उत्तेजना के घटावे वाला आउर सगरी चीज ओकरा दुःख में सक्रिय रूप से भाग लेत रहे।

परदा, फूल आ पलंग के लगे उजर कालीन से सजल एगो छोटहन साफ कमरा में जा के कोल्या सोझे एगो कुरसी में बइठ गइल। अपना माथा के बिछावन पर टिका लेहलस। फेर अस्पष्ट स्वर में बड़बड़ात केहू के खिलाफ शिकायत करत रोवे लागल। बाकिर ओह घरी अपना टोपी के बरियारे हाथे धइले रहे। ओकर मतारी अपना बेटा जस भरल–पुरल गाल आ बड़हन आँख वाली एगो जवान मेहरारू रहली। ऊ कोल्या के हाथ से टोपी ले के एगो खूँटी पर टाँग देहली। फेर हमरा ओर देखत मुसुकी छोड़ली।

"ई ओजुगिया का करत रहे? का रउआ ओकरा के वापस ले अइनीं?"

कोल्या क्षण भर खातिर आपन सुसुकी रोक देहलस, जवना से ऊ अइसन कवनो चाल के विफल कर सके जे हम ओकरा खिलाफ आजमा सकत रहनीं।

"हमरा के केहू नइखे ले आइल। हम खुदे उनका के ले आइल बानीं। ऊ एजुगिया आवे खातिर जोर देत रहले। अब चलीं, बोलीं हमरा बारे में....."।

ऊ ओह मुलायम बिछावन में फेर आपन मुँह गोत लेहलस। बाकिर अब ऊ कवनो आउर तरे से एक ओर हो के रोअत रहे, काहेकि अब ऊ अपना माथा के दोसर हिस्सा से हमार आ अपना मतारी के बतकही सुनत रहे।

ओकर मतारी एकदमे शान्त रहली।

"हम नइखीं जानत जे एकरा के का करीं। ऊ पहिले अइसन ना रहे। बाकिर बाद में ऊ चेर्नीगोव प्रदेश में एगो राजकीय फार्म के डायरेक्टर माने हमार भाई के साथे रहे गइल रहे, ओकरे ई नतीजा बा। ई मत सोचब जे ऊ जवन कहत बा, सही बा। ऊ खुदे नइखे जानत जे ऊ का चाहत बा। ऊ जेने जात बा, ओजुगिये कुछ ना कुछ माँगत रहे के सीख लेले बा। ऊ स्कूल छोड़ देले बा। रउआ जानत बानीं, ऊ चउथा क्लास में रहे। काश! ऊ पढ़ाई करित। बाकिर ऊ अध्यक्ष के लगे जात रहत बा आ उनको के तंग करत बा। तनी ओकरा से पूछीं जे ओकरा लगे का नइखे। पहिरे के कपड़ा बा, पैर में जूता बा, एगो नीमन पलंग बा। हम ई ना कहब जे हमरा किहाँ तरे–तरे के पकवान पाकत बा, बाकिर ऊ कबहूँ भूखे ना रहे। ई बात साँच बा जे डायरेक्टर किहाँ बेहतर रहे। आखिर ऊ देहाती इलाका बा, ओजा राजकीय फार्म बा आ उनका घर के लगे सहायक खेत बा।"

कोल्या रोअल–धोअल बन्द क देहलस। तबो आपन माथा अबहुँओ बिछावाने पर धइले रहे आ आपन गोड़ से कुरसी के नीचे कुरेदे लागल। जाहिर रहे जे ऊ आपन कवनो बात के बारे में सोचत रहे आ आपन मतारी के शालीन विचार के

www.bhojpurisahityangan.com

खिलाफ भीतरे–भीतर विरोध करत रहे।

हम ओकरा मतारी के अद्‌भुत आशावादी ढंग देख के दंग रह गइनीं। उनकर कहनाम से ई साफे झलकत रहे जे उनका आपन बेटा के ले के कठिन जिनिगी बितावे के परत रहे। बकिया सभकुछ ठीक रहे आ ऊ सभ बात से सन्तुष्ट रहली।

"एकरा पहिले आउरो खराब रहे। नब्बे रूबल, तनी सोचीं! बाकिर अब हमरा एक सौ बीस रुबल मिल रहल बा आ सबेरे के समय खाली रहत बा। हम आउरो काम से कुछ कमा लेनीं। हम अध्ययन करत बानीं। तीन महीना के भीतरे हमरा के लाइब्रेरी में ट्रान्सफर क देहल जाई, तब हमरा एक सौ अस्सी रूबल मिले लागी।"

ऊ शान्त आ निश्चिन्त भाव से मुसुकइली। उनकर हाव–भाव में तनाव भा उत्तेजना भा अपना पर बिसवास के अभाव के कवनो चिन्हासी ले ना रहे। ऊ मन से आशावादी रहली। उनकर उज्ज्वल चरित्र के तुलना में हमरा उनकर बेटा के विवेकहीन आ झूठहूँ के विद्रोह जादे बेतुका लागत रहे। बाकिर ओकरा मतारी के एमे कवनो असामान्य बात ना लउकत रहे।

"ओकरा के कुछ समय ले उफनाये दीं। एह से ओकरे फायदा होखी। इहे हम ओकरा के बतवनीं : अगर तोरा हमरा साथे रहल पसन्द नइखे त कवनो नीमन जगह खोज ले। अगर तें स्कूल छोड़े के चाहत बाड़े त छोड़ दे आ खुश रह। बाकिर धेयान राख जे हम एह कमरा में तोर बड़ाबड़ाइल सुने के नइखीं चाहत। कवनो अइसन दोसर आदमी के खोज ले, जे तोरा जस मूरख के बात सुने के चाहत होखे। ऊ अपना मामा किहाँ जा के बिगड़ गइल बा। ओजुगिया रोजे फोकट के सिनेमा! बाकिर हम सिनेमा खातिर धन कहँवा से ला सकत बानीं! ऊ एक जगे बइठे आ किताब पढ़े! ई कवनो बात नइखे, सम्हर जाई! एह घरी ऊ कालोनी जाये के चाहत बा। ओजुगिया ओकर कुछ सँघतिया बाड़े सन, एही से....."।

कोल्या अब कुरसी पर चुपचाप बइठल रहे। आपन मतारी के मुसुकियात जीवन्त हाव–भाव के धेयान से आ हार्दिकता के भाव से देखत रहे। ऊ ओकरा ओर धेयान से देखत बनावटी कोमलता के साथे उलाहना देत कहली :

"ऊँह, ओजुगिया छोट नवाब जस बइठल बा। तोरा मतारी के साथे रहल काफी नइखे! जो हम तोरा से बात ना करब। जो कवनो बेहतर जगह खोज ले। कतहूँ चल जो आ ओजुगिया भीख माँगल शुरू क दे....."।

कोल्या आपन मुड़ी पाछे ओर कइलस। फेर नजर चुरावत दोसरा ओर देखे लागल।

"बाकिर माई, हे तरे काहे बोलत बाड़ी? हम कतई भीख नइखीं माँगत। बाकिर सोवियत शासन में हमरा माँगे के अधिकार बा।"

"कवन चीज माँगे के?" ओकर मतारी मुसुकी छोड़त कहली।

"कवनो चीज, जे हम चाहत बानीं," ऊ आउर बेसी नजर चुरावत जवाब देहलस।

हमरा एकर फैसला ना करे के चाहीं जे एह झगड़ा में दोष केकर बा। जब

www.bhojpurisahityangan.com

सगरी बात के जानकारी ना होखे त फैसला कइल बेसी मोसकिल काम बा। हमरा ऊ लइका आ ओकर मतारी दुनू जन नीक लागल। हम आशावाद के बहुते प्रशंसक हईं।

बाकिर..... बाकिर एकरा बादो कोल्या आ ओकर मतारी के हालत ना सुधरल। कवनो तरे से ई भइल जे लइका के जरूरत एगो अइसन राहे–बाटे चल परल रहे, जवना के ना त मतारी के रोजाना के संघर्ष से कवनो वास्ता रहे आ ना ओकरा सफलता आ आस के साथे। एकरा बदे दोष केकर रहे? ओकर डायरेक्टर मामा के त एकदमे ना रहे। अपना मामा के साथे रहला से कोल्या के अनाकार आ गलत–सलत ढंग से उपजल महत्वकांक्षा के उकसावा भर मिलल रहे।

बाकिर ई समझ में आवे जोग बात बा जे हमनी के स्वच्छन्द रूप से बने वाली सगरी इच्छा के आवश्यक माने के कवनो अधिकार नइखे। एकर मतलब होखी हर व्यक्तिगत आवेग के बेलगाम चले देहल। ओकरा चलते होखे वाला दुष्परिणाम के साथे हर अलग मामला में अलग तरे के संघर्ष करे के परी। एह दुष्परिणाम में मुख्य बा व्यक्तित्व के विकृति आ ओकर उम्मीद के बरबादी। ई दुनिया के पुरान कहानी बा, काहेकि आवश्यकता के सनक उत्पीड़क के सनक होत बा।

पहिला नजर में कोल्या के बेवहार एगो अइसन सोवियत लइका के बेवहार जस लउकत बा, जे इतिहास के विकास–क्रम से अइसन मोहित हो गइल बा जे ऊ परिवार के गाड़ी के प्रगति से उबिया गइल बा। एह मामला के सामान्य माहौल अतना सुखद बा जे कोल्या के मदद करे आ ओकर अस्पष्ट कामना के सन्तुष्ट करे में मदद करे के इच्छा कइले बिना नइखे रहल जा सकत। बहुते लोग अइसने करतो बा। हम अइसन कृपा पावे वाला अनेक लइकन के देखले बानीं। ऊ कबहूँ–कभार नीमन बन पावे ले सन। कोल्या जइसन लइका, भले बहुते कम मात्रा में काहे ना होखे, कवनो आउर चीज के अलावे स्वेच्छाचारी जादे बाड़े सन। पहिले ऊ अपना मतारी–बाप के पराजित करत बाड़े सन। फेर अपना माँग से राजकीय संस्थान के प्रतिनिधि के पाछे पर जात बाड़े सन। एजुगिया ओकनी के अपना राह पर लगातारे जोर देत बाड़े सन आ ओकनी के समर्थन में जवने हाथे लाग जाव, ओकरे सहारा लेत बाड़े सन– शिकायत, रोअल–धोअल, अभिनय आ दुस्साहस।

कोल्या के सोवियत बाहरी रूप–सरूप आ ओकर बचकाना बहाना के पाछे एगो नैतिक रिक्तता छुपल बा। कवनो तरे के अइसन सामूहिक अनुभव के अभाव होत बा, जे बारह बरीस के हर लइकन में होखे के चाहीं। अगर लइकन के शुरुआती बरीस में पारिवारिक जिनिगी एकवठ ना रहल होखे, रोजाना के आदत ना रहल होखे, प्रयास के निश्चित क्रम ना रहल होखे, सामूहिक अदलेन–बदलेन के बेवहार ना रहल होखे त अइसन रिक्तता हरमेसा जनम लेत रही। अइसन मामला में लइकन के जरूरत ओकनी के कल्पना के अलग–थलग विस्तार में पसरत जात बा। ओकर आउर लोग के जरुरत से कवनो वास्ता नइखे रहत। नैतिक नजरिया से बेसकीमती जरूरत सामूहिक अनुभव के समय विकसित हो सकत बा। बेशक बारह बरीस के

www.bhojpurisahityangan.com

उमिर में ई एगो दृढ़ कामना के रूप में प्रकट ना होखी, काहेकि एकर जड़ विशुद्ध कल्पना के झिलमिलात दृश्य में ना, बलुक अबहीं ले अपर्याप्त रूप से निर्धारित सामूहिक अनुभव के पेचीदगी से भरल धरती में, लइकन के साथे कमोबेश निकटता से जुड़ल अनेक लोग के उलझल चरित्र में, मानवीय सहायता आ मानवीय जरूरत के जागरूकता में निर्भरता, दायित्व, जिम्मेदारी आ आउरो बहुते बात के अहसास में निहित बा।

इहे कारण बा जे लइकाईं के शुरुआती दिन में सही तरे से संगठित एगो पारिवारिक समूह के जादे महातिम बा। कोल्या अइसन समूह में नइखे रहल। ओकरा खाली अपना मतारी के साथ भेंटाइल। ओकर मतारी केतनो नीमन काहे ना होखस, महज उनकर साथ रहला से सकारात्मक नतीजा नइखे निकल सकत। बलुक एकरा विपरीत, एगो नीमन आदमी के निष्क्रिय साहचर्य से जादे खतरनाक आउर कुछुओ नइखे, काहेकि ई अहंकार के बढ़ावे खातिर अनुकूल माहौल बनावत बा। ई ओह मामला में से एगो बा, जवना में अनेक भला लोग हताश हो के हाथ झटकत चिल्लाये लागत बा– "एह दुनिया में ई केकरा जइसन बनल बा?"

ओल्योशा चौदह बरीस के बा। ओकरा चेहरा पर गुस्सा के लाली बा आ ऊ मुँह फुलवले असन्तुष्ट लउकत बा।

"का तोरा लगे पहिला दरजा के टिकट बा? हम पहिला दरजा से ना जायेब!"

ओकर मतारी घोर अचरज से ओकरा के देखत बाड़ी।

"काहे ना जइबे?"

"पिछला बरीस हम "डीलक्स" से गइल रहनीं आ अब पहिला दरजा से, ई काहे?"

पिछला बरीस हमरा लगे जादे पइसा रहे ....."

"एकर पइसा से का मतलब?" अल्योशा तिरस्कार के भाव से कहत बा। पइसा? हँ–हँ, हम जानत बानीं जे का वजह बा। एह से जे हम जा रहल बानीं। हमरा खातिर कवनो गाड़ी ठीक बा!"

"तें जवन सोचत बाड़े सोच," ओकर मतारी अनमनाहे जवाब देहली। "अगर तोरा ई पसन्द नइखे त तोरा जाये के कवनो जरूरत नइखे।"

"अच्छा त ई बात बा।" अल्योशा घृणा के भाव से कहलस। "हमरा जाये के कवनो दरकार नइखे! बेशक, तहनी के खुशी होखी! बलुक तें हमार टिकटो बेच सकबे। ऊ त सभ पइसा बा। बा कि ना?"

ओकर मतारी कन्धा उचकावत आगे बढ़ गइली। उनका अइसन बेतुका सवाल से निबटे के उपाय सोचे खातिर समय चाहीं।

बाकिर अल्योशा के बड़ बहिन नाद्या अतना सोझ आ सहज ना रहे। ऊ मामला के कबहूँ टालत ना रहे। ओकरा गृह–युद्ध का दिन के मुसीबत इयाद बा। आपन घर छोड़ के लोग से खचाखच भरल माल–गाड़ी के डिब्बा में बइठ के गइल आ मोर्चा के लगे संजोगे से कस्बा में रहे के जोगाड़ बइठावल इयाद बा। ओकरा संघर्ष

www.bhojpurisahityangan.com

के बेर कसल दाँत आ धधकत आवेग इयाद बा। आवे वाला दिन के अनिश्चितता आ विजय पर प्रेरणा देवे वाला बिसवास इयाद बा।

नाद्या चिढ़ावे खातिर अपना भाई के ओर देखत बिया आ जवना तरे से ऊ होठ काटत बिया, ओह से अल्योशा बूझ जात बा जे ऊहो ओकर निन्दा करत बिया। ऊ जानत बा जे ओकर बहिन के अवहेलना कइला पर ऊ सोझे अपना पूरा ताकत से एकरा पर टूट परी। अल्योशा अपना कुरसी से खाड़ा हो जात बा। अपना के शान्त देखावे खातिर एगो धुन गुनगुनात बा। बाकिर सभ बेकार, छोटहने बाकिर कान बेधे वाला एगो जोरदार धमाका ओकर धुन में बिघिन डाल देत बा।

"ना, तें दूधमुहाँ छोकरा, तें हमरा के ई बूझत बाड़े जे तोरा डीलक्स से जाये के आदत कहँवा से परल?"

अल्योशा हेने–होने ताकत एगो बालकोचित टालू जवाब खोज लेहलस :

"का हम ई कहनीं जे हमरा ओकरे आदत बा?" हमरा त असहीं दिलचस्पी रहे। केहू के दिलचस्पी हो सकत बा। नइखे हो सकत का....."।

"कवनो संजोग से तोरा तीसरा दरजा के डिब्बा में दिलचस्पी काहे नइखे?"

"हँ, ओहू में बा। बाकिर हम त खाली..... ऊ त बाद में होखी..... अगिला बेर। जवन होखे तोरा एकरा से कवन मतलब बा?"

"हमरा मतलब बा!" ओकर बहिन गम्भीर हो के कहलस। "पहिला बात त ई बा जे तोरा सागर तीरे जाये के कवनो अधिकार नइखे। कतई कवनो अधिकार नइखे! तें त एकदमे स्वस्थ बाड़े। कवनो अइसन कामो नइखे कइले जे तोरा छुट्टी बितावे के कवनो हक देहल जाव। बुझाइल? हम तोरा जइसन लोग से लाड़–दुलार काहे करीं? बताव काहे करीं?"

"अच्छा त तें ई सोचत बाड़ी?" अल्योशा शक के साथे बात शुरू करत बा। "त तोरा कहला के मोताबिक हमरा खाना खाये के कवनो हक नइखे। हम ओकरो लायक नइखीं ....."

बाकिर ऊ रणनीतिक पलायन के जरूरत महसूसत बा। साँझ के का होखी, केहू नइखे जानत। नाद्या कवनो तरे के गन्दा चाल चले में माहिर बिया आ सागर तीरे जतरा के सम्भावना आगे घसक सकत बा, जे 'वयस्क' के युग कहात बा। पनरह मिनट के भीतरे अल्योशा अपना हाथ के मज़ाकिया ढंग से उठावत बा।

"हम आत्मसमर्पण करत बानीं! अगर तें चाहत बाड़ी त हम माल–गाड़ी के डिब्बा में चल जायेब।"

"डीलक्स" डिब्बा में जाये के अल्योशा के जरूरत ओकर कल्पना में ना उपजल। ऊ अनुभव से उपजल रहे। बाकिर एकरा बादो हर केहू इहे बूझत रहे जे ई जरूरत कुछ हद ले अनैतिक रहे। ओकर मतारियो बूझत बाड़ी, बाकिर ऊ एह माहौल के बदले में समरथ नइखी।

हमनी के परिवार बुर्जुआ परिवार जस एगो बन्द भइल सामूहिक निकाय नइखे। ई सोवियत समाज के एगो अभिन्न अंग आ समाज के नैतिक माँग से स्वतंत्र

www.bhojpurisahityangan.com

रूप में अपना निज के अनुभव के निर्माण के जे कोशिश बा, ऊ निश्चित रूप से एगो अलार्म के घण्टी नियर बेमेल आ अनुपातहीनता के जनम दी।

अल्योशा के परिवार के अनुपातहीनता एह तथ्य से उपजल बा जे मतारी भा बाप के जरूरत यांत्रिक रूप से ओह लोग के लइकन के जरूरत बन जात बा। बाप के जरूरत सोवियत समाज में उनकर ख़ास, दायित्वपूर्ण आ सघन श्रम से, सोवियत राज्य में उनकर श्रम के महत्त्व से बनत बा। अल्योशा के जरूरत कवनो सामूहिक श्रम के बदौलत पैदा नइखे भइल। एह से एकरा के उचित नइखे ठहरावल जा सकत। ऊ ओकर बाप के उदारता के नतीजा बा। ओकर ई जरूरत बाप के देहल एगो अनुदान बा। सैद्धान्तिक रूप से अइसन परिवार पुरातन तरे के पितृसत्तात्मक राजतंत्र बा, कवनो एक तरे के प्रबुद्ध निरंकुश तंत्र बा।

हमनी के देश में अइसन परिवार अपवाद बा। ओमे मौखिक रूप से सोवियत विचारधारा के पुरान किसिम के अनुभव के मेरावट क देहल गइल बा। एह तरे के परिवार के लइका अइसन सन्तोष में नियमित रूप से भाग लेत बाड़े सन, जे न्याय–संगत नइखे। अइसन लइकन के दुखद भविष्य तय बा। आगे जा के ओकनी के एगो कठिन दुविधा के सामना करे के परी– या त ऊ वयस्क उमिर में नया तरे से अपना जरूरत के प्राकृतिक इजाफा के अवस्था से गुजरल शुरू करे भा फेर ऊ समाज में अइसन महान आ जरूरी कुशल श्रम करे, जवना से एह जोग बन सके जे समाज ओकनी के विशेष आ जटिल जरूरत के स्वीकृति दे सके। एमे दोसरका विकल्प खाली असाधारण मामला में सम्भव बा।

हम एह विषय पर तरे–तरे के साथी–समाजी से चरचा कइले बानीं। ओमे से कुछ लोग घबरा जात बा :

"रउआ एमे का कर सकत बानीं?" अगर हम परिवार के साथे छुट्टी बितावे जात बानीं त का रउआ ई बूझत बानीं जे हम एगो डिब्बा में जाईं आ परिवार दोसरा डिब्बा में?"

अइसन घबराहट खाली एगो बात के पुष्टि करत बा– समस्या के जड़ ले जाये के आ नया रुख के निर्माण खातिर जरूरी सक्रिय चिंतन के अनिच्छा। एगो 'डीलक्स' डिब्बा एगो लइका के नियति से जादे कीमती नइखे, बाकिर ई महज डिब्बा के मसला नइखे। अगर परिवार में समुचित माहौल नइखे, सुस्थिर आ स्वस्थ पर्यावरण नइखे त कवनो करामात हालात के सुधार नइखे सकत।

कवनो ख़ास मोका पर बाप का साथे कवनो दरजा के डिब्बा में जतरा कइल तनिको हानिकारक नइखे, बशर्ते ई साफ होखे जे ई खुशगवार मोका लइकन के बेसी सुविधा के कवनो अधिकार से पैदा नइखे भइल, बलुक बाप के साथे रहला से उनकर कामना के चलते पैदा भइल बा। अइसन कई गो सोवियत परिवार बा, जहँवा लइकन के जरूरत ओकनी के बाप के सेवा के साथे नइखे जुड़ल। ओह मामला में अल्योशा के निर्देशक तर्क अलग होखी।

एकर मतलब ई नइखे जे एजुगिया लइकन खातिर ख़ास तरे के बेवहारिक

www.bhojpurisahityangan.com

कार्यक्रम सँकारल जाव। समस्या के पूरा परिवार के सामान्य शैली से हल कइल जात बा। अगर बाप के एगो नागरिक के हैसियत से कवनो ख़ास तरे के सुबहिता के अधिकार बा त ओकरा के परिवार के सदस्य के हैसियत से खुदे संयम बरते के चाहीं। सादगी के कुछ मानक ओकरा खातिर जरूरी बा.....।

नैतिक गहनता आ पारिवारिक समूह के अनुभव के एकवठल सोवियत लालन–पालन के जरूरी शर्त बा। ई बात ओह परिवार पर लागू होत बा, जेकरा लगे बहुते जादे भा बहुते कम बा।

हमनी के देश में खाली ऊहे आदमी श्रेष्ठ बा, जेकर जरूरत आ कामना एगो सामूहिकतावादी के जरूरत आ कामना बा। हमनी के परिवार अइसन सामूहिकता के पाले–पोसे खातिर उपजाऊ जमीन प्रस्तुत करत बा।

***

www.bhojpurisahityangan.com

तीसरा अध्याय

स्तेपान देनीसोविच वेत्किन से हमार भेंट 1926 के गरमी के शुरुआत में भइल रहे। हम आजो उनका अइला के शायद संकोच से इयाद करत बानीं। ऊ युद्ध के घोषणा कइले बिना एगो शत्रु सेना के अचके आक्रमण जइसन रहे।

बाकिर एकरा बादो ओह घटना में युद्ध जस कवनो चीज ना लउकत रहे। स्तेपान हमरा अध्ययन कक्ष में शान्त भाव से सकुचाते अइले आ आपन टोपी के दुनू हाथे धइले नम्रता से झुक के कहले :

"अगर रउआ व्यस्त बानीं त हम रउआ के परेशान करे खातिर माफी चाहत बानीं। हमार एगो अल्पमत अरज–निहोरा बा।"

स्तेपान 'अल्पमत' शब्द बोलत घरी मुसुकइबो ना कइले। उनकर हाव–भाव संयमित, गम्भीर आ उदास होखे के जगह व्यग्र जादे रहे।

ऊ हमरा ओर मुखातिब हो के एगो कुरसी पर बइठ गइले। अब हम उनकर चेहरा के ठीक से देख सकत रहनीं। उनकर मोंछ अतना ना गझिन रहे जे उनकर मुँह साफे तोपा गइल रहे। अपना मोंछ के भीतरे होठ के गजबे रुचिकर ढंग से दबावत रहले। अइसन लागत रहे जे ऊ कवनो चीज चूसत होखस। बाकिर, असल में उनका मुँह में कुछुओ ना रहे। उनकर ई चेष्टा चिन्ता जतावत रहे। स्तेपान के ललछहूँ दाढ़ी दाहिने ओर तनी ओलरल आ अँइठाइल रहे। शायद एह से जे ऊ आपन दाहिना हाथे ओकरा के अकसरे घींचत रहस।

स्तेपान कहले– "देखीं, बात बा जे हम एगो अध्यापक बानीं। एजुगिया से जादे दूर ना, मतोविलोव्का में....."।

"ई त रउआ नीमन बात बतवनीं। माने हमनी के सहजोगी बानीं सन....."।

बाकिर स्तेपान हमरा हुलास में हिस्सा ना लेहले। ऊ आपन ललछहूँ दाढ़ी के एगो बड़हन हिस्सा के ध के अगली–बगली देखत तनी रूखापन से जवाब देहले :

"हम ई जरूर कहब जे ई एगो नीमन बात बा। हम अपना काम के निश्चित रूप से पसन्द करत बानीं, बाकिर निष्कपट भाव से कहत बानीं जे बात बनत नइखे। जहँवा ले अध्यापन के सम्बन्ध बा, ऊ त बिलकुल ठीक बा, बाकिर संगठन के नजरिया से ई कामे नइखे आवत।"

www.bhojpurisahityangan.com

"खराबी का बा?"

"असल में संगठनात्मक नजरिया से त ना, माने, ई कहे के चाहीं जे रोजाना जिनिगी के नजरिया से। हम चाहत बानीं जे रउआ हमरा के एगो काम दीं– लोहार के रूप में।"

हम अपना अचरज के लखार ना होखे देहनीं। ऊ हमरा पर एगो उपरवार नजर धउरवले। फेर पहिलहूँ से जादे रूखापन से एगो अइसन ख़ास आकर्षक गम्भीरता से आपन बात जारी रखले, जवना से उनकर शब्दन में पकिया बिसवास हो जात रहे।

"हम एगो नीमन लोहार बानीं। खाँटी लोहार। हमार बापो लोहार रहले। एगो शिल्प–कला स्कूल में। एही से हमहूँ एगो अध्यापक बन सकनीं। एजुगिया राउर एगो छोटहन फैक्ट्री बा। रउरा एगो नीमन लोहार के जरूरतो बा आ हम एगो अध्यापको बानीं।

"ठीक बा," हम सहमत हो गइनीं। "का रउआ एगो फ्लैट के जरूरत परी?"

"जी, हम..... अब कइसे कहीं? बेशक, एगो भा दूगो कमरा। हमार परिवार बड़हन बा, ...ख़ासा बड़हन बा।"

स्तेपान आपन होठ दबवले आ कुरसी में बइठले–बइठल आपन जगह बदल लेहले।

"अध्यापक भइल एगो नीमन धन्धा बा, बाकिर एकरा से हमरा जइसन परिवार के खरची चलल मोहाल बा। एकरा अलावे हम गाँव में रहत बानीं। लइका कहँवा जइहें सन?"

"रउरा केतना लइका बाड़े सन?"

ऊ हमरा ओर देखत पहिला बेर मुसुकी छोड़ले। ओह मुसुकी में हम, आखिर में असली स्तेपान के देखनीं। उनकर चिन्तित चेहरा आ ओह मुसुकी में कवनो तालमेल ना रहे। जब ऊ मुसुकी छोड़ले तवने घरी उनकर दाँत लउकल। एकदमे भकभक उजर आ चमकीला रहे। अपना एह मुसुकी के साथे स्तेपान बहुते दयालु आ ईमानदार लागत रहले।

"ई सवाल हमरा खातिर सभसे जादे कठिन बा। एकर जवाब देवे में हमरा साँचो लाज लागत बा। बाकिर रउआ त जानते बानीं जे हमरा अकसरे एकर जवाब देवे के परत बा।"

उनकर मुसुकी एक बेर फेर चमकल आ मोंछ के पाछे अलोत हो गइल। उनकर होठ फेर व्यग्रता से दबल आ ऊ आपन नजर हमरा ओर से फेर लेहले।

"तेरह गो। तेरह गो लइका!"

"तेरह गो?" हम घोर अचरज से चिल्ला उठनीं। "रउआ इहे कहनीं नूँ?"

स्तेपान कवनो जवाब ना देहले। ऊ अपना कुरसी पर आउर जादे व्यग्रता से कुलबुलाये लगले। हमरा एह रुचिकर आदमी खातिर अफसोस होखे लागल। उनकर मदद करे खातिर एगो दुर्निवार इच्छा हमरा के जकड़ लेहलस। बाकिर

www.bhojpurisahityangan.com

एकरा साथे हमरा वैर भाव महसूस भइल। ओइसन वैर भाव जे ओह हालत में हरमेसा होला– जब कवनो आदमी एह तरे के काम करत बा, जवन रउआ साफे विवेकहीन लागत बा। हमार ई सगरी भावना एगो अइसन उद्‌गार के रूप में उभरल जे ओकरा से हमरा खुदे अचरज भइल।

"बजर परो हमरा पर! बाकिर कइसे..... अइसन कवन भूत रउआ पर सवार हो गइल रहे?"

ऊ हमार अशिष्ट उद्‌गार अपना थाकल आ बेचैनी वाला पहिलका मुद्रा में सुनले। फेर अपना मोंछ के कगरी से मुसुकी छोड़ले :

"एगो परिवार में एगो से अठारह गो ले लइका हो सकत बा। हम पढ़ले बानीं जे कबो–कबो अठारह गो ले भइल बा। हमरा तेरह गो हो गइल।

" 'हो गइल' से राउर का मतलब बा?"

"ना त आउर कइसे? अगर कुछ लोग के अठारह गो होत बा त कवनो जगह तेरहो गो होखहीं के चाहीं। आ हमार अतने भइल।"

स्तोपान के साथे हमार एगो समझौता हो गइल। हमरा एगो नीमन लोहार के जरूरत रहे। स्तेपान के खेयाल रहे जे लोहार के हैसियत से ऊ अध्यापक के मुकाबले जादे कमा सकिहें। एह मामला में हमार संगठन आगे बढ़ के उनकर सहजोग कइलस।

फ्लैट के मसला जादे कठिन रहे। ख़ास जोगाड़ भिरा के हम उनका खातिर एगो कमरा के बेवस्था क पवनीं। एकरो खातिर लगातारे कई गो स्थानान्तरण उठावे आ धरे के परल। ई साँच बा जे हमार श्रमिकन के अइसन असाधारण परिवार में अतना दिलचस्पी हो गइल रहे जे विरोध करे के बात केहू ना सोचल। एह मसला पर हमार भण्डारी पिलिपेंको के कुछ कहे के रहे :

"बाकिर हम बूझत बानीं जे ई सुअरपन बा। ढील देवे में हम कवनो एतराज नइखीं जतावत। बाकिर एगो आदमी में थोरकियो अकिल आ सहज बुद्धि त होखहीं के चाहीं। हम कहत बानीं जे रउआ जवन चाहत बानीं, ऊ करीं, बाकिर एगो नजर त राखीं। मान लीं, मिसाल के तौर पर राउर तीन गो बा। तीन गो, चार गो, फेर रउआ एगो नजर डालीं आ देखीं जे पाँचवा धमक गइल। हम कहत बानीं, तनी गौर करीं, पाँच के मतलब बा अब रउआ गिनत रहे के चाहीं– अगिला होखी त छव गो हो जाई। रउआ अपना होश–हवाश में रहे के चाहीं आ गणना करे के चाहीं।"

बाकिर पुरान औजार निर्माता कामरेड चूब, जेकरा छव गो लइका रहे, समझवले जे सामान्य अंकगणित से समस्या हल ना होखी।"

"त तूँ ई कहत बाड़, कहत बाड़ नूँ : गिने के! तूँ बूझत बाड़ जे हम ना गिननीं। बाकिर भाई, एह मामला में तूँ का कर सकत बाड़। जवन चीज ई काम करत बा, ऊ बा गरीबी! एगो अमीर आदमी के लगे दूगो खटिया बा आ ऊ अकेले सूतत बा। बस, मामला खतम। बाकिर एगो गरीब आदमी एके गो खटिया से काम चलावत बा। अब गिनत रह, जेतना मन करे, एकर असर त परबे करी आ तहरा पतो ना

www.bhojpurisahityangan.com

चली....."।

".....कि चूक हो जाई," भण्डारी आपन बात खतम कइले।

"बेशक, कबो–कबो गिनती में गड़बड़ी होइये जाला" चूब हँसत कहले। ऊ मज़ाक करे खातिर हरमेसा तइयार रहत रहले। गोल–मटोल आ मोटहन एकाउण्टेण्ट पिजोव उनकर बतकही सुनत रहले। फेर एह असाधारण व्यापार के व्याख्या में आपन सहजोग देहले :

"अइसन मामला में गलत गिनती बिलकुल सम्भव बा। एजुगिया मुख्य कारक अतिरिक्त गुणांक बा। अगर राउर एगो लइका बा आ दोसर, जइसन कहल जाला जे होखे वाला बा त रउआ ओमे सौ प्रतिशत आउर जुड़े के उम्मीद करत बानीं। एगो सतर्क आदमी क्षण भर खातिर सोची जे सौ प्रतिशत, ई त बहुते बड़हन गुणांक बा। बाकिर अगर राउर पाँच गो पहिलहीं से बा त छठवाँ खाली बीस प्रतिशत बा, जवन कवनो ख़ास गुणांक नइखे। कवनो आदमी आपन कन्धा उचकावत कही जे आवे दीं ओकरा के। बीस प्रतिशत जोखिम कवनो बड़हन नइखे।"

सभे हँसे लागल। गुणांक के एह अकल्पनीय चक्कर से चूब ख़ास तरे से प्रभावित भइले आ एह सिद्धान्त के लगले अपना मामला में लागू करे के माँग कइले :

"अरे, फटकार परो हमरा पर! एकर मतलब ई जे अगर हमरा सातवाँ जनमे वाला बा त एकर गुणांक केतना बनी, ई....."।

"नम्बर सात? पिजोव आसमान के ओर नजर धउरवत सही–सही जवाब देहले :

"एह मामला में गुणांक होखी सोरह दशमलव छव प्रतिशत।"

"नाहिंये के बराबर!" चूब खुशी के साँस लेहले, "चिन्ता के कवनो बाते नइखे!"

"एही तरे ई आदमी तेरहवाँ ले पहुँच गइल'' भण्डारी हुलास से कहले।

"बिलकुल इहे बात," एकाउण्टेण्ट पिजोव हामी भरले, "तेरहवाँ के गुणांक बा आठ दशमलव तीन प्रतिशत।"

"अरे वाह, ई त धेयानो देवे जोग नइखे।" चूब अइसन ताजातरीन खोज से वशीभूत हो गइले।

जब स्तेपान फ्लैट देखे दोबारा अइले त सभे एही खुश मिजाज माहौल में उनकर अगवानी कइल। स्तेपान बाउर ना मनले। ऊ बूझत रहले जे गणित के नियम अकाट होला।

हमनी के पूरा झुण्ड फ्लैट देखे गइल। कमरा औसत आकार के रहे, लगभग पनरह वर्गमीटर में। ई ओह कुटीर में से एगो रहे जवना के हमार फैक्ट्री पुरनका शासन से विरासत में पवले रहे। कमरा के देखत घरी स्तेपान बेचैनी से अपना होठ के चूसत–चबावत रहले।

"बाकिर ओजुगिया हमरा लगे दूगो कमरा रहे....." ऊ उदास हो के अइसन इयाद कइले जइसे खुद अपने से बतियावत होखस। खैर, का करीं, हमरा कवनो

www.bhojpurisahityangan.com

तरे काम चलावहीं के परी....."।

"हम का कर सकत रहनीं? हकबकाइले हम स्तेपान से मूरखता वाला एगो सवाल पूछ बइठनीं :

"का रउआ लगे बहुते फर्नीचर बा?"

स्तेपान मोसकिल से नजर आवे वाला उलाहना भरल निगाह से हमरा के देखले।

"फर्नीचर? का रउआ बूझत बानीं जे हमरा फर्नीचर के चिन्ता बा? ओकरा के राखे के त कवनो जगहे नइखे।"

अचके एगो अद्‌भुत मुसुकी से उनकर चेहरा खिल उठल, जइसे ऊ हमार शर्मिन्दगी दूर करे में सहजोग करत होखे।

"असलियत ई बा जे बेजान चीज के राखे खातिर जगह नइखे।"

चूब बगैर हजामत बनावल आपन दाढ़ी के खजुआवत कनखी मरले।

"अइसन वस्तुगत हालात में हमरा साथी के फर्नीचर के ना, बलुक बंक के जरूरत बा। ठीक ओइसने बंक जइसन औजार के शेड में बनल बा। अगर अध्यक्ष के एतराज ना होखे त हमनी कुछ बंक लगवा सकत बानी सन।"

ऊ आपन निगाह से कमरा के ऊँचाई नपले।

"एक के ऊपर एक तीन गो कतार आ चउथका खातिर फर्श में जगह।"

"तूँ एजुगिया तेरह गो नइख बना सकत।" भण्डारी उदास हो के कहले। साँस लेवे खातिर केतना घनमीटर जगह बाँची? एकदमे ना। ऊपर से रउआ दू जन आउर....."।

स्तेपान कबहूँ एगो सलाहकार के ओर देखस त कबहूँ दोसरा ओर। बाकिर ऊ परेशान ना लउकत रहले। सम्भव बा जे ऊ एह हालात के पहिलहीं अन्दाजा लगा के अपना सामान्य योजना में शामिल क लेले रहले। ऊ आपन पहिले के निर्णय दोहरवले :

"अच्छा, त हम दस तारीख के सपरिवार एजुगिया आयेब। का रउआ हमरा के कवनो तरे एगो टट्टू के बेवस्था कर सकत बानीं? कुछ छोट–मोट सामान ले आवे के होखी। छोट लइका टीसन से एजुगिया ले पैदल ना चल पइहे सन।"

"एगो टट्टू? बेशक! अगर रउआ चाहीं त हम दुइयो गो दे सकत बानीं।"

"धन्यवाद, दूगो नीमन रही, काहेकि आखिर पूरा परिवारे..... स्थान्तरित हो रहल बा।"

दस मई अतवार का दिने स्तेपान परिवार के हमार फैक्ट्री के इलाका में आगमन भइल। फैक्ट्री शहर से जादे दूर ना रहे आ पत्थर से पटल एगो राह से जुड़ल रहे। एक भोरे फैक्ट्री के दूगो टट्टू नगर के तरफ दूगो वाहन घींचत ले गइले सन। दुपहरिया ले ओह राहे बहुते भीड़ हो गइल रहे। अइसन लागत रहे जे परिवार के जोड़ा घर से बहरी निकल के ताजा हवा में साँस लेवे आ स्थानीय नजारा के मज़ा लेवे खातिर घूमे निकलल बा।

www.bhojpurisahityangan.com

दुपहरिया बाद दू बजे ले एगो जुलुस आवत लउकल। एकर वर्णन करे खातिर कवनो समुचित शब्द नइखे। एगो तीन बरीस के लइका पहिलका गाड़ी में बइठल अपना हाथ में एगो खेले वाला झण्डा लेले रहे। एह से जुलुस के विजयी प्रकृति आउरो प्रभावशाली लागत रहे।

दूगो गाड़ी सभसे अगाड़ी रहे। ऊ मुख्य रूप से तरे–तरे के छोट–मोट सामान से ठकचल रहे। बाकिर पहिलका में ऊ झण्डा बरदार आ दोसरका में दूगो छोटाहे लइका बइठल रहले सन। छोट–मोट सामान में, पहिलका गाड़ी के बीचो–बीच राखल एगो आलमारी के अलावे सगरी छोटहने सामान रहे। आलमारी से गाड़ी में एगो स्थिर गम्भीरता के भाव झलकत रहे। ऊ आलमारी मनुष्य–जाति के सभसे बेसी खुशगवार आविष्कार रहे– एगो आलमारी आ ओकरा साथे एगो मेज। अइसन सामान में एगो अनोखा हार्दिकता के, ताजा सेंकल रोटी के आ लइकन के हुलास के गन्ध भरल बा। आलमारी के बगल में हम एगो बड़हन समोवार, किताबन के दूगो गठरी आ तकिया के एगो मोटरी देखनीं। बकिया सगरी साधारन घरेलू सामान रहे।

दोसर गाड़ी के बगल में लगभग सत्रह बरीस के एगो लइकी चलत रहे। ऊ नंगा गोड़े आ नंगा माथा रहे आ एगो पुरान सूती फ्राक पहिरले रहे। ओह फ्राक के रंग फेफसाह हो गइल रहे। ई समझ में आ सकत रहे जे ऊ हरमेसा ओसहीं रहत–सहत होखी। काहेकि गरमी अबहीं शुरुवे भइल रहे, बाकिर ओकर बाल के रंग हलुक पर गइल रहे, ओकर चेहरा गाढ़ साँवर ललछहूँ रहे आ गाल के चमड़ी छोड़े लागल रहे। एकरा बादो ओकर चेहरा बहुते आकर्षक रहे– सुघड़ मुँह, गम्भीर भाव, हलुक नीला आँख, सोझ चतुर भौंह साफ–सुथरा आ शान्त चमकत रहे।

गाड़ियन का पाछे, लगभग हम उमरिया आ बराबर लम्बाई के दूगो लइका धारीदार कपड़ा से ढाँकल एगो बॉयलर लेहले चलल आवत रहले सन। एह दुनू के उमिर लगभग तेरह बरीस होखी। ओकनी का पाछे पाँच से बारह बरीस के उमिर के लइका–लइकियन के मुख्य झुण्ड चलत रहे। सभसे छोट भरल–पुरल गुलथुल गाल वाली दूगो नन्हकी लइकी एक–दोसरा के हाथ थमले साफ–सुथरा, गरम आ पथरीला राहे नंगे गोड़े छोटहन डेग बढ़ावत चलत रहली सन आ बहुते चिन्तित लागत रहली सन। गाड़ी हौले–हौले चलत रहे, तबो एह नन्हकी पैदल यात्री के ओकरा साथे चले में दिकदारी होत रहे।

बड़ लइका सभ एह झुण्ड के शेष भाग रहले सन। ओकनी के हाथ में भा कन्धा पर कुछुओ ना कुछुओ ले के चलत रहले सन– शीशा, चउखट के बण्डल आ सबसे बड़हन ग्रामोफोन के भोंपू।

ई सगरी दल हमरा पर अनपेक्षित रूप से अनुकूल असर डालत रहे। सभके बाल कटल रहे। घाम से ओकनी के चेहरा मरुआइल रहे। ओकनी के नंगा गोड़ में आजे के धूर–माटी लागल रहे। केहू के पैन्ट में बेल्ट ना रहे। बाकिर ओकनी के सूती जामा के बटन ठीक से टँकाइल रहे। कवनो के कपड़ा फाटल ना रहे। जवन लइका ग्रामोफोन के भोंपू ढोवत रहे, खाली ओकरे ठेहुना के लगे एगो पेवन

www.bhojpurisahityangan.com

लागल रहे। जवन बात से हमरा सभसे जादे खुशी भइल जे एह जुलूस के कवनो सदस्य के चेहरा पर गन्दा भा अरुचिकर भाव ना रहे– ना त कवनो घाव के दाग, ना कवनो फोड़ा–फुन्सी आ ना मानसिक पिछड़ापन के कवनो चिन्हासी। ओकनी के सहज भाव से बेसकुचइले हमरा ओर देखले सन, बाकिर उदासीनता से कबहूँ ना घूरले सन। कबो–कबो ओकनी के आपन आवाज़ कम कइले बिना एक–दोसरा से बतियावत रहले सन। बाकिर ओकरा के जरूरत से जादे लगाम ना लगावत रहले सन।

हम ओकनी के अइसन बतकही के चन्द शब्द सुननीं :

.....एजुगिया एगो सूखल जगह बा..... आ ओजा एगो विलो गाछ–बिरिछ बा"

"ओकरा से छँइटी बनावल जा सकत बा।"

"बाबूजी जरूरे अइसन करिहें।"

एह सगरी फौज के नेता आ जनम देवे वाला बाप सभसे पाछे रहले आ अपना हाथ में ग्रामोफोन के बक्सा सावधानी से थमले रहले। उनका बगल में एगो सुन्दर गुलाबी गाल वाली मेहरारू इत्मीनान से चलत रहली। उनकर करिया बाल पर बान्हल उजर–पीयर रुमाल कन्धा ले सरक गइल रहे। ऊ हमरा ओर देख के अपना बड़का–बड़का आँख से मुसुकी छोड़त रहली। जब स्तेपान हमरा लगे से गुजरले त आपन अद्‌भुत मुसुकी छोड़त टोपी के हाथ में ऊपर उठावत कहले :

"लीं हम आ गइनीं। अब जे चाहीं करीं, बाकिर हम आइये गइनीं! राउर आदमी लोग तनी अचरज से देख रहल बा, बा नूँ? ई हमार मेहरारू बाड़ी– आन्ना सेम्योनोव्ना।"

आन्ना शिष्टाचार में आपन माथा झुकवली आ आपन हाथ आगे बढ़वली। फेर अपना करिया आँख से चउतरफा एगो नजर धउरवली।

"ओह लोग के चिन्ता करे के चाहीं त अचरज से देख रहल बा।" ऊ स्थिराहे मद्धिम स्वर में कहली। "ओह लोग के एकर आदत पर जाई। जब ऊ लोग भला बा आ हमनी के तिरस्कार से नइखे देखत त हमरा कवनो चिन्ता नइखे।"

ओही घरी ओह तमाशाई भीड़ में कुछ हलचल भइल। औजार निर्माता चूब के मेहरारू, जे तन्दरुस्त कामकाजी प्रौढ़ मेहरारू रहली आ जे अबहीं ले एह जुलुस के नापसन्दगी से देखत रहली। ऊ आपन हाथ उठवली आ चिल्लात बोलली – "अरे रे..... रे, भगवान बचावे, दइया रे दइया! अइसन चुटकी भर के नन्हीमुकी लइका टीसन से एजुगिया ले पैदल! ई कमाल कइलस कइसे?"

ऊ लपक के एगो नन्हकी लइकी के अपना कोरा में उठा लेहली। ओह नन्हकी लइकी के छोट आ बेचैनी भरल चेहरा उनकर कन्धा के ऊपर लउकल। ओकर हलुक नीला आँख व्यग्र हो के दुनिया के निहारत रहे। पल भर में चुटकी भर के दोसर नन्हीमुकी लइका के केहू आउर के कन्धा पर चढ़ा लेहल गइल। हमार लोग ओह जुलुस में घुलमिल गइल। एकाउण्टेण्ट पिजोव स्तेपान के लगे अइले आ आपन हाथ बढ़ावत कहले जे घर में राउर स्वागत बा। दिल छोट मत करीं। इहे असली बात बा। रउआ ठीक कर रहल बानीं।"

www.bhojpurisahityangan.com

गरमी के मौसम के लाभ उठावत स्तेपान अपना फौज के मुख्य भाग के खुलल जगह में ठहरावे के फैसला कइले। एकरा खातिर कुटीर के सामने बरामदा जस कवनो चीज बनवले। हमरा आँगन के अलग–अलग कोना में ढेरे फालतू सामान परल रहे। स्तेपान हमरा अनुमति से ओकर इस्तेमाल कइले आ ओकरा के सही जगह पहुँचावे खातिर अपना फौज के लगा देहले। फौज के मुख्य शक्ति के निर्माण के काम में लगवले।

स्तेपान के आवे से पहिलहीं हमरा एगो महत्वपूर्ण शैक्षिक समस्या पर दिलचस्पी हो गइल रहे – का एह परिवार में कवनो तरे के संगठनात्मक संरचना बा भा ई एगो तथाकथित निराकार समूह भर बा? जब स्तेपान कवनो मामला के बारे में हमरा से भेंट करे आइल रहले त हम एह सवाल के सोझे उनका सामने पेश कइनीं।

स्तेपान के हमरा सवाल पर अचरज ना भइल। ऊ सँकारे के भाव से मुसुकइले।

"ई सही बात बा। जइसन रउआ कहत बानीं जे संरचना के सवाल जादे महत्त्व के बा। बेशक एमे एगो संरचना बा, बाकिर ऊ एगो खास कठिन समस्या बा। एमे गलत राहे चल परल निहायत आसान बा....."।

जइसे?

मसलन, जब रउआ एकरा के उमिर के हिसाब से करब त ई काम–धन्धा खातिर सही होखी, बाकिर शैक्षिक नजरिया से गलत। काहेकि जे छोट बा, ऊ बेकाबू हो सकत बा। एह समस्या के अलग–अलग नजरिया से देखे के होखी। घरेलू काम खातिर हमरा लगे चार जन वान्या, वित्या, सेम्योन आ एगो आउर छोटका वान्या– वान्यूश्का के एगो मुख्य टीम बा। बड़का वान्या पनरह बरीस के आ वान्यूश्का दस के बा, बाकिर ऊ चतुर बा आ ढेर काम कर सकत बा।"

"रउरा घरे दूगो वान्या कइसे हो गइल?"

"कुछ गड़बड़ी में अइसन हो गइल। बड़का वान्या ई त ठीक बा। हमरा ई नाँव पसन्द बा। अइसे आज–काल्ह ईगोर आ ओलेग नाँव के चलन जादे बा। दोसर 1916 में लड़ाई के बेर जनमल रहे। अध्यापक के हैसियत से हमरा छूट रहे। बाकिर ना जाने काहे, ऊ लोग हमरा के सेना के लगे घसीट ले गइल। एक पखवारा ले हमरा के ओजुगिये रोक के राखल गइल। तवने घरी हमार मेहरारू एगो बच्चा जनली। लड़ाई के परेशानी, अभाव आ उत्तेजना के बीच का होखित। रिश्तेदार लोग एक नम्बर के फूहड़ बा। ओपर से धर्मपिता आपन काम भूला गइले। रउरा त जानते बानीं जे देहात में कइसन होला। पादरी के जल्दीबाजी रहल होखी। ऊ कलेण्डर पर एगो नजर धउरावत देखले जे ऊ कवन सन्त के दिन बा– सन्त शहीद इवान। बस पवित्र जल में एगो डुबकी लगा के ओकर नाँव ईवान राख देहले। बाकिर असल में एमे कवनो बुराई नइखे। भले बाद में ओकर नाँव में कवनो भूल हो जाव, बाकिर अबहीं कवनो फरक नइखे परत– एगो वान्या आ दोसर वान्यूश्का। ऊ दुनू के एकर

www.bhojpurisahityangan.com

लकम पर गइल बा। वान्या के बाल हलुक रंग के बा, बाकिर छोटका वान्या के अपना मतारी जस गाढ़ रंग बा।"

"त ई बा राउर घरेलू टीम?"

"हँ, इहे बा हमार घरेलू टीम। ओकनी के साथे स्कूल जाले सन आ घर में अगर कुछ करे के बा त हरमेसा मिल के करे ले सन। ऊ नीमन श्रमिक बनिहे सन आ ऊ सभ लइकाहे बाड़े सन। एजुगिया रउआ खातिर एगो संरचना मौजूद बा। एकरा अलावे एगो दोसर टीम बा, अगर एही तरे कहल जाव। आठ बरीस के वास्या शरद में स्कूल जाई। ऊ बड़ लइकन के टीम में शामिल होखे जोग काबिल हो गइल बा, बाकिर अबहीं स्कूल नइखे जात। फेर ओकरा अलावे ल्यूबा बा, ऊ सात बरीस के बा आ कोल्या–छव बरीस के। एकनी के अबहीं घर के अन्दर कवनो ख़ास काम लायक नइखन सन। तबो ओकनी के कुछ काम के आदी हो गइल बाड़े सन। चीज ले आवे आ ले जाये के सीखत बाड़े सन। हो सकत बा जे ओकनी में से कवनो कबहूँ दोकान से सामान ले आवत होखे। ऊ पढ़ सकत बाड़े सन आ बीस ले गिनती जानत बाड़े सन।"

"एह समय सामान ले आवे वाला ओकनिये के नूँ बाड़े सन?"

"हँ, ऊहे बाड़े सन। वास्या, ल्यूबा आ कोल्या– ई काम ओकनिये के बा। एकरा बाद छुटाका–मुटका बाड़े सन। मरुस्या अबहीं खाली पाँच बरीस के बा। वेरा आ ग्रीश्का ओकरो ले छोट बाड़े सन। कात्या आ पेत्या सभसे छोट बाड़े सन। ऊ दुनू जेऊँआ बाड़े सन आ पिछला बरीस ओकनी के जनम भइल।"

सभसे बड़ लइकी ह का?"

"हँ, ओक्साना! ऊ सभसे बड़ ह। ओकर ख़ास स्थिति बा। पहिलका बात जे ऊ अब सेयान हो गइल बिया। दोसर, ऊ सभकुछ कर सकत बिया। हम कह सकत बानीं जे ऊ घर के काम में अपना मतारी से तनिको उनइस नइखे। ओकरा खातिर ख़ास तरे से सोचे के जरूरत बा। ऊ एगो उत्तम नागरिक बनी आ ऊ 'राबफ़ाक' में भर्ती होखे के चाहत बिया। हम एह पर शरद में विचार करब।"

बड़का वान्या के पहिलका टीम बरामदा बनावे के काम में लागल रहे। स्तेपान ओकनी के खुदे बहुते कम सहजोग करत रहले। काहेकि ऊ हमार लोहारखाना में काम शुरू क देले रहले। साँझ के चार बजे के बादे आपन बिखरल बाल वाला मुड़ी उठवले बरामदा के तइयार ढाँचा पर नजर डाल सकत रहले। ऊ ख़ास तरे से बरामदा के छत बनावे के जिम्मा लेले रहले। बाकिर साँझ के प्रबन्धन के काम वान्या करत रहे।

"होने मत चढीं," ई बात हम ओकरा के अपना बाप से कहत सुनले रहनीं। "भोरे हम खुदे करब। नीमन होखित जे रउआ कुछ काँटी के बेवस्था क देतीं। हमरा लगे काँटी के कमी बा।"

एह टीम के लगे खाली ऊहे काँटी रहे, जवना के वान्यूश्का पुरान पटरा से घींच के निकलले रहे। ऊ दिनभर एही काम पर भिरल रहत रहे। काँटी निकाले

www.bhojpurisahityangan.com

खातिर सँड़सी आ जम्बूरी–हथौरी कामे ले आवत रहे। वान्यूश्का के सीमित काँटी के चलते निर्माण काम में रुकावट हो गइल रहे। बड़का वान्या सामान ले आवे वाला रिजर्व दल के आदेश देले रहे– "चीज के असहीं नीचे नइखे फेंके के। अगर ओमे एको गो काँटी बा त ओकरा के वान्यूश्का के लगे ले जाये के बा आ अगर नइखे, तबे हमरा के देवे के बा।"

रिजर्व दल के मुखिया, आठ बरीस के वास्या, जे बड़का माथा वाला तगड़ा आ गम्भीर लइका रहे, अपना दल के काम में रुकावट ना आवे देहलस। ऊ छोटकन–मुटकन के एगो प्रतिनिधि मरुस्या के काम पर लगा देले रहे। अनोखा, खुश–मिजाज, गुलाबी गाल वाली नन्हकी प्राणी मरुस्या हर पटरा के धेयान से देखे। सन्देह भइला पर हर निशान में काँटी खोजे आ पहिलहीं से अपना गुलगुल गाल के फुलावत कवनो तख्ता के एकोरा राखे त कवनो आउर के दोसरा ओर। आपन काम करत बेर ऊ कोमल स्वर में गुनगुनात रहे – "काँटी समेत..... बिना काँटी के..... काँटी समेत..... तीन गो काँटी आ..... ई..... बिना काँटी के..... ई काँटी समेत।"

कबो–कबो ऊ पटरा में धँसल तार के सन्देह भरल नजर से सचेत हो के निहारे आ चिन्तित हो के वान्या भा वित्या के लगे पहुँच जाव।

"का इहो काँटी ह?" ऊ नाटकीय ढंग से पूछे। "भा ई कवनो आउर चीज ह? तें एकरा के काँटी के साथे नइखी चाहत?"

स्तेपान परिवार के लइकन के अचरज भरल सौम्यता से अगली–बगली के लोग चकित रहे। ओह विशाल परिवार में रोअल–धोअल शायदे कबहूँ सुनात रहे। एजुगिया ले जे सभसे छोट लइका, जेउँआ कात्या आ पेत्या ओइसन कानफोड़ हल्ला कबहूँ ना करत रहले सन, जबकि ओजुगिये चूब परिवार में कबो–कबो सुनाई परत रहे। चूब परिवार के लइका खुशमिजाज आ तेज दिमाग के अलावे मेहनती आ जुझारू रहले सन। ऊ खूब खेल सन, हमार अहाता के लइकन के संगठित कर सन, कई तरे के शरारत आ मज़ाक कर सन आ ओकनी के आवाज़ सगरो सुनायी परत रहे। कबो–कबो ई आवाज़ तेज सुनाव त कबहूँ उलाहना भा ठेस पहुँचावे के इरादा से एगो अनिष्टकारी भाव में बदल जात रहे। बेसी बढ़त–बढ़त अचके एगो खूनी चीख में बदल जात रहे। लइकन के मतारी–बाप अइसन अतियाचार के खिलाफ लड़े, खुदे चिल्लाव, लइकन के डाँटे, कबहूँ गरिअइबो करे आ अति भइला पर एक–आध झाँपड़ भा घूँसा लगाइयो देव भा जोर–जबरदस्ती के आउरो कवनो दोसर राह अपनावे। बाकिर असल में, अइसन मामला में कवनो दुखद बात ना रहे।

चूब परिवार के लइका सभ गला फाड़ के चिल्लात रहले सन। अति भइला पर मतारी–बाप से थुरइला के बादो लोर पोंछत आपन सगरी चोट भूला जात रहले सन। एमे ओकनी के आग्रह–दुराग्रह दुनू के मेरावट रहत रहे, जे झगड़ा के असली वजह रहे। फेर ऊ अपना सुखी लइकाई के जिनिगी जीये खातिर आपन हँसमुख चेहरा लेहले अहाता के दोसरा छोर के ओर चल जात रहले सन। ओकनी के मतारियो–बाप मन में कवनो बात ना राखत रहे। एकरा विपरीत मतारी–बाप के

www.bhojpurisahityangan.com

कर्त्तव्य पूरा करे के ओह लोग के चेतना आ ऊर्जा के बढ़ावत रहे, जवना के ओह लोग के अपना घरेलू काम पूरा करे खातिर जरूरी रहे।

स्तेपान परिवार में अइसन कवनो बात ना रहे। एजुगिया ले जे कात्या आ पेत्या जादे निराश भइलो पर खाली एगो हलुकाहे रिरियाहट करत रहले सन, जवन एगो प्रतीकात्मक रूप में रहत रहे। स्तेपान परिवार के बड़को लइका सभ कबहूँ रिरियात–पिपियात ना रहले सन। पारिवारिक झगड़ा के सामाजिक क्षेत्र ले कबहूँ ना ले आवल जात रहे। इहो हो सकत बा जे उनका घरे कवनो झगड़े ना होत होखे।

हमरा फैक्ट्री का लोग के स्तेपान परिवार के एह ख़ासियत के देखे–बूझे में देरी ना लागल। सभे एकरा के कवनो ना कवनो तरे से परखे के कोशिश कइल। बाकिर अइसन करे में मतारी–बाप के शैक्षणिक प्रतिभा के केहू चरचा ले ना करत रहे।

"ई लोग एगो अइसन चरित्र बा," चूब कहले "प्रकृति ओह लोग के अइसने बनवले बा। अगर रउआ ठीक से देखीं त ई कवनो नीमन चीज नइखे। ई जरूरी बा जे लोग सभकुछ करे में समरथ होखे। अइसन आदमी के कवन फायदा, जेकरा दूध आ चूना में फरक मालूम नइखे। अगर कवनो गलत बात बा त आदमी के जरूरे चिल्लाये के चाहीं। ओकरा अन्दर एगो दिल होखे के चाहीं। एगो लइका खातिर रोअल आम बात बा– ऊ एगो जीवित आदमी बा, कवनो कठपुतला ना। हम रउआ के बता रहल बानीं, जब हम लइका रहनीं त आउर लोग से जादे हंगामा मचावत रहनीं। साँच कहीं त घूँसा–डण्डा से बहुते धुनातो रहनीं, बाकिर अब हम कवनो हंगामा नइखीं करत। अइसे अगर केहू अइसन करे पर मजबूर करे त ठीक बा, हम चीखे–चिल्लाये के जानत बानीं, ई सोभाविक बा।

एकाउण्टेण्ट पिजोव के राय अलगे रहे।

"कामरेड चूब, मुद्दा ई नइखे, ई चरित्र के मसला नइखे, बलुक आर्थिक आधार के बा। जब तहरा किहाँ एगो भा दूगो होखे त ऊ कवनो चीज देखते कही जे हमरा के हई दीं। ठीक बा, ले ले। हमरा हऊ चाहीं। ठीक बा, इहो ले ले! हमरा के इहो दीं। बेशक, फेर रउआ तंग हो जायेब। रउआ हरमेसा ई सिलसिला जारी नइखीं राख सकत। तब चीखल–चिल्लाइल शुरू होत बा, काहेकि पहिले रउआ देले रहनीं आ अब नकारत बानीं। बाकिर स्तेपान किहाँ तेरह गो बाड़े सन। अब कर ल, जे मन करे। कतहूँ ना कतहूँ कमी भा तंगी होइबे करेला। एजुगिया केहू 'दीं' चिल्लाये के बात नइखे सोचत। 'दीं' एकर कवनो मतलब नइखे। हम कहँवा से ले आ सकत बानीं? हम खुदे अचरज में बानीं जे स्तेपान एगो लेखाकार के बगैर काम कइसे चलावत बाड़े। उनका जइसन परिवार में रउआ हर चीज पर विचार करे के परत बा, जे सामूहिक कोष में आवत बा। हरेक आदमी के केतना ग्राम देहल जाव। ई महज ओकर भाग–बँटवारा के मसला नइखे। रउआ विभेदक तरीका अपनावे के परत बा। जादे उमिर वालन खातिर एगो चीज त कम उमिर वालन बदे दोसर। इहे कारण बा जे उनकर सोभाव हेतना शान्त बा। अपना हिस्सा खातिर सभे इन्तजार

www.bhojpurisahityangan.com

करत बइठल रहत बा। चीखे–चिल्लाये से कवनो लाभ नइखे।

"कामरेड पिजोव, अब रउआ एकरा के वैज्ञानिक तरीका से बतावत बानीं," चूब लगले जवाब देहले। "हमरो छव गो बाड़े सन। रउरा कवनो तरे के उपाय काहे ना करीं, बाकिर हर हाल में कवनो चीज के भाग–बँटवारा नइखीं कर सकत, जवन हर हाल में कम होखे। तबो ऊ चिल्लइबे करी, बुझाइल, आ ओकरा के रोकल नइखे जा सकत :

दीं, दीं, दीं! आ नतीजा ई होत बा – जे सभसे जादे चिल्लात बा, ओकरे सभसे जादे भेंटात बा। अगर ओकरा चिल्लइला पर नइखे भेंटात त ऊ जोर–जबरदस्ती करी। हमार वोलोद्या अइसने बा हुड़बुड़ाह जस।"

स्तेपान एह दार्शनिक बतकही के श्रेष्ठता के दबल मुसुकी के साथे सुनले आ जवाब देहले –"अगर एगो आदमी हुड़बुड़ाह बा त सवाल ई उठत बा जे ओकरा ओइसन होखे के चाहीं कि ना? एगो हुड़बुड़ाह आदमी दोसर हुड़बुड़ाह आदमी पर झपटी आ छुरी चले में इचिको देर ना लागी। जरूरत बा, नीमन माहौल के, अच्छा समूह के, तबे कुछ कइल जा सकत बा। बाकिर रउआ फलनवा–ढेकनवा के हुड़बुड़ाह होखे के बारे में बतकही करे लागब त रउआ कुछुओ नइखीं कर सकत। जहँवा ले लइकन के चीखे–चिल्लाये बात बा, ई महज अधीरता बा। का रउआ ई बूझत बानीं जे खाली रउरे में अधीरता बा? ओकनियो में बा। बाहर से देखे में एगो लइका ठीक–ठाक, हँसमुख आ हर तरे से सही नजर आ सकत बा। बाकिर असल में रउआ देखब जे ओकरा में धैर्य धारण के क्षमता ओतने खराब बा, जेतना राउर रानी साहिबा के। इहे कारण बा जे ऊ चिल्लात बा। अगर रउआ जनम से ओकर धैर्य के चउपट नइखीं करत त ऊ काहे चीखी–चिल्लायी?"

"हमरा लइकन में धैर्य नइखे?" चूब हैरत से चिल्लइले। "ओहो, का खूब बात कहनीं!"

"ओहो, का कह रहल बानीं?" स्तेपान जवाब देहले आ अपना मुसुकी के हाथ से छिपावत आपन दाढ़ी सहरावे लगले। "जवन होखे, तहार त आपने धैर्य कचड़ा लायक बा।"

स्तेपान के अपना घर के पूरा खोराकी के जुटावे में बहुते कठिनाई होत रहे। ई साँच बा जे हम उनकर जरूरत खातिर एलाटमेण्ट के आधार पर एगो ख़ासा बड़हन भूखण्ड उनका के सउँप देले रहनीं। आन्ना आ ओक्साना लगले ओह काम में लाग गइल रहे लोग। हम एगो–दूगो आउर मामला में स्तेपान के सहजोग कइले रहनीं – एगो घोड़ा आ हल, बीज आ एगो जरूरी चीज आलू। बाकिर अबहीं एह भूखण्ड में जादे श्रम आ खरच के जरूरत रहे।

स्तेपान शिकायत ना कइले। बाकिर ऊ अपना कठिनाई के छुपइबो ना कइले।

"हम हिम्मत नइखीं हारत। बाकिर अबहीं असली सवाल रोटी के बा। अगर शुरुआत में रोटी होखे त सभ ठीक–ठाक होखी। जवन होखे, रोटी के निहायत जरूरत भोजन के अधिया बा, हरेक खातिर पाँच सौ ग्राम, असल में कम से कम।

www.bhojpurisahityangan.com

आधा भोजन रोज।"

हम बूझ गइल रहनीं जे स्तेपान परिवार के हर सदस्य में साँप जस बुद्धिमत्ता होखी। स्तेपान खुदे एह बुद्धि के काम में बेवहारिक रूप देहले। ऊ साँचो एगो नीमन लोहार रहले आ उनकर अध्यापन के प्रशिक्षण उनका खातिर बहुते सहायक रहे। एकरे चलते उनकर दरमाहा हमरा श्रमिकन के औसत दरमाहा से बहुते जादे रहे।

बाकिर हमरा एह बात से बेसी अचरज भइल जे जब हम उनका के साँझ के बेर ओवर टाइम के प्रस्ताव देहनीं त ऊ जवाब देहले– "अगर फैक्ट्री के एकर जरूरत होखे त हम इनकार ना करब। काहेकि ऊ एगो अलग बात बा। बाकिर अगर ई सुझाव खाली हमार मदद करे खातिर करत बानीं त कवनो बात नइखे। काहेकि एह राहे चलला पर बेमतलब के झंझट हो सकत बा...."।

ऊ अटपटा ढंग से मुसुकी छोड़ले आ आपन मुसुकी छुपा ना सकले, वइसे ऊ अपना मोंछ के पाछे दबावे के भरसक कोशिश कइले। एकर मतलब रहे जे ऊ तनी सकुचात रहले।

"एगो आदमी के रोज सात घण्टा काम करहीं के चाहीं। बाकिर अगर ऊ जादे काम करत बा त ओकर काम करे के ताकत हाली ना लवट पावे। लइका जनमाव आ मर जा– जिनिगी के बारे में ई विचार हमार नइखे। अइसे त..... इयाद नइखे, कवनो कीड़ा भा एगो तितली बा, जे एके दिन जीयत बा। अण्डा देत बा आ फेर नमस्ते। एकरा अलावे आउर कुछुओ करहीं के नइखे। शायद तितली खातिर ई बात ठीक होखे, काहेकि ओकरा लगे एकरा अलावे आउर कुछुओ करे के हइले नइखे। बाकिर एगो आदमी के बहुते कुछ करे के बा। ढलाई के काम में सात घण्टा हमरा खातिर काफी बा।"

"बाकिर," हम एतराज जतावत कहनीं, रउआ त अबे कहनीं हँ जे अगर फैक्ट्री खातिर जरूरी होखे त...."।

"ऊ एकदमे दोसर मामला बा। अगर फैक्ट्री के एकर जरूरत होखे– ई बा ऊ बात। बाकिर का हमरा लइकन के हमार जरूरत नइखे? ओकनी के जरूरत बा एगो बाप के, जे ओकनी खातिर बाप होखे, ना कि एगो घोड़ा जस जे हम कबो–कबो देखले बानीं। धुँधराइल आँख, पीठ में कूबड़, कवनो काम के हुलास ना, नस में गड़बड़ी आ लगभग ओतने आत्मा जेतना एगो मुर्दा बत्तख में रहत बा। हम जाने के चाहत बानीं जे अइसन बाप के रहला के कवन उपयोग बा? खाली रोज–ब–रोज रोटी कमाइल। बेहतर होखित जे अइसन बाप के दफन क देहल जाव आ लइकन के लालन–पालन राज्य करे– राज्य एकरा के बाउरो ना मानी। हम एगो–दूगो अइसनो बाप के देखले बानीं जे आपन सगरी शक्ति आ जिनिगी खपा देत बा। कुछुओ समझ नइखे पावत आ कवनो दिन जमीन पर मुअल परल मिलत बा। लइका यतीम हो जात बाड़े सन। अगर ओकनी के अनाथ ना होइते सन त महामूरख बनते सन। काहेकि परिवार में हुलास होखहीं के चाहीं, हर समय दुःख–शोक ना होखे के चाहीं। लोग डींग हाँकत बा– 'हम लइकन खातिर सभकुछ

www.bhojpurisahityangan.com

छोड़ देले बानीं।' हम खाली इहे कह सकत बानीं जे अगर रउआ अइसन कइले बानीं त रउआ मूरख बानीं। रउआ सभकुछ छोड़ देहनीं आ लइकन के एको घेला ले ना भेंटाइल। हो सकत बा जे हमार भोजन बेसी नीमन ना होखे। बाकिर हमरा परिवार में थोर–बहुत जिनिगी बा, साहचर्य बा। हम ठीक बानीं, मतारी खुशमिजाज बाड़ी आ सभके काया में आत्मा के वास बा।"

हमरा ई सँकारे के चाहीं जे ओह दिन स्तेपान के देहल अइसन तर्क, हमरा खातिर अरुचिकर नाहिंयो रहला पर प्रभावहीन रहे। तार्किक नजरिया से उनका से असहमत भइल कठिन रहे। बाकिर ई समझलो मोसकिल रहे जे अइसन दर्शन आ अहंवाद भा घोर आलसीपन का बीच के सीमा रेखा कहँवा हो सकत बा। हमरा ई सोचे के आदत पर गइल रहे जे कर्त्तव्य के भावना तबे कारगर आ नैतिक नजरिया से ऊँच हो सकत बा, जब ओकर गणित भा शुद्ध दोकानदारी के साथे जादे गहिर सम्बंध ना होखे।

हम ई जाने के चाहत रहनीं जे स्तेपान अपना सिद्धान्त के कवन बेवहारिक रूप देले बाड़े। बाकिर हम स्तेपान परिवार के घरे जाये खातिर अबहीं ले समय ना पा सकल रहनीं– ऊहो तब जब उनकर स्थिति गँवे–गँवे सुधरत रहे। स्तेपान के कुटीर के दोसरा हिस्सा में दूगो लइकी रहत रहली सन। ई लइकी सभ स्वेच्छा से आपन कमरा स्तेपान परिवार के दे देले रहली सन आ बगल के एगो दोसर कुटीर में अपना सहेली किहाँ रहे लगली सन। स्तेपान अपना मकान के नया सिरे से बेवस्थित करे में लागल रहले।

एक दिन हम आ औजार निर्माता चूब शहर के ओर जात रहनीं सन। ओह घरी अगस्त के महीना शुरू हो गइल रहे। हम शाहबलूत के एगो नया वन के बीचे तंग आ टेढ़–बाँगुच राहे चलत रहनीं। चूब, हरमेसा के तरे लोगन के बारे में बतकही करत रहले।

"स्तेपान अपना बेटा बड़का वान्या के एगो परीक्षा दिउवावे खातिर भेजले बाड़े। ऊ शहर में अपना चाचा किहाँ रही। एह समय ऊ ओजुगिये गइल बा। हमरो एगो अइसने चाचा भेंटा जइते त हमहूँ तेरह गो ना, तीस गो लइकन के पाल–पोस के देखा देतीं। हर केहू अपना–अपना तरे से खुशकिस्मत बा– केहू के लगे अच्छा दिमाग बा, केहू आउर के लगे नीमन दाढ़ी बा आ अगिला के लगे चाचा बा!"

"ऊ कवना तरे के चाचा हउवन?"

"अरे वाह! मौज–मजा के जिनिगी गुजारत बाड़े। चार गो कमरा, एगो पियानो, सोफा, कई गज कपड़ा, सवदगर खाना– एगो जार के तरे!"

"का? ऊ ई सभ चोरवले बाड़े?"

चोरवले बाड़े? अरे ना, कीनले बाड़े। रउआ त जानते बानीं जे आपन दोकान से ढेरे माल कीनल–बेसहल जा सकत बा। एकरे के कहल जाला नवका आर्थिक नीति। रउआ तनी स्तेपान से पूछीं जे ऊ चाचा के साथे मामला तय काहे कइले? का ऊ वान्या के हमनी के फैक्ट्री आ कार्यशाला स्कूल में ना राख सकत रहले?

www.bhojpurisahityangan.com

अजी ना, ओकरा त अपना चाचा के भीरी जाये के चाहीं, काहेकि ओजुगिया नवका आर्थिक नीति जे बा।"

ओही घरी शाहबलूत का गाछ के पाछे से, ओही टेढ़—बाँगुच राहे स्तेपान आ वान्या आवत लउकल। वान्या पाछे—पाछे भटकत चलल आवत रहे आ एगो सटही से छोटहन गाछ—बिरिछ के रउँदत चलत रहे। ओकरा चेहरा पर ऊहे जटिल भाव झलकत रहे, जे लइकन के चेहरा पर तबे लउकेला, जब ओकनी के अपना से बड़ के सम्मान आ प्यार के कारण ओह लोग के निर्णय सँकार लेले सन। बाकिर मन के कवनो कोना में आपने कवनो सिद्धान्त के बरकरार राखे ले सन। ई बात ओकनी के चेहरा पर मोसकिल से लउकेला। तबो ओकनी के स्थिर आ व्यंग्य भरल मुसुकी से आ ओकनी के उदास आँख में ओह व्यंग्य के हलुक झलक से साफे बूझल जा सकत रहे।

अबहीं ऊ लोग दूरे रहे, तले चूब चिल्लइले— "का ऊ पास हो गइल?"

स्तेपान मुसुकइबो ना कइले।

"हँ, हो गइल," ऊ हलुकाहे भारी आवाज़ में कहले आ पाछे के तरफ अपना लइका पर बिखिआइले देखत हमरा लगे से गुजरले।

फेर अचके रुक गइले आ जमीन के ओर देखत कहले :

"का रउआ कबहूँ अभिजात वर्ग के घमण्ड के बारे में सुनले बानीं? काहेकि अगर नइखीं सुनले त ई रउआ खातिर एगो उदाहरण बा!"

स्तेपान तनी नाटकीय ढंग से वान्या के ओर इशारा कइले। अभिजात—वर्ग के ओह प्रतिनिधि के एगो हाथ में जूता रहे आ दोसरा में ऊ सटही, जवना से अब ऊ अपना नंगा गोड़ के नीचे माटी कुरेदत रहे आ कुरेदे के ओही पेचीदा भाव से देखत रहे, जवना में दूगो भाव के मेरावट रहे— एगो उदासी आ क्षोभ के आ दोसर चतुराई भरल आ हठ वाला। ओकर दोसरका भाव, शायद साँचो एगो अभिजात—वर्ग के विचार के लखार करत रहे।

स्तेपान बिखिआइले वान्या के परस्त करे के जतन कइले, बाकिर सफल ना हो सकले। वान्या काठ नियर खाड़ा रहे त स्तेपान हमरा से कहले :

"सेब! अगर ऊ कवनो बगइचा से झपट के पा लेव त ओकरा सेब खाये के खूबे चाव होत बा, बाकिर अगर ऊ मेज पर परल होखे त ओकरा ओसे कुछुओ लेवे—देवे के नइखे।

सेब से अइसन रिझावे वाला रवैया के शब्द में व्यक्त नइखे कइल जा सकत। एह से स्तेपान फेर एक बेर वान्या के ओर आपन आँख तरेर के देखले।

वान्या आपन मुड़ी हेने—होने घुमवलस, जवना के माने—मतलब निकालल मोसकिल रहे। फेर ऊ कहलस :

"का ई खाली सेब के बात बा? ई खाली सेब के चलते नइखे। जवन होखे .....हम ओजुगिया ना रहब! हमरा उनकर सेब के कवनो दरकार नइखे भा उनकर मिठाई के भा ओह..... स्टर्जियन के?"

www.bhojpurisahityangan.com

अचके वान्या के हँसी बरे लागल। ऊ लाज के मारे आपन चेहरा दोसरा ओर घुमा लेहलस आ तनी सकुचाइले फुसफुसाइल :

"स्टर्जियन....."।

एह सवदगर पकवान के इयाद ओकरा के जादे देर ले हुलसित ना राख सकल। एकरा अलावे ओकरा हँसी में व्यंग्य के भाव साफे झलकत रहे। लगले वान्या अपना व्यंग्य के गम्भीर पहलू देखवलस आ असली निन्दा के अभिव्यक्ति के साथे कहलस– "हमरा घरे ओह तरे के कवनो चीज नइखे आ हम चाहतो नइखीं, नइखीं चाहत, बस!"

लागत रहे जे एह शब्दन में वान्या के आखिरी राय निहित रहे। काहेकि एह शब्दन के बोलला के बाद ऊ सोझे खाड़ा हो गइल आ सटही से आपन गोड़ पर अइसन जोर से सटाक दे मरलस, जइसे ऊ कवनो सटही ना, घुड़सवारी के चाबुक होखे। फेर ऊ अपना बाप के तरफ देखलस। ओह घरी वान्या के हाव–भाव में साँचो अभिजात–वर्ग के अन्दाज रहे।

स्तेपान अपना मोंछ के दाहिना कोर में कुछ अइसन कइले, जइसे मुसुकी छोड़े वाला होखस। बाकिर ऊ आपन खेयाल बदल देहले आ तिरस्कार भाव से कहले– "का घमंड बा, तनी अपना चेहरा त देख।"

ऊ एके झटका में मुड़ गइले आ फैक्ट्री के तरफ चल देहले। वान्या पहिले अइसन तेजी से हमनी ओर नजर धउरवलस, जइसे हमनी के कवनो अपराध पकड़े के चाहत होखे। फेर आराम से अपना बाप के पाछे चल देहलस।

चूब दूर जात आकृति पर हार्दिकता से आपन नजर धउरवले, खँसले आ फेर तम्बाकू खातिर आपन पाकेट टोवे लगले। ऊ सिगरेट के एगो ममोराइल–चमोराइल कागज के सोझ करे में थोर समय लगवले। फेर ओह पर तनी तम्बाकू धइले आ ओह दरम्यान सोचत–विचारत लगातारे ओह राह के निहारत रहले, जवना राहे वान्या गइल रहे। उनकर जबान तबे खुलल, जब ऊ सिगरेट के कागज के अपना जीभ से गीला कइले आ सिगरेट बनवले। ओकरा के होठ में दबवले आ किटीहर जैकेट के पाकेट में दियासलाई निकाले खातिर हाथ घुसवले। फेर ऊ रुखा आवाज में कहले :

"हँ, ई बा लइका..... बाकिर, रउआ का कहत बानी? ऊ सही बा कि ना?"

"हम बूझत बानीं जे ऊ सही बा।"

"साँचो?"

चूब अपना दोसर पाकेट में दियासलाई खोजल शुरू कइले। फेर अपना पतलून के पाकेट में आ फेर कतहूँ अस्तर के भीतरी, फेर मुसुकी छोड़ले :

"दुनिया हर चीज आसानी से तय क लेत बा। मिसाल के तौर पर रउआ अपने के ले लीं। रउआ लगले कह देहनीं –"ऊ सही बा"। बाकिर हो सकत बा जे ऊ गलत होखे। ई रहल हमार दियासलाई। कबो–कबो एकरा के खोजे में सभकुछ उलट–पलट करे के परत बा..... आ एह मामला में ई जिनिगी के बात बा, जिनिगी

www.bhojpurisahityangan.com

के सच्चाई के, जवना के रउरा तलाश बा। 'ऊ सही बा' से राउर का मतलब बा? रउआ खातिर त अइसन बतकही ठीक बा। बाकिर स्तेपान के तेरह गो लइका बाड़े सन। का एह फटीचर छोकरा के अइसन जोर–जबरदस्ती के हक बा? सेब, स्टर्जियन, देखीं तनी! बाकिर ओकरा बाप के लगे पूरा आलू ना होखे त?"

"ठहर जा चूब। अबहीं त तूँ स्तेपान के निन्दा करत रहल ह....."।

"हँ, करत रहनीं आ काहे ना करीं? एकरा में भला का बा? ओकर ऊ चाचा कुतिया के औलाद ह। स्तेपान त घीव के कनस्तर में हाथ मारे के चाहत बाड़े।"

"अच्छा त?"

"बाकिर ई एगो अलगे सवाल बा। ई मुद्दा बाप के खिलाफ बा। बेटा के एकरा से का लेवे–देवे के बा? ओकरा समझे के चाहीं जे ई ओकरा बाप खातिर कठिन मसला बा। ओकर बाप के खेयाल बा जे ओकरा खातिर सभसे नीमन राह इहे बा..... अरे वाह! दियासलाई मिल गइल, देखीं कहँवा पहुँच गइल रहल ह।..... आज–काल्ह के लइका अइसने बाड़े सन– सभकुछ खुदे करे के चाहत बाड़े सन आ सभकुछ अपने समझे के चाहत बाड़े सन। बाकिर जवाबदेही त रउरे उठावे के परी!"

वान्या अपना मन के हिसाब से काम कइलस आ हमार फैक्ट्री के प्रशिक्षण स्कूल में नाँव लिखवा लेहलस।

जवन प्रकरण के हम चरचा कइनीं, ओमे हमरा कई गो पक्ष से दिलचस्पी रहे। हम वान्या के पूरा चरित्र के बहुते गहराई से जाने–बूझे के चाहत रहनीं। एगो दोसर चीज खातिर स्पष्टीकरण के जरूरत रहे जे अइसन चरित्र के निर्माण कइसे होत बा। हमरा जस शिक्षाविद् खातिर दोसर सवाल के महातिम जादे बा जे हमरा स्तेपान परिवार जस गैर–बेवसायिक प्रशिक्षण संगठन से कुछ बात सीखे में कवनो शरम ना रहे। एकरा अलावे हम ई ना सोच सकत रहनीं जे वान्या के प्रकृति नीमन शैक्षिक काम के नतीजा ना, बलुक प्रकृति के वरदान रहे।

हमनी के तथाकथित 'व्यापक जनता' के बीच ई बात जानल–सुनल बा जे लोम्ब्रेजो के सिद्धान्त गलत बा जे नीमन लालन–पालन कवनो सामान्य सामग्री से दिलचस्प आ स्वस्थ चरित्र के निर्माण कर सकत बा।

ई एगो सही आ रुचिकर बिसवास बा, बाकिर दुर्भागवश एकरा से हरमेसा बेवहारिक नतीजा नइखे निकलत। अइसन एह से होत बा जे हमनी के शिक्षाविद् के एगो ख़ासा बड़हन संख्या लोम्ब्रोजो के सिद्धान्त से अपना तिरस्कार के खाली सैद्धान्तिक राय–बात में, रिपोर्ट आ भाषण में, वाद–विवाद आ सम्मलेन में जतावत बा। एह मोका पर ऊ लोग लोम्ब्रोजो के ख़िलाफ़ दृढ़ता से बोलत बा, बाकिर काम के समय, रोजाना के बेवहारिक क्षेत्र में लोम्ब्रोजो के विरोधी ई नइखे जानत जे चरित्र निर्माण के काम के सही आ जरूरी तरे से कइसे कइल जाव। अइसन कठिन हाल में ओह लोग के हरमेसा सरक जाये आ प्राकृतिक मूल सामग्री के जस के तस छोड़ देवे के सोभाव बा।

www.bhojpurisahityangan.com

एह बेवहार के चलते ई अनेक तर्कहीन लेख आ सिद्धान्त खातिर आधार बनल। एकरे चलते पेडोलॉजी आ चतुर निष्क्रिय प्रतिरोध का रूप में अनौपचारिक शिक्षा के सिद्धान्त बनल। एकरे चलते एकरो से जादे सोभाविक रूप से कठिन मामला में हाथ–गोड़ छितरावे के ऊ आम बेवहारिक आदत बनल, जेकरा साथे ई सामान्य भाव आ शब्द हरमेसा जुड़ल रहत बा :

"विकट लइका बा!"

"एकदम निकम्मा छोकरा बा!"

"हम त एकदमे समरथ नइखीं!"

"ओकर सुधरल मोसकिल बा!"

"हम एकर कुछुओ नइखीं कर सकत!"

"एगो ख़ास अनुशासन पद्धति के जरूरत बा।"

पेडोलॉजी के विनाश आ 'अनौपचारिक–शिक्षा' के राष्ट्रव्यापी पतन हमरा आँख के सोझा भइल। बाकिर एकरे चलते असफल अध्यापकन के काम आउरो कठिन हो गइल, काहेकि अब ओह लोग के लगे बेवाहारिक असमर्थता के, बलुक बेसी स्पष्टता से कहल जाव त आपन अपराजेय आलसीपन के छिपावाहूँ खातिर कवनो सिद्धान्त ना रहे।

लोम्ब्रोज़ो के खाली एके गो उपाय से जमीन्दोज कइल जा सकत बा– चरित्र के शिक्षा पर ख़ास बेवहारिक काम से। ई काम कतई आसान नइखे; एकरा खातिर प्रयास, धीरज आ लगन के दरकार बा। हमनी के अनेक शिक्षाविद् लगातारे ईमानदारी से ई सोचत बा जे खण्डित लोम्ब्रोज़ो पर थोरथार उछल–कूद मचावल आ ओकरा खिलाफ कुछ धिक्कार वाला बात बोलल काफी नइखे। अतना कइलो पर ओह लोग के कर्तव्य के इतिश्री हो जात बा।

बाकिर ई सगरी 'बेवहारिक' संकट महज आलसीपन के नतीजा नइखे। जादेतर मामला में एगो असली, हार्दिक आ गुप्त धारणा बा जे असल में अगर एगो आदमी डाकू के रूप में जनमल बा त ऊ डाकू के रूपे में मरी, जे खाली कब्रे कुबड़ापन के इलाज करत बा आ केहू सेब के गाछ से दूर जा के नइखे गिरत।

हम शैक्षिक काम के असीम ताकत में, ख़ास क के सोवियत संघ से जुड़ल सामाजिक माहौल में अकूत, बेधड़क आ बेहिचक बिसवास करत बानीं। हमरा एको गो अइसन मामला के जानकारी नइखे, जहँवा वास्तविक रूप में मूल्यवान चरित्र स्वस्थ शैक्षिक पृष्ठभूमि के बिना बनल होखे भा एकरा विपरीत, जहँवा सही शैक्षिक काम के बादो कवनो विकृत चरित्र के विकास भइल होखे। एह से हमरा एह बारे में कवनो सन्देह ना रहे जे वान्या के प्रकृति के श्रेष्ठता के प्राकृतिक स्रोत कहँवा खोजल जाव– बुद्धिमानी आ समझदारी से कइल पारिवारिक लालन–पालन में।

हम पहिले सुबहित मोका देख के वान्या से बात कइनीं। हमार ई बतकही ओही वन में, बाकिर नगर से जाये वाला ओह टेढ़–बाँगुच राह से बहुते दूर घना जंगल में भइल रहे। ऊ छुट्टी के दिन रहे। हम अकेले रहनीं आ जिनिगी के तरे–तरे के

www.bhojpurisahityangan.com

समस्या पर विचार करे के सम्भावना के लालच में असहीं हेने–होने घूमत रहनीं। वान्या मसरूम बटोरत रहे। कुछ समय पहिले स्तेपान हमरा से कहले रहले :

"मशरूम नीमन चीज बा। जब आदमी के लगे धन के कमी होखे त ऊ जा के मशरूम बटोर सकत बा। ई एगो सवदगर पकवान बा आ फोकट में भेंटा जाला। बेर अइसने काम के चीज बा। एकरा अलावे बिच्छू घास बा, बाकिर ऊ ताजा नया पौधा होखे के चाहीं।"

वान्या एगो बड़हन छँइटी में मशरूम बटोरले घूमत रहे। ओकर छँइटी के अन्दर ताजा मशरूम के रुचिकर ढेर लउकत रहे। वान्या अपना जामा के एगो कोर के झोरा बनवले रहे। ओमे नया मशरूम बटोरत रहे। ऊ हमरा के अभिवादन करत कहलस :

"बाबूजी के मशरूम बेहद पसन्द ह। तलल आ नमकीन। बाकिर एजुगिया उजर मशरूम हइले नइखे। ऊ उजर मशरूम जादे पसन्द करेले।

हम पेड़ के एगो ठूँठ पर बइठ गइनीं। फेर एगो सिगरेट जरवनीं। वान्या हमरा सामने घास पर बइठ गइल। ऊ आपन छँइटी के एगो गाछ से अड़ा देहलस। हम ओकरा से सोझे एगो सवाल कइनीं।

"वान्या, हमरा एगो ख़ास सवाल में दिलचस्पी बा। का तें घमंड के चलते अपना चाचा किहाँ रहे से नकार देहले..... का एह मामला में तोर बाप सही रहले?"

"घमंड से ना," वान्या आपन नीला आँख से हमरा ओर देखत कहलस, "घमंड से काहे? सोझ बात बा। हम ना चाहत रहनीं जे उनका घरे रहीं। हमरा ओह चाचा के कवन दरकार बा?"

"बाकिर तोर चाचा किहाँ सभकुछ बेहतर बा आ ई तोरा परिवार खातिर एगो सहजोग होखित।"

हम कहे के त एह बात के कह देहनीं, बाकिर हम खुदे एगो टीस के अनुभव कइनीं। हम अपराध भाव से एगो मुसुकियो छोड़नीं, बाकिर वान्या के नीला आँख पहिलहीं जस स्वच्छ रहे।

"हँ, ई बाबूजी खातिर कठिन बा। बाकिर..... हम एक–दोसरा से अलग काहे होखीं? ई त पहिलहूँ से जादे कठिन होखी।"

बेसी सम्भव बा जे ओह क्षण हमरा चेहरा में कवनो ख़ास मूरखता के भाव रहल होखे, काहेकि वान्या खूब हुलसित हो के हँसे लागल। एजुगिया ले जे ओकर खलिहा गोड़ खिल्ली उड़ावत घास पर ऊपर–नीचे थिरके लागल।

"रउआ का सोचत बानीं? बाबूजी हमरा के चाचा किहाँ काहे भेजले? का रउआ ई सोचत बानीं जे ऊ एह से कइले जे एजुगिया हमनी के तादाद कम हो जाव? अइसन कवनो डर नइखे! हमार बाबूजी चतुर बाड़े..... ऊ एगो असली..... असली बूढ़ लोमड़ी जस बाड़े! ऊ चाहत बाड़े जे ई हमरा खातिर बेहतर होखित। रउरा बुझाइल जे ऊ कवना किसिम के आदमी बाड़े।

"आ तें एगो नीमन मोका गँवा देहले?

www.bhojpurisahityangan.com

"काहे? एमे बेहतर का बा?" – वान्या कहलस आ गम्भीर हो गइल। "का रउआ बाबूजी के बीच मझधार में छोड़ देहल नीमन कहेब? का ई नीमन बात बा? एमे कुछुओ बेहतर नइखे। ई त आउर बेजाँय बात होखित। चाचा किहाँ ऊ लोग नीमन खाना खाला, खाली इहे एगो चीज बा। बाकिर घर में एकरो ले कतहूँ बेसी नीमन बा। मेज पर बइठ जाईं त असली आनन्द आवेला। हमार बाबूजी विलक्षण आदमी बाड़े आ मतारियो ओइसने बाड़ी। बेशक हमनी के स्टर्जियन ना खानी सन, बाकिर रउआ बूझत बानीं जे स्टर्जियन नीमन चीज बा?"

"हँ, बूझत बानीं।"

"ऊँह, हमरा तनिको पसन्द ना परे। एकदमे कचड़ा लागेला। बाकिर आलू आ मशरूम के बारे में राउर का विचार बा? ओह से भरल कराही आ बीच–बीच में बाबूजी के दिलचस्प चुटकुला। हमार भाई–बहिन नीमन बाड़े सन। ओजा ना गइला के हमरा कवनो मलाल नइखे।"

त, ओह बतकही के कवनो नतीजा ना निकलल। वान्या घमंड के बात ना सँकरलस। ऊ हमरा के भरोसा देहलस जे ओकर घर ओजा ले बेहतर बा। जब हम विदा लेहनीं त ऊ बड़ी सनेह से, बाकिर चुनौती भरल स्वर में हमरा से कहलस :

"आज आईं हमरा घरे। साँझी के खाना हमनी के साथे खाईं– आलू आ मशरूम। रउआ सोचत होखब जे सभे खातिर आँटी कि ना? अरे, रउआ आ के देखीं त।"

"नीमन बात बा, त हम आयेब।"

"साँच बात, साँझ के भोजन पर आयेब! सात बजे। बिलकुल ठीक?"

सात बजे हम स्तेपान के घरे चल देहनीं। बारामदा में एगो मेज के लगे स्तेपान बइठल अखबार पढ़त रहले। लगहीं, बाहर खुलल रसोई में आन्ना आ ओक्साना चउका के काम में अझुराइल रहे। ओक्साना कड़ाही से हाथ हटवले बिना हमरा ओर देखलस आ हार्दिकता से मुसुकी छोड़त अपना मतारी से कुछुओ कहलस। आन्ना मुड़ के देखली आ तौलिया में हाथ पोंछत हमरा से मिले खातिर आगे बढ़ली।

"रउआ से मिल के बहुते नीक लागल! वान्या कहले रहे जे रउआ आयेब। स्तेपान हेने आव आ मेहमान से भेंट कर, राजनीति के अध्ययन खातिर तहरा बहुते समय मिल गइल बा।"

स्तेपान आपन चश्मा उतरले, ओकरा के अखबार के ऊपर धइले, आपन दाढ़ी पर हाथ फेरले आ होठ सिकुरावल शुरू क देहले। बाकिर ई आदर–सत्कार के व्यग्रता रहे आ ओमे तनी व्यंग्य के भाव रहे। कुटीर के दुआर पर दरवाजा के कोर धइले बड़का वान्या मुसुकी छोड़त खाड़ा रहे। वास्या ओकरा बाँह के नीचे से निकल के कुटीर में घुसल आ दोसर बाँह के नीचे से गुलाबी गाल वाली मरुस्या आपन हाथ ठेहुना पर धइले झाँकत रहे। ऊ अपना आँख पर जोर देत हमरा ओर ताकत रहे।

www.bhojpurisahityangan.com

पाँच मिनट बादे हम बड़का मेज के लगे बइठ गइनीं। ओह पर मेजपोश ना बिछल रहे। बाकिर ओकर कुदरती लकड़ी साफ आ चमकिला रहे। जब हम बइठ गइनीं त ओह मेज के सफेद सतह पर दुलार भरल ढंग से आपन हाथ फेरले बिना ना रह सकनीं। स्तेपान हमार एह भाव के ताड़ लेहले :

"रउआ ई पसन्द बा? हमहूँ सादा किसिम के मेज पसन्द करेनीं। ई असली चीज बा। कबनो मेरावट नइखे। रउरा जानत बानीं जे कुछ लोग जान–बूझ के गाढ़ रंग के गरदाखोर मेजपोश कीनेला। एह से जे ओमे मइल खप सके। बाकिर एकरा में असली सफाई बा आ कवनो असंगत बात नइखे।"

स्तेपान अपना घर में एगो अलगे तरे के आदमी रहले– बहुते आत्म–बिसवासी आ खुशमिजाज। उनकर चेहरा के पेशी उन्मुक्त भाव से काम करत रहे। चूल्हा के लगे एगो उजर पर्दा के पाछे बड़का वान्या, वित्या, सेम्योन आ वान्यूश्का खाड़ा रहले सन– पूरा के पूरा टीम। ओकनी के मुसुकी छोड़त अपना बाप के बतकही सुनत रहले सन।

अचके, सात बरीस के ल्यूबा कमरा में धउरत आइल। स्तेपान परिवार में ओकर सभसे जादे गाढ़ रंग रहे, मोटामोटी जैतून जस। आउर लइकन से अलगे तरे के ऊ कार्नेल के लाल बेर के माला पहिरले रहे।

"ओह," ल्यूबा कहलस, "देरी हो गइल, हमरा देरी हो गइल! वान्यूश्का, ले आव, दे!"

गम्भीर, भूअर आँख वाली वान्यूश्का आलमारी के सभसे निचिला खान्हा के लगे झुकल आ ल्यूबा के पारापारी पाव–रोटी के कटल टुकी से भरल छोटहन टोकरी आ फेर कुछ थरिया, कई गो चाकू, दूगो नमकदान आ आलमुनियम के चाय वाला चम्मच थमावे लागल। वान्यूश्का के बहिन ओकर गम्भीरता के जवाब मेज के चारु ओर जोरदार कामकाज से देहलस। एह से सउँसे कमरा में एक तरे के जोश भरल मित्रता वाला पुरजोर माहौल बन गइल।

जवना समय ल्यूबा आ वान्यूश्का मेज सजावत रहले सन, ओही घरी बड़का वान्या आ वित्या एगो बंक के नीचे से काठ के दूगो छोटहने कैंचीनुमा ढाँचा निकाल के ले अइले सन आ ओह पर एगो चाकर पटरा ध देहले सन। ई पटरा मेज जस साफ–सुथरा रहे। एह तरे मेज के बगल में एगो आउर मेज तइयार हो गइल। जैतूनी रंग के ल्यूबा थिरकत मेज के ऊपर थरिया सजा गइल। हमरा मुड़ के देखते–देखत मेज पर एगो पूरा दल धमक गइल– मरूस्या, वेरा, ग्रीशा, कात्या, पेत्या आ परिवार के सभ छुटका–मुटका। ओकनी में से हरेक आदमी कवनो ना कवनो फर्नीचर ले के आइल रहे। जेउँआ लइकन में कात्या आ पेत्या दोसर कमरा से आइल होखिहें सन। ओकनी के गम्भीर मुद्रा में तनी चिन्तित भाव से अपना बइठे के जगह से सटले छोटहन–छोटहन स्टूल धइले पूरा तरे से तइयार हो के आइल रहले सन। ओकनी के स्टूल के ओसहीं धइले, ओह काम चलाऊ टेबल में आपन जगह बनावत घुसिया के बइठ गइले सन आ बइठते गम्भीर मुद्रा में उम्मीद लगवले

www.bhojpurisahityangan.com

खामोश हो गइले सन।

दोसरा ओर चार बरीस के वेरा असाधारण रूप से हँसमुख लागत रहे। ऊ मरूस्या से बेसी मिलत–जुलत रहे। ओइसने लाल–लाल गाल, ओइसने फुर्ती, अन्तर खाली अतने भर रहे जे मरूस्या के बाल लमहर रहे आ वेरा के छोटहन। मेज पर बइठते ऊ आलमुनियम के चम्मच उठा लेहलस आ आपन मुँह बिरावे लागल। ऊ कवनो ख़ास आदमी के ओर ना, बलुक धूप से उजर खिड़की के तरफ देखत मुँह बिरावत रहे आ अपना चम्मच से मेज पर ठकठकावत रहे। वान्यूश्का आलमारी के लगे से ओकरा के देखलस आ ओकरा चम्मच के ओर देखत बिखिआइले आपन भौंह सिकोड़लस..... तबे वेरा ओकरा के मुँह बिरावे लागल। अपना गाल के तिरछे भीतर के ओर सिकोड़त चम्मच से थरिया पर ठकठकावे के अन्दाज में हाथ ऊपर उठवलस। ओकरा मुँह से हँसी फूटे वाला रहे, तले बड़का वान्या चम्मच समेत ओकर हाथ ध लेहलस। वेरा आपन बड़का–बड़का आँख ऊपर के ओर करत एगो मुसुकी छोड़लस। वान्या ओकर हाथ धइले झुक के ओकरा कान में कुछ फुसफुसइलस आ वेरा हमरा ओर तिरछे नजर से देखत धेयान से सुनत रहे। ओकरा बाद ऊ जोर से फुसफुसात कहलस, जइसन खाली चार बरीस के लइका कर सकत बा : "अहा..... अहा..... हम ना करब..... हम ना करब।"

हम एह मंत्रमुग्ध खेला के देख के अचरज में पर गइनीं। एही में जादे महातिम वाला क्षण देखे से चूक गइनीं। हमार मेज आ छुटकन–मुटकन के कैम्प–टेबल दुनू में आलू से भरल लोहा के बरतन आ गइल। हमरा खातिर बड़हन आ छुटकन–मुटकन खातिर छोट–छोट। आन्ना चउका में काम करे वाला आपन साँवर पेशबन्द बदल के एगो गुलाबी पेशबन्द पहिर चुकल रहली। ओक्साना आ सेम्योन तलल मशरूम से भरल दूगो गहिराह कटोरा ले आवाते मेज पर ध देहले सन। परिवार के सदस्य सभे आपन–आपन जगह ध लेहल। हमरा के अचरज में डालत वान्या हमरा मेज पर ना, बलुक कैम्प–टेबल पर मरूस्या के बगल में बइठ गइल। हुलसित हो के भौंह सिकोड़त ऊ बरतन के तोपना हटवलस– एगो घना आ सुगन्धित भाप बाहर निकलल। मरूस्या आपन गाल फुलावत बरतन में झँकलस। ऊ ओमे से निकलत गरम भाप से हुलसित होत रहे। भोजन के टेबल पर बइठल बकिया छुटकन–मुटकन पर नजर धउरावत ऊ ताली बजा के जोर–जोर से गावे लागल :

"कुरता पहिरले आलू अइले। आलू अइले कुरता पहिरले!"

हमरा मेज के लोग सहानुभूति से छोटकन के तरफ देखल, बाकिर ओकनी के हमनी पर कवनो धेयान ना देहले सन। वेरा गाना गावे लागल आ ताली बजावल शुरू क देहलस। ऊ अबहीं आलू ओर देखलहूँ ना रहे। कात्या आ पेत्या सांसारिक माया–जाल से अलग हरमेसा के तरे गम्भीर रहले सन। ओकनी के लोहा के बरतन के देखबो ना कइले सन।

"वेरा मध्यम स्वर के गायिका होखी," स्तेपान कहले, "सुनीं ऊ कइसे नकल करत बिया? तनी तीखा स्वर बा, बस थोरहीं।"

www.bhojpurisahityangan.com

बड़का वान्या वेरा के थरिया में आलू राखे लागल रहे आ मज़ाक–मज़ाक में ओकरा के डेरवावत रहे :

"वेरा तें एतना तीखा काहे गावत बाड़ी?"

वेरा गाना गावल बन्द क देहलस। ऊ आलू के थरिया आ अपना भाई के सवाल के बीच अझुरा गइल।

"का?"

"तोर आवाज अतना तीखा काहे बा?"

"तीखा?" वेरा फेर पूछलस, तले ले ओकर सगरी धेयान आलू पर सिमट गइल रहे आ ऊ अपना भाई के बात बिसर गइल।

आन्ना हमार, आपन मरद के आ आपन थरिया में भोजन परोसली। फेर बकिया काम के जिम्मेदारी ओक्साना के सउँप देहली। तबे बड़का वान्या घबराहट भरल चीख मारत उठ के खाड़ा हो गइल :

"हमनी सलाद के त भुलाइये गइल रहनीं हँ!"

सभे जोर–जोर से हँसे लागल। खाली स्तेपान उलाहना देत वान्या के ओर देखले :

"तें त बड़ महान बाड़े! तें त हमनी के सलाद से वंचित क देते।"

वान्या धउर के कुटिया से बहरी गइल आ अपना दुनू हाथे प्याज मिलल, नमकीन आ काटल सलाद से भरल दूगो गहिराह बरतन लेहले हाँफत आइल।

"सलाद तइयार करे के ओकर आपन विचार रहे," स्तेपान कहले। "वाह रे, अजीब आदमी, ऊ त साफे भूला गइल रहे!"

वान्या के भुलक्कड़पन पर हमरो मुसुकी छुटल। एह सुखद संगत में हमरो हर समय मुसुकियात रहे के मन करत रहे। हम पहिलहूँ कई बेर लोगन के घरे भेंट–मुलाकात करे जात रहनीं। बाकिर हमरा इयाद नइखे जे हम पहिले कबहूँ अइसन एकवठ परिवार में गइल होखीं। अइसन मोका पर अकसरे लइकन के घर के कवनो कोना में भेज देहल जात रहे आ खाली सेयान लोग दावत के मज़ा उड़ावत रहे। एह साँझ के भोजन के कई गो विवरण हमार धेयान घींचलस। मसलन, लइकन के ऊ तरीका हमरा बहुते पसन्द परल, जवना से एगो अतिथि के रूप में हमरा पर आपन दिलचस्पी आ भोजन पर आपन दिलचस्पी के बीच मेल बइठावत, अपना कर्तव्य के इयाद राखत आ अपना मतलब के छोटहन–छोटहन बातन के भूलातो ना रहले सन। टेबल के मामला के व्यस्तता से निभावत ओकनी के आँख हुलास से चमकत रहे, बाकिर बीच के अन्तराल में ऊ 'बाहरी' बात इयाद करे खातिर समय निकाल लेत रहले सन। ई हमरा खातिर एगो रहस्य रहे, काहेकि हम ओकनी के बतकही के कुछ अंश सुनले रहनीं : "कहँवा? नदी पर?" भा "वोलोद्या कोरा गप्प हाँकत रहे, बाकिर ऊ देखले ना रहे....."।

ई वोलोद्या पकिया तरे से चूब परिवार के वोलोद्या रहे। ओकरा पड़ोसी लइकन से कोरा गप्प हाँके के आदत रहे।

www.bhojpurisahityangan.com

हम एह सगरी बातन में दिलचस्पी लेहनीं। ओह लोग से मिल के हमरा खुशी भइल, बाकिर साथहीं हमरा खूब खाये के असली लोभी जस क्षुधातुरता के अनुभवो भइल। हमरा, अचके, आलू आ मशरूम खाये के चाह होखे लागल। ओपर से एजुगिया नमक लागल सलादो रहे। ऊ कवनो ख़ास तंग तश्तरी में सहेज के ना राखल रहे। पियाज के छल्ला ओकर सम्मान करत ओकरा के घेरलहूँ ना रहे आ ओकरा में कवनो सजावटो ना रहे। एजुगिया सलाद गाढ़ लाल–उजर रंग के बरतन में अस्त–व्यस्त जस सवदगर सलाद, भरपूरे ऊपर ले लबालब भरल रहे। पियाज के उजर टुकी सूरजमुखी के तेल में डूबल ओकरा साथे मैत्रीवत एकता में घुलल–मिलल रहे।

भोजन के बतकही नवका आ पुरनका जिनिगी पर चलत रहे।

"हमार मेहरारू आ हम पहिले के जमाना में कवनो चीज से डेरात ना रहनी सन," स्तेपान कहले, "बाकिर असल में डेराये खातिर बहुते कुछ रहे– पहिले गरीबी रहे, दोसर पुलिस रहे, तीसर जिनिगी उबाऊ रहे। हमरा उबाऊ जिनिगी से जादे नफरत आउर कवनो चीज से नइखे।"

"का रउआ आज–काल्ह जादे आनन्द आवत बा?" हम पूछनीं।

"ई एह बात पर निर्भर करत बा जे आनन्द से राउर का मतलब बा," स्तेपान मुसुकी छोड़त आलू के बरतन के ओर देखले। "होने ओक्साना बिया, ऊ 'रबफ़ाक' में पढ़ल अबहीं शुरू क रहल बिया। एकरा के रउआ जे चाहीं समझीं, बाकिर आठ बरीस में ऊ निर्माण इंजीनियर बन जाई। हमार बाप साठ बरीस में जेतना सपना देखले, ओकरा के रउआ गिनब त बीस हजार होखी। त सवाल ई बा जे ऊ का खाली सपना देखले? हम बूझत बानीं हर तरे के बेमतलब बात के। बाकिर हम बिसवास से कह सकत बानीं जे ऊ ई सपना कबहूँ ना देखले होखिहें जे उनकर बेटी निर्माण इंजीनियर बनी।

"बाकिर तूँ एकर सपना देखले रहल?" आन्ना उनका ओर पैनी नजर से देखत पूछली।

"त तहरा बिसवास नइखे? हम काल्हे रात में एगो सपना देखनीं जे ओक्साना घरे आइल बिया आ हमरा के समूर के एगो कोट उपहार में दे रहल बिया। बाकिर सपना में हम ई ना समझ पवनीं जे समूर केकर रहे। हम ओकरा से कहनीं : 'हमरा एह तरे के समूर के कोट के कवन जरूरत बा। ढलाईशाला में एह तरे के कोट से हमरा जादे परेशानी होखी।' 'ई ढलाईशाला लायक नइखे', ऊ कहलस, 'आईं, हमनी के निर्माण के काम वाला जगह पर चलल जाव। हम सेवेरनाया जेम्ल्या में एगो रेडियो टीसन के निर्माण के काम करत बानीं'। हम खुदे बोयारो जइसन एगो बड़हन कोट पहिरले बानीं।"

ओक्साना, जे हमरा बगल में बइठल रहे, के भौंह तनी सकुचाइल आ ऊ शरमा गइल, आपन बाप के बात से ना, बलुक सभके धेयान अपना ओर भइला से। सेवेरनाया जेम्ल्या में एगो रेडियो टीसन के भावी निर्माता के देखल सभके नीमन

www.bhojpurisahityangan.com

लागत रहे।

"ओक्साना!" वास्या कहलस, "हम बाबूजी के साथे तोरा से भेंट करे आयेब त तें हमरा खातिर फेल्ट के एक जोड़ी जूता कीन दीहे।"

मेज पर बइठल सभे हँसे लागल आ एही तरे के कई गो आउरो बेवहारिक प्रस्ताव पेश कइल गइल।

"बाबूजी, कवनो संजोग से रउआ हमरा बारे में कवनो सपना ना देखनीं?" बड़का वान्या मुसुकी छोड़त कहलस, "हमरा खातिर एकर जादे महत्त्व बा।"

"हँ, देखनीं," स्तेपान हामी भरत आपन दाढ़ी के हास्यास्पद तरे से थरिया के ऊपर हिलावत कहले। "बेशक हम देखनीं, बाकिर ऊ नीमन सपना ना रहे। हम देखनीं जे तें अपना चाचा से भेंट करे गइल बाड़े। तबे कुछ लोग धउरत–चिल्लात हमरा लगे आइल। ऊ लोग कहल जे तहार वान्या के पेट में दरद उपट गइल बा, काहेकि ऊ अपना चाचा के एगो सेब खा लेले बा। सेब खा के ऊ विषाक्त हो गइल बा!"

सभे ठहाका लगा के हँसे लागल। तबे वित्या मेज के ओह पार से चिल्लाइल –"आ स्टर्जियन से, ओजुगिये के स्टर्जियन से अइसन भइल!"

अब सभे हुलसित भाव से वान्या के ओर देखे लागल रहे आ ऊ बिना कवनो संकोच के अपना बाप के तरफ देख के हँसत रहे। फेर ऊ आउर हुलसित हो के पूछलस : "त का हम मर गइल रहनीं ..... विषाक्तता से?"

"ना," स्तेपान जवाब देहले, "तें मुअली ना, लोग धउर के एम्बुलेन्स ले आइल आ तोर जान बचा लेहल गइल।"

आलू खइला के बाद स्तेपान खुदे एगो बड़हन चमचमात केटली ले अइले आ हमनी के चाय पीयल शुरू क देहनी सन। चाय सादा आ असली रहे। बेंत के बनल प्लेट में चीनी आ मक्खन वाला दूगो यूक्रेनी केक ले आवल गइल। हरेक केक के व्यास आधा मीटर से कम ना रहे। हम अइसन केक पहिलहूँ देखले रहनीं आ ओकर भव्यता से हरमेसा चकित हो जात रहनीं।

कोर्ज–ज–सालोम नाँव के एह यूक्रेनी केक के भीतर चीनी आ मक्खन के छोट–छोट शंकु बिखरल रहत रहे। ओकरा अगली–बगली पेस्ट्री बहुते सवदगर, नम आ तनी नमकीन लागत रहे। केक के अइसन भाग के मुँह में आइल आ ओकरा के सवादल पकवान के भोग के असली सार बा। ओकर ऊपरी भाग एगो मैदान जस रहे– कतहूँ सफेद त कतहूँ गुलाबी। एह मैदान में छोटहन–छोटहन टीला जस उतार–चढ़ाव होत रहे आ ई टीला पातर पपड़ी से बनल रहत रहे। कवनो कारण से कोर्ज–ज–सालोम के चाकू से नइखे काटल जा सकत, बलुक तूरे के परेला। एकर गरम पपड़ीदार टुकी कुछ अइसने चीज बा, जवना के केहू कबहूँ नइखे भूलात।

स्तेपान परिवार हुलास भरल चीत्कार के साथे कोर्ज के स्वागत कइल। छोटकन–मुटकन के टेबल पर असली हुलास पसरल रहे। जेउँआ लइकन में

www.bhojpurisahityangan.com

कात्या आ पेत्या आपन गम्भीर हाव–भाव छोड़–छाड़ के मुसुकी छोड़े लगले सन।

हमरा मेज पर सेम्योन आ वित्या रहले सन। ओकनी के कोर्ज के बारे में पहिले से ना बतावल गइल रहे। ऊ दुनू अचरज से आँख फरले देखे लगले सन आ एके बेर जोर से चिल्लइले सन –"ओ–हो! को–र्ज"। स्तेपान हुलास के मारे हाथ मले लगले।

रात के ई भोजन स्तेपान परिवार के साथे हमार नजदीकी पहचान के शुरुआत रहे। हमरा स्तेपान परिवार से ढेर बात सीखे के रहे। सभसे बड़हन बात ई रहे जे ओह लोग से हमरा सोचे–विचारे के ढेरे मसाला मिलत रहे।

स्तेपान के अपना परिवार के लालन–पालन के तरीका तनी तकनीकी समग्रता के नजरिया से सराहे जोग नइखे, तबो ई सोवियत शैक्षिक चिन्तन के बहुते संवेदनशील ताना–बाना के उजागर करत बा। एकरा में एगो नीमन, स्वस्थ आ सामूहिक भावना बा। जादेतर नतीजा में नीमन रचनात्मक आशावाद बा। छोट–छोट बातन आ विवरण के संवेदनशील विमर्श बा। एकरा बिना वास्तविक शैक्षिक काम कइल मोसकिल बा। विवरण के अइसन बतकही आसान नइखे। एकरा बदे धेयान के जरूरते भर नइखे, बलुक अनवरत धैर्यपूर्ण चिन्तन के दरकार बा। छोट–छोट बात मोसकिले से देखे–सुने के भेंटात बा। अइसन छोट–छोट बात बहुते होत बा आ ओकर आवाज़ आपस में अझुरात एगो उलझन भरल शोर में बदल जात बा। एह सगरी उलझन के सझुरावले भर नइखे, बलुक ओह महत्वपूर्ण भावी घटनन के योजना बनावे के परत बा, जे परिवार के सीमा से बहुते दूर ले जात बा।

हँ, स्तेपान अपना परिवार के घर में बनल उपकरण के सहजोग से एगो सामूहिक निकाय में एकवठ कइले बाड़े, बाकिर ऊ अइसन अविचल भाव आ धीरज के साथे कइले बाड़े। साँच बा जे परिवार में कुछ कमी रहे आ ऊ गलतियो कइले रहले। शायद उनकर लइका सभ जरूरत से जादे अनुशासित आ शान्त रहले सन। एजा ले जे छुटकन–मुटकन सभ में एक तरे के संयम रहे। हमरा अहाता के बाल–मण्डली में स्तेपान परिवार के लइका सभ हरमेसा शान्ति के वकालत करत रहले सन। ऊ खुशमिजाज, जिन्दादिल, सक्रिय आ समझ–बूझ वाला रहले सन। बाकिर ऊ झगड़ा–झंझट से दूरे रहत रहले सन।

एक दिन वॉलीबाल के मैदान में मजबूत कद–काठी के चौदह बरीस के गुस्सैल वोलोद्या चूब गेन्दा फेंके के अपना बारी के सही समय पर छोड़े से नकार देहलस। ओकर टीम कवनो विरोध ना कइल, काहेकि वोलोद्या गेन्दा फेंके में साँचो माहिर रहे। ओकर विरोधी टीम के कप्तान सेम्योन रहे। ई रेफरी के बगैर खेले वाला अबेवस्थित खेल रहे। सेम्योन अपना हाथ में गेन्दा धइले रहे।

"ई ठीक नइखे," ऊ कहलस।

"तोरा एकरा से मतलब," वोलोद्या चिल्लाइल। "अपना टीम में लगातार गेन्दा फेंके वाला कवनो खिलाड़ी राख ले।"

अइसन माहौल में दोसर कवनो लइका निश्चित रूप से तू–तू, मैं–मैं करित

www.bhojpurisahityangan.com

भा खेल छोड़ के भाग जाइत। काहेकि न्याय के सवाल के किशोर लइका जवना बारीकी से जाँचत बाड़े सन, ओइसन न्याय के देवियो नइखी कर सकत। बाकिर सेम्योन खाली मुसुकी छोड़लस आ फेर खेले लागल। तबो पहिले ऊ कहलस :

"त ठीक बा! ई ओकर कमजोरी बा। ओकरा कवनो ना कवनो तरे से जीते के बा।"

बाकिर एकरा बादो वोलोद्या के टीम हार गइल। एह पर बिखिआइल–पिनपिनाइल वोलोद्या सेम्योन पर सवालन के लरी लगा देहलस :

"आपन बात वापस ले, 'हम कमजोर बानीं' से तोर का मतलब बा।"

वोलोद्या के हाथ ओकरा पाकेट में रहे आ एगो कन्धा आगे बढ़ल रहे– ई आक्रामण के चिन्हासी रहे। सेम्योन अबहुँओ मुसुकियात रहे। वोलोद्या के पूरा तरे से ऊ सन्तुष्ट क देहलस :

"हम आपन बात वापस लेत बानीं। तोर टीम जादे मजबूत बा। अतना जे....."।

ऊ आपन मतलब समझावे बदे आपन हाथ खाड़ा क देहलस। आपन नैतिक जीत पर इतरात वोलोद्या कहलस : "ई बात ठीक बा! आव, एगो खेल आउर खेलल जाव, तब तें देखबे।"

सेम्योन राजी हो गइल आ अबकी बेर ऊ हार गइल। बाकिर खेल के मैदान से ऊ ओही शान्त भाव से मुसुकियात चल गइल। विदा होत बेर ऊ वोलोद्या से कहलस : "बाकिर हम ई सलाह ना देव जे तें हरमेसा अइसने कर। हमार बात अलग बा, काहेकि ई दोस्ताना मैच रहे। बाकिर गम्भीर खेल में रेफरी तोरा के मैदान से सोझे बहरिया दी।"

बाकिर अब वोलोद्या अपना जीत पर हुलसित रहे आ सेम्योन के बात के बाउर ना मनलस :

"बाहर करी त करे दे। जवन होखे। अबकी बेर त हमहीं जीतनीं।"

बहुते आउरो मोका जइसन एहू मोका पर शैक्षिक सिद्धान्त के एगो अच्छा ख़ासा उलझलन भरल परस्पर विरोधी इच्छा के टकराव उभर के आइल। थोरथार हमहूँ वोलोद्या के बिखिआइल एह अन्याय भरल जल्दीबाजी आ ओकर जीत के चाहत से खुश रहनीं, जबकि व्यंग्य भरल सेम्योन के विनीत सोभाव सन्देहास्पद लाग सकत रहे। हम ई सगरी बात सोझ–सोझ स्तेपान से कहनीं। उनका मुँहे एगो सुनिश्चित सही जवाब सुन के अचरज में पर गइनीं। एह से ई साबित भइल जे उनका एह समस्या में खाली दिलचस्पी भर ना रहे, बलुक ऊ एह पर सही–सलामत सोच–विचार कइले।

"हम सोचत बानीं जे ई सही बा," स्तेपान कहले। "हमार सेम्योन एगो चतुर लइका बा आ ऊ सही काम कइले बा।"

"ई सही काम कइसे हो सकत बा? वोलोद्या दुस्साहस करत रहे आ जवन चाहत रहे, ऊहे भइल। एगो संघर्ष के एह तरे खतम ना होखे के चाहीं।"

"ओकरा कुछुओ ना भेंटाइल। एक–आध गो गेन्दा फेंक देहला के कवनो

www.bhojpurisahityangan.com

मतलब नइखे। असल में वोलोद्या आपन कमजोरी देखवलस आ सेम्योन आपन शक्ति। ओहू में बेसी प्रबल शक्ति। का रउआ अइसन नइखीं समझत? ई एह बात पर निर्भर करत बा जे झगड़ा कवना बात पर रहे। एजुगिया एगो ना, बलुक दूगो झगड़ा बा– एगो गेन्दा खातिर आ दोसर जादे महत्त्वपूर्ण, लोगन के बीच समझौता खातिर। काहे, खुद रउआ बतवनीं जे ओकनी के लड़ले सन ना, झगड़ो ना कइले सन, बलुक एगो अतिरिक्त खेला खेलले सन। ई बहुत नीमन बात बा।"

"बाकिर हमरा एह पर संशय बा। स्तेपान, अइसन समझौता, रउआ समझीं....."।

"ई निर्भर करत बा जे कब," स्तेपान विचारत कहले। "हम समझत बानीं जे अब समय आ गइल बा जे हमनी के तरे–तरे के चीज का बारे में लड़े–झगड़े के सोभाव छोड़ देवे के चाहीं। लोग पहिले जानवर जस रहत रहे। कवनो आदमी के गरदन ध लीं त रउआ ठीक बानीं। बाकिर फेर छोड़ीं मत, ना त ऊ राउर गरदन में दाँत हला दी। ई हमनी बदे सही नइखे। हमनी के एक–दोसरा के साथी होखे के चाहीं। आखिर, अगर एगो कामरेड जोर–जबरदस्ती करत बा त ओकरा के चेतावनी देहल जा सकत बा। एकरा बदे हमनी के लगे बेवस्था बा। एजुगिया रेफरी ना रहे आ बेवस्थो बेजाँय रहे, बाकिर एकरा से का? ई कुछ अइसन बात नइखे जे हमनी एक–दोसरा के गरदन दबोचे लागीं?"

"आ अगर सेम्योन एगो असली दुश्मन से टकरा जाव त?"

"त ई दोसर बात बा। अगर अइसन होत बा आ ऊ असली दुश्मन बा त सेम्योन का बारे में फिकिराह होखे के कवनो जरूरत नइखे। अगर जरूरत परी त कवनो फिकिर नइखे। ऊ ओकर गर्दन दबोच ली आ ओकरा के छोड़बो ना करी।"

हम स्तेपान के बात पर विचार कइनीं आ उनकर चेहरा इयाद कइनीं त हम एह बात के साफे बूझ गइनीं जे स्तेपान सही रहले। सेम्योन असली दुश्मन के साफे ना छोड़ी।

तब से अब ले अनेक बरीस बीत गइल। हम स्तेपान परिवार के रहत–सहत, विकसित आ फरत–फूलत देखनीं। उनकर मजबूत आपसी रिश्ता कबहूँ ना मरुआइल। उनका चेहरा में परेशानी के भाव आ हर समय जरूरत रहला का बादो अभाव के कवनो चिन्हासी ले ना लउकल।

बाकिर जरूरतो गँवे–गँवे घटत गइल। लइका सेयान हो गइले सन आ अपना बाप के सहजोग करत रहले सन। शुरुआत में ओकनी के आपन पूरा वजीफा पारिवारिक कोष में देत रहले सन। बाद में आपन पूरा दरमाहा देवे लगले सन। ओक्साना साँचो निर्माण इंजीनियर बन गइल आ स्तेपान परिवार के आउरो सदस्य नीमन सोवियत नागरिक बन गइल।

फैक्ट्री में हमनी सभे स्तेपान परिवार के पसन्द करत रहनी सन। हमनी के उनका पर गर्व रहे। स्तेपान के सामाजिक प्रकृति बहुते ठोहर रहे। ऊ हरेक काम आ हर समस्या में कवनो ना कवनो रूप में भाग लेत रहले। सगरी काम में आपन सोच, शान्ति आ मुसुकी भरल बिसवास से सहजोग करत रहले। 1930 में हमार पार्टी

www.bhojpurisahityangan.com

संगठन असली समारोह का साथे उनका के पार्टी के पाँत में शामिल कइलस।

स्तेपान परिवार के लालन–पालन के तरीका के हम बहुते धेयान से देखनीं। ओकर अध्ययन कइनीं। आउरो लोग उनका से बहुते कुछ सीखल। स्तेपान परिवार के प्रभाव से चूब के परिवारो सुधर गइल। अइसे ऊ खुदे कवनो बेजाँय परिवार ना रहे। चूब के परिवार में तनी ज़ादे अबेवस्था रहे, जादेतर अनपेक्षित घटना घटते रहत रहे, जादे मनमानी चलत रहे आ बहुते कुछ अधूरा रह जात रहे। बाकिर ओह लोग में ढेर उत्तम कोटि के सोवियत आवेग आ एक तरे के कलात्मक रचनात्मकता रहे। चूब खुदे अपना परिवार में शायदे कबहूँ निरंकुश बाप के तरे काम कइले। ऊ एगो दयालु सोभाव के नागरिक रहले। एकरे चलते उनकर परिवार एगो भरल–पूरल स्वस्थ सामूहिक निकाय के तरे विकसित भइल।

चूब दम्पति स्तेपान परिवार के प्रभावशाली श्रेष्ठता से तनी जरतुआह सोभाव राखत रहे। जब चूब परिवार में सातवाँ बेटा जनमल त चूब खुशी से उछल गइले। सभका खातिर एगो शानदार समारोह के आयोजन कइले। ओह समारोह में अपना परिवार आ अतिथि के सोझा कुछ अइसने भाषण देहले :

"सातवाँ लइका के जनम भइल एगो ख़ास मोका बा। हम खुदे अपना मतारी–बाप के सातवाँ लइका रहनीं। मेहरारू सभ हमरा से कहली सन जे सातवाँ लइका खुशकिस्मत होला। अगर ऊ एगो मुर्गी के आखिरी अण्डा के अपना काँख में चालीस दिन आ चालीस रात ले एही तरे दबवले रखिहें त ओह अण्डा से निश्चय एगो दानव जनम ली, घरेलू काम खातिर उपयोगी एगो छोटहन दानव। ऊ दानव सगरी आज्ञा मानी। बता नइखीं सकत जे केतना अण्डा हम जियान कइले होखब। बाप हमार खूबे पिटाई कइले। तबो ऊ दानव कबहूँ जनम ना लेहलस। दिन भर काँख में अण्डा राखल जा सकत रहे, बाकिर साँझ के ऊ दब के फूट जात रहे भा कतहूँ गिर जात रहे। ई एगो मोसकिल काम रहे– अण्डा से आपन खुद के दानव पैदा कइल।"

"लोग केतना हजार बरीस से एह दानव बदे परेशानी उठावत रहल बा," एकाउण्टेण्ट पिजोव कहले। "ऊ लोग कहत रहे जे हर आदमी के साथे एगो दानव टँकाइल रहेला। बाकिर सगरी बात के देखत जिनिगी के अधिवेशन पर एकर बहुते कम असर देखे के मिलत रहे। एह दानव के जनम साँचो बेहद कम रहे।"

स्तेपान आपन दाढ़ी सहरावत मुसुकी छोड़ले :

"चूब, तहरा घरे कुछ छोटहन दानव अबहुँओ पोसा रहल बाड़े सन। अगर तूँ अपना खटिया के नीचे देखब त साइत एगो ओजुगिये बइठल होखी।"

"अरे ना हो," चूब हँसत कहले, "ओजुगिया कवनो नइखे। सोवियत शासन में हमनी के ओकर जरूरत नइखे। अच्छा, त रउआ सभे शराब के मज़ा लीं। ई जाम बा स्तेपान परिवार के बरोबरी पहुँचे खातिर भा उनका के पछाड़े खातिर"

हमनी के खुशी–खुशी आपन जाम टकरवनीं, काहेकि ई ओतना बेजाँय जाम ना रहे।

***

www.bhojpurisahityangan.com

चउथा अध्याय

धन! आदमी के सगरी आविष्कारन में एगो अइसन आविष्कार बा, जे आदमी के शैतान बना देला। नीचता आ धोखाधड़ी के हरकत बदे एकरा से जादे व्यापक कवनो क्षेत्र नइखे आ पाखण्ड के फरे–फुलाये में एह से बेसी उपजाऊ जमीन कतहूँ ना भेंटाई।

अइसन लागेला जे सोवियत जिनिगी में पाखण्ड खातिर अइसन कवनो जगह ना होखी। तबो एकर रोगाणु हेने–होने पनपिये जात बा। हमनी के ओकरा बारे में भुलाये के ठीक ओइसने कवनो अधिकार नइखे, जइसे इन्फ्लुएंजा, मलेरिया, टायफायड आ आउर बेमारी के रोगाणु का बारे में हमनी के कतई भूले के ना चाहीं।

पाखण्ड के फार्मूला का ह? एक तरे से ई अहंकार, जरतुआह सोभाव, आदर्शवादी मूरखता के नीरस पृष्ठभूमि आ बनावटी विनम्रता के सौन्दर्य भाव के मेरावट बा। एमे से कवनो तत्व सोवियत जिनिगी में टिक नइखे सकत। जहँवा भगवान आ शैतान आदमी के अन्दरुनी मामला में दखल देत बा आ नेतृत्व के अधिकार के दावा ठोकत बा, ओजुगिया के बाते अलग बा। पाखण्डी के लगे एगो बगली धन खातिर रहत बा त दोसर प्रार्थना के किताब बदे। पाखण्डी आदमी भगवान आ शैतान दुनू के सेवा करत बा आ दूनों के मूरख बनावत बा।

पहिले के दुनिया में जे आदमी धन–संचय करत रहे, ऊ कमोबेस पाखण्डी भइले बिना ना रह पावत रहे। ई जरूरी ना रहे जे हरमेसा 'तारतुफ' के भूमिका निभावल जाव। आखिर में पाखण्ड खातिर शालीन रूप खोज लेहल गइल, जे आदिम हाव–भाव आ हास्यास्पद सहजता से मुक्त रहे। जादे घातक किसिम के शोषक ई सीख लेहल जे श्रमिकन से कइसे हाथ मिलावल जात बा, सर्वहारा के साथे अलग–अलग मामला पर बतकही कइसे कइल जात बा, कन्धा कइसे थपथपावल जात बा, हास–परिहास कइसे कइल जात बा, संरक्षण आ परोपकार के साथे समुचित शालीनता आ शायद लाज के देखावा कइसे कइल जात बा। एकरा चलते एगो मनोरम आ आकर्षक रूप–सरूप उभर के आवत रहे। ओह लोग के भगवान के महिमा फइलावे के जल्दीबाजी ना रहत रहे। ऊ लोग एह बात के बहाना बनावत रहे जे ओह लोग के एह से कुछुओ लेवे–देवे के नइखे। सामान्य तरे से ना त एह धरती पर आभार जतावल जरूरी बा आ ना सरग में। ऊ एगो शानदार तरे से बनल चालाकी के नीति रहे। कवनो एगो 'तारतुफ' भगवान के खुश करे

www.bhojpurisahityangan.com

खातिर साफे जमीन पर पटा जात रहे। ओकर चमचई सक्रिय, अड़ियल आ अबाध होत रहे। बाकिर एही वजह से एह तरे के 'तारतुफ' में से दस मील दूरे से शैतान के गन्ध आवे लागत रहे। शैतान अपना के छुपावे के कोशिशो ना करत रहे। ओजुगिये आराम से आपन अड्डा जमवले तम्बाकू पीयत रहे आ जनता का बीच आवे खातिर आपन पारी के आराम से इन्तजार करत रहे।

ऊ पाखण्ड के अभद्रतम रूप रहे। आधुनिक काल के पश्चिमी पाखण्डी हर चीज के इर्ष्याजनक पूर्णता के साथे बेवस्थित क लेले बा– परमेश्वर ना, सन्त ना आ कम से कम ई जे ओकरा में शैतान के गन्ध नइखे आवत। असल में ओकरा में से सिवाय इत्र के आउर कवनो गन्ध आवते नइखे।

बाकिर ई सभ पवित्रता सुघर तकनीकी भर बा। एकरा सिवा आउर कुछुओ नइखे। भीड़ खतम होखते परिवार के अन्दरुनी क्षेत्र में मतारी–बाप रह जात बा। ओह लोग के सोझा अपना लइकन के शिक्षा देवे के समस्या आवते हमार दुनू साथी रंगमंच पर धमक जात बा– साफ–सुथरा हजामत बनवले नम्रता से मुसुकी छोड़त भगवान आ बदनाम, सड़ल–गलल दाँत वाला बेहूदा जस बिखिआइल शैतान। एमे पहिलका एगो आदर्श बा त दोसरका के लगे खनखनात रुपया–पइसा से भरल एगो बटुआ बा, जवन आदर्श से कम सुख देवे वाला जिनिस नइखे।

अइसन ओह परिवार में होत रहे, जहँवा सामाजिक युक्ति के कवनो दरकार ना रहे, जहँवा सभसे ताकतवर जैविक वृति आ अशान्ति के बोलबाला रहे, जहँवा ओकर निकम्मा सन्तान हेने–होने छिछियात फिरे। इहे ऊ जगह रहे, जहँवा अन्याय भरल, खून के पियासल आ बेहया बेवस्था अततायी जस अभद्र बेवहार से आपन जमीन तइयार कइलस। ओकर घिनौना चेहरा के सोरहो सिंगार से छिपावल मोसकिल रहे। एह बेवस्था के नैतिक अन्तर्विरोध, ओकर बेवहारिक आ कारोबारी निर्लज्जता लइकन के मूल पवित्रता बदे अपमानजनक लागत रहे।

एही से एजुगिये बुर्जुआ परिवार में शैतान के ओकर धन आ शैतानी चालबाजी समेत कवनो दूर कोना में भगावे के लगातारे कोशिश कइल जात रहे। इहे कारण रहे जे बुर्जुआ परिवार सम्पत्ति के स्रोत के गुप्त राखे के जतन करत रहे। ऊ बुर्जुआ परिवारे रहे, जे लइकाईं के धन से अलग राखे के बेमतलब प्रयास कइलस। एजुगिये "श्रेष्ठ नैतिक चरित्र" समेत शोषक के लालन–पालन बदे बेनतीजा कोशिश कइल गइल। अपना आदर्शवादी परहितवाद के योजना, काल्पनिक दयालुता आ अनुपार्जनशीलता समेत ऊ प्रयास ओह परिष्कृत पाखण्ड के शिक्षा देवे के कोशिश के सिवा आउर कुछुओ ना रहे।

निकोलाई निकोलायेविच बाबिच एगो खुशमिजाज आदमी लागत रहले। ऊ आपन जीवन्त आ सुखी जिनिगी देखावे खातिर अपना कारोबारी बतकही में कुछ अजबे बेमतलब शब्दन के जबरन घुसेड़त रहले। मसलन, "भला कर, भगवान!" भा "ओ पवित्र माई!" जब मोका लागे त मज़ाकिया किस्सा सुनावल पसन्द करत रहले। ओहू में बहुते जोर से आ विस्तार से सुनावत रहले। उनकर चेहरा गोलाह रहे,

www.bhojpurisahityangan.com

बाकिर ओमे सद्प्रकृति आ सुजनता के रेखा ना रहे। जवन रहबो कइल ओमे लचक नाहिंये के बराबर रहे। ऊ एगो भावहीन मुखौटा जस गतिहीन रहे। उनकर माथा बड़हन आ बहरी ओर उभरल रहे। ओमे झुर्रियन के लकीर जादेतर सोझ रहे, जवन कबहूँ हिले त अइसन लागे जइसे सैनिक के आदेश पर हिलत होखे।

निकोलाई हमार कारखाना में आफिस प्रधान रहले।

हमनी एके बंगला में रहत रहनी सन। ऊ बंगला शहर के कगरी ओह घरी बनल रहे, जब हमनी के देश में बंगला बनावे के जादे चलन रहे। हमार बंगला में चार गो फ्लैट रहे, जवन हमार फैक्ट्री के रहे। बकिया फ्लैट में रहे वाला में प्रमुख इंजीनियर निकिता कोंसतान्तीनोविच लिसेंको, प्रधान एकाउण्टेण्ट इवान प्रोकोफ्येविच पिजोव दुनू जन हमार पुरान सहजोगी रहे। ऊ लोग ओही घरी से हमरा साथे रहत रहे, जवना घरी हमरा वेल्किन से परिचय भइल रहे।

ई बंगला हमनी के पारिवारिक मामला के एगो ठेहा रहे। सभकर पारिवारिक बात हमनी खातिर सुपरिचित रहे। एजुगिये हमरा पारिवारिक समूह के अन्दर धन के समस्या के समाधान मिलल। एह समस्या बदे हमार पड़ोसी लोग के रुख एक–दोसरा से साफे फरक रहे।

निकोलाई से परिचय के शुरुआत में हम उनकर परिवार के ठोहर उदासी देख के हैरान रह गइनीं। उनका फ्लैट के हरेक सामान मोट, भारी–भरखम टँगरी पर टिकल रहे। कुरसी, मेज, खटियो पर गम्भीरता आ सत्कारहीनता के मोटाह परत चढ़ल रहे। बलुक जब कबहूँ मेजबान मुसुकियात रहे त अइसन लागत रहे जे उनकर फ्लैट के देवार, फर्नीचर आ आउरो सगरी सामान मकान मालिक पर पहिलहूँ से जादे नाक–भौंह सिकोड़त रहे। एह से निकोलाई के मुसुकी छोड़लो पर उनका अतिथियो पर कवनो असर ना परत रहे, बाकिर एकरा से उनका कवनो फरक ना परत रहे।

कबहूँ उनका अपना बेटा भा बेटी के सम्बोधित करे के होखे त उनका चेहरा से मुसुकी अइसे गायब हो जाव, जइसे कबो ओकर अस्तित्व रहले ना होखे। अब ओह मुसुकी के जगह एगो विचित्र भाव, आदतन परोपकार करे वाला आदमी के शिथिल भाव, लउके लागत रहे। उनकर लइका सभ लगभग हमउमरिया रहले सन– तेरह से पनरह बरीस के बीच। ओकनियो के चेहरा बापे जइसन गतिहीन आ भावहीन लागत रहे।

हम निकोलाई परिवार में शायदे कबहूँ जात रहनीं। बाकिर जब कबहूँ जाईं त हरमेसा अइसने बात सुने के मिले :

"बाबूजी, हमरा के बीस कोपेक दीं।"

"काहे?"

"हमरा एगो नोट–बुक कीने के बा।"

"कइसन नोट–बुक?"

"अंकगणित के।"

www.bhojpurisahityangan.com

"का पहिलका अबहिंये ओरा गइल?"

"अब ओमे खाली एगो पाठ के जगह बाँचल बा।"

"हम काल्ह तोरा खातिर दूगो नोट–बुक कीन देब।"

भा फेर हइसन बतकही :

"बाबूजी, नाद्या आ हम सिनेमा देखे जात बानी सन।"

"नीमन बात बा।"

"बाकिर पइसा के का होखी?"

"टिकट केतना के बा?"

"पचासी कोपेक के एगो।"

"हमरा खेयाल से अस्सी के बा।"

"ना, पचासी के।"

निकोलाई आलमारी के लगे जात बाड़े। आपन पाकिट से चाभी निकालत बाड़े। एगो दराज खोल के ओमे से कुछ चीज खोज के निकालत बाड़े। फेर दराज में ताला मार देत बाड़े। मेज पर एगो रूबल आ सत्तर कोपेक ध देत बाड़े।

उनकर लइका पइसा उठा के अपना मुट्ठी में समेटत बा। फेर 'धन्यवाद' कहत चल जात बा। एह सगरी कार्यवाही में लगभग तीन मिनट लागत बा। ओही दरम्यान लइका के चेहरा लाल आ आउर लाल होत जात बा आ कार्यवाही खतम होखे ले ओकर कानो लाल हो के चमके लागत बा। हम गौर कइनीं जे लालिमा के गहराई वांछित धन पावे के विलोम अनुपात में रहे आ गहनतम सीमा ले तब पहुँचल, जब लइका कहलस :

"बाबूजी, हमरा के आउर दस कोपेक दीं।"

"ट्राम खातिर।"

"हँ।"

आलमारी के दराज में अब फेर ऊहे प्रक्रिया दोहरावल गइल आ मेज पर पाँच–पाँच कोपेक के दूगो सिक्का ध देहल गइल। लइका झेंपत ओकरा के उठावत बा आ 'धन्यवाद' कहत चल जात बा। एक बेर लइका दस के जगे बीस कोपेक मँगलस आ बात समझावत कहलस जे दस कोपेक नाद्या के ट्राम भाड़ा खातिर बा।

निकोलाई आलमारी के लगे गइले। चाभी खातिर पाकेट में हाथ डलले, बाकिर अचके थथम गइले आ लइका के ओर घूम के बोलले :

"हमरा ई पसन्द नइखे जे अपना बहिन के तरफ से तें माँग। ओकरो लगे जबान बा। नइखे का?"

अबकी बेर सगरी कार्यवाही खतम होखे ले तोल्या के झेंप अपना अधिकतम सीमा ले पहुँच गइल।

"ऊ आपन स्कूल के काम करत बिया।"

"ना, तोल्या एकरा से काम ना चली। अगर ओकरा पइसा के दरकार बात ऊ खुदे माँगे। ना त तें एक तरे के खजांची बन जइबे। हमरा तोरा बदे बटुवा कीने

www.bhojpurisahityangan.com

के परी, जवना में तें पइसा राख सके। एह से कतई काम ना चली। जब तें खुद कमाये लगबे त दोसर बात होखी। ई रहल दस कोपेक आ नाद्या अपना खातिर माँगे खुद आ सकत बिया।"

पाँच मिनट बादे नाद्या दरवाजा पर पहुँचल। ओकर कान पहिलहीं से भउर नियर लाल हो गइल रहे। ऊ आपन याचिका लगले पेश ना कइलस। ऊ पहिले तनी मुसुकी छोड़े के असफल जतन कइलस। निकोलाई उलाहना के भाव से ओकरा ओर देखले त ओकर मुसुकी लगले बिला गइल। ओकर उलझन आउरो बढ़ गइल– नाद्या के पलक ले लाल हो गइल रहे।

"बाबूजी, हमरा के ट्राम खातिर कुछ पइसा दीं।"

निकोलाई कवनो सवाल ना कइले। हम सोचनीं जे ऊ नाद्या के दस कोपेक दे दीहें, जवन उनका पाकिट में पहिलहीं से रहे। बाकिर ना, ऊ आलमारी के ओर बढ़ले, फेर आपन चाभी निकलले आ ऊहे सगरी प्रक्रिया दोहरवले। नाद्या मेज से दस कोपेक उठवलस। फेर फुसफुसात 'धन्यवाद' कहत कमरा से बहरिया गइल।

निकोलाई आपन सुस्त आ पवित्र निगाह से ओकरा के तले ले देखत रहले, जले दरवाजा बन्द ना हो गइल। तब ऊ फेर से चुस्त–दुरुस्त हो गइले।

"तोल्या, लानत बा एह लइका पर। ई पहिलहीं से कुछ बिगड़ गइल बा। साथी–समाजी के सोहबत में इहे सभ होइबे करी। आ पड़ोसी! रउआ त जानते बानीं, निकीता के परिवार में ऊ लोग कइसे रहत बा? हे प्रभु के पवित्र मतारी! आहो... हो! उनकर लइका केतना भ्रष्ट बाड़े सन, भगवान कृपा करस! इवान के मामला में त रउआ महज हाथ झटक देवे के परत बा। अपना के बड़का चतुर बूझत बाड़े ऊ इवान! शैतान उनकर चमड़ी उधेड़े! हम कहत बानी, एजुगिया लइकन के सामने जवन मिसाल बा, ओह माहौल में ओकनी के लालन–पालन कइल मोसकिल बा। भगवान बचावास! बाकिर हमार बेटी, ऊ त शालीनता के अवतार बिया, रउआ देखनीं? जिनिगी के बाजी लगा के कहल जा सकत बा, हँ अतना पवित्र जस हो सकत बिया। बेशक, ऊ त खैर अपना बूता के बाहर के बात बा। बाकिर पवित्रता के भाव लइकाईं से कूट–कूट के भर देवे के चाहीं। ना त एजुगिया अगली–बगली के जवन हाल बा, ओकर के जाने का होखे– हर गली में लइकन के पाकेट में पइसा झनझनात रहत बा– हम नइखीं जानत जे ओकनी के मतारी–बाप का सोचत बा? शैतान के मार पारो ओकनी पर।"

प्रमुख इंजीनियर निकिता के चेहरा सद्प्रकृति के रहे। ऊ लमहर आ तनी सूखल हड्डी के आदमी रहले। उनकर रूप–सरूप पर नेक सोभाव के पकिया छाप रहे, जवन उनका चेहरा पर एह कदर पसरल रहत रहे जे हमनी के फैक्ट्री में महाबिपत अइलो पर आपन छाप ना छोड़त रहे। ऊ खाली ई देखत रहे जे निकिता के आत्मा के आउर शक्ति कवनो खतरनाक आग भा कवनो दोसर खतरा से कइसे निबट रहल बा।

निकीता के तौर–तरीका निकोलाई से साफे फरक रहे। शुरू में हम सोचनीं

www.bhojpurisahityangan.com

जे ऊ उनकर व्यक्तिगत सद्प्रकृति के नतीजा होखी। ओमे उनकर संकल्प के कवनो सहजोग ना रहे। ओकरा बदे कवनो सैद्धान्तिक रचनात्मक कोशिश ना कइल गइल रहे। बाकिर बाद में हमरा आपन गलती बुझाइल। ई साँच बा जे उनका में सद्प्रकृति के कुछ भूमिका रहे। बाकिर प्रसंगत : ई भूमिका ओतना सक्रिय ना रहे, जेतना निष्क्रिय एगो ख़ास तरे के खामोश अनुमोदन आ साइत तनी सुखद एहसास के।

बाकिर निकीता परिवार में लालन–पालन के असली अधिकारी मतारी रहली। येव्दोकीया इवानोव्ना एगो दृढ़ सोभाव के पढ़ल–लिखल मेहरारू रहली। उनका के हाथ में बिना किताब के शायदे कबहूँ केहू देखले होखी। उनकर सगरी जिनिगी पढ़े खातिर समर्पित रहे, बाकिर ऊ कवनो हाल में एगो बेमतलब आवेग ना रहे। दुर्भाग से ऊ हरमेसा गन्दा दागदार जिल्द में बन्हाइल पीयर कागज वाला किताब पढ़त रहली। अगर ऊ नया किताब पढ़ले रहती त एगो नीमन सोवियत महिला बन सकत रहली। बाकिर अब ऊ महज एगो अइसन 'चिन्तक महिला' रहली, जेकर चिन्तन खाली "अच्छाई" के तरे–तरे किसिम से उपजल आदर्श के मेरावट के चलते तनी बेढंगा लागत रहे।

हमनी के जवानी के दिन में पुजारी अच्छाई करे के उपदेश देव, दार्शनिक लोग ओकरा बारे में लिखत रहे, ब्लादीमिर सोलोव्योव त अच्छाई के समर्पित करत एगो मोटहन ग्रन्थ लिख देले रहले। बाकिर एह विषय पर जादे धेयान देहलो पर अच्छाई एगो सामान्य दैनिक विषय ना बन सकल। असलियत ई रहे जे ई असल में नीमन काम आ नीमन सोभाव बदे एगो बाधक बन गइल। आपन मुलायम पाँख पसरले अच्छाई दुनिया में जहँवा मँडराव, ओजुगिया मुस्कुराहट साफे गायब हो जाव, ऊर्जा साथ छोड़ देव, संघर्ष बन्द हो जाव, सभका अन्दर गजबे भाव बुझाव, ओकरा चेहरा में एगो कड़ुवाहट आ उबाउपन साफे झलके। ओह दुनिया में बेतरतीबी के साम्राज्य रहे।

अइसने बेतरतीबी निकीता के परिवार में रहे। येव्दोकीया एकरा के ना देख सकली, काहेकि कवनो अजीब गलतफहमी के चलते बेवस्था भा अबेवस्था ना त अच्छाई के सूची में पावल जात रहे आ ना बुराई के।

येव्दोकीया सद्गुण के औपचारिकता पर जादे धेयान देत रहली आ बकिया सवालन में दिलचस्पी ना लेत रहली।

"मित्या, झूठ बोलल नीमन बात नइखे। तोरा हरमेसा साँच बोले के चाहीं। जे आदमी झूठ बोलत बा, ओकरा खातिर कवनो चीज पवित्र नइखे। सत्य दुनिया में कवनो चीज से बेसी मूल्यवान बा। तें इवान परिवार के लइकन से कहले जे हमनी किहाँ चायदानी चाँदी के बा, जबकि ई चाँदी के नइखे। ओकरा में खाली निकेल के कलई चढ़ल बा।"

मित्या जे बड़का–बड़का लाल कान, बगैर भौंह आ चितकाबर चेहरा वाला लइका तश्तरी में राखल चाय पर फूँक मारत बा। अपना मतारी के देहल ताड़ना

www.bhojpurisahityangan.com

के जवाब देवे में कवनो जल्दीबाजी नइखे करत। जब ऊ आपन तश्तरी खलिहा देत बा, तबे बोलत बा– "माई तें हरमेसा बात के लमरा के कहत बाड़ी। असल में हम ओकरा के चाँदी के ना बतवनीं। हम त अतने भर कहनीं जे ऊ चाँदी जस बा। पाव्लूशा कहलस जे चाँदी के रंग के चायदानी होइबे ना करे त हम कहनीं जे कवना रंग के बा? ऊ बोललस– महज निकेल के कलई के रंग के बा। ऊ कुछुओ नइखे जानत, निकेल के कलई के रंग। चायदानी में निकेल के कलई जरूर बा, बाकिर ओकर रंग चाँदी के बा।"

मतारी मित्या के बतकही शान्त भाव से सुनत बाड़ी। चाँदी आ निकेल के कलई के रंग के चक्कर में उनका नैतिक समस्या के कवनो चिन्हासी ना लउकल। जवन होखे मित्या विचित्र लइका बा। रउआ ई नइखीं बता सकत जे ओकरा में अच्छाई के सिद्धान्त कहँवा बा आ बुराई केने बा। काल्हे ऊ अपना मरद से कहले रहली– "आज काल्ह के लइका कवनो ना कवनो तरे से अनैतिक ढंग से विकसित हो रहल बाड़े सन।"

फेर ऊ लइकन पर गौर करत बाड़ी। सभसे बड़का कोस्त्या दसवाँ में पढ़त बा। देखे में बड़ी शालीन लागत बा। ऊ एगो स्लेटी जैकेट आ टाई पहिरले बा। साफ–सुथरा, खामोश आ इज्जतदार लउकत बा। निकीता परिवार बतकही में कबहूँ भाग ना लेव। ओह लोग के आपन मामला आ आपने राय बा, बाकिर ओह बारे में दोसर केहू से बतावल जरूरी ना बूझे।

मित्या बारह बरीस के बा। निकीता परिवार में ऊ सभसे जादे सिद्धान्तहीन लागत बा, तनी एह से जे ऊ बहुते बातूनी बा। बात करत बेर साँचो अनैतिक स्वतंत्रता जतावत बा। कुछ समय पहिले ओकर मतारी सोचली जे ऊ अपना बेटा के नीमन काम करे बदे प्रेरित करिहें– आपन बेमार मामा माने येव्दोकीया के भाई से भेंट करे जाये खातिर। बाकिर मित्या मुसुकी छोड़त जवाब देहलस– "माई, तनी सोच, एकर कवन तुक बा? मामा जी पचास बरीस के बाड़े आ उनका कैन्सर बा। अइसन बेमारी में डॉक्टरो कुछुओ नइखे कर सकत। हम डॉक्टर त हईं ना। ऊ त हर हाल में मुअबे करिहें। एमे दखल देहला के कवनो दरकार नइखे।"

ल्येना अबहीं छोट बिया। ओकरा स्कूल जाये में एक बरीस के देरी बा। चेहरा में जादेतर लउके वाला आलस–उदासीनता के मामला में ऊ अपना बाप पर गइल बिया। एह से ओकर मतारी के ई उम्मीद हो गइल बा जे आगे जा के ऊ लइकन के मुकाबले अच्छाई के मामला में जादे सक्रिय प्रतिनिधि बनी।

ल्येना प्याला हटा के उठत बिया आ कमरा में टहलत बिया। ओकर मतारी नेह भाव से ओकरा के देखत बाड़ी। फेर आपन किताब में लीन हो जात बाड़ी।

निकीता के कमरा धूर भरल फर्नीचर से भरल बा। कमरा में पुरान अखबार, किताब, मरुआइल फूल, सगरो धूर पसरल, टूटल–फूटल बेकार के सामान में बड़–छोट जग, संगमरमर आ माटी के कुकुर, बानर, गड़रिया, राखदानी आ थरिया–प्लेट बिखरल परल बा।

www.bhojpurisahityangan.com

ल्येना एकोरा राखल मेजनुमा आलमारी के लगे जा के रुकत बिया। ऊ अपना पंजा पर खाड़ा हो के ओकर खुलल दराज में झाँकत बिया।

"रुपया–पइसा केने गइल?" ऊ चहकत बिया आ हुलसित हो के सवालिया अन्दाज में अपना मतारी के ओर मुड़त बिया।

मित्या कुरसी के खड़खड़ावत पाछे के ओर धकेलत बा आ लपक के दराज के लगे पहुँच जात बा। ऊ ओह दराज में राखल सामान के हउँड़ के देखत बा आ आपन दोसरका हाथ के दराज में घुसावत बा। फेर बिखिआइले ल्येना के देखत मतारी के तरफ घूम जात बा।

"का तें सगरी पइसा पहिलहीं खरचा क देहली? क देहली का? अगर हमरा सैर पर जाये बदे पइसा के जरूरत परी त?"

ओकर मतारी अन्तोन गोरेमीका के मार्मिक जीवन–कथा में अझुराइल रहली। ऊ लगले ना बूझ पवली जे मित्या कवन चीज माँगत बा।

"सैर खातिर? अरे त कुछ ले ले। हल्ला काहे मचवले बाड़े?

"बाकिर एजुगिया त एको धेला हइले नइखे।" मित्या दराज के ओर इशारा करत चिल्लात बा।

"मित्या, हे तरे चिल्लाइल नीमन बात नइखे....."।

"बाकिर हमार सैर के का होखी?"

मतारी अपना बेटा के बिखिआइल चेहरा के अलसाइल नजर से देखत बाड़ी आ आखिर में हालात के समझ लेत बाड़ी।

"एकदमे नइखे का? असम्भव! अन्नुश्का त सगरी रकम खरच नाहिंये कइले होखी। जो, अन्नुश्का से पूछ।"

मित्या धउर के चउका में जात बा। ल्येना खुलल दराज के लगे खाड़ा हो के कुछुओ सोच रहल बिया। ओकर मतारी किताब के पन्ना पलटत बाड़ी। मित्या चउका से धउर के लवटत बा आ घबराहट में चिल्लात बा– "ऊ कहत बिया जे ओमे तीस रूबल बाँचल रहे! बाकिर ओजुगिया कुछुओ नइखे।"

येव्दोकीया नाश्ता के अस्त–व्यस्त मेज पर बइठल अबहिंयो उन्नीसवीं शताब्दी में जीयत रहली। ऊ दुःख–कष्ट के ओह सुखद कथा से धेयान हटा के एक शताब्दी आगे ले छलाँग लगावे के नइखी चाहत। ऊ तीस रूबल के समस्या में अझुराये के नइखी चाहत। आज उनकर किस्मत नीमन रहे। गम्भीर आ अगम्य कोस्त्या मधुर आवाज में कहत बा :

"हेतना बवाल काहे मचवले बाड़े? तीस रूबल हम लेले बानीं। हमरा ओकर जरूरत रहे।"

"आ तें एको बाकी ना छोड़ले। तें एकरा के ठीक बूझत बाड़े?" मित्या आपन बिखिआइल चेहरा ओकरा ओर करत बा।

कोस्त्या कवनो जवाब नइखे देत। ऊ मेज पर जात बा आ आपन काम में व्यस्त हो जात बा। मित्या कतनो क्षुब्ध काहे ना रहे, बाकिर ऊ अपना बड़ भाई के

www.bhojpurisahityangan.com

आत्मबिसवास भरल शान–बान के बड़ाई कइले बिना नइखे रह सकत। मित्या जानत बा जे ओकर भाई के लगे एगो चमड़ा के बटुवा बा। ओमे कुछ अइसन चीज बा, जे रहस्य में डाल देत बा। ओकर दिलचस्पी जगावत बा जे बटुवा में धन होला, छोट–छोट नोट होला आ थियेटर के टिकट होला। कोस्त्या आपन बटुवा के बड़हन रहस्य का बारे में केहू के नइखे बतावत। बाकिर मित्या अपना भाई के बटुवा अकसरे बेवस्थित करत देखत बा।

मित्या एह लुभावन खेयाल से जबरन आपन धेयान हटावत बा। फेर दुखी हो के जोर से कहत बा –"बाकिर हमार सैर के का होखी?"

ओकरा बात के केहू जवाब नइखे देत। होने खटिया के दोसरा छोर पर ल्येना मतारी के हैंडबैग खोलले बिया। ओकरा पेनी में दूगो रूबल आ कुछ खुदरा परल बा। ल्येना के जरूरत जादे नइखे। किण्डरगार्टन में कीने–बेसहे खातिर कुछुओ नइखे, बाकिर सड़क के कगरी आइसक्रीम बिकात बा। ओकर कीमत पचास पइसा बा। ल्येना आपन निचला होठ दाँते काटत रेजगारी उठा लेत बिया। ओकर वित्तीय समस्या पूरा तरे से हल हो जात बा। अब ओकरा सेयान लोग से कुछुओ नइखे कहे के। अबे–अबे जवन गड़बड़ी भइल रहे, ओकरा के ऊ भूल चुकल रहे। बाकिर अचके में ओकर ई छोटहन खुशी ओकर साथ छोड़ देत बा। मित्या ओकरा हाथ से रेजगारी छीन लेत बा। ल्येना ऊपर देखत बिया। आपन खलिहा हाथ मित्या के आगे पसारत शान्त भाव से कहत बिया –"अबहुँओ ओमे कुछ आउरो बा, ई आइसक्रीम खातिर लेले बानीं।"

मित्या बैग में झाँकत बा। सगरी रेजगारी बिछावन पर पलट देत बा। ल्येना आराम से बिस्तर से कुछ रेजगारी उठावत बिया आ अपना मतारी के बगल से होत दालान के तरफ ससर जात बिया। मित्या आपन सफलता के बात मतारी से नइखे बतावत आ बैग बन्द करे के बात बिसर जात बा। फेर से सभकुछ सामान्य हो गइल आ कमरा आपन धूर भरल खामोश बेवस्था में फेर से लवट आइल। मक्खी मेज पर नाश्ता के जूठ उड़ावे में व्यस्त बाड़ी सन। कमरा से बाहर जाये वाला में कोस्त्या आखिरी रहे, बाकिर जाये से पहिले ऊ आपन दराज में सावधानी से ताला मार देहलस। येव्दोकीया किताब के पन्ना से आपन नजर हटवले बिना तकिया से लदल सोफा पर बइठत बाड़ी।

बाद में साँझी के निकीता ओही आलमारी के दराज में देखत बाड़े। क्षण भर ओह पर विचार करत बाड़े। फेर चउतरफा आपन नजर धउरावत कहत बाड़े –"येव्दोकीया, का सगरी रकम खरच हो गइल? अबहीं दरमाहा मिले में पाँच दिन बाकी बा। अइसे कइसे हो गइल?"

"लइका पइसा ले लेहले सन..... ओकनी के जरूरत रहे।"

निकीता दराज के देख के कुछ विचार करत बाड़े। फेर आपन बगली टोवत एगो बेडौल बटुवा निकालत बाड़े। ओमे देखत बाड़े आ आपन पढ़ाकू मेहरारू के ओर घूम जात बाड़े।

www.bhojpurisahityangan.com

"जवन होखे, येव्दिकीया, हमनी के कवनो तरे के..... कवनो तरे के हिसाब–किताब भा कुछुओ अइसने शुरू करे के चाहीं..... देख ना, पाँच दिन..... दरमाहा मिले में अबहीं पूरा पाँच दिन बाकी बा।"

येव्दोकीया आपन पुरान ढंग के सोनहुला चश्मा से आपन मरद के देखत बाड़ी।

"हम समझनी ना जे कइसन हिसाब–किताब?"

"अरे,..... कवनो तरे के लेखा–जोखा, आखिर, धन....."।

"अरे निकीता, तूँ 'धन' के अइसन आवाज़ में कहत बाड़, जइसे ऊ असली सिद्धान्त होखे। मान ल, अगर धन ना होखे। एकर ई मतलब त ना भइल जे हमनी के आपन सिद्धान्त बदल दीं।"

निकीता आपन कोट उतारत बाड़े आ लइकन के शयन–कक्ष में खुले वाला दरवाजा बन्द करत बाड़े। उनकर मेहरारू चिन्तित भाव से, लड़े के मूड में उनका के देखत बाड़ी। बाकिर निकीता के बहस करे के इरादा नइखे। ऊ अपना मेहरारू के सिद्धान्त में बहुत पहिलहीं बिसवास जता चुकल बाड़े। अबहीं चिन्ता के कारण सिद्धान्त नइखे। उनका एह बात के चिन्ता बा जे दरमाहा मिले से पहिले धन के जोगाड़ कहँवा से कइल जाव।

बाकिर एकरा बादो येव्दोकीया अपना मरद के नैतिक चरित्र के आउर जादे सबल करे के चाहत बाड़ी।

"लइकन के अतना छोटहन उमिर में हर तरे के धन के समस्या का बारे में सिखावे के कवनो जरूरत नइखे। वयस्क के हरमेसा हिसाब लगावत रहल ठीक बात नइखे। बाकिर ओह लोग के छोड़ देहल जाव, ऊ लोग वयस्क बा। धन, धन, धन! हमनी के अइसन सिद्धान्त से दूरे रह के लइकन के लालन–पालन करे के चाहीं। धन! आ ई नीमन बात बा जे हमनी के लइकन के धन के बेसी चाहत नइखे। ऊ बेहद ईमानदार बाड़े सन। ओकनी के ओतने लेत बाड़े सन, जेतना ओकनी के दरकार बा। अब देख, कइसन भयावह बात बा– बारह बरीस के उमिर में हिसाब लगावल आ हर समय गिनत रहल। धन–लोलुपता के ई भावना हमनी के सभ्यता के पहिलहीं से विषाक्त क देले बा। एह बारे में तहार का खेयाल बा?"

निकीता के सभ्यता के नियति में दिलचस्पी नइखे। ऊ बूझत बाड़े जे उनकर कर्तव्य एगो सोवितय फैक्ट्री के नीमन तरे से चलावल बा। जहँवा ले सभ्यता के सम्बन्ध बा, निकीता धन–लोलुपता के चलते होखे वाला नतीजा माने ओकर बेसमय बरबादी भइला से उदास बाड़े। तबो उनका अपना लइकन से बहुते लगाव बा आ उनकर मेहरारू के शब्द ढाढ़स बढ़ावे वाला आ सुखद रहे। असल में, ऊ सही कहत बाड़ी जे लइका धन–लोलुप काहे होख सन? एह तरे निकीता अपना मेहरारू के शब्द से भटकल सद्गुण के माहौल में चैन से सूत गइले। जब ऊ अँघुआत रहले, तबे ऊ तय कइले जे काल्ह प्रमुख एकाउण्टेण्ट इवान से पचास रूबल कर्जा लिहें।

जब निकिता के अँघुइला में इवान के हुलसित आकृति के एगो झलक आखिरी

www.bhojpurisahityangan.com

बेर उनका चेतना में प्रकट भइल आ कतहूँ दूर हकीकत के आखिरी धागा के बीच एगो विचार आइल जे इवान एगो धन–लोलुप आदमी बाड़े। उनकर हर चीज के लेखा–जोखा आ हिसाब–किताब पकिया बा– धन, लइका..... आ खुद जिनिगी के हुलास..... मुसुकी..... आ ओकर नफा–नुकसान.....।

बाकिर ऊ त अबहीं एगो सपना के शुरुआत रहे।

सबेरे निकीता हरमेसा के तरे बिना नाश्ता कइले काम पर चल गइले। एक घण्टा बाद येव्दोकीया लइकन के कमरा में अइली आ कहली :

"कोस्त्या तोरा लगे कुछ पइसा बा?"

कोस्त्या आपन गुलथुल चेहरा उनका ओर घुमवलस आ कुशल बेवहारिकता से कहलस :

"का तोरा जादे के दरकार बा?"

"ना, लगभग बीस रूबल...."।

"तें लवटइबे कब?"

"दरमाहा के दिने, पाँच दिन के भीतरे....."।

कोस्त्या केहुनी के बले उठल। अपना पतलून के पाकेट से नया भूअर चमड़ा के बटुवा निकाल के दस–दस रूबल के दूगो नोट चुपके से अपना मतारी के थमा देहलस।

ओकर मतारी नोट लेहले दरवाजा के लगे चहुँपते एगो लमहर साँस लेहली। उनका ई बुझाइल जे उनका बेटा में धन–लोलुपता के भाव पनपे लागल बा।

इवान अचरज रूप से गुलथुल रहले। असल में, हम अपना जिनिगी में उनका से जादे मोट आदमी नइखीं देखले। हो सकत बा जे उनकर मोटापा के कवनो पुरान बेमारी होखे। बाकिर ऊ कबहूँ एकर चरचा ना कइले रहले। खूब स्वस्थ्य, सक्रिय आ जवान जस उर्जावान लागत रहले। ऊ शायदे कबहूँ हँसत रहले, बाकिर उनकर कोमल रूप–सरूप में अतना हुलास आ स्वस्थ संयमित परिहास झलकत रहे जे उनका हँसे के जरूरते ना परत रहे। हँसी के जगह उनकर चेहरा पर हुलास के भाव जादे रहत रहे। ऊ लोग के इवान के जबान के मुकाबले कतहूँ जादे बता देत रहे। अइसे उनकर जबानो के अभिव्यक्ति गजब के रहे।

इवान परिवार पेचीदा किसिम के परिवार रहे। उनका आ उनकर मेहरारू– जे बड़हन आँख वाली छरहर बदन के जनाना रहली– के अलावे उनका परिवार में नौ से चौदह बरीस के दूगो लइका, एगो भतीजी, जे भरल बदन के लहमहर सुन्दर लइकी रहे। ऊ सोरह बरीस के रहते तनी जादे उमिर के लागत रहे। एगो गोद लेहल दस बरीस के लइकी वर्युशा रहे, जवना के इवान एगो साथी से विरासत में पवले रहले। एकरा अलावे एगो दादी रहली, जे निपट जलपा भइला का बादो बहुते खुशमिजाज आ सक्रिय प्रकृति के रहली आ खूबे मज़ाकिया ढंग से बोलतो रहली।

इवान परिवार में हरमेसा खूबे मज़ा आवत रहे। उनका साथे हमार परिचय

www.bhojpurisahityangan.com

के बारह बरीस में हमरा एको अइसन दिन इयाद नइखे, जब ओह परिवार में हास–परिहास ना सुनाइल होखे। सभे एक–दोसरा से मज़ाक करे से बाज ना आवत रहे। ऊ लोग जानत रहे जे कवनो मजाकिया बात कइसे बनावल जाव आ ओकरा के कइसे खोजल जाव। अकसरे अइसन लागत रहे जे ऊ लोग घात लगवले बइठल बा आ चालाकी से इन्तजार करत बा जे पड़ोसी किहाँ से कवनो मसाला मिले, जवना से ओह लोग के खुल के हँसे के मोका भेंटाव। अइसन आदत के नतीजा झुँझलाहट भा रंग में भंग होखे के चाहत रहे, बाकिर ओह परिवार में अइसन चीज के कबहूँ कवनो चिन्हासी ले ना लउकत रहे। एकरा विपरीत अइसन लागत रहे– ओह 'बिसवासघात' के आविष्कार एही से जान–बूझ के कइल गइल रहे जे जिनिगी के अरुचिकर बात आ संकट के पनपे से पहिलहीं खतम कइल जा सके। शायद एकरे चलते ओह परिवार में दुःख, रोहा–रोहट, तू–तू मैं–मैं आ झगड़ा–टण्टा, बदमिजाजी आ निराशावादी मनोदशा के प्रकोप कबहूँ ना होत रहे। एह मामला में ऊ लोग निकोलाई परिवार से बहुते मिलत–जुलत रहे, बाकिर निकोलाई परिवार में प्रकट होखे वाला हुलास, हँसी आ बेवहारिक परिहास कम होत रहे।

इवान परिवार के लोग शायदे कबो बेमार परत रहे। हमरा एके गो अइसन मोका इयाद बा, जब इवान के इन्फलुएंजा भइल रहे। हमरा एकर जानकारी उनकर बड़का बेटा पाव्लूशा देले रहे। ऊ धड़धड़ात हमरा आफिस में आइल। उत्तेजित आ हुलसित भाव में एगो व्यंग्य भरल मुसुकी से हमरा के देखलस। फेर मेज पर परल मशीनी पुर्जा पर जानकार जस आपन नजर धउरावत कहलस–

"आज हमार बाबूजी लड़खड़ाइये गइले। इन्फ्लुएंजा! डॉक्टर के बोलवले बानीं। ऊ खटिया पर परल ब्राण्डी पीयत बाड़े आ काम पर नइखन आ सकत। हमरा ई बात रउआ के बतावे के बा..... देखीं का भइल? ऊ कहत रहले जे हम कबहूँ बेमार ना परीं। ऊ शेखी बघारत रहले, बाकिर अबकी बेर परिये गइले।"

"का डॉक्टर कहलस जे उनका इन्फ्लुएंजा भइल बा?"

"हँ, कहलस, ई रोग खतरनाक नइखे, बा नूँ? हँ, अबकी बेर त ऊ लड़खड़ाइये गइले। का उनका के देखे रउआ हमरा किहाँ आयेब?

इवान खटिया पर पटाइल रहले। उनका बगल में एगो छोटहन मेज पर ब्राण्डी के बोतल आ कई गो गिलास धइल रहे। सूते वाला कमरा के दरवाजा से सटले परिवार के सभसे छोट लइका सेवा आ वर्यूशा अपना बाप के शरारती नजर से देखत रहले सन। साफ रहे जे इवान एह जोड़ी के धावा के अबे–अबे जवाब देले रहले, काहेकि उनकर चेहरा पर जीत के लहर आवत–जात रहे आ उनकर होठ सन्तोष के एगो मुसुकी छोड़त रहे।

हमरा के देखते सेवा उछल के जोर से हँसल शुरू क देहलस।

"ऊ कहत बाड़े जे ब्राण्डी दवा ह। आ डॉक्टरो पीयलस, आउर पीयलस, फेर कहे लागल – 'तूँ त हमरा के पीया–पीया के धुत्त क देले बाड़। लानत बा तहरा पर!' इहो कवनो दवाई ह?"

www.bhojpurisahityangan.com

उजर दरवाजा के एगो पल्ला पर झूलत वर्यूशा ईर्ष्या भरल तंज कसलस :

"ऊ कहले रहले– पहिलका आदमी जे बेमार परी, ऊ सभसे घटिया होखी। अब ऊ खुदे बेमार पर गइल बाड़े....."।

इवान बनावटी नफरत से भौंह सिकुरा के वर्यूशा के देखले। "बेशरम लइकी! के पहिले बेमार परल? हम?

"त के परल?"

"ऊ जे सभसे जादे घटिया रहे– वर्यूशा....."।

इवान दुखी मुँह बनवले आ 'शहजादा– इगोर' ऑपेरा के एगो धून पर गावे लगले, "ओ बाबूजी, ओ माई!"

वर्यूशा अचरज से उनका के देखलस।

"कब? कब? हम अइसन गाना कब गवनीं?"

"काहे, ओह दिन, जहिया तोरा पेट में बाथा उपटल रहे?"

इवान आपन पेट ध लेहले आ आपन माथा अगली–बगली हिलवले। वर्यूशा अइसन खिलखिला के हँसल जे सोफा पर लोट–पोट हो गइल। आपन जीत से हुलसित हो के इवान मुसुकी छोड़ले। फेर बोतल उठवले आ हमरा से अरज–निहोरा कइले।

"कृपा क के ओह दुष्ट लइका के एजुगिया से ले जा लोग। ले जइब लोग नूँ? ओकरा रेंड़ी के तेल पीये के आदत बा आ हमरो के ऊहे पियावे के चाहत बा।"

एह अनपेक्षित आघात से सेवा तिलमिला गइल– ऊ आपन मुँह खोललस, बाकिर कुछुओ कह ना पवलस। इवान के चेहरा एगो मुसुकी के साथे खिल गइल : "अहा!"

"एगो चुस्की लगाव?" ऊ हमरा से कहले।

हम हैरान रह गइनीं।

"तूँ बेमार परल बाड़? भा फेर ई कवनो मज़ाक बा? चुस्की काहे?"

"काहे ना? तनी सोचीं– आठ बरीस से कबहूँ बेमार नइखीं परल। ई त असहीं बढ़िया बा, जइसे आपन बरीस के हिसाब मिलावे के काम अबे–अबे खतम भइल होखे। तूँ ब्राण्डी पी सकत बाड़, किताब पढ़ सकत बाड़, हर चीज तहरा लगे ले आवल जात बा, लोग तहरा से मिले आवत बा। ई त एगो तेहवारे बा! उठाव एगो गिलास, उठाव!"

कतहूँ से डगमगात दादी चहुँपली आ रोगी के देखभाल में लाग गइली। ओही बीचे मज़ाकिया ढंग से बोललीं :

"अइसनो बात केहू सुनले बा– गरमी के मौसम में बेमार! ऊ लोग एकरा के फ्लू कहत बा। अरे हमरा जमाना में त अइसन बात केहू सुनलहूँ ना रहे। जाड़ा में जुकाम हो सकत रहे, बोखार हो सकत रहे आ गठिया–बात रोग हो सकत रहे। हम एह सभके इलाज वोद्का से करत रहनीं। हमार बाप एकरा अलावे आउर कवनो दवाई देखलहूँ ना रहले। जहँवा ई एक बेर गला के नीचे उतरल त सोझे पैर के

www.bhojpurisahityangan.com

अँगूठा ले पहुँच जाई आ बाहर से तनी रगर दीं त रउआ कतनो विकल–बेकल होखीं त ई सोझे नाच–नचा दी।"

सेवा आ वर्यूशा अब एक साथे सोफा पर बइठ गइल रहले सन। ओकनी के आपन खुशमिजाज दादी के कौतुहल भरल विनोद से निहारत रहले सन। चुहानी से भतीजी फेन्या पहुँचल। अपना हाथ के पाछे के तरफ कइले ऊ उजर बाल वाला माथा हिलवलस आ आपन भूअर आँख से मुसुकी छोड़लस।

"त का ई दवाई तन्दरुस्त आदमियो खातिर सेहतमन्द बा?"

हमरा हाथ के सुनहरा तरल से झिलमिलात गिलास ओकरा ओर खामोश हामी भरत ऊपर के तरफ उठल। इवान आपन माथा एक ओर झुका लेहले।

"फेन्या, तें त बड़ चतुराई के बात कहली। तनी अइसने चतुराई वाला आउरो बात सुनाव।'

फेन्या झेंप गइल। ऊ आपन चेहरा के मुसुकी बनवले राखे के जतन कइलस, बाकिर असफल रहल। ऊ चुहानी के तरफ भाग गइल। सोफा पर बइठल दर्शक सभे हुलसित हो के एके बेर चिल्लाइल।

आपन खुशी जतवला के बाद सेवा आवेशित हो के हमरा से कहलस :

"आज त ई सभके मात क देले बाड़े, काहेकि ई बेमार बाड़े। बाकिर जब ऊ ठीक हो जइहें– अरे ना, त देखब उनका के केहू ना छोड़ी।"

सेवा आपन मुसुकी रोक लेहलस आ खीस निपोरत बाप का ओर देखलस जे उनका पर बात के का असर परल बा।

ओकर बाप कनखी मरले आ आपन गर्दन खजुआवे लगले।

"हँ, हँ, कहत जो। अब एकरा बारे में तहार का खेयाल बा? ऊ एकरा के बेमार के मुलाहिजा कइल कहत बा। साँच बा जे हम बेमार बानीं, ना त ओकर टँगड़ी ध के घींच ना देतीं...."।

एह खुशमिजाज परिवार में, एह सभके बादो कड़ा अनुशासन रहे। इवान परिवार अनुशासन के दायित्व के गम्भीरता के तनिको कम कइले बगैर ओकरा के सुखद आ हुलसित बनावे के कला में माहिर रहे। लइकन के जीवन्त चेहरा में काम के उत्सुकता भरल तत्परता आ अपना माहौल खातिर सजगता के हरमेसा देखल जा सकत रहे। एकरा बिना कवनो अनुशासन सम्भव नइखे।

इवान परिवार के वित्तीय संगठन हमरा के ख़ास तरे से आकर्षित कइलस। अइसन लागत रहे जे ऊ अनुभव के कसौटी में परखल, पुरान आ सुपरिचित परम्परा से अलंकृत एगो निर्दोष बेवस्था रहे।

इवान एह बेवस्था के आविष्कारक के सम्मान लेवे से नकार देहले।

"हम कवनो आविष्कार नइखीं कइले," ऊ कहस। "असल में परिवार एगो आर्थिक इकाई बा। धन हासिल कइल जात बा आ खरच कइल जात बा। एकर त हम आविष्कार नइखीं कइले। जब धन होखे त सुबेवस्था होखहीं के चाहीं। रउआ धन के अबेवस्थित तरे से तबे खरच कर सकत बानीं, जब रउआ ओकरा के चोरवले

www.bhojpurisahityangan.com

होखीं। बाकिर जब जमा आ खरच के खाता बा त बेवस्था होखहीं के चाहीं। एमे आविष्कार करे के बड़ले का बा? एकरा अलावे, लइकन के सोचीं। रउआ ओकनी के कब सिखायेब? एकरा बदे सही समय इहे बा।"

हमरा जादे अचरज एह बात से भइल जे इवान घर में कवनो हिसाब–किताब ना राखत रहले। ऊ कवनो हिसाब कागज में लिखतो ना रहले आ अपना लइकनो के अइसन करे के ना सिखवले रहले।

"खाता के जरूरत नियंत्रण खातिर बा, बाकिर हमनी सात जन बानी सन आ अपना खातिर हमार नियंत्रण काफी बा। जब रउआ ओकनी से हर चीज कागज में लिखवावल शुरू करब त ओकनी के दफ्तरशाह बन जइहें सन– इहो एगो खतरा बा। रउआ मालूम बा जे दुनिया में सभसे जादे दफ्तरशाह हमनी एकाउण्टेण्ट में से बनत बा। ई कामे अइसन बा।"

इवान के विनोदी आँख कवनो तरे के लेखा–जोखा रखले बिना अपना परिवार के वित्तीय कार्यवाही के सगरी व्यौरा देखे–बूझे में समरथ बा।

हफ्ता के आखिरी में ऊ समारोह जस खुदे पाकिट–खरची बाँटत रहले। ओह साँझी के खाना खइला का बाद केहू मेज से हटे के नाँवे ना लेव। फेन्या मेज से जूठ थरिया उठा के चउका में ले जात बिया आ फेर आ के इवान के बगल में बइठ जात बिया। ऊ आपन बटुवा मेज पर ध के पूछस –"अच्छा त सेवा, हफ्ता खातिर तोरा लगे जादे पइसा रहे?"

सेवा अपना हाथ में कागज के बनल एगो मइल–कुचइल बटुवा धइले बा। बटुवा में कई गो खान्हा बा, जे खुलल रूप में कवनो खादान के खनन उपकरण के पाँत जस लउकत बा। सेवा बटुवा के मेज पर पलटत बा आ ओमे से एगो बीस कोपेक आ दोसर पाँच कोपेक के सिक्का नीचे गिर जात बा।

"हई लीं, ई कुल्ही पच्चीस कोपेक बाँचल बा"

वर्यूशा अपना बटुवा के मिठाई के एगो टिन के डिब्बा में राखत बिया आ ऊहो सेवा के बटुवा जस पेचीदा तरे से बनल बा। ओकर बटुवा साफ आ बेदाग बा। ओकर भरल–भरल खान्हा का ओर सेवा के व्यंग्य भरल नजर परत बा :

"वर्यूशा फेर से पइसा जमा कर रहल बिया।"

इवान के आँख फइल जात बा –"फेर से पइसा जमा करत बाड़ी? भयानक, एकर का नतीजा होखी? तोरा लगे केतना रकम बा?"

"रकम? वर्यूशा अपना बटुवा के खान्हा के धेयान से जाँचत बिया। "ई रहल एगो रूबल, ई दूगो रूबल..... आ ई तीसर।"

ऊ मासूमियत से इवान का ओर देखत बटुवा के बगल में दूगो नया रूबल आ कुछ रेजगारी ध देत बिया।

"ओहो, ओहो," सेवा कुरसी पर उचुक के बइठ जात बा।

सेयान लइका सभ एह हिसाब–किताब के दोस्ताना सहानुभूति से देखत बाड़े सन, बाकिर ना त आपन बटुवा निकालत बाड़े सन आ ना आपन रकम देखावत

www.bhojpurisahityangan.com

बाड़े सन।

"वर्यूशा समुद्रतट के सैर खातिर बचत कर रहल बिया." पाव्लूशा मुसुकी छोड़त बा।

"समुद्रतट खातिर ना, कवनो आउर चीज खातिर, आपन गुड़िया वास्ते एगो टी–सेट, छोटहन मेज आ एगो लैम्प कीने खातिर।"

"बहुत अच्छा, बहुत अच्छा," इवान कहत बाड़े।

हम हरमेसा एह बात पर अचरज करत रहनीं जे इवान अपना लइकन से कबहूँ ना पूछत रहले जे ऊ आपन पइसा कइसे खरच करत बाड़े सन भा कइसे करे वाला बाड़े सन। हमरा बाद में समझ आइल जे एकर कवनो दरकार नइखे, काहेकि परिवार में केहू के कवनो राज ना रहे।

इवान अपना बटुवा से रेजगारी निकलले आ लइकन के बीच बाँटत बाड़े।

"ई ले, एगो रूबल तोरा खातिर आ एगो रूबल तोरा वास्ते। अगर तहनी के एकरा के भुलावा देब सन त हम जिम्मेदार नइखीं। काउण्टर छोड़े से पहिले आपन–आपन रकम जाँच–परख ल सन।"

सेवा आ वर्यूशा आपन रकम सावधानी से जाँचत रहले सन। वर्यूशा दस कोपेक के सिक्का के आगे–पाछे करत बिया। ओकर आँख चमकत बा आ ऊ कनखिया के इवान के देखत मुसुकी छोड़त बिया।

"कइसन चतुर बानीं रउआ! ले आयीं, एगो आउर दीं।"

"एकदमे ना, पूरा दस गो सिक्का देले बानीं।"

"देखीं – एगो, दूगो, ती....."।

बाकिर इवान रेजगारी अपना ओर घींच लेहले आ हाली–हाली गिनत बाड़े।

"एगो, दूगो, तीन गो, चार गो, पाँच गो, सात गो, आठ गो, नौ गो आ दस गो। काहे?"

वर्यूशा उलझन में पर के अपना कुरसी पर चढ़ के बइठ जात बिया आ एक अँगुरी से एकहगो सिक्का ठेलत बिया। सेवा जोर से खिलखिला के हँसे लागत बा।

"ओह! ऊ गिनले कइसे? सही नइखन गिनले। पाँच फेर सात त छव कहँवा गइल?"

"अच्छा, त आव ते जाँच ले," इवान गम्भीरता से कहत बाड़े।

सभे मिल के गिने लागल। बुझात त बा जे ओजुगिया साँचो पूरा के पूरा दस गो बा। इवान के भारी–भरकम देह हँसी के मारे हिले लागत बा। खाली फेन्या आपन मुँह के हाथ से ढँक लेत बिया। ऊ चमकदार आँख से अपना चाचा के धेयान से देख रहल बिया– ऊ उनका के बटुवा के नीचे से दस पइसा के एगो अतिरिक्त सिक्का सरकावत देखल लेले रहे।

छोट लइका सभ आपन पेचीदा किसिम के बटुवा में धन राखत बाड़े सन।

सेयान लइकन के बारी आ गइल बा। पाव्लूशा के हर हफ्ता तीन रूबल मिलत बा आ फेन्या के पाँच रूबल।

www.bhojpurisahityangan.com

"काफी बा?" इवान पइसा देत घरी पूछत बाड़े। ऊ माथा हिलावत बाड़े सन : "हँ, काफी बा।"

"नइखे तबो काफी बनाव सन। हम पहिली जनवरी ले आपन दरमाहा में कवनो बढ़ती के उम्मीद नइखीं करत। अगर ऊ लोग हमार दरमाहा बढ़ा देव त हम देखब, काहे, बा नूँ इहे बात?"

इवान त ना, बलुक फेन्या आ पाव्लूशा बढ़ती के उम्मीद करत रहले सन। पाव्लूशा फैक्ट्री के प्रशिक्षण स्कूल में आ फेन्या तकनीकी स्कूल में पढ़त बाड़े सन। ओकनी के आपन वजीफा पारिवारिक कोष में देत बाड़े सन। ई एगो अटूट नियम बा आ एकर औचित्य पर केहू के सन्देह नइखे। सभके पाकेट–खरची देहला के बाद इवान अपना पारिवारिक परिषद् में कबो–कबो कहस –"आय– हमार वेतन चार सौ पचहत्तर, पाव्लूशा के चालीस, फेन्या के पैसठ, कुल पाँच सौ अस्सी। अब गिरस्ती खातिर मतारी के दू सौ सत्तर, तहनी के पाकेट–खरची पचास ठीक? ई कुल भइल तीन सौ बीस, बाँचल दू सौ साठ, आगे?"

"हम जानत बानीं जे ऊ का चाहत बाड़े?" कोना से दादी के खरखरात आवाज़ सुनाई परत बा– "एगो रेडियो, कवनो चार वाल्व के भा अइसने कुछ। पिछलो महीना ओकर चरचा ओराते ना रहे। ऊ कहत रहले, दू सौ रूबल। इहे रट लगवले रहले, जइसे एह संस्कृति से नीमन चीज होइबे ना करे।"

"हँ साँचे त बा," पाव्लूशा हँसत बा, "रेडियो, ई संस्कृति ह कि ना?"

"हम एकरा के संस्कृति नइखीं समझत– ढेरे घड़घड़ाहट, चीख–पुकार आ सीटी खातिर रुपया–पइसा खरचा कइल। नीमन दिखल त संस्कृति ह, जूता के एगो नीमन जोड़ा कीनीं आ सजीं–सँवरीं, घूमीं! आ फेन्या के जूता के का भइल।"

"हम इन्तजार क लेब," फेन्या कहत बिया, "पहिले एगो रेडियो कीन लेहल जाव।"

इवान किहाँ बजट के अइसन चरचा अकसरे नइखे होत। अइसन समस्या अइला पर ओकरा से निबटल जात बा आ अइसे हल क लेहल जात बा जे ओकरा पर केहू के धेयान ले नइखे जात। इवान आम बहस के सभसे नीमन तरीका बूझत बाड़े।

"एक आदमी एगो बात कहत बा, दोसर आदमी दोसर, केहू ना केहू सही बात जरूरे कही! ओकनी के हरेक बात बूझत बाड़े सन। हँ एकाउण्टेण्ट के लइका सभकुछ बूझत बाड़े सन।"

इवान परिवार के सदस्यन के एगो सद्गुण ई रहे जे ऊ लोग आपन सुदूर भविष्य के ओह कामना आ सपना के जतावे में हिचकिचात ना रहे, जवन अबहीं दुर्लभ लागत बा। एह रूप में प्रकट होखे वाला पहिलका चीज चार वाल्व के रेडियो रहे। सेवा खातिर एगो स्लेज–गाड़ी आ आउर सामान के कीने–बेसहे के सुझावो असहीं पेश कइल गइल। जादेतर सामान्य वस्तु का बारे में सपना देखे के कवनो दरकार ना रहे। एक दिन तकनीकी स्कूल से घरे लवटानी घरी फेन्या पाव्लूशा से

www.bhojpurisahityangan.com

सहज भाव से कहलस :

"ई हमार आखिरी मोजा बा। हम एकरा के दसो बेर रफू कइले बानीं। बाकिर अब रफू से काम नइखे चलत। देख ना, अब हमरा एगो नया मोजा होखे के चाहीं।"

आ साँझ के ऊ इवान से असहीं सहज भाव से बात कइलस।

"हमरा मोजा कीने खातिर कुछ पइसा दीं।"

"का तें दरमाहा मिले ले इन्तजार कर सकत बाड़ी?"

"ना।"

"त ई ले।"

मोजा के बेवस्था पाकिट–खरची से ना हो सकल। ऊ रकम साबुन, दन्तमंजन आ आउर प्रसाधन, सिनेमा, मिठाई, आइसक्रीम, कलम, नोट–बुक आ पेन्सिल में ओरा गइल।

धन से जुड़ल सख्त नियम वाला एह हुलसित परिवार के देख के हमरा हरमेसा खुशी होत रहे। एजुगिया धन से ना त भद्र भगवान के गन्ध आवे आ ना चालाक शैतान के। ऊ त जिनिगी के एगो अइसन सामान्य सुबहिता रहे, जवना खातिर कवनो नैतिक तनाव के दरकार ना रहे। इवान परिवार के सदस्य धन के रोजाना के काम बदे एगो उपयोगी सहायक उपकरण के रूप में देखत रहे। इहे कारण रहे जे ओह लोग के धन ना त दराज में परल रहत रहे आ ना कंजूस जस आशंका आ भय का साथे चोरा के जमा कइल जात रहे। इवान कवनो आउर जरूरी सामान के तरे सहज आ बिस्वास भरल गम्भीरता से ओकर देख–रेख करत रहले।

***

www.bhojpurisahityangan.com

पाँचवाँ अध्याय

परीकथा, पौराणिक कहानी, श्रेष्ठ गाथागीत आ कविता में अकसरे अइसन सुखी राजा–रानी के कहानी कहल जात बा, जेकरा के भगवान इकलौता बेटा भा इकलौती बेटी देले बाड़े। ई राजकुमार भा राजकुमारी, शाहजादा भा शाहजादी अपना साथे हरमेसा मोहक सुघरता आ हुलास ले के आवत बा। एह कहानियन में दुष्ट आत्मा के जवन दखल होत बा, ऊ कवनो कपटी परी के भविष्यवाणी रहत बा। एह दखल से होखे वाला सभसे जादे खतरनाक आ दुस्साहसिक घटना नायक के भाग्य में लिखल कामयाबी पर जोर देवे खातिर होत बा। एजुगिया ले जे मउअत–घोर निराशा आ अविजेय लागे वाला मउअतो अइसन राजकुमार के सामने हार मान लेत बा। ऊ राजकुमार दयालु जादूगर, संजीवनी आ अमृत मुहैया करावे वाला आ बाद में ओपेरा आ बैले गीतकथा आ संगीत–रचना करे वाला अइसने मेहरबान लोग के मदद पर हरमेसा भरोसा कर सकत बा।

पाठक आ दर्शक बदे एह भाग्यशाली नायकन में एक तरे के आशावादी सम्मोहन होत बा। ई सम्मोहन का ह? ई ना त काम के समरथ ह, ना अकिल ह, ना प्रतिभा ह आ ना चालाकी ह। ई कथा के विषय वस्तु में पहिलहीं से तय बा– राजकुमार राजा के इकलौता बेटा बा। एह विषय–वस्तु खातिर खुशकिस्मती आ जवानी के सिवा आउर कवनो तर्क के दरकार नइखे। राजकुमार त महातिम, धन–दउलत, शानोशौकत आ सार्वजनिक सनेह के सुख भोगे के अपना किस्मते में लिखवा के ले आइल बा। ओकरा सामने भविष्य के अटल सुनिश्चितता बा, खुशहाली के अइसन अधिकार बा, जे कवनो विरोधी भा बाधा से हरमेसा मुक्त बा।

राजकुमार के अइसन विषय–वस्तु ओतना बेमतलब के नइखे, जइसन कि पहिलका नजर में लागत बा आ हमनी के जिनिगी से कतई दूर नइखे। एह किसिम के राजकुमार खाली कल्पना के नतीजा नइखे। पाठक आ दर्शक का बीच कई गो मतारी–बाप के घरे, ओह लोग के सामान्य परिवारो में ठीक अइसने राजकुमार आ राजकुमारी मौजूद बा, सफलता के ठीक अइसने दावेदार मौजूद बा आ ठीक ओइसने ई बिसवास करत बा जे ऊ ख़ास तरे से अइसन कामयाबी के सुख भोगे खातिर जनम लेले बा।

सोवियत परिवार के एगो सामूहिक निकाय के सिवा आउर कुछ कबहूँ ना होखे के चाहीं। एगो सामूहिक निकाय के रूप में आपन ख़ास गुण गँवा देहला पर शिक्षा

www.bhojpurisahityangan.com

आ सवख के एगो संगठन के रूप में ओकर बहुते महातिम बा। एगो सामूहिक निकाय के ख़ास गुण कई तरे से खतम हो सकत बा। एमे सभसे जादे व्यापक बा तथाकथित "इकलौता लइका के बेवस्था"।

एगो इकलौता बेटा के लालन–पालन सभसे जादे किस्मत वाला आ सर्वोत्तम मामला में, जादे प्रतिभावान आ सजग मतारी–बाप के सामने एगो कठिन काम बा।

प्योत्र अलेक्सान्द्रोविच केतोव एगो केन्द्रीय विभाग में नोकरी करत बाड़े। नियति उनका के सुखी बनवले बा आ ई कवनो हाल में ओकर कृपा के फल नइखे। प्योत्र एगो प्रभावशाली आदमी बाड़े। ऊ खुद नियति खातिर अगर नियति उनका हाथ में पर जाव त बहुते कुछ कर सकत बाड़े।

प्योत्र तेज दिमाग के बाड़े। ऊ विश्लेषण के महापण्डित बाड़े, बाकिर ऊ ओमे कबहूँ लाव–लपेट नइखन राखत। ऊ भविष्य के हरमेसा धेयान राखत बाड़े। ओकर शानदार राह के निहारत हरमेसा खुश हो सकत बाड़े, हँस सकत बाड़े आ एगो किशोर जस सपनो देख सकत बाड़े। ऊ अपना ताजगी, चतुर आँख के शान्त सतर्कता आ बतकही के आपन विचारशील आ बिसवास भरल ढंग के बनवले राख सकत बाड़े। ऊ अनेक लोग से मिलत बाड़े। जेकरा से मिलत बाड़े, ओकर बात के समझे के सहज गुण राखत बाड़े। दुनिया में रहत–सहत घरी ऊ ओही सही विश्लेषण के उपयोग करत बाड़े। कुछ लोग खातिर राह छोड़ देत बाड़े। कुछ आउर के साथे हँसी–खुशी चलियो देत बाड़े। कवनो तीसर के बगल में गम्भीरता से चलत बाड़े। चउथका के कालर ध लेत बाड़े आ सवाल–जवाब करत बाड़े।

उनकर घर आपन स्वस्थ आ खुशहाल बेवस्था से केहू के मन मोह लेत बा– पढ़े जोग किताबन के कई गो कतार, फर्श पर साफ सुथरा तनी घिसल कालीन, पियानो आ ओह पर सजल बीथोवन के मूरत।

प्योत्र अपना पारिवारिक जिनिगी के समुचित आ सुखकर ढंग से बेवस्था कइले बाड़े। जवानी में ऊ आपन हार्दिक आ संवेदना भरल आँख से सुन्दर मेहरारुअन के आकर्षण के मूल्यांकन कइले। ओकर सही सुखद विश्लेषण कइले। फेर नीला आँख वाली एगो शान्त, तनी स्वाभिमानी हँसमुख मेहरारू नीना वसील्येव्ना के पसन्द कइले। ऊ अपना भावना के सचेत हो के जतवले आ ओकरा के हरमेसा खातिर दिल से प्यार करे लगले। ऊ एह प्यार के दोस्ती आ मरद के गूढ़ आ बाँका श्रेष्ठता से सँवरले। नीना आपन ओही मनुहारी व्यंग्यपूर्ण अवज्ञा का साथे मरद के श्रेष्ठता के सँकरली। ऊ प्योत्र के साहसिक शक्ति आ उनकर खुशमिजाज सोभाव से प्यार करे लगली।

जब वीक्तर के जनम भइल त प्योत्र अपना मेहरारू से कहले –"धन्यवाद, ऊ अबहीं कच्चा माल बा, बाकिर हम ओकरा के एगो असाधारण नागरिक बनायेब।"

एगो सुखद आ सनेह भरल मुसुकी छोड़त नीना जवाब देहली– "तहार बेटा आउर कुछ होइयो कइसे सकत बा?"

बाकिर प्योत्र अपना पुरखन के गुण आ वंश के बढ़ावे के फेर में ना रहले।

www.bhojpurisahityangan.com

उनका शिक्षा के ताकत पर भरोसा रहे। उनका पकिया बिसवास रहे जे कुल मिला के लोग के लापरवाही से लइकन के लालन–पालन होत बा। लोग ई जानते नइखे जे शिक्षा के काम समुचित ढंग से कइसे कइल जात बा– गहनता से, तर्क–सम्मत तरीका से आ दृढ़ता से। ऊ मतारी–बाप के महान रचनात्मक काम के कल्पना कइले।

जब वीक्तर दू बरीस के रहे त नीना दुलार से पूछली –"तहार नागरिक त चले–बोले लागल बा। का तूँ अपना बेटा से खुश बाड़?"

प्योत्र वीक्तर के सराहना के सुख से अपना के वंचित ना राखत रहले। वीक्तर एगो बड़हन, स्वस्थ्य आ सुखी लइका रहे। ऊ जवाब देहले –"हम अपना बेटा से बहुते हुलसित बानीं। तूँ ओकरा के शानदार ढंग से पलले–पोसले बाड़ू। हम ई मान सकत बानीं जे हमनी के काम के पहिलका अवस्था पूरा हो गइल बा। अब हम आगे के काम शुरू करब।"

ऊ वीक्तर के अपना ओर घींचले। ओकरा के अपना गोदी में बइठावत एक बेर फेर ओकरा के वात्सल्य भरल चेतावनी देहले –"शुरू करेब कि ना?"

"कलेब," वीक्तर कहलस, तू कइसे छुलू कलब?"

वीक्तर दुःख–दरद से परे निरापद जिनिगी के खुशी आ चैन के साँस लेहलस। एह भावी नागरिक के सभकुछ अतना स्वस्थ आ पवित्र रहे, ओकर निगाह अतना सौम्य आ स्वच्छ रहे, बाप जस सम्भावना भरल माथा आ नीला आँख में मतारी जस व्यंग्य भरल अवज्ञा के अइसन हलुकाह पुट रहे जे ओकर मतारी–बाप ओकरा पर गर्व कइले बिना आ ओकर अद्भुत भविष्य के प्रत्याशा कइले बिना ना रह सकत रहे।

नीना अपना आँख के सोझा एगो महान सफलता के पोठ होत देख सकत रहली। उनकर बेटा बहुते सुघर, मयगर आ मनमोहक होत जात रहे। ओकर बोल–चाल नीमन तरे से विकसित होत रहे। ऊ बिसवास के साथे बलखात चलत आ धउरत रहे। ओकर हास–परिहास, हँसी आ सवाल–जवाब केहू के दिल जीत सकत रहे। ई लइका उनका खातिर अइसन वास्तविक आ जियतार हुलास रहे, जे ओकर भावी नागरिक रूप तनी धुँधला के पृष्ठभूमि में चल गइल रहे।

नीना खातिर वर्त्तमान अइसन अनोखा रहे जे ऊ भविष्य के बात सोचे के चाहते ना रहली। ऊ महज ओही जिनिगी के जीयल चाहत रहली, जवना के ऊ रचना कइले रहली। ओकरा के सराहत, अपना मातृत्व के सफलता पर इतरात, ऊ अनेक अजनबी लइकन से मिलस, ओकनी के धेयान से ताड़स आ उनका एगो दुर्लभ मानवीय मुक्ति के अनुभव सुखद लागत रहे। उनकर जरतुआह सोभाव ना रहे।

फेर अचके उनका में एगो अइसने, अतने अनोखा एगो आउर लइका जने के लालसा जाग उठल। ऊ वीक्तर के साथे–साथे एगो नन्हकी लइकी के उजर केश वाली, तेज दिमाग वाली आ मुसुकियात नीला आँख वाली एगो अइसन लइकी के कल्पना कइली, जवना के ऊ..... लीदा नाँव से बोलइहें। ऊ वीक्तर से मिलत–जुलत

www.bhojpurisahityangan.com

होखी, बाकिर ओकरा में ओकर आपन कुछ होखी। कुछ अइसन जे दुनिया में पहिले कबहूँ ना भइल रहे, जवना के कल्पना कइल बहुते कठिन बा। काहेकि ओइसन पहिले कबहूँ रहले ना रहे आ ऊ खाली नीना के मातृत्व भरल हुलास से रचल जा सकत बा।

"प्योत्र, हम एगो लइकी चाहत बानीं।"

"कइसन लइकी?" प्योत्र अचरज में पर गइले।

"हमरा एगो बेटी चाहीं।"

"तहार मतलब ई बा जे तूँ एगो आउर बच्चा जने के चाहत बाड़ू।"

"ना, हम ओकरा के बढ़त देखल चाहत बानीं। एगो बेटी, बुझाइल? हमार भावी बेटी।"

"बाकिर नीना, तहरा कइसे मालूम जे ऊ बेटिये जनमी? मान ल, बेटा हो गइल त?"

नीना पल भर सोचली। एगो आउर बेटा? ई त साँचो बेटी होखे से कम अनोखा बात नइखे। आ .....उनकर एगो तीसर बच्चा हो सकत बा, एगो बेटी। अरे वाह! कइसन सुन्दर साथ होखी।"

ऊ हुलास आ लाज के भाव से अपना मरद के मोहित क लेहली।

"सुन प्योत्र, तूँ कइसन दफ्तरशाह बाड़। ई भयावह बा! वीक्तर जइसन बेटा, बुझाइल? आ संगे–संगे हू–ब–हू ओइसने ना, बलुक तनी दोसरा तरे के, बुझाइल? तहार लाडला..... ख़ास! बेटी त बादो में हो सकत बिया! कइसन परिवार होखी, तनी सोच, कइसन परिवार!"

प्योत्र अपना मेहरारू के हाथ चूमले आ आपन ओह श्रेष्ठता से मुसुकी छोड़ले, जे पहिलहीं से सँकारे जोग रहे।

"नीना, ई एगो गम्भीर मसला बा। हमनी के एह पर विचार करे के चाहीं।"

"त ठीक बा, आव, कर लेहल जाव।"

नीना के पूरा भरोरा रहे जे जवन सुन्दर परिवार के तस्वीर उनका जेहन में उभरल रहे, ऊ उनकर मरद पसन्द करिहें आ ऊ आपन श्रेष्ठता के हठ छोड़ दीहें। बाकिर जब ऊ बोलल शुरू कइली त उनका बुझाइल जे जिन्दा आ शानदार अभिव्यक्ति के जगह ऊ साधारण शब्दन, उदगार आ अपना हाथ के निराशाजनक हाव–भाव के अलावे, मेहरारुअन के निहायत मामूली बकवास के सिवा आउर कुछुओ पेश ना कर सकली। उनकर मरद सनेह से उनका ओर देखले त ऊ एगो आह भर के खामोश हो गइली।

"नीना अइसन आदिम सहज–वृति के रोकल नइखे जा सकत।"

"कइसन सहज–वृति? हम त तहरा से लोग के बारे में, भावी लोग के बारे में बात करत बानीं....."।

"तहरा अइसन लागत बा, बाकिर ई असल में सहज–वृति ह....."।

"प्योत्र!"

www.bhojpurisahityangan.com

"ठहर जा, तनी ठहर जा नीना! एमे शर्मिन्दा होखे के कवनो बात नइखे। ई एगो उत्तम सहज–वृति बा। हम तहार बात बूझत बानीं आ खुदे ओइसन महसूस करत बानीं। तूँ जवन सुन्दर परिवार के बात करत बाड़ू, ऊ हमरा के आकर्षित कर सकत बा, बाकिर एगो ध्येय एकरो से जादे श्रेष्ठ बा, बेसी सुन्दर बा, सुन।"

ऊ विनीत ढंग से आपन माथा उनका कन्धा पर ध देहले। उनकर हाथ सहरावत किताबन के आलमारी के शीशा के दरवाजा के ओर एह तरे निहारत बतियावे लगले, जइसे जेकरा बारे में ऊ बतियावत रहले ऊ सभ ओह पारदर्शी शीशा में साँचो लउकत होखे।

ऊ कहले जे बड़हन परिवार में खाली एगो औसत व्यक्तित्व के लालन–पालन हो सकत बा। जन साधारण के लालन–पालन असहीं भइल बा। एकरे चलते महान मानवीय व्यक्तित्व अतना दुलम बा। जे बड़लो बा, ऊ ओह धूर में सउनाइल बेरंग भीड़–भाड़ में संजोग से अपवाद बा। ओकरा भरोसा बा जे औसत तरे के आदमी ऊपर ले जा सकत बा। एगो महान आदमी के शिक्षा देहल तबे सम्भव बा, जब मतारी–बाप के सगरी प्यार, सगरी तर्क–बुद्धि आ सगरी क्षमता के एह काम में लगा देहल जाव। एह सामान्य समूहवादी विचार के साफे त्याग देवे के चाहीं जे परिवार लइकन के एगो अइसन झुण्ड बा, जेकरा खातिर अनियमित देखभाल, पेट भरे आ कपड़ा पहिरावे के प्राथमिक जरूरत के पूरा कइल आ कवनो तरे के शिक्षा देवे के बेवस्था करे के परत बा। ना, जवन चीज के जरूरत बा, ऊ अपना बेटा पर सघन मेहनत कइल आ शिक्षा के बारीकी पर ख़ास धेयान देहल। अइसन काम जादे लइकन के रहत नइखे कइल जा सकत। केहू के गुणवत्ता खातिर जवाबदेह होखहीं के चाहीं। गुणवत्ता तबे सम्भव बा, जब रचनात्मक शक्ति के एकवठ कइल जाव।

"एकर कल्पना कर नीना, हम एके गो आदमी के रचना करब, बाकिर ऊ साधारण किसिम के ना होखी। ऊ साँचो तेज दिमाग के होखी, जिनिगी के गहना होखी....."

नीना आँख बन्द कइले अपना मरद के बात सुनली। जब ऊ हाथ उठवले त अपना कन्धा के हलुक गति महसूस कइली। फेर उनकर मुलायम मोंछ के देखली। लइकन के सुघर संगति के उनकर कल्पना धुँधलाये लागल। ओकरा जगह एगो साहसी, अनोखा, सुशिक्षित, तेज दिमाग के युवक के, एगो महान सार्वजनिक व्यक्तित्व के, भविष्य के एगो महान आदमी के छवि उभर आइल। बाकिर ई छवि ना जाने काहे एगो परी–कथा के पात्र जस, सिनेमा के पर्दा के आकृति जस बे हाड़–मांस के बेजान रहे। उनकर पहिले के सपना एकरो से जादे जियतार रहे, प्यारा रहे। बाकिर उनकर मरद के परीकथा, उनकर आवाज़, उनकर विचार के श्रृंखला, जवना के ताकत आ साहसिकता उनका बदे अबहुँओ नया रहे। मरद के बल पर बिसवास करे के मेहरारुअन के युगन पुरान आदत के चलते एगो अइसन सघन समग्रता के रचना हो गइल, जवना के नीना विरोध करे के ना चहली। गहन अन्तर में छुपल उदासी का साथे ऊ मातृत्व के आपन सपना देखल छोड़ देहली।

www.bhojpurisahityangan.com

"ठीक बा प्रिय, एकदम ठीक बा। तहार दूरदृष्टि बा। जइसन तूँ सोचत बाड़, ओसहीं होखे द। बाकिर..... एकर मतलब..... एकर मतलब बा जे अब हमनी के कबहूँ कवनो बच्चा पैदा ना होखी?"

"नीना! नाहिंये होखे के चाहीं, कबहूँ ना होखे के चाहीं।"

नीना के जिनिगी में एगो बदलाव आ गइल। उनका अगली–बगली के सगरी चीज बहुते गम्भीर लागे लागल। खुदे जिनिगी पहिले से जादे बुद्धिमत्तापूर्ण आ अइसन दायित्व वाला हो गइल, जइसे ऊ आखिर में अपना गुड़िया के कगरी राख देले होखे आ आपन कुँआरी कोमलता से हरमेसा खातिर विदाई ले लेले होखे। विचित्र लगलो पर ई साँच बा जे मतारी के रचनात्मक काम तेजला का बादे उनका मतारी के काम के सगरी बोझ के अहसास भइल।

अब वीक्तर उनका के एगो दोसर तरे के खुशी देत रहे। पहिलहूँ ऊ उनका आँख के तारा रहे आ ऊ ओकरा के गँवावे के खेयाल ले सह ना सकत रहली। बाकिर पहिले उनकर जियतार आकर्षण जिनिगी के सगरी आकर्षण के जनम देत रहे, जइसे उनकर सत्ता कवनो तरे के जिनिगी देवे वाला रोशनी बिखेरत रहे। अब खाली ऊहे रहे, पहिलहीं जस प्यारा आ सुन्दर। बाकिर अब अइसन लागत रहे जे ओकरा अलावे आउर कुछुओ नइखे, कवनो सपना नइखे आ कवनो जिनिगी नइखे। एह से वीक्तर आउरो प्यारा आ आकर्षक लागे लागल। बाकिर प्यार के साथे एगो शक उनका मन में घर क गइल रहे। शुरू में नीना ई सोचे के कोशिश ना कइली जे ऊ कवना तरे के शक रहे। ऊ विवेकसम्मत भा जरूरी रहबो कइल कि ना। ई बात महज अतने रहे जे जब कबहूँ ऊ आपन बेटा के चेहरा देखस त ओमे उनका कबहूँ एगो सन्देहास्पद पीयराह, कबहूँ एक तरे के सूजन आ कबहूँ आँख में एगो सुस्ती लउकत रहे। ऊ ओकर मनोदशा, खुराक पर शक के निगाह से देखत रहली आ छोट–छोट बातन में एगो महाबिपत के संकेत के कल्पना करे लागत रहली।

शुरुआत में ई सम्वेद बहुते तीब्र रहे। फेर खतम हो गइल। वीक्तर बड़ भइल, विकसित भइल त नीना के भय में बदलाव हो गइल। अब ऊ पहिले जस उनकर दिल के आक्रान्त ना करत रहे आ उनका के बेहोश करत अचके प्रकट ना होत रहे। ऊ एगो अइसन भय के रूप ध लेले रहे, जे उनकर रोजाना के जिनिगी के आदत के हिस्सा बन गइल रहे।

प्योत्र अपना मेहरारू के जिनिगी में कवनो खराबी ना देखले। सुमधुर व्यंग्य भरल अवज्ञा के उनकर भाव गायब हो गइल रहे। उनका चेहरा के शान्त आ सुकुवार रेखा एगो निठुर सुघरता के ढाँचा में बदल गइल रहे। उनकर नीला आँख के तेज बिला गइल रहे आ ऊ जादे साफ आ पारदर्शी हो गइल रहे। ऊ एकरा बारे में सोचले आ एगो काट निकाल लेहले– जिनिगी चलत जात बा, जवानी मेटत जात बा आ ओकरा साथे सुघरता आ रेखा के लचक मरुआत जात बा, बाकिर सभकुछ अद्‌भुत बा। आगे के जिनिगी के नया निधि बा। के जानत बा, शायद ऊ जवानी के निधि से जादे श्रेष्ठ होखे। ऊ अपना मेहरारू में एगो नया व्यग्रता के पनपत

www.bhojpurisahityangan.com

देखले, बाकिर नतीजा ई निकलले जे ऊहो एगो नेमत रहे– शायद व्यग्र मतारी के खुशी के असली सार होखे।

जहँवा ले उनकर आपन सम्बन्ध रहे, ओमे भय के कवनो जगह ना रहे। ऊ अपना समय के आपन काम आ बेटा के बीच भाग–बँटवारा क देहले। एह दुनू विभाग में बहुते मेहनत करस। वीक्तर में रोजे नया उज्ज्वल सम्भावना प्रकट होत रहे। प्योत्र के महसूस भइल जे जइसे ऊ एगो अइसन नया देश के खोजत बाड़े, जे प्राकृतिक वरदान आ अनपेक्षित सुघरता से लबालब भरल होखे। ऊ अपना मेहरारू के एह सगरी विपुलता के दर्शन करावस आ ऊ ओह से सहमति जतावस।

"देख, हम लइका पर केतना मेहनत करत बानीं," ऊ कहत बाड़े।

उनकर मेहरारू मुसुकी छोड़त उनका के देखस आ उनकर निर्मल पारदर्शी आँख में खुशी के भाव झलके, जे आउर जादे सुन्दर लागत रहे, काहेकि ऊ कबो–कबो प्रकट होत रहे।

वीक्तर तेजी से प्रगति कइलस। पाँचे बरीस के उमिर में ऊ जर्मन आ रूसी भाषा सही–सही बोले लागल। दस बरीस के उमिर में क्लासिक साहित्य से ओकर परिचय भइल। बारह बरीस के उमिर में ऊ शिलर के मूल भाषा में अध्ययन करे लागल आ ओह से प्रभावित भइल। प्योत्र ओकरा साथे चलस आ ओकर तेज प्रगति से खुदे चकित रहले। ऊ अपना बेटा के अथक मानसिक ऊर्जा के चमक आ ओकर प्रतिभा के गहराई देख के हकबका जास जे अब उनकर बेटा विचार के सभसे कठिन गूढ़ अर्थ आ शब्दन के मेरावट के समझे–बूझे में आसानी से माहिर होत जात रहे।

वीक्तर के जेतने विकास होत रहे, ओकर चरित्र में ओतने निखार आवत रहे। ओकरा आँख से लइकन वाला उमंग के चमक बिलाए में इचिको देरी ना लागल। ऊ जादेतर लगातारे सोचे–विचारे, संयम आ शक जतावे लागल रहे। प्योत्रा एकरा के हुलसित हो के देखस आ एमे ओकर विश्लेषण के आपने ख़ास प्रतिभा झलकत रहे। वीक्तर कबहूँ बेजाँय बेवहार ना करत रहे। ओकरा में सनेह भरल रहे आ आउर लोग के साथे मिलजुल के रहत रहे। बाकिर ओकर मुँह के हाव–भाव में अचके पकठोसल अवज्ञा के भाव जनमे लागल। जइसे ओकरा में कुछुओ बा, जवना के खाली ऊहे जानत बा। ई ओकर मतारी के जवानी के व्यंग्य भरल मुसुकी से मिलत–जुलत रहे, बाकिर ओकरा में बिलगाव आ उदासी के भाव जादे रहे।

अवज्ञा के ई भाव बाकी दुनिया बदे ना, बलुक ओकर अपना मतारी–बाप खातिर रहे। आत्म–बलिदान के ओह लोग के कष्ट–साध्य काम, मतारी–बाप भइला के ओह लोग के खुशी आ विजय के ओह लोग के भाव के वीक्तर ओही लोग के जोग मूल्यांकन करत रहे। ऊ नीमन तरे से जानत रहे जे ओकर मतारी–बाप ओकरा खातिर एगो असाधारण जिनिगी के वृति तइयार कर रहल बा। ऊ अपना के ओइसने असाधारण होखे में पूरा तरे से सक्षम बूझत रहे। ऊ अपना बारे में मतारी के आशंका के जानत रहे। इहो जानत रहे जे ऊ केतना बेबुनियाद बा आ जानकार जस मुसुकी छोड़त रहे। वीक्तर गलत ना रहे– ऊ अपना मतारी–बाप के प्यार,

www.bhojpurisahityangan.com

देख–भाल आ बिसवास के इकलौता पात्र रहे, परिवार के केन्द्र रहे, ओह लोग के एगो सिद्धान्त रहे, ओह लोग के धर्म रहे। विश्लेषण के ओही, समय से पहिले जाग्रत शक्ति से, वयस्क लोगन के पहिले से उपार्जित तार्किक–क्षमता से, ऊ घटनन के कार्यकारण– सम्बन्ध के सँकारत रहे। ओकर मतारी–बाप असहाय उपग्रह जस ओकरा अगली–बगली डोलत रहे। ई एगो सुबहित आदत आ एगो रुचिकर कलात्मकता में विकसित हो गइल। ई मतारी–बाप के खुशी देत रहे आ बेटा विनीत संयम से ओकर कवनो विरोध ना जतावत रहे।

स्कूल में ऊ शानदार तरक्की कइलस आ हर केहू के पछाड़ देहलस। ओकर साथी–संघाती समरथ में ना, बलुक जिनिगी बदे अपना रुख में ओकरा ले कमजोर रहे। ओकनी के बातूनी, आसानी से उत्तेजित होखे वाला, तरे–तरे के खेल में, मैदान में बेमतलब के लड़ाई में भाग ले के हुलसित होखे वाला मामूली लइका रहले सन। वीक्तर स्कूल में आसानी से परीक्षा पास क गइल। ऊ छोट–मोट टकराव में आपन ताकत बरबाद ना कइलस आ संजोग से उपजे वाला रुचि में आपन शक्ति ना लगवलस।

प्योत्र के पारिवारिक जिनिगी सुखमय चलत रहल। नीना अपना मरद के फैसला के सच्चाई के सँकरली। उनकर लइका एगो अद्‌भुत आदमी के रूप में विकसित होत रहे। उनका आपन पुरान सपना के कवनो मलाल ना रहल। उनका अन्दर के जवन कोमलता अपना कल्पना में एगो बड़हन परिवार के तस्वीर बनवले रहे, ऊ अब वीक्तर खातिर चिन्ता में बदल गइल। एह चिन्ता का चलते ज्ञान–शून्य भइला पर ऊ अपना बेटा में अवज्ञापूर्ण संयम के शुरुआत के देखे–बूझे में समरथ ना रहली। एकरा के ऊ आपन ताकत बूझत रहली। ऊ ई ना देखली जे उनकर परिवार में भावना के गरमाहट खतम हो गइल बा। ओकर जगह तर्क संगत बतकही आ लफ्फाजी ले लेले बा। एह बात के ना त ऊ देख सकली आ ना आपन मरदे के। एगो विपरीत प्रक्रिया शुरू हो गइल रहे। अब बेटा अपना मतारी–बाप के व्यक्तित्व के रचना करे लागल रहे। ई काम ऊ अचेतन रूप से, आपन रोजाना के चाहत से प्रभावित हो के, बगैर कवनो सिद्धान्त आ लक्ष्य के करत रहे।

अपना मास्टर के सलाह पर वीक्तर नौवाँ क्लास के पढाई छोड़ देहलस आ विजयी हुलास का साथे विश्वविद्यालय के ओर बढ़ल। ओकर मतारी–बाप दमी सधले ओकर एह विजय प्रयाण के देखल। ओही घरी से मतारी अपना बेटा के दासी जस सेवा करे लगली। अब प्योत्र परिवार में फेर से शक्ति के बँटवारा अचरज रफ्तार से पूरा हो गइल। बेटा के शिक्षा देवे के बारीक जरदोजी काम बगैर कवनो झमेला के अपने से बन्द हो गइल। बाप अबहुँओ कबो–कबो तरे–तरे के समस्या पर बतकही क लेत रहले, बाकिर उनका में पहिले जस बिसवास भरल श्रेष्ठता के अभाव रहे। एकरा अलावे अब उनका सामने अइसन आदमी ना रहे, जेकरा शिक्षा लेवे के कवनो दरकार होखे।

सत्रह बरीस के उमिर में वीक्तर के गणित संकाय में दाखिला भइल। ऊ अपना

www.bhojpurisahityangan.com

पाण्डित्य से, अपना तेज दिमाग आ गणित के गहराई में पइठे के आपन समरथ से प्रोफेसर के चकित करे लागल। प्योत्र आपन अध्ययन–कक्ष ओकरा के अनजाने में सउँप देहले। ऊ कक्ष एगो पवित्र वेदी बन गइल, काहेकि ओजा एगो उच्चतर प्राणी के गोड़ परे लागल रहे– गणित के भावी विद्वान आ नवका पीढ़ी के एगो अइसन प्रतिनिधि, जे मानवता के इतिहास के बिना कवनो सन्देह के तेजी से आगे बढ़ाई। आपन गोपनीय सोच में प्योत्र कल्पना कइले जे एह पीढ़ी के काम आ ओकर विकास पकिया तरे से अचरज वाला होखी। ऊ आ उनके जइसन आउर लोग ओकर राह साफ करे खातिर बहुते कुछ कइल। ख़ास क के गुणवत्ता के संकेन्द्रण के बारे में उनकर बुद्धिमानी से लेहल निर्णय से वीक्तर जस असाधारण प्रतिभा के राह खुल गइल। प्योत्र में बाप होखे के एगो नया गर्व जाग उठल, बाकिर उनकर बाहरी बेवहार पर निर्भरता के चिन्हासी साफे उभर गइल। अब वीक्तर नाँव के उच्चारण लगभग रहस्यमय सम्मान के साथे करे लगले। ऊ काम से लवटला के बाद ना त हुलसित रहत रहले, ना हँसी–मजाक करस आ ना मुसुकियाते रहले। ऊ अपना मेहरारू के देख के खाली मुड़ी हिलावत बाड़े आ बेटा के बन्द दरवजा के तरफ देखत फुसफुसा के पूछत बाड़े :

"का वीक्तर घर में बा?"

"ऊ अध्ययन कर रहल बा," नीना सहज भाव से जवाब देहली।

प्योत्र, कतहूँ से पंजा के बले चलल सीख लेले रहले। अपना हाथ से संतुलन बनावत दरवाजा के लगे आवत बाड़े आ ओकरा के सावधानी से खोलत बाड़े।

"का हम अन्दर आ सकत बानीं?" कमरा के भीतर मुड़ी घुसावत पूछत बाड़े।

ऊ हुलसित हो के अपना बेटा के कमरा से बाहर निकलत बाड़े। फेर दबल जबान में कहत बाड़े जे वीक्तर बहुते नीक काम कर रहल बा। बेहद नीमन। ऊ ओकरा के प्रोफेसर बने पर राजी करा लेले बाड़े।"

नीना विनम्रता से मुसुकी छोड़त बाड़ी।

"कइसन दिलचस्प बात बा! बाकिर हमरा त फिकिर ध लेले बा। तूँ देख ना, ऊ तनी जादे मोट लागत बा। ऊ अतना जादे काम करत बा। हमरा ओकरा हृदय के बारे में डर लागत बा।"

प्योत्र घबरा के अपना मेहरारू के ओर देखत बाड़े :

"का तूँ बूझत बाडू जे ओकरा दिल के बेमारी बा?"

"हम नइखीं जानत। हमरा त खाली डर लागत बा....."।

ई नया चिन्ता आ शक के शुरुआत रहे। मतारी–बाप केतना दिन ले अपना बेटा के चेहरा निहारते रहत बा। ऊ लोग हुलास, आस्था आ शक के मेरावट वाला भाव महसूस करत बा। फेर नया खुशी आ गलतफहमी पनपत बा, जे जिनिगी के सराबोर क देत बा, ज्वार के लहर जस उफान मारत बा आ जिनिगी के छोट–मोट घटना नजर से साफे बिसर जात बा। ओह लोग के ई लउकते नइखे जे बेटा एगो लमहर समय से सनेह के भाव छोड़ देले बा। ऊ नेक शब्दन के उपयोग कबहूँ नइखे

www.bhojpurisahityangan.com

करत। ओकरा लगे दू–दूगो नया सूट बा आ ओकरा बाप के लगे एगो ऊहे पुरान फटही लिबास बा। ओकर मतारी ओकरा नहाये के सरजाम जुटावत बाड़ी आ ओकरा नहइला के बाद साफ–सफाई करत बाड़ी, बाकिर बेटा आभार ले नइखे जतावत। ओकरा ई बात लउकते नइखे जे ओकर मतारी–बाप बूढ़ हो रहल बा। बाप में साँचो एगो गम्भीर बेमारी के लक्षण उभर रहल बा।

वीक्तर आपन सहपाठी के अन्त्येष्टि में भाग ना लेहलस आ घरे पर बइठल किताब पढ़त रहे। प्योत्र अचरज से एह बात पर गौर कइले :

"का तें अन्त्येष्टि में शामिल ना भइले?"

"ना, ना भइनीं," वीक्तर किताब से आँख हटवले बिना जवाब देहलस।

प्योत्र अपना बेटा के ताड़त आपन माथा हिलवले। उनका घोर अरुचि आ बेचैनी महसूस भइल। बाकिर एह अनुभव के असर लगले खतम हो गइल। ठीक ओसहीं बिसरा देहल गइल, जइसे गरमी के दिन में कवनो बाउर दिन के बिसरा देहल जात बा।

मतारी–बाप एगो नया चौंकावे वाला बात पर तनिको धेयान ना देहल–वीक्तर कतनो तेज दिमाग से अध्ययन काहे ना करत होखे, बाकिर ऊ अपना के सुख–सुबहिता से वंचित ना राखत रहे। ऊ अकसरे बाहर जात रहे आ कबो–कबो शराब आ औरत के गन्ध ले के घरे लवटत रहे। ओकर अनवरत मुसुकी में स्मृति झलकत रहे, बाकिर अपना जिनिगी के एह पक्ष का बारे में मतारी–बाप के एको शब्द ना बतावत रहे।

जवना घरी वीक्तर उच्चतर शिक्षा के चउथा बरीस में गइल रहे, ओही घरी प्योत्र के पेट में अल्सर हो गइल। ऊ दुबरा गइल रहले। उनकर वजनो घट गइल रहे। डॉक्टर आपरेशन के सलाह देलहस आ भरोसा देलस जे ऊ ठीक हो जइहें। नीना के एह खेयाल से बेहोशी होखे लागल जे उनका मरद के पेट के एगो हिस्सा काट देहल जाई। बाकिर, वीक्तर रोजे जस आपन दूरस्थ जिनिगी बितावत रहे। ऊ अपना कमरा में बन्द रहत रहे भा घर से बहरी निकल जात रहे।

आपरेशन करावे के कवनो निर्णय ना लेहल जा सकल। प्योत्र के एगो पुरान साथी नामी सर्जन रहले। ऊ रोगी के खटिया के भीरी बइठल रहले आ साफे बिखिया गइले। नीना के समझ में ना आवत रहे जे दुर्भाग के समय केकर मुँह जोहस।

ठाठ–बाट से कपड़ा पहिरले, इत्र के खुश्बू उड़ावत वीक्तर घर में आइल। ऊ आपन मुसुकी भा हाव–भाव के बदलले बिना सर्जन से हाथ मिलावत कहलस– "अबहिंयो अपाहिज के खटिया पर बइठल बानीं? का हाल बा?"

प्योत्र हुलसित हो के अपना बेटा के तरफ देखले :

"हम आपरेशन करावे के सोच रहल बानीं। ऊ हमरा के राजी करावत बाड़े....."।

वीक्तर रोजे जस आपन मुसुकी छोड़त अपना बाप के बात काट देहलस :

"बाबूजी, रउआ लगे पाँच गो रूबल बा का? हमरा लगे थियेटर के एगो टिकट

www.bhojpurisahityangan.com

बा..... खाली एह से चाहीं जे कवनो जरूरत ना पर जाव। हम त दिवालिया हो रहल बानीं।"

"अच्छा," प्योत्र कहले। "नीना, तहरा लगे कुछ रूबल बा, बा नूँ? ऊ कहत बाड़े जे ई आपरेशन जल्दी होखे के चाहीं, बाकिर नीना घबरा रहल बाड़ी। हमरा बुझाते नइखे जे हम का करीं....?"

"एमे डर के कवन बात बा? तोरा मिल गइल का?" वीक्तर अपना मतारी से पाँच रूबल लेत कहलस। "रउआ जानत बानीं, ई तनी खराब लागत बा..... थियेटर में बिना पइसा के बइठल।"

"तें केकरा साथे जा रहल बाड़े?" प्योत्र आपन अल्सर के दरद भुलात पूछले।

"असहीं केहू बा," बेटा बात के टरका देहलस। खुदे बाप के अल्सर के बात बिसर के मतारी से कहलस, "माई, हो सकत बा जे हमरा लवटे में देरी होखे। हम चाभी साथे ले जायेब।"

सर्जन के तरफ विदाई के अन्दाज में झुकलस आ मुसुकियात ओजा से ससर गइल।

ओकर मतारी–बाप अइसे देखल जइसे कवनो ख़ास बात भइले ना होखे।

कुछुवे दिन बाद प्योत्र के गम्भीर दौरा परल। उनकर सर्जन साथी आवते बिखिआ गइले :

"तूँ का हउव? सभ्य हउव कि जंगली?"

ऊ आपन आस्तीन समेटले, जाँच–पड़ताल कइले, सुनले, खँखरले आ हीक भर नीमन–बाउर सुनवले। नीना दवा के दोकान में धउरल गइली आ कुछ दवा के आर्डर दे अइली। जब ऊ वापस लवटली त भय के मारे उनकर चेहरा पीयर हो गइल रहे।

"हँ, त अब ऊ कइसन बाड़े?" ऊ बेर–बेर पूछस आ हरमेसा घड़ी निहारत रहस जे कब आठ बजे। आठ बजे ले दवाई तइयार होखे के रहे। बीच–बीच में ऊ बरफ ले आवे खातिर चउका के ओर धउर जात रहली।

वीक्तर आपन कमरा से निकलते बाहर जाये वाला दरवाजा के ओर बढ़ल। तवने धरी ओकर मतारी चउका से धउरल अइली आ थाकल–हारल काँपत आवाज़ में बोललीं :

"वीक्तर, तें दवा दोकान में जा सकत बाड़े? अब दवा तइयार हो गइल होई आ ..... ओकर कीमत अदा क देहल गइल बा। दोकानदार दवाई दे दी।"

बेतरतीब केश वाला प्योत्र आपन माथा घुमावत बेटा के ओर देखले आ जबरन मुसुकी छोड़ले। पेट के अल्सर भइलो पर आपन जवान प्रतिभावान बेटा के निहारल उनका सुखद लागत रहे। वीक्तर अपना मतारी के तरफ मुसकियात कहलस –"ना, हम नइखीं जा सकत। हम जल्दी में बानीं। हम अपना साथे चाभी ले जायेब।"

सर्जन उछल के खाड़ा हो गइले आ झपट के ओकरा ओर लपकले। ई साफ ना बुझात रहे जे ऊ का करे जा रहल बाड़े, बाकिर उनका काठ मार देहलस। तबो

www.bhojpurisahityangan.com

ऊ सहज भाव से अतने भर कहले –"तोरा के काहे परेशान कइल जाव? बेशक हम दवा ले आ सकत बानीं। ई त निहायत मामूली काम बा!"

ऊ लपक के नीना के हाथ से नुस्खा ले लेहले। दुआर पर वीक्तर उनकर इन्तजार करत रहे।

"रउआ शायद दोसरा ओर जा रहल बानीं, दोसरा ओर?" ऊ कहलस, "हम केन्द्र के तरफ जा रहल बानीं।"

"एकदम सही बात, दोसरा ओर," सर्जन कहले आ धड़धड़ात सीढ़ी से नीचे उतर गइले।

जब ऊ दवा ले के लवटले त प्योत्र ओही करवट लेटल रहले। बेतरतीब केश वाला उनकर माथा तकिया पर टिकल रहे। उनकर उजर आ बोखार से जरत आँख वीक्तर के कमरा के दरवाजा पर अँटकल रहे। ऊ अपना साथी के आभार जतावे ले बिसर गइले। ओह साँझी के कुछ बोलबो ना कइले। जब उनकर साथी जाये लगले त अतने भर कहले –"अब तूँ हमार आपरेशन क द..... हमरा कवनो चिन्ता नइखे।"

नीना धम दे कुरसी पर थउस गइली। उनका जिनिगी में ई पता लगावल बेहद मोसकिल हो गइल रहे जे सुख कहँवा खतम भइल आ दुःख कहँवा से शुरू भइल। सुख आ दुःख अचके एके जस लागे लागल।

प्रसंगतः आपरेशन सफल रहल।

हम इकलौता राजकुँवर से बेटा के खाली एगो कहानी सुनवनीं हँ। अइसन अनेक कहानी बा। इकलौता लइका वाला मतारी–बाप के हमरा खिलाफ बगावत करे के कवनो दरकार नइखे, काहेकि हम ओह लोग के डेरवावे के नइखीं चाहत। हम खाली ओह घटना के चरचा भर करत बानीं, जवन हम होत देखले बानीं।

अइसन परिवार में कुछ नीमनो मामला होत बा। कुछ मतारी–बाप में असाधारण सम्वेदनशीलता रहत बा, जे ओह लोग के सही तरे से पारिवारिक भावना बनावे आ अपना बेटा खातिर साहचर्य के बरियार करे में, जे कुछ हद ले भाई आ बहिन के कमी के पूरा कर सकत बा आ ओह लोग के समरथ बढ़ावत बा। अपना देश में हम अकेली रहे वाली मतारी भा विधुर बाप के इकलौता लइकन से अकसरे मिलेनीं, जे बहुते उत्तम चरित्र के बाड़े सन। एह मामला में अकेलापन के कठिनाई भा बड़हन हानि लइकन के प्यार आ ओकनी के मतारी–बाप के देख–रेख के दमगर प्रेरणा देत बा आ अहंकार पर लगाम लगावत बा। बाकिर अइसन मामला में दुःख के माहौल जादे पनपत बा, जवन खुदे अस्वस्थकर बा आ इकलौता लइकन के समस्या के कवनो तरे से हल नइखे करत। इकलौता लइकन पर मतारी–बाप के प्रेम के एकवठ भइल बड़हन भूल बा।

बड़हन परिवार के लइकन के सफलता के लाखों उदाहरण देहल जा सकत बा। ठीक एकरा विपरीत इकलौता लइकन के सफलता के मामला बहुते कम बा। जहँवा ले हमार व्यक्तिगत अनुभव के सवाल बा त सभसे जादे बेलगाम अहंकार, जे

www.bhojpurisahityangan.com

मतारी–बाप के खुशी के चउपटे नइखे करत, बलुक खुदे लइकन के सफलता के नाश करत बा। अइसन लगभग हरमेसा इकलौता बेटा भा इकलौती बेटी में होत बा।

सोवियत परिवार में इकलौता लइकन के लालन–पालन एगो अइसन केन्द्र विन्दु बन गइल बा, जवन ना बने के चाहीं। मतारी–बाप चाहलो पर एह हानिकारक केन्द्राभिसारी दासता से मुक्त नइखे हो सकत। अइसन माहौल में मतारी–बाप के असोभाविक रूप से दुर्बल प्यार कुछ हद ले एह खतरा के कम कर सकत बा। बाकिर अगर ई प्यार सामान्य क्षमता के बा त हालात पहिलहीं से खराब बा– एह एगो लइका पर मतारी–बाप के खुशी के सगरी उम्मीद टिकल बा। ओकरा के गँववला के मतलब बा सभकुछ गँवा देहल।

एगो बड़हन परिवार में एगो लइका के मुअला से गहिर दुःख त होत बा, बाकिर ई महाबिपत कबहूँ नइखे होत। काहेकि बकिया लइकन खातिर तबो, पहिलहीं जस, प्यार के आ देख–भाल के दरकार बा। ऊ, असल में, पारिवारिक सामूहिक निकाय के बरबादी के खिलाफ बीमा के काम करत बा। आ हँ, सुनसान कमरा के अन्दर मतारी–बाप के अकेले पर गइला के दृश्य से जादे दुखद दृश्य आउर कवनो नइखे होत। ऊ खाली कमरा ओह लोग के हर कदम पर ओह मुअल लइका के इयाद दिलावत रहत बा। एह से ई बात सोरहो आना साँच बा जे अगर परिवार में एके गो लइका बा त चिन्ता, आन्हर प्यार, शक आ घबराहट ओकरे पर केन्द्रित हो जात बा।

संगही अइसन परिवार में अइसन कवनो चीज नइखे होत, जे सहजे एकर प्रतिकार कर सके। भाई आ बहिन भा बड़ भा छोट के ना रहला से दोसरा के लेहाज करे के अनुभव नइखे होत। खेल के, प्यार आ सहजोग के, अनुकरण आ मान–मरजाद के अनुभव नइखे होत। आखिरी बात, मिल–जुल के हिस्सा बाँटे के, सर्वनिष्ठ हुलास आ श्रम के कवनो अनुभव नइखे होत– माने ओह परिवार में कुछुओ नइखे होत, सामान्य साहचर्य ले नइखे होत।

कुछ विरले मामला में अइसन होत बा जे स्कूल व्यक्तिवाद के विकास पर सोभाविक लगाम फेर से लगावे में कामयाब हो जात बा। स्कूल खातिर ई जादे मोसकिल काम बा, काहेकि पारिवार के परम्परा पहिलहीं के राहे काम करत बा। अइसन समस्या लइकन के बन्द भइल संस्था, जइसे द्जेर्जीन्स्की कम्यून के समस्या के दायरा में आवत बा आ सामान्य तरे से ई कम्यून मसला के आसानी से सझुरावत बा। बाकिर अइसन रोक के बेवस्था खुद परिवार में कइल बेहतर बा।

कवनो सोवियत परिवार में इकलौता लइका के लालन–पालन के खतरा असल में एह तथ्य के बराबर बा जे परिवार में सामूहिक निकाय के गुण ना रहल। 'इकलौता लइका' के बेवस्था में सामूहिकता यांत्रिक तरे से बिला जात बा– परिवार के एगो समूह बनावे खातिर सुबहित भौतिक तत्व नइखे रहत। नतीजा आ विविधता दूनों नजरिया से मतारी–बाप आ लइका एगो अइसन कमजोर ढाँचा के

www.bhojpurisahityangan.com

रचना करी, जे अनुपात बिगड़े के पहिलके संकेत पर मटियामेट हो जात बा। अनुपात के अइसन बिगाड़ हरमेसा लइकन के केन्द्रीय स्थिति से जनमत बा।

एगो पारिवारिक समूह के अइसने 'यांत्रिक' प्रकृति के आउरो आघात लाग सकत बा। मतारी–बाप में से केहू के मुअल अइसन आघात के एगो उदाहरण हो सकत बा। अइसन मामला में जादेतर एह तरे के भयावह आघातो महाबिपत नइखे ले आवत आ ओकरा से परिवार के सामूहिकता के नाश नइखे होत। सामान्य परिवार के बकिया लोग ओकर पूर्णता के बनवले राखत बा। जे होखे जवन आघात के हमनी सशर्त 'यांत्रिक' कहत बानी सन, ऊ जादे विनाशक नइखे होत।

पारिवारिक समूह बदे ओह विनाशक प्रभाव के सहल बहुते कठिन बा, जे विघटन के लमहर प्रक्रिया से जुड़ल बा। एह प्रक्रिया के पहिलहीं जस सशर्त 'रासायनिक' प्रक्रिया कहल जा सकत बा। हम पहिलहीं संकेत दे चुकल बानीं जे इकलौता लइका भइला से सामूहिकता के जवन हानि होत बा, ओकरा एही तथ्य के चलते विफलता हाथे लागत बा, जे ई मतारी–बाप के जादे वात्सल्य के रूप में निश्चित तरे एगो 'रासायनिक' अनुक्रिया के जनम देत बा। परिवार में रासायनिक अनुक्रिया के रहल सभसे जादे भयानक होत बा। अइसम अनुक्रिया के कई गो रूप के चरचा कइल जा सकत बा, बाकिर हम ओह एगो के ख़ास चरचा कइल चाहत बानीं, जे सभसे जादे बेजाँय आ हानिकारक बा।

रूसी आ विदेशी लेखक आदमी के मन के गहराई से देखले बा। जइसन कि सभे जानत बा जे साहित्य अपराधी चरित्र के भा सामान्य अस्वस्थ चरित्र के सामान्य, साधारण भा सकारात्मक नैतिक आदमी के चरित्र के बजाय जादे नीमन तरे से उजागर कइले बा। हम अनेक साहित्यिक रूप में, हत्यारा, चोर–उच्चका, गद्दार, कपटी आ छोट–मोट ठग के मानसिकता से रू–ब–रू बानीं।

साहित्य के महारथी लोगन के न्याय करे खातिर ई कहे के परी जे ऊ लोग अपना पतित नायकन खातिर क्रूर कबहूँ नइखे रहल। ई लेखक लोग हरमेसा ऐतिहासिक मानववाद के प्रतिनिधि के हैसियत से आपन बात उजागर कइले बा, जे निसन्देह एगो उपलब्धि बा, मानव जाति के एगो गहना बा। अइसन लागत बा जे सगरी अपराध में खाली बिसवासघात एगो अइसन अपराध बा, जवना के साहित्य में खाली 'लेओनीद अन्द्रेयेव' के 'जूदास इस्कारियत के कवनो सहानुभूति ना मिलल। बलुक एह मामला में अन्द्रेयेव के सफाई बेहद कमजोर आ असोभाविक बा। बकिया सगरी मामला में अपराधी भा लुच्चा–लफंगा के अन्हार भरल अन्तर में हरमेसा एगो उजर कोना, एगो मरुद्यान होत बा, जवना के कृपा से नीच से नीच आदमियो आदमी बनल रहत बा।

जादेतर, ई कोना अपना भा केहू आउर के लइकन खातिर प्यार के कोना होत रहे। लइका मानवीय विचार के एगो अभिन्न अंग बा। अइसन लागत बा जे ऊ ओह सीमा के चिन्हासी बाड़े सन, जवना से जादे नीचे केहू नइखे गिर सकत। लइकन के खिलाफ अपराध मानवता के सीमा से नीचे बा आ लइकन खातिर प्यार से जादे

www.bhojpurisahityangan.com

नीच आदमी के तनी औचित्य साबित हो जात बा।

बाकिर साहित्य के शिकायत करे के वजह बा। एगो अइसन अपराध, जवना पर ई लोग काम नइखे कइले। ई अइसने अपराध बा, जवना में लइकन के हानि होत बा। हमरा अइसन कवनो कृति इयाद नइखे, जवना में अइसन मतारी भा बाप के मानसिकता के कतहूँ चरचा कइल गइल होखे, जे छोटहन लइकन खातिर आपन जिम्मेदारी के परित्याग क के ओकनी के किस्मत के भरोसे जीये बदे छोड़ देले होखे। साहित्य में परित्यक्त नाजायज लइकन के चरचा त जरूरे मिलत बा, बाकिर अइसन मामला में जादेतर मानवीय लेखक लोग मतारी–बाप के समस्या के बजाय एगो सामाजिक समस्या के देखत बा। असल में ऊ लोग इतिहास के सही चित्रण कइले बा। जवन जमीन मालिक एगो किसान के लइकी के बच्चा समेत त्याग देहलस, ऊ अपना के बाप ना मनलस। ओकरा खातिर खाली ऊहे लइकी आ ओकर बच्चा ले ना, बलुक लाखों आउरो किसान अइसने "पशु" रहे, जेकरा साथे ऊ कवनो नैतिक दायित्व से ना बँधल रहे। एह मामला में ऊ कवनो तरे के पैतृक भा दाम्पतिक सम्बन्ध के महज एह से ना जानत रहे जे "नीच वर्ग" कवनो तरे के सम्बन्ध के सीमा से परे रहे।

एगो बाप, जे लइकन के छोड़ के (कुछ मामला में जिनिगी निर्वाह खरची के बेवस्था कइले बिना) चल जात बा, ओहू मामला के हमनी के एगो यांत्रिक घटना माने के सोभाव हो सकत बा। अइसन मानला पर हमनी के ओह परिवार के हालत के बारे में बेसी आशावादिता महसूस होखी। जब ऊ ओकनी के छोड़ देहलस त साफे छोड़ देहलस। रउआ एह मामला में कुछुओ करियो नइखीं सकत। परिवार से बाप के मूरत साफे गायब हो गइल। स्थिति साफ बा जे पारिवारिक समूह के बगैर बाप के रहे के परी। आगे के संघर्ष खातिर आपन सगरी समरथ के एकवठ करे के परी। अगर अइसन बा त परिवार के स्थिति ओह माहौल से तनिको अलग ना होखी, जे बाप के मुअला पर परिवार के यतीम हो गइला पर होत बा।

बाकिर एह मामलन में से जादेतर अइसन बा, जवना में परित्यक्त लइकन के हाल यतीम से कतहूँ जादे पेचीदा आ खतरनाक होत बा।

अबहीं कुछुवे समय पहिले ले येव्गेनिया अलेक्सेयेव्ना के जिनिगी नीमन रहे। उनका मन में अबहुँओ अपना ओह प्यार के जियतार आ सौम्य इयाद बाँचल रहे, जे उनकर जवानी में सुख के आन्ही नियर आइल रहे। ऊ प्यार जिनिगी के एगो बड़हन काम के रूप में आ ओह परिवार के रूप में आपन शान्तिमय छाप छोड़ले रहे। ई उनका के एह पूर्णता के अहसास करवलस जे उनकर जिनिगी ईमानदारी से, बुद्धिमानी से आ सुघरता से अइसन जीयल जात रहे, जइसे जीये के चाहीं। अगर वसन्त बीत गइल त का भइल, प्रकृति के ओही कठोर नियम से शान्त गरमी के अगवानी करीं। भविष्य में अबहुँओ भरपूर गरमाहट बा, धूप आ हुलास बा।

येव्गेनिया अपना परिवार के दायित्व आपन मरद जूकोव के साथे मिल के निभावत रहली। अबहीं कुछुवे समय पहिले ले जूकोव आ ऊ एक–दोसरा से प्यार

www.bhojpurisahityangan.com

करत रहे। ओह लोग का बीच अबहुँओ कोमलता के, साहचर्य भरल कृतज्ञता आ मैत्रीवत सहजता के भाव रहे। जूकोव के चेहरा लमहर आ नाक जीन जइसन रहे। उनका के जिनिगी हर मोड़ पर कम लम्बा चेहरा आ सुन्दर नाक वाला लोग पेश कइले रहे। तबो ओह लोग में प्यार के, खुशी के, तय कइल राह–बाट के आ भविष्य के सुख के कवनो इयाद ना रहे आ येव्गेनिया एकर कवनो उम्मीदो ना करत रहली। जूकोव एगो नीमन, धेयान देवे वाला मरद, प्यार करे वाला बाप आ सज्जन आदमी रहले।

अचके बेरहमी का साथे येव्गेनिया के जिनिगी बरबाद क देहल गइल। एक दिन साँझी के जूकोव काम से घरे ना लवटले। ठीक दोसरा दिने सबेरहीं येव्गेनिया के एगो छोटहन चिट्ठी मिलल।

"येव्गेनिया, अब हम तहरा के धोखा देहल नइखीं चाहत। तूँ समझ जइबू– हम आखिरी दम ले ईमानदार रहे के चाहत बानीं। हमरा आन्ना निकोलायेव्ना से प्रेम हो गइल बा आ अब हम उनका साथे रह रहल बानीं। हम लइकन खातिर तहरा के दू सौ रूबल हर महीना भेजत रहब, हमरा के माफ करीह। हर बात खातिर धन्यवाद।"

जब येव्गेनिया चिट्ठी पढ़ली त ऊ खाली ई महसूस कइली जे कवनो भयावह बात हो गइल बा, बाकिर ऊ भइल बा, एकर ऊ कवनो कल्पना ना कर पवली। ऊ चिट्ठी के दोबारा पढ़ली आ फेर तीबारा पढ़ली। धीरे–धीरे हर लाइन से रहस्य के परदा हटे लागल। हरेक रहस्य लिखल लाइन से बेहद अलग रहे।

येव्गेनिया असहाय हो के हेने–होने देखली, माथ पर अँगुरी फेरली आ फेर से ओह चिट्ठी के पढ़े लगली। जइसे ओमे कवनो अइसन चीज रहे, जवना के ऊ अबहीं ले ना पढ़ले रहली। तब ऊ साँचो कुछ नया देखली –"हम आखिरी दम ले ईमानदार रहे के चाहत बानीं।" पल भर खातिर उनका भरोसा के एगो हलुक झलक लउकल आ फेर ओही भय का साथे ओह महाबिपत के महसूस कइली, जवन उनका पर टूट परल रहे।

उनका दिमाग में अनगिनत अनचाहल तुच्छ विचार के बवण्डर उठल– दू सौ रूबल, बड़हन ऐशो–आराम के फ्लैट, साथी–संघाती के चेहरा, किताब आ मरद के सूट। येव्गेनिया आपन माथा हिलवली, भौंह सिकुरवली आ अचके बहुते भयानक आ असली अपमान के समझ गइली। अब ऊ एगो परित्यक्ता मेहरारू रहली। ना, ई कइसे हो सकत बा? बाकिर लइकन के का होखी? ऊ संत्रस्त हो के चउतरफा देखली– ओजुगिया सभकुछ सामान्य रहे, शयन–कक्ष में पाँच बरीस के ओल्या कुछ फड़फड़ावत रहे, बगल के फ्लैट से हलुकाहे ठकठक आवाज़ आवत रहे। अचके एगो असह्य सम्वेद उनका के बेध देहलस। उनका बुझाइल जे केहू उनका के ईगोर आ ओल्या का साथे पुरान अखबार में लापरवाही से लपेट के कचड़ा में फेंक देले बा।

एक दिन सपने में बीत गइल। एमे से कुछ शान्ति आ विवेक के अइसनो क्षण रहे, जब येव्गेनिया लिखे के मेज पर कुरसी में बइठली। एक के ऊपर एक बँधल

www.bhojpurisahityangan.com

मुट्ठी पर आपन माथा टिकवले विचार करत रहली। शुरू में उनकर विचार सिलसिलेवार चलल– दरद, दुःख, आगे के कठिनाई आ जूकोव से प्यार के कुछ अवशेष उनका सामने एह तरे कतार बन्हले खाड़ा हो जाव, जइसे ऊ चाहत होखे जे ऊ ओकरा के धेयान से मुआयना करत एह सगरी गुत्थी के सझुरावस।

बाकिर उनका अनजाने एगो मुट्ठी खुलत बा आ उनकर आँख के ढँक लेत बा। उनका आँख से छव–छव पाँती लोर बहत बा आ उनकर विचार में कवनो बेवस्था नइखे रह जात। खाली वेदना के अँइठन आ अकेलापन के असह्य अहसास भर बाँचल रहत बा।

उनकर लइका उनका अगली–बगली ओसहीं रहत, खेलत आ हँसत रहले सन। येग्रेनिया घबराहट में ओकनी ओर नजर धउरावत बाड़ी, हाली–हाली खुद के सम्हारत बाड़ी, मुसुकी छोड़त बाड़ी आ कुछ सार्थक शब्द कहत बाड़ी। बाकिर उनका आँख में जे भय के भाव रहे, ओकरा के ऊ छुपा ना पावत रहली। लइका सभ उनका के अचरज से देखत रहले सन। पहिलका दिने जब उनका इयाद परल जे उनका लइकन के बाप के ना रहला के कारण समझे के परी त उनकर मन व्यथा से भर गइल। उनका दिमाग में जवन पहिलका बात आइल, ऊ बक देहली।

"तहनी के बाप दूर चल गइल बाड़े। कुछ समय ले वापस ना अइहें। उनका के कवनो काम पर भेजल गइल बा दूर, बहुते दूर।"

बाकिर 'कुछ समय' आ 'बहुते दूर' शब्दन के पाँच बरीस के ओल्या खातिर कवनो ख़ास माने ना राखत रहे। जब कबहूँ घण्टी बाजे त ऊ सोझे दुआर के तरफ धउर जात रहे। फेर उदास हो के मतारी के भिरी लवट आवत रहे।

"ऊ कब वापस अइहें?"

एह अशुभ सपना में भुलाइल येग्रेनिया के ईहो ना पता चल सकल जे उनका जवन आघात लागल रहे, ओकर असर खतम होखे लागल रहे। अब, जब ऊ सबेरे उठस त उनका संत्रास के अनुभव ना होत रहे। ऊ बेवहारिक बात के बारे में सोचे लगली। ऊ तय कइली जे कवन सामान के पहिले बेचे के बा। उनकर रोअल–धोअल कम हो गइल रहे। आठ दिन के बाद जूकोव एगो पुर्जी का साथे एगो अजनबी मेहरारू के भेजले।

"कृपा क के एह पत्र–वाहक के हाथे हमार कपड़ा, सूट, रेजर–सेट आ अल्बम भेज दीह, जे हमरा काम पर उपहार में मिलल रहे। हमार जाड़ा वाला कोट आ चिट्ठी के ऊ बण्डलो भेज दीह, जे मेज के बीच वाला दराज में पाछे के तरफ धइल बा।"

येग्रेनिया हैंगर पर लटकल तीन गो सूट उतरली। ओकरा के लपेटे खातिर सोफा के ऊपर कई गो अखबार फइला देहली। तबे उनका इयाद परल जे ऊ आपन कपड़ा, रेजर–सेट आ चिट्ठियो मँगले बाड़े। ऊ सोचे लगली। दस बरीस के ईगोर उनका बगल में खाड़ा रहे आ आपन मतारी के धेयान से देखत रहे। उनकर उलझन देख के ऊ कहलस –"माई, हम एकरा के लपेट दीं, हम लपेट देब, माई?"

"हे भगवान!" येग्रेनिया सोफा पर बइठ गइली आ उनका रुलाई छूट परल।

www.bhojpurisahityangan.com

बाकिर लगले ओह अजनबी मेहरारू पर उनकर नजर परल त बिरनिआइले कहली –"तूँ एह तरे आवत बेर का सोचले रहलू..... असहीं खलिहा हाथे! तूँ कइसे उम्मीद करत बाडू जे हम सब पैक क देब?"

ऊ मेहरारु सोफा पर पसरल अखबार के ओर समझदारी से सहानुभूति का साथे देखलस आ मुसुकी छोड़लस।

"ऊ हमरा से कहले जे तूँ कवनो ना कवनो बेवस्था क लेबू। कवनो छँइटी भा सूटकेस....."।

ईगोर उछलल आ चिल्लाइल, "छँइटी? माई, एजुगिया एगो छँइटी बा। छँइटी .....तें जानत बाड़ी केने बा? आलमारी के पाछे! आलमारी के पाछे बा! का हम ओकरा के ले आईं?"

"कवन छँइटी?" येव्गेनिया मरुआइले सवाल कइली।

"ऊ आलमारी के पाछे बा! तें जानत बाड़ी, हॉल के आलमारी! का हम ओकरा के ले आईं?"

येव्गेनिया ईगोर के आँख में देखली। ओकरा में छँइटी ले आवे के भाव साफे झलकत रहे। एह से सांत्वना पा के येव्गेनिया मुसुकी छोड़ली :

"तें कइसे ले अइबे, बेटा! तें त अपने छँइटी से बड़ नइखे, अरे हमार लाड़ला।"

येव्गेनिया ईगोर के अपना ओर घींचत ओकर माथा चुमली। बाकिर ईगोर के माथा में छँइटी नाचत रहे।

"ऊ हलुक बा!" ऊ अपना के छोड़ावत जोर से कहलस। "ऊ त एकदमे हलुक बा। माई, तोरा मालूम नइखे जे केतना हलुक बा!"

एह शोर से आकर्षित हो के ओल्या शयन–कक्ष में आ गइल। ओकर खिलौना भालू ओकरा हाथ में रहे। ईगोर लपक के हॉल के तरफ गइल आ ओजा से खरोंचला आ चरमरइला के आवाज़ आइल।

"हे प्रभु, हे प्रभु!" येव्गेनिया कहली आ ओह मेहरारू का ओर घूम के कहली, "कृपा क के ओह छँइटी के ले आवे में सहजोग कर।"

सभे मिल के छँइटी ले आइल आ कमरा के बीच में ध देहल। येव्गेनिया छँइटी में सामान राखल शुरू कइली। अगर ऊ सरिहा के ना रखती त उनका लाज लागित। एह से जैकेट के मोड़ आ बाँह के सावधानी से मोड़ली, पतलून के पाकेट आ टाई के सोझ कइली। एह काम के ओल्या आ ईगोर धेयान से देखत रहले सन। जब पैक करे में मतारी के दिकदारी भइल त ओकनी के मुँह बनवले सन। ओकरा बाद येव्गेनिया अंग–वस्त्र छँइटी में रखली।

"तें कमीज के कइसे ढेर लगा देले बाड़ी," ईगोर कहलस, "सूट के इस्तरी खराब हो जाई।"

"हँ अइसने बा....." येव्गेनिया हामी भरली। अचके ऊ बिखिया गइली।

"अरे, भाड़ में जाव ई सभ चीज! ऊ इस्तरी कर सकत बाड़े। एकरा से हमरा का लेवे–देवे के बा!"

www.bhojpurisahityangan.com

ईगोर हैरानी से उनका ओर देखलस। येग्नेनिया बिखियाइले तीन गो चिट्ठी के मोटरी आ रेजर सेट के ओह छँइटी में पटक देहली। लाल खोल खुल गइल आ नीला कागज में लपेटाइल ब्लेड जमीन पर छितरा गइल।

"अरे, तें ई का कइली!' ईगोर असन्तोष से चिल्लइल आ ब्लेड के बटोरे लागल।

"जहँवा तोर दरकार नइखे, ओजुगिया बेमतलब के टँगड़ी मत अड़ाव!' येग्नेनिया ईगोर के हाथ ध के अलग हटावत छँइटी के झपना झट दे बन्द क देहली। फेर ओह मेहरारू से कहली – "अब ले जा एकरा के।"

"कवनो सन्देसा?"

"कइसन सन्देसा? कवन सन्देसा? अब जा एजुगिया से!"

ऊ मेहरारू मोका के नजाकत के ताड़त कवनो आउर सवाल ना कइलस। सोझे छँइटी उठा के अपना कन्धा पर धइलस आ दरवाजा के सावधानी से हेलत बहरिया गइल।

येग्नेनिया अपना सुस्त आँख से ओकरा के जात देखली, सोफा पर बइठली आ रोवे लगली। लइका सभ अचरज से उनका ओर देखे लगले सन। ईगोर आपन नाक–भौंह सिकुरा लेहलस आ लिखे के मेज पर मेजपोश के छेद में अँगुरियावे लागल, जे बहुत पहिले जूकोब के सिगरेट से जरल रहे। ओल्या अविनीत ढंग से भौंह सिकुरले दरवाजा से ओलर के मतारी के देखत रहे। ऊ आपन खिलौना जमीन पर पटक देहलस। जब ओकर मतारी अपना के तनी सँभरली त ओल्या अपना मतारी के लगे जा के उदास भाव से कहलस :

"ऊ मेहरारू काहे छँइटी ले गइल? काहे ले गइलस? ऊ कवन रहे?"

मतारी के चुप्पी के पहिलहीं जस अविनय से सहत ऊ बड़बड़ात कहलस –"ओमे बाबूजी के कमीज आ जाकेट रहे..... ऊ ओकरा के काहे ले गइल?"

येग्नेनिया ओकर पातराहे आवाज़ सुनली त अचके उनका इयाद परल जे लइका सभ त कुछ जानते नइखन सन।

सूट के भेजल ओल्या खातिर एगो सन्देह भरल घटना रहे। जहँवा ले ईगोर के बात रहे त ऊ शायद पहिलहीं से सभकुछ जानत रहे। हो सकेला जे अहाता में केहू ओकरा के कुछ बतवले होखे। ई सोभाविक रहे जे जूकोव के गायब होखे के घटना सभकर धेयान घींचले होखे।

येग्नेनिया ईगोर के घूरली। कुल्ह मिला के उनकर हाव–भाव दरद भरल भाव में उलझावे वाला कवनो चीज रहे। ईगोर अपना मतारी के देखलस आ फेर मेजपोश के ओही छेद के तरफ नजर झुका लेहलस। ओल्या, जे अबहुँओ अपना सवाल के जवाब के इन्तजार करत रहे, के नजरअन्दाज करत ऊ ईगोर के हाथ ध लेहली। ऊ आइल आ नम्रता से उनका सोझा खाड़ा हो गइल।

"तें कुछ जानत बाड़े?" येग्नेनिया ओकरा से व्यग्र हो के पूछली।

ईगोर आपन आँख झपकावत मुसुकी छोड़लस।

www.bhojpurisahityangan.com

"हम समझनी ना जे तोर का मतलब बा? हमरा का मालूम होखे के चाहीं?"

"तें बाप के बारे में कुछुओ जानत बाड़े?"

ईगोर गम्भीर हो गइल।

"बाबूजी के बारे में?"

खिड़की से बहरी देखत ऊ आपन मुड़ी हिला के हामी भरलस। ओल्या अपना मतारी के हाथ घींचलस आ ओकर पातर बिखियाइल आवाज़ ईगोर के खामोश उपेक्षा भाव के सबल बना देहलस।

"ऊ मेहरारू उनकर कमीज के उनका लगे काहे ले गइल, माई बताव, काहे ले गइल?"

येव्गेनिया निर्णायक ढंग से उठली आ कमरा के पार ले गइली।

ऊ एक बेर फेर लइकन के तरफ देखली। अब सभे एक–दोसरा के देखत रहे। ओल्या अपना भाई का ओर खेल के अन्दाज में आँख से इशारा करे लागल। ओकरा अपना जिनिगी में कबहूँ कवनो असुखद चीज के उम्मीद ना रहे। ऊ एह बात से बेखबर रहे जे ओकर बाप ओकनी के त्याग के चल गइल बाड़े। येव्गेनिया के अचके अपना सौतिन आन्ना के इयाद परल। करिया रेशम के लिबास पहिरले ओकर मोहक यौवन के, ओकर छोटहन केश आ नीला आँख में तनी ढीठ चमक के इयाद हो आइल। ऊ अपना कल्पना में लमहर जूकोव के एह सुन्दर मेहरारू के बगल में देखली– उनका मन में ओकरा से वासना के अलावे आउर कवन भाव हो सकत बा?

"बाबूजी कब वापस अइहें? ईगोर अनपेक्षित रूप से ओही सहज बिसवास भरल आवाज़ में पूछलस, जइसे ऊ पहिलका दिने बोलले रहे।

ऊ आ ओल्या दुनू मतारी के तरफ देखले सन। येव्गेनिया अब फैसला क लेहली :

"अब ऊ कबहूँ वापस ना अइहें....."।

ईगोर के चेहरा पीयर पर गइल। ऊ आपन आँख मिचामिचावे लागल। ओल्या खामोशी से अइसे सुनत रहे, जइसे ओकरा कुछुओ बुझाते ना रहे। ऊ फेर पूछलस –"बाकिर माई! ऊ वापस कब अइहें?"

अब येव्गेनिया तनी टाईट आ बेरहम हो के कहली :

"ऊ कबहूँ वापस ना अइहें! कबहूँ ना! तहनी के बाप नइखे, कवनो बाप नइखे, बुझाइल?"

"त ऊ मर गइले?" इगोर आपन उतरल चेहरा मतारी के ओर घुमावत पूछलस।

ओल्या अपना भाई के तरफ देखलस आ गूँजत आवाज़ में कहलस– ".....मर गइले?"

येव्गेनिया लइकन के अपना ओर घींचत ओकनी से सनेह भरल मधुर स्वर में बोलली त उनका आँख से छव–छव पाँति लोर बहे लागल। उनकर आवाज़ के

www.bhojpurisahityangan.com

मधुरता दुःख के साथे घुलमिल गइल।

"तहनी के बाप हमनी के छोड़ देले बाड़े, बुझाइल? छोड़ देले बाड़े! ऊ हमनी के साथे रहे के नइखन चाहत। अब ऊ एगो आउर मेहरारू के साथे रहत बाड़े। हमनी के उनका बिना रहेब सन। हमनी तीनो एक साथे रहेब– ईगोर, ओल्या आ हम। एकरा अलावे आउर केहू ना।"

"त ऊ बियाह क लेले बाड़े?" ईगोर उदास भाव से कुछ सोचत कहलस।

"हँ, बियाह क लेहले।"

"का तेहूँ बियाह क लेबे?" ईगोर अपना मतारी का ओर एगो अइसन छोटहन लइका के कठोर नजर से देखलस, जइसे ऊ वयस्क के कठिन पहेली के ईमानदारी से समझे के जतन करत होखे।

"हमार दुलरुआ बच्चा सभ, हम तहनी के छोड़ के कतहूँ ना जायेब," येग्रेनिया सुसुकत कहली। "डेराये के कवनो बात नइखे, सभकुछ ठीक होखी।''

ऊ दृढ़ता से अपना के सँभरली।

"जा के खेल सन। ओल्या तोर 'भालू' होने बा....."।

ओल्या अपना मतारी के ठेहुना के ठेलत आपन अँगुरी से ऊपर वाला होठ दबावत रहे। आखिर में ऊ अपना के मतारी से अलग करत शयन–कक्ष के तरफ भटकत चलल। दरवाजा के लगे आपन खिलौना भालू पर झुकल। ओकर एगो गोड़ ध के उठवलस आ लापरवाही से घसेटत आपन बिछावन के एगो कोना ले ले आइल। अपना भालू के खिलौना के ढेर पर फेंक के ऊ एगो छोटहन स्टूल पर बइठल सोचे लागल। ऊ बूझ गइल रहे जे ओकर मतारी दुखी बिया आ रोवे के चाहत बिया। एह से ओकरा फेर से उनका लगे ना जाये के चाहीं आ ऊ सवाल ना पूछे के चाहीं। बाकिर ओकर सवाल के जवाब त कवनो हाल में मिलहीं के चाहीं।

"बाकिर ऊ वापस कब अइहें?"

येग्रेनिया के पहिलका भावना में आउर कवनो चीज के बजाय आक्रोश जादे रहे।

उनका ई सोचला पर दुख होत रहे जे उनकर जिनिगी एगो युवा, सुन्दर आ सुसंस्कृत नारी के जिनिगी आ उनकर चतुर लइकन के अतना नीमन जिनिगी, पूरा परिवार के जिनिगी, ओकर सगरी माने–मतलब आ हुलास कवनो आधार, सावधानी भा सहानुभूति के बगैर एगो निहायत मामूली चीज के तरे अतना आसानी से एगो छोटहन पुर्जा से रद्द क देहल गइल। काहे? काहेकि जूकोव के मेहरारुअन के विविधता पसन्द रहे।

बाकिर आक्रोश के एह भावना पर लगले जरूरत हावी हो गइल। जबकि शुरू में उनका आक्रोश के तनी जादे अनुभव भइल रहे।

परिवार के बारह बरीस के अस्तित्व के दरम्यान सगरी घरेलू खरच येग्रेबिया के हाथे होत रहे। जबकि ऊ इहो ना जानत रहली जे उनकर मरद केतना कमाले, बाकिर ऊ हरमेसा भरपूर रकम देत रहले। येग्रेनिया हरमेसा इहे बूझत रहली जे

www.bhojpurisahityangan.com

ओह धन पर उनकर आ लइकन के अधिकार बा, जे जूकोव खातिर परिवार महज एगो आमोद भर नइखे, बलुक उनकर कर्तव्य बा। अब जाहिर हो गइल बा जे अइसन ना रहे– ऊ येग्रेनिया के ऊ रकम उनकर प्यार बदे, बिस्तर के सहभागी होखे के नेमत देत रहले। जसहीं उनकर मन भर गइल, ओसहीं दोसर मेहरारू के बिस्तर के सहभागी होखे खातिर चल गइले। येग्रेनिया आ उनकर लइकन के अधिकार महज खोखला शब्द जइसन प्रेमी के बिल के एगो अतिरक्त हिस्सा साबित भइल। अब सगरी कर्तव्य आ दायित्व मतारी के कान्हा पर बा। अब उनका ओह कर्जा के भुगतान अपना जिनिगी, जवानी आ खुशी से करे के परी।

दू सौ रूबल के ई निर्वाह–खरची अब उनका ख़ास अपमानजनक लागे लागल। रात के सुतलो घरी अपना चिन्तन में येग्रेनिया के ई शब्द इयाद परते उनका लाज भरल गुस्सा आवे लागे –"हम लइकन खातिर दू सौ रूबल हर महीना भेजब।" ऊ लइकन के मनमाना दाम लगा लेहले। खाली दू सौ रूबल! देखभाल आ चिन्ता के अन्तहीन बरीस ना, दायित्व के व्यग्र भावना ना, प्यार ना, जीवित दिल ना, जिनिगी ना, लिफाफा में ठुँसल महज नोट के एगो पुलिन्दा!

येग्रेनिया हर रात इयाद करस जे जब ऊ एगो सन्देशवाहक से पहिला बेर रकम लेले रहली त ऊ आपन शरम कइसे छुपवले रहली। वाहक के निहोरा पर कवना तरे सावधानी से लिफाफा पर दस्तखत कइले रहली। जब ऊ चल गइल त धउरल–धउरल दोकान गइल रहली आ ओही साँझी के ऊ कइसे बेशरम जस हुलास का साथे लइकन के नीमन केक खिलवले रहली। ऊ लइकन के देखत मुसुकी छोड़ली आ स्त्रियोचित मान–मरजाद आ मानवीय प्रतिष्ठा के अपना दिल के कवनो कोना में दबा लेले रहली। उनका में अतने भर ताकत बाँचल रहे जे ऊ अपना के केक खाये से रोक लेले रहली।

दिन बीतत गइल। हर दिन का साथे ऊ ओह दू सौ रूबल के आदी होत गइली। एगो नया कृपालु अन्तर्विवेक उनका के एगो तर्क–सम्मत बहाना सुझा देहलस जे जूकोव निफिकिर हो के सुख काहे भोगस। उनका के माह–दर–माह एह रकम के अदायगी से तनी चिन्ता त होखे। उनका के रकम अदा करे द। उनकर ओह सुन्दरी के तनी कष्ट भोगे द।

उनकर कल्पना में जूकोव के रूप–सरूप धुँधराये लागल रहे, बाकिर शायद ओकरा के साफ करे के उनका मोका ना लागल। उनका से लगाव त बहुत पहिलहीं खतम हो गइल रहे। अब उनका कल्पना में ऊ एगो मरद के रूप में कबहूँ ना अइले। जूकोव एगो बदमाश, कमीना आ तंग दिल के मरद रहले। भावना आ प्रतिष्ठा त उनका में रहबे ना कइल। ई सभ बात तय रहे, बाकिर येग्रेनिया में अइसन निन्दा करे के जज्बा भा इच्छा ना पैदा होत रहे। कबहूँ ऊ सोचस जे एह आदमी में कुछुओ अइसन ना रहे, जवना पर अफसोस कइल जाव। शायद ई बेहतरे भइल जे एह बदमाश के साथे उनकर रहल–सहल खतम हो गइल!

येग्रेनिया के एगो बड़हन ट्रस्ट में सचिव के काम मिल गइल। जब ऊ काम

www.bhojpurisahityangan.com

करे लगली आ नियमित दरमाहा पावे लगली त जूकोव के चेहरा उनकर भोगल दुःख के धुन्ध में समेटाइल दूर अतीत में बिसर गइल। ऊ उनका बारे में सोचल छोड़ देहली। एजुगिया ले जे ओह दू सौ रूबल के जूकोव से कवनो सरोकार ना रहल, ऊ महज एगो रकम रहे, उनकर कानूनी आ नियमित आय रहे।

हफ्ता बीतल आ महीना में तब्दील हो गइल। उनका में दुःख के विशिष्टता खतम हो गइल आ ऊ लोग एक–दोसरा जस हो गइल। महज मामूली महीना आ उनकर उबाऊ पृष्ठभूमि में उनकर अन्दर के नारी जाग उठल, जवानी कुलबुलाये लागल।

येग्गेनिया तैंतीस बरीस के रहली। एह 'क्लासिक' उमिर के कई गो कठिनाइयो बा। यौवन के शुरुआती ताजगी खतम हो जात बा। आँख अबहुँओ सुन्दर बा आ छाया चित्र में ऊ 'दैवी' लाग सकत बाड़ी। असली जिनिगी में ऊ चाहे आउर कुछुओ काहे ना होखे, बाकिर उमिर त तैंतीस के होइये गइल रहे। आँख के अपेक्षित उत्तेजक तेज बनावे बदे निचला पलक के अबहुँओ उभारल जा सकत बा, बाकिर संगही एगो बिसवासघाती सिकुड़न उभर सकत बा आ ई चुनौती साहसिक नइखे रह पावत। ओमे शैली के छाप सोझे झलके लागत बा। एह उमिर में एगो सुन्दर लिबास, नया फैशन के कॉलर, लिबास में नकाशी, रेशम के मन्द–मधुर सरसराहट जिनिगी के दर्शन के तनी सुधार देत बा।

येग्गेनिया एह नारी जगत का ओर, आपन देखभाल के तरफ आ दर्पण के ओर वापस लवट अइली। आखिर ऊ अबहुँओ जवान रहली, सुघर रहली, उनकर आँख में चमक रहे आ उनकर मुसुकी में अबहुँओ कुछ सम्भावना रहे.....।

येग्गेनिया के अबे–अबे एगो चिट्ठी मिलल, तीसरका चिट्ठी :

"हमरा खातिर हर महीना दू सौ रूबल देहल मोहाल हो रहल बा। अब छुट्टी के दिन नियरा रहल बा। हम सुझाव देत बानीं जे तूँ ईगोर आ ओल्या के गरमी के छुट्टी बितावे खातिर उमान में हमार बाप के लगे भेज द। ओकनी के ओजुगिया सितम्बर ले रह सकत बाड़े सन। ई ओकनी खातिर एगो अवकाश हो जाई आ स्वस्थकर होखी। हमार मतारी–बाप के जादे खुशी होखी। हम ओह लोग के पहिलहीं खबर पेठा देले बानीं। अगर सहमत होख त हमरा के बता दीह। हम सगरी बेवस्था क देब।"

चिट्ठी पढ़ला के बाद येग्गेनिया ओकरा के अवज्ञा के भाव से मेज पर फेंक देहली। सन्देशवाहक के ई जतावे बदे सचेत हो गइली जे एकर कवनो जवाब नइखे। बाकिर तबे उनका कवनो जरूरी बात इयाद परल। ऊ उनका दिमाग में धुँधराहे झिलमिलाइल आ अइसन सुझाव देत बुझाइल जे उमान में अवकाश लइकन खातिर साँचो नीमन रही। बाकिर कुछुवे मिनट में उनकर बचकाना ढोंग उतर गइल। ऊ बात अपना ओर धेयान देवे के माँग करे लागल। येग्गेनिया दरवाजा पर रुकली आ बगल में निगाह डाल के दर्पण में आपन छवि निहारत मुसुकी छोड़ली। दर्पण के चमकीला धुन्ध में एगो छरहर, करिया बड़हन आँख वाली युवती आपन

www.bhojpurisahityangan.com

मुसुकी से ओकर जवाब देहलस। येग्नेनिया सन्देशवाहक के लगे जा के कहली जे ऊ एह प्रस्ताव पर विचार क के अगिला दिने जवाब भेज दीहें।

ऊ सोफा पर बइठली, कमरा में घूमली, लइकन पर नजर धउरवली आ फेर सोचे लगली। लइकन में हँसी–खुशी के साँचो अभाव रहे। देहात के बीच एगो नया जगह पर प्रकृति के बाग–बगइचा के माहौल में रहल, आवेश–प्रदर्शन आ भावुकता से मुक्ति– ई एगो नीमन खेयाल रहे। लइकन के अइसन जतरा के मोका दे के जूकोव सद्भावना के काम कइले।

पिछला कुछ समय से येग्नेनिया लइकन पर कवनो ख़ास विचार ना कइले रहली। ईगोर स्कूल जात रहे। अहाता में ओकर कई गो संघतिया रहले सन। ओकनी से ऊ अकसरे झगड़त रहे, बाकिर ई त सामान्य बात रहे। ऊ अपना बाप के कबहूँ इयाद ना करत रहे। जूकोव के देहल उपहार, किताब आ खिलौना आलमारी के निचला खान्हा में बेवस्थित तरे से सहेजल रहे, बाकिर ईगोर ओकरा के छुवलहूँ ना रहे। ऊ अपना मतारी से सनेह आ सच्चाई के बरताव करत रहे, बाकिर खुल के बतकही से कतरात रहे। ऊ तरे–तरे के छोट–छोट विषय पर अहाता आ स्कूल में होखे वाला धटनन पर बतकही कइल पसन्द करत रहे। संगहीं इहो साफ रहे जे ऊ अपना मतारी के निहारते रहत रहे। उनकर मनोभाव पर धेयान देत रहे। उनकर टेलीफोन पर बतियावल सुनत रहे। हरमेसा ई जाने के कोशिश करत रहे जे ऊ केकरा से बतियावत बाड़ी। जब ओकर मतारी देर से घरे लवटस त बाउर मानत रहे आ मुँह फुलवले उनकर अगवानी करत रहे। बाकिर जब मतारी पूछस जे तोरा का भइल बा त ऊ उनकर बात टाल देत रहे। आपन बनावटी अचरज के छिपावे के असफल जतन करत कहे –"हमरा का भइल बा? हमरा कुछुओ नइखे भइल!"

ओल्या एगो खामोश लइकी बनल जात रहे। ऊ ठीक से खेले, कमरा में हेने–होने भटके आ आपन काम में अझुराइल रहत रहे, स्कूल जाव, हरमेसा के तरे स्थिर चित्त घरे लवटे, ओकरा ना त बात करे के मन करत रहे आ ना हँसे–मुसकुराये के।

येग्नेनिया लइकन के शिकायत ना कर सकत रहली, बाकिर ओकनी के बेवहार में कवनो आउरे गुप्त जिनिगी के चिन्हासी लउकत रहे। ओकनी के मतारी के एह गुप्त जिनिगी के कवनो जानकारी ना रहे। बाकिर ऊ ई फैसला कइली जे माहौल में बदलाव ओकनी खातिर लाभदायक होखी।

बाकिर येग्नेनिया खाली लइकने के बारे में ना सोचत रहली। उनकर विचार अनचाहे एगो दोसर राह ध लेहलस आ बिखिआइले उनका इयाद परल जे पिछला छव महीना में उनकर आपन कवनो जिनिगी ना रहे। काम, कैन्टीन, लइका, खाना पकावल, मरम्मत आ रफू कइल..... आ आउर कुछुओ ना। उनकर फ्लैट में टेलीफोन के घण्टी के बाजल कम से कम होत गइल। ऊ ई इयादे ना कर पवली जे उनकर टेलेफोन आखिरी बेर कब बाजल रहे। सउँसे जाड़ा बीत गइल आ ऊ

www.bhojpurisahityangan.com

एको बेर थियेटर ना गइल रहली। ऊ एगो पार्टी में गइल रहली, लइकन के सुता के आ पड़ोसी से "तनी धेयान राखे" के कह के देर से रवाना भइल रहली।

पार्टी में एगो गोल चेहरा आ उजर बाल वाला सरातोव के खुश–मिजाज मेहमान उनका साथे सनेह वाला बतकही कइले। ऊ कवनो प्रकाशन भा अइसने कवनो संस्था के डायरेक्टर रहले। ऊ मेहमान इनका के मदिरा के दूगो जाम पिया देहले। ओकरा बाद कागज के तंगी के कवनो चरचा ना कइले, बलुक ई बतावल शुरू क देहले जे समय अइला पर सोवियत समाज "सुन्दर मेहरारुअन के उराल वाला सगरी बेशकीमती हीरा–जवाहरात से कवनो ना कवनो तरे से अलंकृत करी। काहेकि अगर अइसन ना होखी त अइसन कवनो जगहे ना रही, जहँवा ओकरा के राखल जा सके।"

येग्रेनिया माटी के मूरत त रहली ना, भोज के बेर थोर–बहुत हँसी–मजाक उनको नीमन लागत रहे :

"वाहियात बात!" ऊ जवाब देहली, हमरा जवाहरात के दरकार नइखे। ई त अमीर लोग खातिर बा, जवना से ऊ लोग अपना के सजा सके। हमनी के औरत जइसन बा, असहीं सुन्दर बाड़ी सन। का रउआ अइसन नइखीं सोचत?"

अतिथि रहस्यमय ढंग से मुसुकी छोड़ले :

"ना, ना, हम ई ना कहब। कुरूपता के बनावे खातिर जवाहरात पर भरोसा कइल बेकार बा। कवनो अपाहिज लइकी के नीमन कपड़ा पहिरा दीं त ऊ पहिलहूँ से जादे बदसूरत लागी। एगो सुन्दर मेहरारू जवाहरात के आउर जादे समृद्ध आ आकर्षक बना दी आ ओकर सुन्दरता साँचो..... साँचो शानदार बन जाई। मसलन, पुखराज अपने बदे सही होखी, अद्‌भुत होखी।"

"आह, साँचो, जइसे हमरा खाली पुखराज के अभाव होखे!"

येग्रेनिया मुसुकी छोड़त कहली।

शीशा के पार से सरातोव के ओह अतिथि के सराहे जोग नजर उनका पर परत रहे।

"असल में ई सभ कोरा बतकही बा। रउआ जइसन बानीं, बेसी सुन्दर बानीं।"

"अच्छा! ई बात बा!"

"हँ, साँचो, हम ईमानदारी से कह रहल बानीं– कवनो बड़हन सेयान आदमी के तरे..... अगर रउआ नइखीं चाहत जे हम कुछ कहीं त हमरा के बताईं जे एजुगिया राउर जिनिगी कइसन बा...."।

येग्रेनिया उनका के मास्को के बारे में, थियेटर के बारे में, फैशन के बारे में, लोगन के बारे में बतवली। उनका हुलास आ रुचिकर लागत रहे, बाकिर उनका अचके इयाद परल जे रात के बारह बजे वाला बा। फ्लैट में लइका सभ अकेले बाड़े सन। उनका पार्टी खतम होखे से पहिलहीं घरे भागे के परी। उनकर मेजबान लोग नाराज रहे। उजर बाल वाला मेहमान बाउरो मान गइले, बाकिर केहू उनका के घर ले पहुँचावे के प्रस्ताव ना देहल। ऊ अपना लइकन खातिर व्यग्र हो के,

www.bhojpurisahityangan.com

हाली–हाली अइसे उठ के आवे के लाज से बाँचे खातिर वीरान सड़क होत घर के राहे चल देहली।

ओह उजर बाल वाला मेहमान के बात त सोचीं! ई मुलाकात असहीं गुजर गइल आ अइसन केतना मुलाकात के अन्त एही तरे होखी?

ऊ खुद अपने से कटु सवाल कइली– सभकुछ खतम त ना हो गइल? जिनिगी खतम त ना भइल? का अब खाली मरम्मत, सफाई कइल आ .....बुढ़ापा भोगले ले बाकी रह गइल बा?

सबेरे येग्गेनिया डाक से जूकोव के नाँवे एगो चट्ठी भेजली। ओमे लइकन के ओकनी के दादा किहाँ भेजे के सहमति देहल गइल रहे। खाना खात घरी ऊ लइकन के आपन फैसला सुनवली। ओल्या अपना गुड़िया के ओर देखत बेमन से खबर सुनलस। बाकिर ईगोर के कुछ बेवहारिक सवाल पूछे के रहे –"हमनी के कइसे जायेब सन? रेलगाड़ी से? का ओजुगिया मछरी पकड़ल जा सकत बा? का ओजा स्टीम–बोट चलेला? का ओजा हवाई जहाज उड़ेला?"

येग्गेनिया खाली पहिलका सवाल के जवाब बिसवास के साथे देहली। ईगोर अचरज से अपना मतारी के तरफ देखलस :

"बाकिर ओजुगिया, ओजुगिया का बा?" ऊ पूछलस।

"ओजुगिया तहनी के दादा आ दादी लोग बा।"

ओल्या उदास हो के आपन प्रतिक्रया देहलस। ऊ अबहिंयो अपना गुड़िया के देखते जात रहे।

"दादा–दादी ओजुगिया काहे बा?"

येग्गेनिया कहली जे दादा–दादी बहुते नीमन लोग बा आ ओजा रहेला। एह जवाब से ओल्या के मन ना भरल। ऊ सुनबे ना कइलस आ अपना गुड़िया से खेले चल गइल।

खाना खइला के बाद ईगोर अपना मतारी के लगे आइल। ऊ उनका कन्धा पर ओलर गइल आ पूछे लागल –"तें जानत बाड़े माई? का ऊ दादा बाबूजी के हउवन? मोंछ वाला?

"हँ।"

"तें जानत बाड़ी? हम दादा किहाँ नइखीं जाये के चाहत।"

"काहे?"

"काहेकि उनकर देह भक–भक बसाला। बहुते खराब गन्ध आवेला," ईगोर हाथ के हाव–भाव से जतावत रहे जे कइसन दुर्गन्ध आवेला।

"वाहियात बात," येग्गेनिया कहली। उनकर देह से तनिको गन्ध ना आवे। तें बतकही लगवले बाड़े.....'।

"हँ, आवेला," ईगोर दृढ़ता से फेर कहलस। फेर ऊ शयन–कक्ष में चल गइल। येग्गेनिया डबडबाइल आँख से ओकर दृढ़ता देखली आ जोर से बोले के आवाज़ सुनली –"तें जानत बाड़ी, हम दादा किहाँ ना जायेब।"

www.bhojpurisahityangan.com

येगेनिया के अपना ससुर के इयाद परल– ऊ गरमी के समय अपना बेटा से भेंट करे आइल रहले। उनकर साँचो बड़–बड़ आ पुराना किसिम के गझिन मोंछ रहे। ऊ साठ बरीस से ऊपर के रहले तबो खूबे तन्दरुस्त रहले, सोझ खाड़ा रहत रहले, भर–भर गिलास वोद्का पीयत रहले आ ओह पुरान दिन के संस्मरण सुनावते रहस, जवना घरी ऊ एगो मदिरालय में शराब बेचे के काम करत रहले। उनका अगली–बगली ओइसने तेज दुर्गन्ध आवत रहे, जइसे लमहर समय ले ना नहाये वाला बूढ़ के देह से बास मारत रहेला। बाकिर येगेनिया के अपना एह रिश्तेदार से नफरत के भाव के असली वजह रहे– उनकर मज़ाक करे के आदत आ एगो ख़ास अन्दाज से कुड़कुड़ात– भुनभुनात हँसत रहे के सोभाव। ऊ आपन बात कहला के बाद कनखी मारस आ देर ले एगो दबल हँसी से आन्दोलित होत रहस।

येगेनिया सोचली– अपना दादा किहाँ हो सकेला जे लइकन के दिन नीमन ना बीते।

आखिर बूढ़ लोग के लगे जीये बदे रहबे का करे ला? ओह लोग के पेंशन? बाकिर घर उनकर आपन रहे। उनका लगे एगो बगइचा रहे। हो सकत बा जे उनकर बेटा उनका के कुछुओ भेजत होखे। खैर एकरा से का? एकर चिन्ता जूकोव करस।

येगेनिया के अन्दर शक आ उदासी जइसन कवनो चीज खदबदाये लागल। दू सौ रूबल देवे के बारे में जूकोव के शिकायत सन्देह भरल रहे, बाकिर ऊ कवनो ना कवनो बदलाव के, भाग्य के कवनो नवका मुसुकी के अस्पष्ट उम्मीद अबहुँओ लगवले बइठल रहली।

कुछुवे दिन बाद जूकोव एगो चिट्ठी पेठवले। ओमे ऊ सविस्तार बतवले रहले जे लइकन के अपना दादा के घर ले कइसे जतरा करिहे सन। ऊ ओकनी के उमान ले पहुँचावे खातिर कवनो आदमी के भेजत रहले। ऊहे आदमी ई चिट्ठी ले आइल रहे। ऊ लगभग बीस बरीस के नौजवान रहे, ताजगी से भरल–पुरल आ मुसुकियात रुचिकर आदमी रहे। येगेनिया के तनी राहत मिलल, बाकिर चिट्ठी के एगो अंश से उपजल एगो अरुचिकर अनुभव अबहुँओ बाकी रहे। ओह अंश में लिखल रहे :

"हम एह मार्गदर्शक के लवटानी टिकट के भाड़ा दे देब। का तूँ ओकरा के लइकन के टिकट के भाड़ा लगभग साठ रूबल दे देबू? ओल्या के खाली एक चउथाई भाड़ा लागी– एह घरी हम कड़की में बानीं।"

बाकिर येगेनिया जवन जइसे रहे, ओसहीं सभकुछ होखे देहली। ऊ एह खेयाल से उत्तेजित रहली जे ऊ दू–तीन महीना ले आपन फ्लैट में अकेले रहिहें, एगो खाली फ्लैट में एकदम अकेले। ऊ सूतिहें, पढ़िहें, बाहर जइहें, पार्क घूमिहें, दोस्तन से भेंट करे जइहें। एह सभ बातन के अलावे उनकर जिनिगी आ भविष्य के बदले वाला कवनो बड़हन बात होखहीं के चाहीं– एकर ऊ सपनो में साहस ना कइले रहली। बाकिर इहे ऊ चीज रहे, जे उनका में मुक्ति आ हुलास के भाव भर देले रहे।

www.bhojpurisahityangan.com

लइका सभ उनकर एह हुलास के मरुआये ना देहले सन। अइसन लागत रहे जे ईगोर अपना हाल के प्रतिरोध के बिसर गइल रहे। ऊ एगो जतरा के आ नया जगह देखे के सम्भावना से विभोर हो गइल रहले सन। ओकनी के मार्ग–दर्शक के साथे खुशी–खुशी दोस्ती क लेहले सन।

"का रेलगाड़ी में खिड़की बा?" ओल्या ओकरा से पूछलस। "का सभकुछ देखल जा सकत बा? खेत? खेत कइसन होला?"

ओह मार्ग–दर्शक के ओल्या के सवाल में कवनो ख़ास बात ना लउकल। ऊ जवाब में खाली मुसुकियात रहल। बाकिर ईगोर ओकरा के महत्वपूर्ण मानत रहे। ऊ उत्तेजित स्वर में ओल्या के बतवलस –"ओजुगिया खिड़की अइसन बा .....कमरा जइसन नइखे, ऊ ऊपर–नीचे कइल जा सकत बा। जब तें बाहर देखबे त तेज हवा के झोंका चलेला आ बाहर के सगरी चीज पाछे तरफ तेजी से भागत लउकेला।"

"आ खेत कइसन होला?"

"ऊ कई मील ले फइलल बा। ओजा घास बा, फसल बा, गाछ–बिरिछ बा आ ऊ ..... कुटिया भा का कहल जाला ओकरा के..... बा। हेने–होने चलत गाय आ भेंड़ रहेली सन, ढेर।"

ईगोर के अइसन विषय के जादे जानकारी रहे, काहेकि ऊ अपना जिनिगी में बहुते बेर जतरा कइले रहे। एह बतकही में ओकरा दादा के गन्ध वाला बात भोर पर गइल। बाकिर जाये के दिने ईगोर सबेरे उठते रोहा–रोहट मचा देहलस आ एगो कोना में बइठ के रट लगावे लागल– सुन ले, हम कह रहल बानीं। हम ओजा रहेब ना। तें देख लिहे, हम का करेब, भाग जायेब! आखिर हमरा के ओजुगिया काहे जाये के चाहीं? आ तें काहे नइखी जात? कइसन छुट्टी? तें हमनी के बिना तंग हो जइबे, देख लिहे का होखी! देख लिहे!"

ओल्या दिन भर आपन रंगीन स्टूल पर बइठल सोचत रहे। जब टीसन जाये के घरी नियराइल त ऊ भोंकार पार के रोवे लागल। ऊ आपन नया जूता उतार के फेंक देहलस आ आपन बाँह मतारी के ओर फइलवले रहे। ओकर ई आदत लइकाईं से अबहीं ले बरकरार रहे। इहे एगो अइसन मुद्रा रहे, जवना के कवनो ना कवनो माने–मतलब जरूर रहे, काहेकि ओकरा आँख से झर–झर लोर बहत घरी ओकर निकले वाला एको शब्द सुनाते ना रहे।

मार्ग–दर्शक पहुँच गइल रहे आ हुलसित भाव से ओल्या के मनावत रहे।

"ई का? हेतना नीमन लइकी रोअत बिया! अइसे कइसे हो सकत बा?"

ओल्या आपन लोर पोंछत आउर जोर से रोवे लागल – "भें....ए....माई रे.... माई" एकरा अलावे आउर कवनो बात ना बुझात रहे।

येग्नेनिया ओकनी के रेलगाड़ी के खिड़की, गाय, खेत–खरिहान के इयाद करावत दादा जी के बाग–बगइचा, उजर स्टीमर आ भरल–पुरल पाल वाला मछुवारा के नाव का बारे में बता के बड़ी मोसकिल से ओकनी के राजी करवली। ओकरा बाद रेलगाड़ी के छूटे ले ऊ इहे सोचत रहली जे हताशा में ऊ कइसन

www.bhojpurisahityangan.com

भयानक कदम उठा लेहली :

"चल सन, हमनी के टीसन चले के। उदास मत होख सन। सभकुछ नीमन होखी। टीसन पर तहनी के बाप से भेंट होखी। ऊ अइहें आ तहनी के विदा करिहें....."।

ई बात सुनते ओल्या हुलसित हो के किलकारी मरलस। ओकर डबडबाइल आँख में खुशी के लहर धउरे लागल। ईगोर सन्देह से आपन नाक–भौंह सिकोरलस, बाकिर खुशी से कहलस "बढ़िया बा! अब हम देखब जे बाबूजी कइसन लागत बाड़े। हो सकत बा जे अब उनका में फरक आ गइल होखे?"

गली में जूकोव के आफिस के कार उनकर इन्तजार करत रहे। ड्राइवर ऊहे पुरनका, कबहूँ दाढ़ी ना बनावे वाला, हरमेसा के तरे गम्भीर निकीफर इवानोविच रहले। ईगोर खुशी से पागल हो गइल।

"माई! देख ना, निकीफर!"

निकीफर अपना सीट से मुड़ के देखले आ सभका साथे हुलसित भाव से हाथ मिलवले। अइसन पहिले कबहूँ देखे के ना मिलल रहे।

"ईगोर! तोर का हाल बा?" ऊ पूछले।

"बाकिर निकीफर, अब त रउआ तनिको चिड़चिड़ाह नइखीं लागत। हमार हाल ठीक बा..... । ईगोर अचके शरमा गइल आ हाली से दोसर सवाल कइलस– अब ले राउर कार केतना हजार किलोमीटर चल चुकल बा? सताइस! बाप रे....."।

टीसन में जुकोव भेंट करे वाला कमरा में एह लोग के इन्तजार करत रहले। ऊ देखावटी नम्रता से येव्गेनिया के अभिवादन कइले, तबे ओल्या आपन हाथ पसार के उनका के ध लेहलस। ऊ ओकरा के चुम्मा लेहेल आ गोदी में बइठा लेहले। ओल्या अतना उलझन में पर गइल जे कुछुओ बोलिये ना सकल। अपना बाप के स्लेटी सूट के कोर धइले महज हँसत रहे आ आखिर में आपन माथा एक ओर झुकवले नम्रता से कहलस :

"का ई नया जाकेट ह? अब रउआ कहँवा रहेनीं?"

जूकोव वयस्क के ओही भाव से मुसुकइले, जवना के ऊ लइकन के चतुराई से हुलसित भइला पर अपना चेहरा पर ओढ़ लेत रहले।

ईगोर अपना बाप से बेहूदा जस मिलल। ऊ आपन माथा झुका के बाप के तरफ देखलस आ आपन एगो गोड़ ऊपर–नीचे हिलावत रहे। जूकोव ओकरा ओर हाथ बढ़वले आ ठीक ऊहे शब्द कहले जे निकीफर कहले रहले –"ईगोर! तोर का हाल बा?"

ईगोर एकर जवाब ना दे सकल, ऊ तनी अजीब ढंग से खँसलस, मुँह के थूक घोंटलस, झेंप से ओकर चेहरा लाल हो गइल आ ऊ आपन चेहरा दोसरा ओर घुमा लेहलस। अचके, ना जाने कइसे ओकर आँख डबडबा गइल आ ओही आँखे मेज पर धइल चमचमात बरतन, बड़हन फूल आ कैफे के काउण्टर पर राखल गोला

www.bhojpurisahityangan.com

के निहारे लागल।

जूकोव झुँझला गइले। ऊ ओल्या के अपना कोरा से उतार के जमीन पर खाड़ा क देहले। ओकर नन्ही–चुकी हाथ उनकर नया जाकेट के कोर से आखिरी बेर सरक गइल। ओकर मुसुकी ओजुगिये कतहूँ बिला गइल आ ओकरा गाल पर ओकर मुसुकी के दूगो टेढ़–बाँगुच चिन्हासी भर रह गइल।

जूकोव आपन बटुआ निकलले आ मार्गदर्शक के टिकट थमवले।

"देखिहे, भुलवइहे मत, ई लवटानी के टिकट ह आ ई रहल चिट्ठी। टीसन पर केहू तोरा से भेंट करे आई आ अगर नाहिंयो आइल त कवनो बात नइखे, ऊ जादे दूर नइखे।"

"अच्छा लइका सभ," ऊ हुलसित भाव से लइकन से कहले– "अलविदा, तहनी के छुट्टी मनावे जा रहल बाड़ सन। बाकिर हमार काम हमरा के इन्तजार कर रहल बा। इहे काम, जवना के कवनो अन्त नइखे, बा नू ईगोर?"

टीसन से लवटते येग्गेनिया के अइसन बुझाइल जे ऊ अस्त–व्यस्त से ग्रसित हो गइल बाड़ी। कमरा अस्त–व्यस्त परल रहे। घर के मुखिया के गइला का बाद के बेतरतीबी आ उनकर आत्मा साफे अस्त–व्यस्त हो गइल रहे। जूकोव वादा कइले रहले जे ऊ उनका के घरे पहुँचावे खातिर कार वापस भेजिहें। ऊ कार के इन्तजार में आधा घण्टा ले टीसने पर बइठल रह गइली। फेर ओकर आवे के आसरा छोड़ के बस के लाइन में लाग गइली। बाकिर जवन होखे, लानत बा ओह जूकोव पर। ऊ मार्गदर्शक के जवन टिकट देले रहले, ऊहो सम्भव बा जे फोकट के पास रहे।

येग्गेनिया साफ–सफाई में लाग गइली। फेर ऊ पानी गरम कइली आ नहइली। जब उनका अगली–बगली के सभ सामान बेवस्थित हो गइल त उनकर सन्तुलन वापस लवटल। फ्लैट के ऊ असामान्य चुप्पी, निस्तब्धता आ साफ–सफाई लगभग एगो उत्सव जस लागे लागल। अइसन लागत रहे जे खुलल खिड़की से आवे वाला हवा के झोंका के ताजगी के, घड़ी के टिक–टिक के आ जमीन पर बिछल कालीन के सुखद मधुरता के पहिला बेर महसूसले होखस।

येग्गेनिया आपन बाल सँवरली, दराज के नीचे से एगो भूलल–बिसरल रेशमी गाउन के खोज निकलली आ दर्पण के सोझा बहुते देर ले खाड़ा हो के अपना अंगवस्त्र के लेस आ नीला फीता के अन्तरंग आकर्षण, आपन सुडौल टाँग आ जाँघ के सुघर गोलाई के जाँचत–निहारत रहली।

"मूरख बाड़े ऊ जूकोव! येग्गेनिया, तूँ अबहुँओ एगो सुन्दर नारी बाड़ू!" ऊ हुलसित हो के बिसवास से कहली।

ऊ दर्पण के सोझा एक बेर फेर घूमली, फेर थिरकत किताब के आलमारी के लगे पहुँचली आ ओ. हेनरी के एगो किताब निकललली। सोफा पर आपन टँगरी टिकवले एगो कहानी पढ़ली, एगो अँगड़ाई लेहली, फेर लेट गइली आ सपना में खो गइली।

अगिला दिन गुजरल, फेर दोसर दिन गुजरल आ तीसर दिन गुजरल त ऊ

www.bhojpurisahityangan.com

महसूस कइली जे उनकर सपना एगो वृत्त में घूमे लागल बा आ जिनिगी के ओकरा साथे बइठ के सपना देखे के कवनो चाहत नइखे। ऊ गम्भीरता से आपन सामान्य राह धइले चलत जा रहल बा। काम के समय ऊहे फार्म, प्रबन्धक के ऊहे बोलाहट आ आगन्तुक के ऊहे कतार, ऊहे मामूली रोजमर्रा के खबर। हरमेसा के तरे काम काजी मामला के तरंग निकलत जाव, लोग अपना–अपना काम में अझुराइल रहे आ चार बजे साँझ के आपन मरुआइल चेहरा उठवले, डेस्क के दराज फटाफट बन्द करत आ सरसराइले घर के ओर चल देत रहे। ओह लोग के घर कइसन बा आ ऊ लोग कहँवा भागल जात बा? जइसे ओह लोग के मेहरारू जादे आकर्षक होखे! ऊ लोग खाना खाये खातिर भागल जात होखी, ओह लोग के महज भूख सतावत होखी। जवन होखे, येव्गेनिया अकेले घर गइली– ओह राहे–बाटे केहू ना जात रहे।

आफिस में उनका अगली–बगली काम करे वाला लगभग तीस गो मरद रहे। ऊ लोग कवनो हाल में बेजाँय ना रहे। लगभग सभे थोरथार अपना सचिव से प्यार करत रहे। सभे पारिवारिक लोग रहे। ओह लोग के अपना मेहरारू आ लइकन से बिलग कइल निहायत गन्दा हरकत होखी....।

बाकिर घर में एगो मरद के ना रहल खलत रहे। ख़ास क के एह से जे अब उनकर अनपेक्षित आ असाधारण स्वाधीनता उनकर कल्पना के पाँख लगा देले रहे। येव्गेनिया खुदे देख चुकल रहली जे अपना आफिस में कवनो एगो कर्मचारी से बात करत समय ऊ बहुते बेर साहसिक विनोदमय स्वर में बतियावे लागल रहली। उनका खुदे बेजाँय लागत रहे जे उनकर ऊ हास–परिहास केतना बेवहारिक बा आ कइसे सोच–विचार के अपनावल गइल बा। उनकर बेवहार में जरूरी स्वतंत्रता आ सहजता ना रहे। ई अइसने रहे, जइसे ऊ कवनो उबल मेहरारू के जंजीर में बँधले जा रहल बा आ सोचत बा जे हम एकरा के केकरा गला में बान्हीं?

साँझी के येव्गेनिया पटाइले सोचस– हे भगवान, हम अइसे नइखीं रह सकत। ई हो का रहल बा? हम केहू से प्यार करीं का? बाकिर कइसे? अठारह बरीस के उमिर में प्यार मुँह बवले खाड़ा रहत बा। एकदमे निश्चित होत बा आ लगहीं कतहूँ रहत बा। ओकरा के खोजे आ संगठित नइखे करे के परत। सामने प्यार होत बा, परिवार होत बा, जिनिगी होत बा। बाकिर अब तैंतीस बरीस के उमिर में प्यार बनावे के परत बा, जल्दी कइल जरूरी बा, देर त होखहीं के ना चाहीं। आगे जिनिगी नइखे रहत, बलुक पुरान जिनिगी पर एगो पेवन लगवला जइसन होत बा– पुरनका आ नवका के कवना तरे से मेरावट कइल जा सकत बा?

गँवे–गँवे, येव्गेनिया के आपन बिसवास उनकर साथ छोड़े लागल। अबहीं लइकन के गइले दू हफ्ता से जादे नइखे बीतल, तबो उलझन आ भविष्य के कुरूपता सउँसे माहौल के चउपट क देले रहे। ओकरा पाछे एक बेर फेर बुढ़ापा के कुरूप रूप–सरूप आपन छाप छोड़े लागल रहे। अब येव्गेनिया दर्पण के सोझा खाड़ होखस त अपना लेस आ रिबन के देख के हुलसित ना होत रहली। बलुक

www.bhojpurisahityangan.com

आपन चेहरा में नया झुर्री खोजत रहस, जवन भेंटाइयो जात रहे।

ठीक एही मोका पर प्यार के एगो फरिस्ता उड़त आइल। ऊ येगेनिया के ऊपर आपन पाँख के गुलाबी छाया पसार देहलस।

ई, जइसे हरमेसा होत रहल बा, संजोगे से भइल। सरातोव के उजर बाल वाला ऊहे अतिथि, जे जवाहरात पसन्द करत रहले, आपन धन्धा के सिलसिला में मास्को आइल रहले। ऊ ओसहीं हुलसित शोर मचावत अइले, दफ्तर के चक्कर लगवले, माँग पेश कइले, लोग से जवाब–तलब कइले आ ढिठई से पेश अइले। येगेनिया के उनकर खुशमिजाज हाव–भाव खूबे भावत रहे आ उनकर हमला के ओही ऊर्जा से विफल करे के कोशिश करत रहली। ऊ अपना चेहरा के दयनीय बनावत आ आवाज़ के पातर करत ऊँच स्वर में कहले –"अरे ओ सुन्दर देवी जी, रउआ त नौकरशाह बन गइनीं! भयानक! अब ऊ दिन दूर नइखे, जब एको आदमी अछूता ना बाँची!"

बाकिर, द्मीत्री, दोसर कवनो तरीका ना, नियम त नियमे ह। एकर मतलब त ई ना भइल जे रउआ एकरा के सोझे लिख देब?"

"इहे त हम करब। ले आईं, हमरा के कागज दीं।"

जवने पहिले कागज उनका हाथे लागल, ऊ ओही के उठा लेहले आ आपन कलम से घसेटा मारत ओह में कुछ लाइन लिख देहले। येगेनिया ओकरा के पढ़ली त उनका सुखद संत्रास के अनुभव भइल। कागज पर लिखल रहे –"ट्रस्ट–प्रबन्धक के सेवा में, चार टन कागज दीं, द्मीत्री।"

"ठीक नइखे?" द्मीत्री अवज्ञा के साथे कहले, "बतावल जाव, ठीक काहे नइखे, एमे का खराबी बा?"

"अइसे केहू लिखेला? 'दीं!' रउआ बानीं का? लइका बानीं का?"

"ठीक बा, त कइसे? एकरा के कइसे लिखे के चाहीं? कइसे?" द्मीत्री साँचो लइकन जस हठ करत बोलत गइले। "हम बूझत बानीं जे रउआ चाहत बानीं जे हम लिखीं– नीचे देहल सन्दर्भ में राउर अनुमति माँगत बानीं..... के आधार पर... के देखत..... आ एही तरे एह बात के धेयान राखत....। अइसन बा?"

येगेनिया श्रेष्ठता के भाव से मुसुकी छोड़त एक मिनट बदे ई बात बिसर गइली जे ऊ एगो मेहरारू बाड़ी।

"देखीं, द्मीत्री महज 'दीं' ई कइसे हो सकत बा? रउआ कारण बतावे के चाहीं, ना बतावे के चाहीं का? कवना खातिर, कवन आधार पर?"

"राक्षस, जानवर, खून चूसे वाला!" द्मीत्री कमरा के बीच खाड़ा हो के आ आपन घूँसा देखावत चिल्लाये लगले। तीसर बेर हमरा हेतना लमहर जतरा करे के परल। हम लिखे, स्पष्टीकरण देवे आ कारण बतावे में चार टन कागज खरच क देले बानीं। रउआ पहिलहीं से सभकुछ जानत बानीं, सभकुछ, रउआ सभ कण्ठस्थ बा। ना, अब हम बर्दाश्त नइखीं कर सकत।" ऊ आपन कागज उठवले आ धड़धड़ाइले प्रबन्धक के आफिस में घुस गइले। पाँच मिनट बाद ऊ कमरा से बाहर

www.bhojpurisahityangan.com

निकलले। उनकर गुलथुल चेहरा में बनावटी दुःख के भाव जादे रहे।

"ऊ कुछुओ नइखे देत, कहत बा जे हमरा लगे एगो नियोजक भेजीं, हम सभकुछ जाँचब।" उपन्यास में अइसने लोग के हत्यारा कहल जात बा।"

येग्गेनिया हँसे लगली, ऊ एगो कोना में बइठ गइले आ अइसन भाव बनवले जइसे कवनो घोर निराशा में डूबल होखस। फेर, चउतरफा देखत ऊ आपन केहुनी फाइल के एगो ढेर पर अड़ा देहले आ फुसफुसा के कहले– "रउआ जानत बानीं जे का करे के बा? आईं एह नौकरशाह के धत्ता बता देहल जाव....."।

आ फेर? ऊ आशंका के गुप्त रोमांस महसूसत पूछले :

"फेर चलल जाव, पार्क में बइठ के जेंवल जाई। ओजुगिया बड़ सुहावन बा– हरियर गाछ–बिरिछ, पचास वर्गमीटर के खुलल आसमान। एकरा अलावे रउआ जानत बानीं जे हम काल्ह का देखनीं, रउआ समझियो नइखीं सकत। ओजुगिया एगो गौरैया रहे, एगो असली फुर्तीली नन्हकी गौरैया। रउआ जानत बानीं नूँ! हो सकत बा जे हमार आपन केहू होखे, सरातोव से आइल।"

जेंवे बेर द्मीत्री लगातारे हँसी–मज़ाक करत रहले। तबे एगो सवाल पूछले– "सुन्दरी, का ई बात साँच बा जे तूँ एगो परित्यक्ता मेहरारू बाड़ू?"

येग्गेनिया शरमा गइली, बाकिर ऊ एगो कुशल जादूगर जस उनकर भावना के ठेस ना लागे देहले। "अब देख, बाउर मत मनिह, असल में हम....." ऊ आपन छाती ठोकत कहले –"हमहूँ एगो परित्यक्त मरद बानीं।"

येग्गेनिया जबरन मुसुकी छोड़ली, ऊ उनकर मुसुकी के सहारा देहले।

"तूँ आ हम संकट के घरी के दोस्त बानी सन। आखिर, ई हमनी के दोष त ना रहे, रहे का? तूँ सुन्दर बाड़ू आ हम सुदर्शन बानीं, ऊ लोग केकरा पाछे परल बा, हम नइखीं जानत। लोग केतना नकचढ़ा बा, ई केहू के आत्महत्या के उकसावे खातिर काफी बा!"

बाद में ऊ लोग पार्क में हेने–होने घूमल। एगो कैफे में आइसक्रीम खाइल आ साँझ के फूटबाल मैच में जा पहुँचल। ऊ लोग मैच देखल आ खिलाड़ियन के हौसला बढ़ावल। बीच–बीच में द्मीत्री बड़बड़ात रहले :

"लाभदायक चीज बा ई फुटबॉल, ख़ास क के मानसिक विकास खातिर। लागत बा जे ऊ लोग जिनिगी भर ओही गेन्दा के पाछा करत रही..... काहे, कवनो आउर रोमांचक आ मनोरंजक खोज कइल जाव? सिनेमा कइसन रही?"

आ एक मिनट बादे ऊ एगो निर्णायक प्रताव देहले :

'ना, सिनेमा के बात छोड़, ओजुगिया जादे गरमी बा आ एही से हमरा चाय पीये के तलब होखे लागल बा। चल, तहरा घरे चलल जाव आ चाय पीये के।"

एह तरे उनकर प्यार शुरू भइल। येग्गिनिया प्यार के विरोध ना कइली, काहेकि प्यार नीमन चीज बा आ द्मीत्री के साथे हर चीज एह तरे से सुखकर आ सहज हो गइल रहे, जइसे आउर कुछुओ होइये ना सकत रहे।

बाकिर तीन दिन बाद द्मीत्री के लवटे के रहे। जब ऊ एक–दोसरा से विदा

www.bhojpurisahityangan.com

लेहले त ऊ उनका कन्धा पर हाथ राखत कहले –"येव्गेनिया, तूँ प्रिय बाड़ू, तूँ अद्भूत बाड़ू, बाकिर हम तहरा से शादी नइखीं कर सकत....."।

"ओह, ना...."।

"हमरा शादी करे में डर लागत बा। तहार दूगो लइका बाड़े सन, एगो परिवार बा, अगर नाहियो रहित, तबो हम एगो नीमन मरद ना बन सकब। देख ना, जब केहू के मेहरारू छोड़ के चल जात बिया त ई बड़हन दुःख के बात बा। अचरज भरल अप्रिय बा। उफ! आ तबे से हम डेराये लागल बानीं। बेहद डेरा गइल बानीं। हम अकेलहीं रहे के चाहत बानीं। ई ओकरा ले आधा कम खतरनाक बा। बाकिर, अगर तहरा कबहूँ कवनो सहजोग के दरकार परे त हम हाजिर रहब।"

ऊ चल गइले। जब येव्गेनिया प्यार के एह अनपेक्षित तूफान से निकल के अपना पहिलका अवस्था में अइली त उनका ई दुखद अनुभव भइल जे उनकर जिनिगी साँचो एगो अन्हार गली में जा के फँस गइल बा।

दिन बीतत गइल। द्मीत्री के छवि उनका दिल में एगो जगह बना लेले रहे आ ऊहे बनल रह गइल। ना, ऊ अचके में बने वाला चंचलता ना रहे आ अनुचितो ना रहे। द्मीत्री एगो प्रिय आकर्षक आदमी रहले। एकरे चलते उनका जादे दुःख होत रहे, काहेकि ऊ समझ गइल रहली जे द्मीत्री दूगो लइकन आ एगो नया परिवार के पेचीदगी से घबरा गइल रहले। ऊ उनका के सनेह से बतावे के चाहत रहली –"प्रिय, हमरा लइकन से डेराये के कवनो दरकार नइखे। ऊ बहुते नीमन आ सहृदय बाड़े सन। ऊ तहरा के बाप जस प्यार करिहें सन।"

अब उनका एह सहृदयता के व्यग्रता में अपना लइकन के इयाद परल। भविष्य में खाली ओकनिये के साथ रही आ द्मीत्री के चंचल आकर्षण शायद उनका कल्पना के एगो वस्तु बन जाई। ऊ का रहे? एगो अकस्मात ललित कल्पना, जाड़ा के सूरज के एगो क्षणिक रोशनी? लइका..... ऊ त भविष्य बाड़े सन, खाली ओकनिये के!

उनका ईगोर के लिखल एगो चिट्ठी मिलल। स्कूली लइकन के लिखावट में लिखल साफ–सुथरा लाइन चिन्ताजनक रहे। ऊ लिखले रहे :

"माई, हम एजुगिया दादा–दादी के साथे रह रहल बानीं। हमनी के तोर बहुते इयाद सतावत बा। ओजुगिया घर में बेहतर रहे। दादा जी हरमेसा बोलते रहत बाड़े आ दादी बेसी ना बोलस। एजुगिया नदी नइखे आ स्टीमरो नइखे। सेब नइखे, खाली चेरी के पेड़ बा। हमनी के पेड़ पर चढ़े के इजाजत नइखे। दादी थोरथार चेरी हमनी के देली आ बकिया बाजार में बेच देली। हमहूँ बाजार गइल रहनीं, बाकिर चेरी बेचे ना, लोग के देखे खातिर जे ऊ लोग कइसन बा। काल्ह बाबूजी आइल रहले आ फेर चल गइले। तोरा के ढेर प्यार।

–तोर बेटा ईगोर जूकोव"

येव्गेनिया एह चट्ठी पर विचार कइली। खाली एगो लाइन में दू टूक बात कहल गइल रहे –"घर में बेहतर रहे।" शायद दादी के लइकन से बेसी सनेह ना

www.bhojpurisahityangan.com

रहे। उनका ओकनी के चेरी देहल नीमन ना लागत रहे। ओकनी के बाप ओजा काहे गइल रहले? ऊ का चाहत रहले?

येग्रेनिया के चिन्ता अबहीं पूरा जोर से प्रकट ना भइल रहे, तले दोसर चिट्ठी आ गइल।

"प्यारी माई। अब हम बर्दाश्त नइखीं कर सकत। हमनी के एजा से ले जो। सेब अबहीं नइखे आ ऊ लोग बहुते कम चेरी देत बा। ऊ लोग बहुते लालची बा। माई, तें एजुगिया आ के हमनी के ले जो, फौरन आव। अब हम जादे सहन नइखीं कर सकत।

—तोर प्यारा बेटा ईगोर।"

येग्रेनिया पहिले त आपन आपा खो बइठली। ऊ का करस? जूकोव से कहस? खुदे जास? केकरा के भेजस? केकरा के भेजल जा सकत बा? अरे हँ, ओह मार्गदर्शक के।

ऊ धउर के टेलीफोन के लगे पहुँचली। आपन सम्बन्ध टूटलो पर ऊ पहिला बेर टेलीफोन पर आपन मरद के आवाज़ सुनली। आवाज़ सामान्य आ सुपरिचित रहे, बाकिर अब ऊ अतिशिष्ट आ आत्मतुष्ट लागत रहली। उनकर बतकही अइसन रहे :

"अनर्गल बात! हम एगो काम से ओजुगिया गइल रहनीं। सभकुछ बढ़िया बा।"

"बाकिर लइकन के ओजा रहल पसन्द नइखे!"

"एकरा से का? लइका कबहुँओ ना जान पावेले सन जे ओकनी के चाहीं का?"

"हम बहस कइल नइखीं चाहत। का तूँ ओह नवयुवक के भेज सकत बाड़?"

"ना, हम नइखीं भेज सकत।"

"काहे?"

"हम केहू के नइखीं भेज सकत आ भेजहूँ के नइखीं चाहत।"

"तूँ नइख चाहत?"

"ना, नइखीं चाहत।"

"ठीक बा। हम खुदे चल जायेब, बाकिर तहरा रुपया—पइसा से मदद करे के परी।"

"ना, शुक्रिया। हम तहार उपहासास्पद उन्माद में कवनो हिस्सा नइखीं बाँटे के चाहत। हम तहरा के आगाह करत बानीं जे हम तहरा के कवनो हाल में सितम्बर से पहिले पइसा ना भेजब।"

येग्रेनिया कुछ आउर कहे वाला रहली, तले जूकोव फोन काट देहले।

उनका जिनिगी में एह से जादे भयानक घृणा के भाव आउर केहू कबहूँ ना भड़कवले रहे। लइकन के उमान भेजल जूकोव खातिर एगो लाभकारी सौदा के अलावे आउर कुछुओ ना रहे। ई नीच आदमी उनका के धोखा देहलस कइसे? ऊ उनकर प्रस्ताव के सँकार के आपन कमजोरी काहे देखवली? ऊ ई सभ मनली कइसे? बाकिर हँ, लइकन के चलते बँधल ऊ खुदे एगो लालची जानवर जस

www.bhojpurisahityangan.com

हरकत कइली। द्मीत्री? उनकर का? ऊहो एह लाचार लइकन से डेरात बाड़े। ऊ सभका राह के रोड़ा बाड़े सन, हर केहू ओकनी से छुटकारा पावे के चाहत बा, ओकनी के कतहूँ छुपा देवे के चाहत बा।

येवगेनिया बिखिआइले तीन दिन के छुट्टी लेहली। फेर मखमल के एक जोड़ा परदा आ सोना के एगो पुरान घड़ी बेच देहली आ ईगोर के टेलिग्राम भेजली। बाकिर सभसे जादे महत्वपूर्ण ई रहे जे मेज पर राखल टेलिफोन के ओर बिखिआइले देखत खुद अपने से कहली :

"त तूँ पइसा ना देब? ओकरा के हम देख लेब!"

अगिला दिन ऊ अदालत में एगो अर्जी पेश कइली। सरकारी भाषा में एह शब्द के "निर्वाह खरच" कहल जाला।

ओही साँझ के ऊ उमान रवाना हो गइली। उनका मन में भाव के लहर उठत रहे– लइकन खातिर उदास–उदास, परेशान सनेह, द्मीत्री पर आक्रोश भरल कोमलता आ जूकोव से बहुते नफरत।

बूढ़ जूकोव दम्पत्ति किहाँ ऊ ओतने समय बितवली, जेतना लवटानी गाड़ी धरे खातिर जरूरी रहे। काहेकि ओजुगिया के माहौल अइसन शत्रुतापूर्ण आ अइसन खुलल लड़ाई के रहे, जे ओजा घण्टा भर ना रह सकत रहली। उनका अइला से लइकन के पक्ष बरियार हो गइल रहे। पहिला बेर भर अँकवारी मिलला आ लोर बहवला के बाद लइका सभ अपना मतारी से अलग होत दुश्मन का ओर मुखातिब भइले सन। ओल्या के चेहरा पर क्रोध के अइसन भाव प्रकट भइल, जवना से खाली एके गो बात नजर आवत रहे– कवनो दया–माया ना। ऊ एगो बड़हन सटही ले के कमरा में आइल आ हर चीज के तूरे के कोशिश करे लागल– मेज, कुरसी, खिड़की के चौखट, खाली खिड़की के शीशा कवनो कारण से ओकर नजर से बच गइल। ऊ बूढ़ लोग ना त ओकरा हाथ से सटही लेहल आ ना ओकरा के छिपावे के कवनो कोशिश कइल। सटही छिनइला का बाद ओल्या अपना दादा के आपन नन्हकी घूँसा देखवलस आ होठ काटत दोसर सटही खोजे लागल। ओकरा चेहरा पर ऊहे पहिले वाला निर्ममता के भाव रहे। दादा जी ओकरा के टोह लगावे वाला स्काउट के तरे चिन्तित भाव से निहारत रहले।

"तूँ, अपना लइकन के बड़ नीमन से पलले बाड़ू!" ऊ कहले। तूँ एकरा के बच्चा कहत बाड़ू! ई त आफत के पुड़िया बा। ईगोर अपना दादा का ओर तिरस्कार के भाव से देखलस :

"आफत के पुड़िया त रउआ खुदे बानीं। हमनी के बेल्ट से मारे के राउर कवन हक बा?

"त पेड़ पर मत चढ़।"

"कंजूस लोग" ईगोर घृणा से कहलस। "पइसा के दाँते धरे वाला! टुकड़ाखोर! ई कश्चेई बाड़े आ ऊ बाबा यगा।"

"ईगोर तें का बात बोलत बाड़े!" ओकर मतारी दखल देत कहली।

www.bhojpurisahityangan.com

"ओहो! ऊ त हमरा के एकरो ले बाउर बात कहलस। अपना मतारी के बताव जे तें का कहले?"

"हम का कहले रहनीं? तनी सुन त कइसन झूठ बात ऊ बाबूजी के बतवले!" ईगोर उनकर नकल उतारे लागल –"एजुगिया तहार दुलरुआ लइका ईसा के गोदी में बाड़े सन। साँझी के भोजन में दस–दस गो चेरी खाले सन!" आ ऊ तोरा बारे में का कहले –"तोर मतारी, तोर बाप खातिर खूब रोअली।" सुनली तें "रोअली!"

तीसरा दर्जा के भीड़–भाड़ वाला डिब्बा में लइकन आ सामान बदे कवनो तरे जगह बना के येव्गेनिया हताश हो के पाछे के तरफ अइसन नजर डलली, जइसे एगो जरत मकान से अबे–अबे बच के आइल होखस। ओल्या के चेहरा पर अबहुँओ ऊहे निर्मम भाव झलकत रहे। अब ऊ गाड़ी के खिड़की भा गाय में कवनो रूचि ना लेत रहे। ईगोर ओह सगरी बात के बिना सुनवले ना रह सकल, जे ओकरा से कहल भा कइल गइल रहे। येव्गेनिया लइकन के देखली त उनका रोवे के मन करे लागल– ना जाने प्रेमवश भा दुःख के कारण।

येव्गेनिया के दिल अब फेर लइकन के लालन–पालन आ अकेलापन के बोझ से बोझिल हो गइल। अब जवन अकेलापन के उनका अनुभव होत रहे, ऊ एगो नया तरे के रहे, जवन लोग आ मामला पर निर्भर ना रहे। ई अकेलापन उनका अन्दर के गहिराई में क्रोध आ प्रेम से उपजल रहे। बाकिर क्रोध प्रेम खातिर बहुत कम जगह देत रहे। ओकरा बे–कारण आ बे–सबूत के अपने आप बिसवास दिला देहलस जे जूकोव एगो अपराधी बाड़े, लोग आ समाज खातिर खतरा बाड़े, सउँसे दुनिया के नीच आदमी बाड़े। परेशान कइल, इज्जत उतारल, मार–पीटल भा डेरवावल उनकर जिनिगी के एगो सपना हो सकत बा।

एह से जब अदालत के फैसला का बाद ऊ टेलीफोन पर जूकोव के आवाज़ सुनली त बेरहमी से हुलास के अनुभव कइली। अदालत उनका के ढाई सौ रूबल हर महीना निर्वाह–खरच देवे के आदेश देले रहे।

"हम तहरा से कवनो चीज के उम्मीद कर सकत रहनीं, बाकिर हम अइसन कमीनी चाल के उम्मीद ना कइले रहनीं....."।

"ओ हो!"

"का? तूँ एगो लोलुप मेहरारू के सिवा आउर कुछुओ नइखू। तहरा में श्रेष्ठ भाव तनिको भर नइखे।"

"का कहल तूँ? श्रेष्ठ?"

"हँ, श्रेष्ठ। हम तहरा खातिर हर तरे के सामान, लाइब्रेरी, तस्वीर आ फर्नीचर से भरल–पुरल एगो पूरा फ्लैट छोड़ के गइनीं....."।

"तू ई सब कायरता के चलते कइल, काहेकि तूँ सड़ियल बाड़, मोरी के कीड़ा....."।

येव्गेनिया के धीरज जवाब दे गइल। ऊ आपन सगरी ताकत से टेलीफोन के चोंगा के अइसे धइली, जइसे जूकोव के गर्दन होखे। ऊ ओकरा के हिलवली आ

www.bhojpurisahityangan.com

फाटल आवाज़ में चिल्ला के कहली :

"तहरा जइसन आदमी के परिवार कइसे हो सकत बा, कमीना, हैवान!"

जवन बेजाँय शब्द ऊ चिल्लात रहली, ओकरो से उनकर मन ना भरल। बाकिर ऊ ओकरो से बेसी कवनो आउर अपमान जनक बात ना सोच पवली। ई घृणा खुदे उनका बदे असह्य हो गइल। उनका एह बारे में केहू से बात करे के चाहीं, एकरा के बढ़ावे–चढ़ावे के चाहीं, जूकोव के कीड़ा आ बदमाश कहे खातिर आउर लोग में ओही घृणा के जगावे के चाहीं। ऊ चाहत रहली जे लोग जूकोव से घृणा करे आ आपन घृणा के उनके जस प्रबलता से जतावे। बाकिर अइसन केहू ना रहे, जेकरा के ऊ अपना क्रोध के सहभागी बनावस। ऊ अचरज में पर के सोचस– लोग ई काहे नइखे बूझत जे जूकोव केतना कमीना बाड़े। ऊ लोग उनका साथे बात, काम आ मज़ाक काहे करत बा आ उनका से हाथ काहे मिलावत बा?

बाकिर लोग जूकोव के घृणित चरित्र के समझत ना रहे आ उनका साथे ओइसन बरताव ना करत रहे, जइसन कि येव्गेनिया चाहत रहली। खाली लइके सभ उनकर दुःख–दरद महसूसत रहले सन। ओकनी के उनका साथे औपचारिक बात कइल कब के छोड़ देले रहले सन। ऊ अकसरे ओकनी के सोझा अपना मरद के चरचा करत रहली, उनका बदे आपन घृणित भाव जतावत रहली आ अपमानजनक शब्द खुलेआम बोलत रहली। ऊ अदालत के फैसला के बारे में आपन ख़ास जीत बूझत रहली।

"तहनी के नाजुक मिजाज बाप के खेयाल बा जे हमरा उनकर खैरात चाहीं– दू सौ रूबल! ऊ बिसर गइले जे ऊ सोवियत शासन में रहत बाड़े। उनका के ऊ रकम अदा करे द, जे अदालत कहत बा। अगर ऊ अदा नइखन करत त जेल के हवा खइहें!"

लइका सभ अइसन शब्द–वाण के खामोशी से सुनत रहले सन। ओल्या के भौंह टेढ़ हो जाव आ ऊ बिखिआइले विचारमग्न हो जाव। ईगोर के चेहरा में एगो व्यंग्य भरल अवज्ञा के भाव रहत रहे।

अपना दादा किहाँ से लवटला का बादे से लइकन के सोभाव में बदलाव आइल रहे। येव्गेनिया एह बात के समझ गइल रहली, बाकिर एह पर विचार करे खातिर उनकर दिमाग स्वतंत्र ना रहे। अगर ऊ लइकन के चरित्र के कवनो एको पक्ष पर धेयान केन्द्रित कइले रहती त उनका पर लगले नया चिन्ता आ क्रोधपूर्ण आवेश के दौरा पर जाइत।

ईगोर के चेहरा के भाव ले बदल गइल रहे। पहिले ऊ शान्त, आपन हिरन जस आँख के कोमलता से सहज आ सरल बिसवास के मूरत लागत रहे। अब ओकरा चेहरा पर कुटिलता, अबिसवास, अवज्ञा वाला निन्दा के भाव साफे झलकत रहे। ऊ अगली–बगली झाँकल आ आपन भौंह सिकोरल सीख लेले रहे। अब ओकर होठ अगोचर रूप से टेढ़ हो जाव आ अइसन लागत रहे जे हर समय तिरस्कार के भाव से भरल बा।

www.bhojpurisahityangan.com

ओकनी के पड़ोसी किहाँ एगो पार्टी भइल। सामान्य किसिम के अइसन पारिवारिक समारोह, जइसन केहू किहाँ हो सकत रहे। ओह साँझी के ग्रामोफोन बजला आ नाचत गोड़ के आवाज़ ओकनी के फ्लैट से आवत रहे। ईगोर बिछावन में लेटल रहे। अपना चेहरा के सामान्य अवज्ञापूर्ण आ जानकर जस हाव–भाव बनावत ऊ कहलस –"ऊ लोग सरकारी धन चोरवले बा आ नाच रहल बा!"

ओकर मतारी अचरज में पर गइली।

"तोरा कइसे मालूम जे ऊ लोग चोरवले बा?"

"साँचो, ऊ लोग चोरवले बा," ईगोर तिरस्कार के भाव से कहलस, "ओह लोग खातिर ई बहुते आसान बा। नइखे का?"

तें जानत बाड़ी जे कोरोत्कोव कहँवा काम करत बाड़े? ऊ एगो दोकान के मैनेजर बाड़े। बस तिजोरी में हाथ डलले आ पइसे पइसा।"

"तोरा शरम आवे के चाहीं ईगोर। एह तरे के झूठ किस्सा गढ़त बाड़े। तोरा त शरम से पानी–पानी हो जाये के चाहीं!"

"उनका चोरावे में शरम नइखे त हम काहे शरम करीं?" ईगोर अपना माई के देखत अइसन बिसवास से कहलस, जइसे ऊ जानत होखे जे ओकर मतारियो कुछ चोरवले बाड़ी आ ऊ ओकर चरचा करे के नइखी चाहत।

जाड़ा के आखिरी दिन येग्रेनिया के बहिन नन्देज्दा कुछ दिन खातिर मास्को अइली त इनके घरे ठहरली। ऊ येग्रेनिया से बहुते बड़ रहली आ कद–काठी में बहुते भारी–भरकम रहली। ऊ घर में सुख–शान्ति के माहौल बना देहली, जइसन बड़हन परिवार में सुखी मतारी लोग के ख़ासियत होला। येग्रेनिया उनका से मिल के खुश भइली आ ऊ आपन सगरी दुःख–दरद सुनवली। ऊ लोग जादेतर शयन–कक्ष में अकेलहीं बतियावे, बाकिर कबो–कबो खाना खात बेर येग्रेनिया अपना पर काबू ना राख पावत रहली।

उनका रोअला–धोअला पर एक बेर नन्देज्दा कहली –"शिकायत कइल छोड़ दे। बुझाइल? ते काहे रोअत बाड़ी? फेर से शादी क ले! तें ओकनी के देख। ईगोर के देख। ईगोर के एगो आदमी के तोरा से जादे जरूरत बा। मेहरारू के बीच रह के ऊ कइसन मरद बनी? ईगोर आपन मुँह बनावल बन्द क देहलस। देख, तोर बेटा छोटहन स्वेच्छाचारी बन गइल बा। ऊ इहे बूझत बा जे ओकरा मतारी के पाछे–पाछे चले के अलावे आउर कवनो बेहतर काम हइले नइखे। शादी क ले। मरद अजनबी लइकन के साथे हमनी से जादे नीमन बरताव करत बा। ऊ लोग विशाल हृदय के बा....."।

एह पर ईगोर कवनो टिप्पणी ना कइलस। ऊ एके टक अपना मौसी के निहारत रह गइल। बाकिर जब नन्देज्दा चल गइली त ईगोर अपना मौसियो के ना बकसलस।

"जे चाहत बा, ऊहे एजुगिया चल आवत बा..... ऊ हमनी के साथे पाँच दिन रहली, एकदम फोकट में– बेशक ई उनका माफिक लागल। केहू आउर के कीमत

www.bhojpurisahityangan.com

पर..... बाउर बात नइखे!"

"ईगोर, जवना तरे तें बोलत बाड़े, ओह से हमरा झुँझलाहट होखे लागल बा!"

"बेशक तोरा झुँझलाहट होखी! ऊ तोरा के हरमेसा मरद के बात बतावत रहली– शादी क ले, शादी क ले! आ तोरा त इहे चाहीं, चाहीं कि ना?"

"ईगोर, बन्द कर!"

येव्गेनिया बिखिआइले ई बात चिल्ला के कहली, बाकिर ईगोर पर एह बात के कवनो असर ना परल। ओकरा होठ पर बदसूरत भाव के एगो हलुक रेखा उभरल आ ओकरा आँख में कवनो दया–माया ना रहे।

ईगोर के चरित्र के बारे में स्कूल से बाउर अफवाह आवत रहे। स्कूल के हेडमास्टर येव्गेनिया के स्कूल में बोलवले।

"ई बतावल जाव जे राउर लइका अइसन मनोदशा में कइसे पहुँचल? हम पल भर खातिर ई नइखीं सोच सकत जे ई राउर प्रभाव बा।"

"गड़बड़ का बा?"

"ख़ासा गड़बड़ बा, असल में बहुते गड़बड़ बा। ऊ अध्यापक के निन्दा करे के सिवा आउर कुछुओ नइखे करत। ऊ एगो अध्यापिका के मुँह पर कह देहलस –''तूँ अइसन द्वेषपूर्ण एह से बाड़ू जे तहरा एकरा खातिर दरमाहा मिलत बा!' आ सामान्य तरे से ऊ एगो केन्द्र बा..... प्रतिरोध के केन्द्र।"

हेडमास्टर येव्गेनिया के सामने ईगोर के बोलवले आ ओकरा से कहले –"ईगोर, तोर मतारी आइल बाड़ी। उनका सोझा हमरा के वचन दे जे तें आपन चाल–ढाल सुधरबे।"

ईगोर खामोशी से अपना मतारी का ओर देखलस आ दुस्साहस से होठ सिकुरवलस। एगो गोड़ से दोसर पर जोर देत नीरसता से आपन मुँह फेर लेहलस।

"काहे, तें कुछ बोलत काहे नइखे?"

ईगोर आपन आँख झुका लेहलस आ फेर दोसरा ओर देखे लागल।

"तें कुछ बोलबे ना?"

हँसी के मारे ईगोर के गला भर गइल। ओकर ई हँसी अचके भड़क गइल रहे, बाकिर ऊ अपना हँसी पर लगाम लगा लेहलस। फेर उदास भाव से देखत कहलस :

"हम कुछुओ ना कहब।"

हेडमास्टर एक–दू सेकेण्ड ले ईगोर के देखले। फेर ओकरा के बर्खास्त क देहले।

"अच्छा, तें जा सकत बाड़े।"

येव्गेनिया कातर हो के घरे लवटली। उनका बुझाइल जे ऊ लइकाईं के एह कटुता से पूरा तरे से हार गइली। उनका अन्दर हर चीज लमहर समय से ठीक ओसहीं बेतरतीब रहे, जइसे एगो बेतरतीब शयन–कक्ष। बाकिर ईगोर के एगो आपने चरित्र बने लागल रहे। येव्गेनिया ओकर प्रकृति के ना त समझ सकली आ ना ओकर कवनो अन्दाजा लगा सकली।

www.bhojpurisahityangan.com

उनकर जिनिगी कुढ़न पैदा करे वाला छोट–छोट बातन में अझुरात जात रहे। आफिस में अइसन कई गो घटना घटल, जवना के पाछे मुख्य रूप से उनकर मनोदशा के दोष रहे। जूकोव से मिले वाला निर्वाह–खरच अनियमित ढंग से आवत रहे। उनका ओकरा खिलाफ शिकायत करे के परल रहे। अब जूकोव टेलिफोन ना करत रहले, बाकिर उनकर जिनिगी से जुड़ल मामला के सगरी अफवाह उनका लगे पहुँच जात रहे। उनकर नवकी मेहरारू के देह से एगो लइका जनमल रहे, आ जूकोव निर्वाह–खरच में कमी खातिर एगो अर्जी देले रहले।

वसन्त में ऊ सड़क पर ईगोर से मिलल रहले, आपन कार में बइठवले, लेलिनग्रादस्की राजमार्ग के सैर करवले आ विदाई के बेर ओकरा के कई तरे के औजार वाला एगो छोटहन चाकू देहले। ईगोर एह सैर के बाद हुलसित हो के घरे लवटल आ अपना हाथ के लगातारे हिलावत उत्तेजित स्वर में ओह जगह के, बाप के सुनावल चुटकुला के आ उनकर कार के बात करत रहल। ऊ ओह चाकू के अपना पतलून के पाकेट में एगो डोरी से बन्हले रहे। दिन भर ओकरा के खोलत–बन्द करत रहे आ साँझ के कतहूँ से एगो लकड़ी ले आइल। ओकरा के तब ले छीलत रहल, जले पूरा कमरा कचड़ा से ना भर गइल। आखिर में आपन अँगुरी काट लेहलस, बाकिर ऊ एह बात के केहू से ना बतवलस। आधा घण्टा ले वाश–बेसिन में हाथ धोवत रहल। येव्गेनिया खून देखली त चिल्ला के कहली –"हे प्रभु! ईगोर, तें का कर रहल बाड़े? फेंक एह हैवानी चाकू के!"

ईगोर बिखियाइले पलटल :

"तोरा एकरा के हैवानी चाकू कहे के कवन हक बा? तोर हेतना मजाल! ई चाकू तें नइखी देले! ई 'हैवानी चाकू' बा, काहेकि बाबूजी एकरा के देले बाड़े। एही से तोरा पसन्द नइखे?"

येव्गेनिया अकेले रोअली, काहेकि घर में अइसन केहू ना रहे, जेकरा से ऊ सहानुभूति के उम्मीद करती। ओल्या अपना मतारी से युद्ध के एलान त ना कइले रहे आ उनका से बदसलूकी ना करत रहे, बाकिर ऊ उनकर बात मानल साफे छोड़ देले रहे। अब ऊ ई काम बिना कवनो भय भा सतर्कता के करत रहे। ऊ कई दिन ले अहाता में आ पड़ोसी किहाँ बेकहले चल जात रहे आ मइल–कुचइल भइल घरे लवटत रहे। कवनो चीज के बारे में कबहूँ कुछुओ ना कहे आ घर के काम में तनिको हाथ ना बटावत रहे। कबो–कबो ऊ अपना मतारी के सामने रुक जात रहे, आपन निचिला होठ काटे, उनका के अजीब निर्ममता से निहारे आ बेमतलब के हेने–होने छिछियात फिरे। अपना मतारी के डाँट–डपट के आखिरी ले कबहूँ ना सुनत रहे। ओकरा पर केहू के कवनो लगाम ना रहे। एजुगिया ले जे जब ओकर मतारी ओकर कपड़ा बदलस, तबो ऊ अपने खेयाल में डूबल दोसरा ओर देखत रहत रहे।

उलझन आ निराशा से भरल दिन दुःख में बीतत रहे। जवन खुशी के इयाद अबहीं कुछुवे दिन पहिले ले उनका रहे, अब ओकर झलक ले कतहूँ ना रहे आ ओह इयाद के कवन लाभ जे जूकोव के बिना कामे ना करे?

वसन्त–काल में येव्गेनिया मउअत के बारे में सोचल शुरू क देहली। उनका

www.bhojpurisahityangan.com

एह बात के कवनो अन्दाज ना रहे जे का हो सकत बा, बाकिर अब मउअत भयावह ना लागत रहे।

कबो–कबो द्मीत्री के चिट्ठी आवत रहे। ऊ कोमल भावना से भरल–पूरल त रहत रहे, बाकिर ओमे निश्चित बात कुछुओ ना रहत रहे। अप्रैल में ऊ अपना काम के सिलसिला में मास्को अइले। ऊ येव्गेनिया के हाथ धइले। उनकर निगाह या त क्षमा माँगत रहे भा प्रेम–निवेदन करत रहे। ऊ आफिस से संगही बाहर निकलले। येव्गेनिया आपन रफ्तार एह उम्मीद से तेज कइली जे ऊ साथे ना चल पावस। ऊ उनकर बाँह थामत कठोर स्वर में कहले :

"येव्गेनिया, तहरा अइसे ना होखे के चाहीं?"

"त कइसन होखे के चाहीं? "ऊ रुक के उनकर नीला आँख में झँकली। एकर जवाब में ऊ इनका के धेयान से देखले, बाकिर कुछुओ कहले ना। आपन टोपी के उठावत ऊ बगल के एगो गली में मुड़ गइले।

मई के ऊ महीना घटना से भरल रहे।

बगल के एगो फ्लैट में एगो आदमी अपना मेहरारू के बेरहमी से पीटलस .....ऊ आदमी एगो नामी पत्रकार रहे आ कुछ ख़ास विषय के जानकार मानल जात रहे। हर केहू के बिसवास रहे जे गोरोखोव एगो नीमन आ प्रतिभावान आदमी बाड़े। उनकर सतावल मेहरारू एक रात कोरोत्कोव परिवार के साथे बितवले रहली। कोरोत्कोव आ जूकोव के परिवार आ आउरो लोग जानत रहे जे गोरोखोव अपना मेहरारू से खराब बेवहार करत रहले। उनकर मेहरारू में विरोध करे के समरथ ना रहे। सभका एह बात के लकम पर गइल रहे जे ई गोरोखोव के पारिवारिक मसला बा, उनकर पारिवारिक जिनिगी के शैली बा। सभे ओह लोग पर चुटकुला सुनावे आ ओह लोग पर हँसत रहे। बाकिर ऊहे लोग जब गोरोखोव से मिले त एह बात पर कबहूँ सन्देह ना जतावे जे ऊ एगो नीमन आ प्रतिभावान आदमी बाड़े।

जब येव्गेनिया एह नया लान्छन के बात सुनली त ऊ बहुते देर ले अपना कमरा में मेजपोश के नमूना के खामोशी से निहारत हेने–होने घूमत रहली। फेर उनका भोजन–कक्ष के मेज पर सिरका के एगो भूलल–बिसरल बोतल इयाद पर गइल। ऊ ओकर लेबल के गाढ़ नीला पृष्ठभूमि पर छपल उजर अक्षर के देर ले जाँचत–परखत रहली। लेबल के कोर पीयर रहे आ ओह पर अनेक शब्द अंकित रहे। उनकर नजर ओह बोतल के साधारण लेबल पर अँटक गइल आ ऊ ओकर सादा अलंकरण पर अचरज से विचार करे लगली।

बोतल के सावधानी से मेज पर धइला के बाद ऊ अपना फ्लैट से बहरी निकलली, सीढ़ी से नीचे उतरली आ कोरोत्कोव के दरवाजा पर पहुँच के घण्टी बजवली। ओजा गोरोखोव के सतावल मेहरारू के रोअल–धोअल सुनली, उनकर सूखल–सूजल आँख के निहरली आ बाहर आ गइली। ओकरा ना त जीयत रहे के अहसास रहे आ ना मउअत के।

ऊ सीढ़ी से ऊपर चढ़ली आ अनजाने गोरोखोव के दरवाजा के ढकेल देहली। उनका से मिले केहू ना आइल रहे। पहिलका कमरा में गन्दा फर्श पर लगभग चार

www.bhojpurisahityangan.com

बरीस के एगो लइकी लँगटे बइठल रहे। ऊ तम्बाकू के कुछ डिब्बा से खेलत रहे। दोसर कमरा में पढ़े–लिखे वाला मेज पर गोरोखोव बइठल नजर अइले। ऊ पातर नाक वाला छोटहन कद–काठी के आदमी रहले। ऊ येग्रेनिया के देखले त ताज्जुब में पर गइले आ आदतन स्वागत में मुसुकी छोड़ले। तबे येग्रेनिया के आँख में कुछ विचित्रता देख के ऊ अपना कुरसी से आधा उठले। येग्रेनिया दरवाजा पर ओलर के चिल्लात कहली :

"सुन, बदमाश, हमार बात सुन– हम तोरा बारे में अखबार में लिखे जा रहल बानीं!"

बिखिआइल आ भ्रमित गोरोखोव उनका ओर देखले। फेर आपन कलम मेज पर धइले आ कुरसी पाछे के तरफ ढकेलले।

ऊ उनका पर झपट परली।

"तें देखबे, सूअर, हम सभकुछ लिख देब।" ऊ चीख के कहली।

उनका बुझाइल जे ऊ इनका पर चोट करे वाला बाड़े। तबे ऊ दनदनाइल कमरा से बाहर निकल गइली, बाकिर उनका मन में कवनो भय ना रहे। ऊ क्रोध आ प्रतिशोध में जरत रहली। अपना कमरा में पहुँचते ऊ फौरन मेज के दराज खोललली आ कुछ कागज निकललली। ईगोर कालीन पर बइठल कुछ सटही के लम्बाई नापत ओकरा के छाँटे में अझुराइल रहे। अपना मतारी के देखते ऊ ई काम छोड़ देहलस आ उनका लगे चल आइल।

"माई, तोरा पइसा मिलल?"

"कइसन पइसा?" ऊ पूछली।

"बाबूजी से। तोरा लगे बाबूजी के पइसा बा?"

येग्रेनिया हैरत से अपना बेटा के देखली। उनकर होठ काँपत रहे। बाकिर येग्रेनिया अबहुँओ गोरोखोव के बारे में सोचत रहली।

"हमरा लगे बा। तोरा चाहीं का?"

हमरा एगो "निर्माण सेट" कीने के बा। ई एगो खेल ह। हमरा ओकर दरकार बा। ओकर कीमत तीस रूबल बा।

"ठीक बा, बाकिर एकर बाप के पइसा के का लेवे–देवे के बा? धन त सभ एके जस बा।"

"ना, अइसन नइखे, कुछ तोर धन बा, कुछ हमार!"

येग्रेनिया अचरज से अपना बेटा के तरफ देखली। ऊ कुछ बोलिये ना सकली।

"तें हमरा के काहे घूरत बाड़ी?" ईगोर के भौंह टेढ़ हो गइल। "बाबूजी तोरा के हमरा खातिर धन देत बाड़े। ई हमार ह आ हम एगो निर्माण सेट कीने के चाहत बानीं..... ले आव, हमरा हवाले कर।"

ईगोर के चेहरा दुस्साहस, मूरखता आ बेशरमी के निपट घिनौना मेरावट बन गइल रहे। येग्रेनिया के चेहरा फक पर गइल। ऊ सोझे कुरसी पर थउस गइली, बाकिर मेज पर कागज के पन्ना तइयार परल देख के..... ऊ सभकुछ समझ गइली।

www.bhojpurisahityangan.com

उनका मन के अन्दर अचके शान्ति के अनुभव भइल। उनकर बे–रंग चेहरा में कवनो भाव ना रहे। ऊ दराज से अनयासे दस–दस रूबल के दूगो गड्डी निकलली आ ओकरा के मेज के ऊपर लागल शीशा पर ध देहली। ओकरा बाद ऊ अपना हर शब्द में जहर उगिलत ईगोर से कहली, जवन अबे–अबे उनका अन्तरात्मा से हो के गुजरल रहे –"ई रहल ऊ धन, देखत बाड़े? बताव, देख रहल बाड़े?"

"देख रहल बानीं," ईगोर भयभीत हो के कहलस। ऊ अइसन स्थिरे खाड़ा रहे, जइसे ओकर गोड़ ओजुगिये चिपक गइल होखे।

"देख!"

येग्रेनिया अपना सामने परल कागज पर कुछ लाइन लिखली।

"सुन", हम का लिखले बानीं :

'जूकोव महोदय खातिर,

हम तहरा से मिलल धन वापस लवटा रहल बानीं। अब आउर भेजे के तकलीफ मत उठइह। तहरा जइसन लोग से धन लेहला ले नीमन बा भूखे मुअल।"

अपना बेटा से नजर हटवले बिना ऊ ओह धन आ चिट्ठी के लिफाफा में बन्द क देहली। ईगोर के चेहरा में अबहुँओ भय के ऊ भाव रहे, बाकिर अब ओकर आँख में सक्रिय दिलचस्पी झलके लागल रहे।

तें ई पैकेट ओह आदमी के लगे ले जो, जे तोरा के छोड़ देहल आ अब एगो पुरान चाकू रिश्वत में देले बा। एकरा के उनका लगे, उनका आफिस में ले जो। बुझाइल?"

ईगोर हामी भरलस।

"एकरा के ले जो आ चपरासी के दे दीहे। .....जूकोव से कवनो बात मत करिहे।"

ईगोर फेर हामी में मुड़ी हिलवलस। ओकर गाल साफे गुलाबी होखे लागल रहे। ऊ आपन मतारी के अइसे देखत रहे, जइसे कवनो चमत्कार होखे वाला होखे।

येग्रेनिया के इयाद परल जे अबो कुछ आउर करे के बा.....।

"अरे हँ! अखबार के आफिस ओकरा बगले में बा..... बाकिर, हम ओकरा के डाक से भेज देब।"

"अखबार काहे? ओमे..... उनकर ओही जूको..... के बारे में....."।

"गोरोखोव के बारे में, हम गोरोखोव के बारे में लिखे जा रहल बानीं।"

"रे माई! ऊ ओकरा के लात से मरलस। फेर एगो सटहियो से मरलस। का तें ई सभ लिखबे?"

ऊ ईगोर के ओर अबिसवास से देखली। येग्रेनिया ओकर सहानुभूति पर भरोसा करे के ना चाहत रहली। तबो ईगोर उनका ओर गम्भीरता से, हुलास से आ सोझ निगाह से देखत रहे।

"ठीक बा, अब जो", ऊ संयम से कहली।

ऊ टोपी पहिरले बिना बाहर के तरफ भागल। येग्रेनिया खिड़की के लगे जा के खड़ा हो गइली। ऊ देखली जे ऊ केतना तेजी से सड़क हेलत जात बा आ

www.bhojpurisahityangan.com

ओकरा हाथ में ऊ लिफाफा कइसे दमक रहल बा, जवना से ऊ अपना जिनिगी के अपमान के हरमेसा खातिर निकाल के फेंकत रहली। ऊ खिड़की खोललली। आसमान जीवित आ गतिमान रहे आ तड़ित मेघ से घेराइल रहे। उनकर सगरी ताकत खतरनाक तरे से एकवठ होत रहे, बाकिर उनका आगे उजर बादल के टुकड़ा हवा में उधियात रहे। जोर से बिजली गरजत रहे, बाकिर ऊ अबहीं कतहूँ दूर रहे, कमरा ठंढाये लागल रहे। येव्गेनिया लमहर साँस लेहली आ अखबार खातिर एगो चिट्ठी लिखे बइठ गइली। अब उनका खीस ना बरत रहे आ खाली एगो पकिया इरादा के भाव भर रह गइल रहे।

आधा घण्टा में ईगोर लवट आइल। ऊ चुस्त आ हुलसित हो के लवटल रहे। दुआर पर खाड़ा हो के ऊ कहलस :

"माई, हम सगरी काम क देहनीं!"

ओकर मतारी एगो नया तरे के हुलास से ओकर कन्धा ध लेहली। ऊ आपन आँख झुकावे वाला रहे, बाकिर तबे ऊ आपन भूअर आँख के चमकदार निगाह सोझे अपना मतारी पर टिका देहलस आ कहलस –"तें जानत बाड़ी? हम ओह चाकू के वापस क देहनीं।"

अखबार में येव्गेनिया के लिखल चिट्ठी जोरदार धमाल मचवलस आ लगले ऊ एगो धेयान के केन्द्र बन गइली।

अब उनकर टेलीफोन दिनभर टनटनाते रहत रहे। का भइल, एह बात के उनका सुबहित जानकारी ना रहे, बाकिर उनका बुझाइल जे ऊ कुछुओ महत्वपूर्ण आ निर्णायक बात रहे। जब ऊ टेलीफोन पर जूकोव से बात कइली त उनका एह बात के पकिया भरोसा हो गइल।

"ई बताव जे हम तहार चिट्ठी से का समझीं?"

येव्गेनिया टेलीफोन के चोंगा धइले मुसुकी छोड़ली :

"ई बूझ जे तहरा मुँह पर एगो तमाचा बा।"

जूकोव टेलीफोन पर बड़बड़ात लाइन काट देहले।

येव्गेनिया लोगन के बीच रहल आ आइल–गइल चाहत रहली। अब लोग उनका के हर तरफ से घेरले रहत रहे। ईगोर एगो परिचारक के तरे अपना मतारी के पाछे–पाछे गर्व से आपन सीना तनले चलत रहे। अपना बाप के बारे में ऊ कवनो बात ना करत रहे। हर केहू के येव्गेनिया में, गोरोखोव के बारे में चिट्ठी लिखे वाली लेखिका में दिलचस्पी रहे।

"ऊ लोग गोरोखोव के बारे में बतियावते रहत रहे," ईगोर उनका से पूछलस, "बाकिर ऊ लोग हमनी के बारे में कुछुओ जानते नइखे, जानत बा का?"

"ना ईगोर," ओकर मतारी जवाब देहली। "बाकिर हम फेर से तोर मदद चाहत बानीं। कृपा क के ओल्या के बारे में कुछुओ कर। ऊ त साफे बेकाबू हो गइल बिया।"

ईगोर कुछ करे में देरी ना कइलस। खिड़की के लगे जा के अहाता से ओल्या के बोला ले आइल आ ओकरा से कहलस– सुन, कामरेड ओल्या! तें लमहर समय से बेकार वक्त गँवा रहल बाड़ी!"

www.bhojpurisahityangan.com

ओल्या दरवाजा के तरफ जसहीं चलल, तले ईगोर ओकर राह रोक लेहलस। ओल्या ओकरा ओर देखलस।

"का ह?"

"तोरा मतारी के बात माने के परी।"

"अगर हम ना मानीं त?"

"समझ ले, अब से हम तोर सरदार बानीं।"

ओल्या आपन मुड़ी हिलवलस आ पूछलस :

"तें हमार सरदार बाड़े?"

"आव आ मतारी से भेंट कर....."।

"आ अगर हम नइखीं चाहत त?"

"ई ना चली, "ईगोर मुसुकियात कहलस।

"ना चली!" ऊ कुटिल नजर से ओकरा ओर देखलस।

"ना।"

ओल्या जवन उपेक्षा–भाव से अपना मतारी के लगे जात रहे, अब ओही भाव से विपरीत राहे चल परल। ईगोर महसूस कइलस जे अब ओकरा पर जादे धेयान देवे के दरकार बा।

ओकर मतारी के बतकही में उपदेश जादे रहत रहे। ओल्या बेमन के सुनलस, बाकिर मतारी के बगल में ईगोर खाड़ा रहे। ओकर खामोश रूप–सरूप गर्व का साथे कानून के प्रतिनिधित्व करत रहे।

जिनिगी हर तरे से दिलचस्प हो गइल रहे। एक दिन साँझ के इनकर फ्लैट में बेउम्मीदे एगो हट्टा–कट्टा उजर बाल वाला आदमी धमक गइल।

"येव्गेनिया, तूँ त गोरोखोव के ले के अइसन बवाल मचवले बाड़ू..... हर केहू तहरे चरचा करत बा। हम अपना के रोक ना सकनीं। हमरा आवहीं के परल।"

"द्मीत्री, केतना नीमन भइल जे तूँ आ गइल'', येव्गेनिया के हुलास उनका के आउर सुन्दर बना देहलस। "आव, हम तहरा के अपना लइकन से भेंट करावायीं।"

"अरे वाह'', द्मीत्री गम्भिराहे मुसुकी छोड़त कहले। "ई ईगोर ह नूँ? सुन्दर चेहरा बा। आ ई ओल्या ह। एकरो चेहरा सुन्दर बा। अब हमरा तहनी से कुछ गम्भीर बात करे के बा –"बात ई बा जे हम तहनी के मतारी से शादी करे के चाहत बानीं।"

ऊ उजर बाल वाला आदमी खामोश हो गइल आ कमरा के बीचो–बीच खाड़ा हो के सवालिया नजर से लइकन के तरफ देखे लागल।

"द्मीत्री'', येव्गेनिया उलझन में पर के कहली–तहरा ई बात पहिले हमरा से कहे के चाहत रहे....."।

"तूँ आ हम त हरमेसा कवनो ना कवनो समझौता पर पहुँच सकत बानी सन, बाकिर चिन्ता एह लोग के बा....." द्मीत्री कहले।

"हे भगवान, का ढिठई बा!"

"का ढिठई!" ओल्या धीरे से मुसुकी छोड़लस।

"अच्छा, ईगोर तोर का विचार बा?"

www.bhojpurisahityangan.com

"बाकिर तूँ कवना तरे के आदमी बाड़? ईगोर पूछलस।

"हम?" ई बा सवाल। हम वफादार, खुशमिजाज आदमी बानीं। हम तोर मतारी से बहुते प्यार करत बानीं। हम तोरा के पसन्द करत बानीं, बाकिर लइकन के मामला में हम तनी जादे कठोर हईं," ऊ टाइटे आवाज़ में कहले।

"अहा," ओल्या खुशी से किलकारी भरलस।

"देख ले, ई त अबहिंये से किलकारी भरे लागल आ तें अँगुरी ले ना हिलवले। एकर वजह ई बा जे तें मरद बाड़े। अच्छा ईगोर, बताव ते हमरा के पसन्द करत बाड़े?"

ईगोर बिना मुसुकइले जवाब देहलस :

"हँ, हम पसन्द त करत बानीं, बाकिर..... तूँ हमनी के छोड़ब त ना?"

"अरे हमार दुलरुआ लइका सभ, तहनी के हमरा के मत छोड़िह सन!" द्मीत्री अपना छाती पर हाथ ध के कहले। हमरा के निपट यतीम बना के मत छोड़िह सन!"

ओल्या खिलखिला के हँस परल।

"यतीम?"

"साथी सभे! ई का हो रहल बा? तूँ लोग के हमरा से पूछल जरूरी बा," येव्गेनिया निहोरा कइली। "मान ल, हम नइखीं चाहत, त?"

एह बात से ईगोर क्षुब्ध हो गइल।

"बाकिर माई, तें कइसन अजीब बाड़ी! ऊ त अपना बारे में सभकुछ बता देहले। तें लोग से अइसन बरताव नइखी कर सकत।"

"ई ठीक बा," द्मीत्री ओकर समर्थन करत कहले। "लोग के साथे सहानुभूति के साथे बरताव करहीं के चाहीं।"

"देख लेहली नू माई? उनका से शादी क ले, जवन होखे, तें त बहुत पहिलहीं उनका साथे इन्तजाम क लेले रहली। हम तोर आँख देख के बता सकत बानीं। ओहो, कइसन चालाकी बा तोर आँख में।"

द्मीत्री खुशी से पागल हो गइले।

"वाह, केतना अक्लमन्द लइका बाड़े सन आ हम अइसन मूरख जे डेराइल रहनीं।"

साँच बा जे येव्गेनिया के कहानी अपना ढंग के जादे दुखद नइखे। अइसनो बाप बा, जे अपना लइकन के परित्यागे ना, बलुक ओकनी के लूटहूँ से बाज नइखे आवत। ऊ लोग आपन नया घर बसावे खातिर पुरनका के जादेतर सामान नोच–खसोट के ले जात बा।

हमनी के समाज में बाप लोग के एगो बड़हन संख्या अपना पहिलका पारिवारिक गलतफहमी के प्रभाव में नइखे आवत। ऊ लोग नवका प्यार के आकर्षण के नकारत अपना मेहरारू के साथे बेदाग सम्बन्ध बनवले राखे में समरथ बा। ऊ लोग अपना मेहरारू के व्यक्तिगत खामी पर आपत्ति नइखे जतावत, जवना के जानकारी शादी के बाद होत बा। अइसन बाप लइकन के लालन–पालन के जिम्मेदारी नीमन तरे से निभावत बा आ एह मामला में ऊ लोग सराहे जोग बा।

www.bhojpurisahityangan.com

बाकिर अइसन 'कुलीन' आ अकुलीन बाँका–छैला अबहुँओ बा, जे घृणास्पद कमजोरी के साथे आपन प्रेम–लीला के दोसरा लोग के घर ले पहुँचावत बा आ अपना पाछे हर जगह यतीम भा आधा यतीम के झुण्ड पसारत चलत बा। कबो–कबो ई लोग मुक्त प्यार के पक्षधर होखे के ढोंग करत बा। कबहूँ ऊ अपना परित्यक्त लइकन में दिलचस्पी देखावे के तत्परता जतावत बा। बाकिर लोग के रूप में ऊ हरमेसा निकम्मा लोग बा आ एह लायक नइखे जे ओह लोग पर कवनो तरे के दया कइल जाव।

पीड़ित आ अपमानित मतारी आ लइकन के चाहीं जे ऊ लोग एह तरे के निर्वाह–खरच देवे वाला "रासायनिक" आदमी के हर मोका पर बेनकाब करे। एह लोग के ओह लइकन के साथे नेह–छोह करे के मोका ना देवे के चाहीं, जेकरा के ऊ लोग परित्याग क देले बा।

जवन होखे, निर्वाह–खरच के सवाल पर ख़ास सावधानी बरते के जरूरत बा, काहेकि अइसन धन कतहूँ परिवार के भ्रष्ट ना बना देव।

पारिवारिक समूह के समग्रता आ एकवठ भइल नीमन लालन–पालन बदे एगो निहायत शर्त बा। एकर विनाश निर्वाह–खरच देवे वाला बाप आ इकलौता 'राजकुमार' से नइखे होत, बलुक मतारी–बाप के झगड़ा, बाप के बेलगाम क्रूरता आ मतारी के छिछोरापन के कमजोरी के चलते बा।

जे अपना लइकन के साँचो नीमन तरे से लालन–पालन करे के चाहत बा, ओकरा एह एकवठ के बनवले राखे के चाहीं। ई खाली लइकने खातिर ना, बलुक मतारियो–बाप खातिर जरूरी बा।

ओह हाल में का कइल जाव, जब खाली एके गो लइका भा लइकी होखे आ कवनो वजह से दोसर ना हो सकल?

बात सोझ बा, कवनो अजनबी लइका भा लइकी के अपना परिवार में ले आईं– बाल–गृह से कवनो बच्चा के भा कवनो अइसन यतीम होखे, जेकर मतारी–बाप चल–बसल होखे। ओकरा के अपना औलाद जस प्यार करीं। ई भूल जाईं जे ओकरा के रउआ जनम नइखीं देले। सभसे बड़हन बात, ई मत सोचीं जे रउआ ओकरा पर कवनो रहम करत बानीं। ई ऊ बा, जे रउआ के 'एकतरफा' परिवार के सहजोग करे बदे आइल बा आ राउर परिवार के डूबे के खतरा से बचवले बा। राउर माली हालत कतनो खराब काहे ना होखे, एह काम के जरूरे करीं।

***

www.bhojpurisahityangan.com

छठा अध्याय

हमनी के सामने समस्या के एगो सम्पूर्ण पुंज बा– पारिवारिक समूह में प्राधिकार, अनुशासन आ स्वाधीनता से जुड़ल समस्या।

प्राधिकार का ह? ई समस्या जादेतर लोग के लगे आवत बा। ऊ लोग साधारण तरे से इहे सोचत बा जे प्राधिकार प्रकृति के देहल वरदान ह। बाकिर, काहेकि परिवार में हर केहू के प्राधिकार के जरूरत बा, एह से जादेतर मतारी–बाप असली "प्राकृतिक" प्राधिकार के छोड़ के अपना दिमाग से उपराजल विकल्प के सहारा लेत बा। ई विकल्प हमनी के परिवार में अकसरे देखल जात बा। ओकर सर्वनिष्ठ लक्षण ई बा जे ओकरा के ख़ास तरे से शैक्षिक उद्देश्य खातिर गढ़ल जात बा। ई मानल जात बा जे लइकन के उचित शिक्षा–दीक्षा देवे खातिर प्राधिकार के जरूरत परत बा। लइकन का बारे में तरे–तरे के नजरिया के हिसाब से ओकर अलग–अलग विकल्प गढ़ लेहल जात बा।

अइसन मतारी–बाप के असली दोष शैक्षिक नजरिया के अभाव में निहित बा। लइकन बदे ख़ास तरे से बनावल गइल प्राधिकार चल नइखे पावत। अइसन प्राधिकार हरमेसा एगो विकल्प रही आ हरमेसा बेकारे होखी।

अपना लइकन का साथे कवनो तरे के सम्बन्ध के बादो प्राधिकार खुदे मतारी–बाप में अन्तर्निहित होखे के चाहीं। बाकिर ई कवनो हाल में कवनो खास प्रतिभा नइखे। एकर जड़ हरमेसा एके जगह पावल जात बा– मतारी–बाप के बेवहार में। एकरा में बेवहार के सगरी पक्ष समिलात बा– मतारी–बाप दुनू के सउँसे जिनिगी, ओह लोग के काम, विचार, आदत, भावना आ प्रयास।

अइसन बेवहार के नमूना के संक्षेप में पेश नइखे कइल जा सकत। बाकिर एकर मतलब ई बा जे मतारी–बाप खुदे सोवियत जमीन के नागरिक का रूप में पूरा सचेत हो के नैतिक जिनिगी बितावे। लइकन के मामला में ऊ लोग एगो निश्चित धरातल पर, माने एगो सोभाविक आ मानवीय धरातल पर रहे, ना कि कवनो अइसन मंच पर, जे लइकन से निबटे खातिर ख़ास तरे से बनावल गइल होखे।

एह से पारिवारिक समूह में प्राधिकार, स्वाधीनता आ अनुशासन के कवनो समस्या के बनावटी रूप से बनावल गइल कवनो पद्धति भा करामात से हल नइखे कइल जा सकत। लालन–पालन के प्रक्रिया एगो अनवरत प्रक्रिया बा। एकर अलग–अलग पक्ष के समाधान परिवार के सामान्य माहौल में पावल जात बा।

www.bhojpurisahityangan.com

सामान्य माहौल के ना त आविष्कार हो सकत बा आ ना ओकरा के कवनो बनावटी तरे से बरकरार राखल जा सकत बा। प्रिय मतारी–बाप, सामान्य माहौल राउर अपना जिनिगी से आ राउर बेवहार से बनत बा। अगर राउर जिनिगी के सामान्य माहौल बाउर बा त लालन–पालन के सर्वाधिक सही, विवेकपूर्ण आ सुविचारित तरीका कवनो कामे ना आई। एकरा विपरीत सही सामान्य माहौल राउर लइकन के प्रशिक्षण देवे के सही राह सुझाई। ख़ास क के अनुशासन, काम, स्वाधीनता, खेल आ .....प्राधिकार के सही राह देखाई।

बाप काम से लवट के पाँच बजे घर आवत बाड़े। ऊ एगो कारखाना में बिजली के काम करत बाड़े। ऊ आपन भारी, ग्रीस लागल, धूर में सउनाइल जूता खोललहूँ नइखन, तले चार बरीस के वास्या अपना बाप के खटिया के सोझा एगो बूढ़ आदमी जस सूँ–सूँ करत बइठ जात बा। अपना चिन्तित भूअर आँख से नीचे अन्हार जगह में झाँकत बा। कवनो कारण से खटिया के नीचे कुछुओ नइखे। वास्या चिन्तित हो के चुहानी का ओर भागत बा। फेर तेजी से डेग बढ़ावत भोजन–कक्ष में जात बा। बड़का मेज के चक्कर लगावत घरी अपना गोड़ के फर्श पर बिछल बिछावन में अझुरा लेत बा। आधा मिनट बादे ऊ स्थिर चाल से बाप के लगे लवटत बा। ओकरा हाथ में एक जोड़ी चप्पल बा आ ऊ आपन चमकीला गोल–मटोल गाल फुलावत आ रहल बा। ओकर बाप कहत बाड़े –"धन्यवाद, बेटा, बाकिर जमीन पर के बिछावन सोझ क दे।"

ओही स्पीड से ऊ एगो आउर चक्कर लगावत बा आ कमरा फेर से बेवस्थित हो जात बा।

"ठीक बा," बाप कहत बाड़े। फेर हाथ–मुँह धोवे खातिर चउका के ओर चल देत बाड़े।

उनकर बेटा, ओह भारी जूता के मोसकिल से घसेटत बा। आगे फर्श के बिछावन के सावधानी से देखत अपना बाप के पाछे–पाछे चल रहल बा। बिछावन के बाधा सकुशल पार हो जात बा। वास्या आपन रफ्तार तेज क देत बा आ बाप के लगे पहुँच के पूछत बा –"का रउआ चिमनी ले अइनीं? का रउआ स्टीम इंजन खातिर चिमनी ले अइनीं?"

"हँ, बेशक ले आइल बानीं!" बाप जवाब देत बाड़े। खाना खइला के बाद हम ओह पर जुट जायेब।"

वास्या अपना जिनिगी में खुशकिस्मत रहे– ऊ क्रान्ति का बाद के बरीस में जनमल रहे। ओकरा जे बाप मिलल रहले ऊ सुन्दर रहले। जवन होखे, वास्या अपना बाप के बहुते चाहत बा– उनकर आँख वास्या जइसने बा, भूअर, शान्त आ ओमे परिहास के चमक बा। उनकर मुँह गम्भीर आ मोंछ नीमन बा आ ओह पर अँगुरी फेरल बहुते सुखद लागत बा। ऊ हर बेर ई जान के चकित होत बा जे ऊ केतना मोलायम आ कइसन रेशमी बा, बाकिर अँगुरी तनिको एक ओर सरकल त ऊ तार के स्प्रिंग नियर उछलत बा आ फेर ओसहीं काँटा जस खाड़ा हो जात बा। वास्या

www.bhojpurisahityangan.com

के मतारी सुन्दर बाड़ी, आउर मतारी सभसे बेसी सुन्दर। उनकर गाल आ होठ में बड़ी हार्दिकता आ कोमलता बा। कबो–कबो जब ऊ वास्या के ओर देखत बाड़ी त अइसन लागत बा जे ऊ कुछ कहे के चाहत बाड़ी। उनकर होठ तनी सुगबुगात बा। रउआ ई जान नइखीं पावत जे मतारी मुसकियात बाड़ी कि ना। अइसन मोका पर वास्या के लागत बा जे जिनिगी साँचो अद्भुत बा।

नजारोव परिवार में नताशा बिया, बाकिर ऊ खाली पाँच महीना के बिया।

सबेरे जूता पहिरल सभसे कठिन काम बा। वास्या बहुत पहिलहीं से जूता में फीता लगावे के सीख गइल रहे। जब फीता सगरी छेद में लाग गइल त ऊ देखलस जे कतहूँ कवनो गड़बड़ी भइल बा। ऊ फेर से फीता लगावत बा। अबकी बेर जब ठीक से फीता लाग गइल त वास्या अपना जूता ओर प्यार से देखत बा। फेर अपना मतारी से कहत बा –"ले बान्ह दे"। अगर फीता ठीक से लागल बा त मतारी फीता बान्ह देत बाड़ी। अगर ठीक नइखे त ऊ कहत बाड़ी –"ना अइसे ना, का तें फीतो नइखी लगा सकत?"

वास्या जूता पर चकित नजर धउरावत बा। अचके बूझ जात बा जे ओमे कवनो गड़बड़ी भइल बा। ऊ आपन होठ दबावत बा, बिखिआइले जूता के निहारत बा आ फेर से काम में लाग जात बा। वास्या के अपना मतारी से तहतुक करे के नइखे सूझत– ओकरा मालूमे नइखे जे ई कइसे कइल जाला।

"ठीक बा। अब बान्ह दे।"

मतारी फीता बान्हत बाड़ी त वास्या चतुराई से दोसर जूता के ओर देखत बा। ऊ पहिलका छेद के खोज लेत बा, जहँवा से ऊ दोसर फीता डाली।

वास्या जानत बा जे हाथ–मुँह कइसे धोवल जाला। ऊ आपन दाँत साफ करे के जानत बा, बाकिर एह काम में जादे ताकत आ एकाग्रता के दरकार बा। शुरू में वास्या साबुन आ दन्त–मंजन के गरदन ले लभेर लेत बा। फेर आपन दुनू हाथ के जोड़ के एगो नाव जस बनावत बा। ओमे पानी भरत बा। जसहीं ऊ एह पानी के अपना चेहरा के लगे ले जात बा, तले ओकर तरहथी समय से पहिलहीं सोझ हो जात बा आ सगरी पानी ओकरा छाती आ पेट पर छलक जात बा। वास्या साबुन आ दन्त–मंजन के धोवत नइखे, बलुक अपना भींजल तरहथी से पोछत बा। अइसन हरेक प्रयास के बाद ऊ कुछ देर ले आपन हाथ निहारत बा। फेर दोसर नाव बनावल शुरू करत बा। जवना हिस्सा पर गन्दा होखे के सन्देह बा, ओह हर हिस्सा के अपना भींजल तरहथी से रगड़त बा।

तबे मतारी आवत बाड़ी। बोले में समय गँवावे से पहिलहीं वास्या के हाथ धरत बाड़ी। फेर ओकर मुड़ी के आराम से वाश–बेसिन पर झुकावत बाड़ी आ वास्या के नन्हीचुकी चेहरा के हर हिस्सा के रगर–रगर के साफ क देत बाड़ी। मतारी के हाथ में गरमाहट बा, मृदुता बा आ मधुर सुगन्ध बा। ई सभ वास्या के हुलसित करत बा। तबो ऊ एह बात से फिकिराह रहत बा जे अबहीं ले मुँह धोवे के ठीक से नइखे सीखले। एह हालात से उबरे के कई गो मौलिक तरीका बा– केहू शरारत कर सकत

www.bhojpurisahityangan.com

बा आ मरद के तरे विरोध जता सकत बा जे हम खुदे करब। केहू घटना के खामोशी से होखे देत बा। बाकिर सभसे नीमन तरीका बा हँस परल, मतारी के हाथ के पकड़ से भाग निकलल आ लोराइल आँखे हुलसित हो के ओकरा ओर देखल। नजारोव परिवार में आखिरी तरीका सभसे जादे कामे आवत बा, काहेकि ऊ प्रसन्नचित्त लोग बा। आखिर, शरारतो भगवान के देहल चीज नइखे। इहो रोजाना के अनुभव से सीखल जात बा।

खूब हँसला के बाद वास्या दाँत साफ करे वाला ब्रश के धोवे लागत बा। ई सभसे बढ़िया काम बा जे रउआ ब्रश पर पानी डालत जाईं आ ओकर रोंवा के तनी रगर दीं, बस। ब्रश खुद–ब–खुद साफ हो जात बा।

भोजन–कक्ष के कोना में एगो स्लेटी कपड़ा के ऊपर वास्या के खिलौना–संसार बा। जवना घरी वास्या आपन जूता पहिरत बा, हाथ–मुँह धोवत बा आ नाश्ता करत बा, ओह घरी ओकर खिलौना–संसार शान्ति आ बेवस्था के नमूना रहत बा। रेलगाड़ी, स्टीम बोट, मोटर कार देवार के साथे खाड़ा बा आ सभके मुँह एक ओर बा। जब वास्या ओकरा लगे से गुजरत बा त अपना ओह संसार के अनुशासन जाँचे बदे तनी रुकत बा। रात के कुछुओ ना भइल, केहू भागल ना आ केहू अपना पड़ोसी के नाराज ना कइल आ ना केहू कवनो हंगामा कइल। एकर कारण रहे जे रंगबिरंगा बांका–व्स्तांका रातभर खाड़ा हो के पहरा देत रहल। बांका–व्स्तांका के चाकर गाल, बड़का–बड़का आँख बा आ चेहरा हरमेसा मुसकुरात रहत बा। खिलौना–संसार के पहरेदारी खातिर व्स्तांका के बहुते पहिलहीं बहाल कइल गइल रहे आ ऊ एह जिम्मेदारी के वफादारी से निभावत रहे। एक बेर वास्या अपना बाप से पूछलस– "का ई कबहूँ सूत नइखे सकत?"

ओकर बाप जवाब देहले –"जब ऊ पहरेदारी के काम करत बा त सूत कइसे सकत बा? अगर ऊ नीमन पहरेदार बा त ओकरा सूते के ना, पहरा देवे के चाहीं। ना त केहू आई आ कवनो एगो मोटरकार ले के चल दी।"

तब वास्या शंकित हो के मोटरकार देखलस आ कृतज्ञ हो के पहरेदार के ओर। तबे से ऊ जब सूते जात बा त व्स्तांका के ओकर चउकी पर खाड़ा क देत बा।

बाकिर एह समय वास्या के कार के ओतना फिकिर नइखे, जेतना लकड़ी के एगो बक्सा में राखल सामान के संग्रह के। ई सगरी सामान खिलौना–संसार के अन्दर मुख्य इमारत बनावे बदे पहिलहीं से तय बा। ओमे लकड़ी के कई गो ईंटा, बल्ली, छत छवावे खातिर पन्नी, खिड़की खातिर तनी सेल्युलॉयड आ एगो सुन्दर नट–बोल्ट बा। एकर काम अबहीं तय नइखे भइल। एकरा अलावे तार के कई गो टुकी, वाशर, हुक, पाइप आ मतारी के मदद से गत्ता के काटल खिड़की के चौखट बा।

आज वास्या के योजना रहे जे निर्माण सामग्री के निर्माण वाला जगह पर पहुँचावल जाव– माने कमरा के सामने वाला एगो कोना में। काल्ह साँझी के ऊ

www.bhojpurisahityangan.com

परिवहन के बेवस्था ना भइला से फिकिराह रहे। का एगो जहाज के इस्तेमाल नइखे हो सकत? बाकिर ओकर बाप एह सवाल के खतम क देहले।

"जहाज खातिर नदी के जरूरत बा। तोरा पिछला गरमी के इयाद नइखे?"

वास्या के एह तरे के कवनो बात इयाद परल। असल में जहाज सामान्य रूप से नदी में चलत बा। वास्या के मन में कमरा के अन्दर एगो नदी बनावे के सूझल, बाकिर ऊ एगो आह भरलस– मतारी कवनो हाल में अइसन ना होखे दीहें। अबहीं कुछुवे समय पहिले ऊ स्टीमर खातिर जहाजी घाट बनावे के योजना बनवले रहे, बाकिर ऊ विरोध कइले रहली। वास्या के एगो टिन के डिब्बा मतारी देले रहली, बाकिर जब वास्या ओमे पानी भरलस त मतारी के पसन्द ना परल :

"तोर जहाजी घाट चू रहल बा। देख त सही, तें कइसे गन्दगी फइला देले बाड़े!"

अब ओह टिन के डिब्बा में रेत भरल बा। ओकरा से एगो पार्क बने वाला बा। पार्क में छोट–छोट पौधा लगावे खातिर ओकर बाप चीड़ के एगो सउँसे डाढ़ उठवले आइल बाड़े।

वास्या हाली–हाली नाश्ता करत बा, काहेकि ओकरा बहुते काम करे के बा। अतना जादे चिन्ता बा जे ओकरा एक कप कॉफी पीये के फुरसत ले नइखे। ओकर आँख रह–रह के खिलौना संसार के तरफ भटक जात बा।

"का तें आज मकान बनावे वाला बाड़े?" ओकर मतारी पूछत बाड़ी।

"ना, हम ढुलाई करब! आज हम सगरी सामान ओजा पहुँचावे वाला बानीं।"

वास्या निर्माण स्थल का ओर इशारा करत आगे कहत बा –"बाकिर, चिन्ता मत कर। हम गन्दा ना करब!"

असलियत ई बा जे मतारी के ओतना फिकिर नइखे, जेतना खुद वास्या के– निर्माण बड़ा गन्दा काम लागत बा।

ऊ कहत बाड़ी, "अगर तें गन्दा करबे त तोरे साफ करे के परी।"

एह अनापेक्षित घटनाक्रम से वास्या में बेसी जोश आ जात बा। ऊ नाश्ता के बात भूल के अपना कुरसी से घसके लागत बा।

"वास्या तें केने भागत बाड़े? आपन कॉफी त पी ले। तोरा आपन प्याला हरगिज आधा ना छोड़े के चाहीं।"

उनकर कहल बिलकुल सही बा। वास्या हाली–हाली एके घोंट में आपन कॉफी गटक जात बा। ओकर मतारी ओकरा के निहारत बाड़ी आ मुसुकी छोड़त बाड़ी।

"तोरा लगे वक्त के अतना कमी बा? अइसे हाली–हाली में तें भागल जात बाड़े?"

"हमरा हाली–हाली करहीं के चाहीं," वास्या बड़बड़ात बा।

ऊ लगले खिलौना–संसार में पहुँचत बा। सभसे पहिले वांका–व्स्तांका के पहरेदारी के जिम्मेदारी से मुक्त क देत बा।

www.bhojpurisahityangan.com

"तोर पहरेदार दिन–रात खाड़ा रहत बा," ओकर मतारी एक बेर ओकरा से कहले रहली, "एह से काम ना चली। ओकरो आराम मिले के चाहीं। तें त अपने रोज रात के सूत जात बाड़े, ना?"

पक्का बात, वास्या श्रम सुरक्षा के बारे में कइसे भूला सकत रहे, बाकिर ई गलती बहुत पहिले भइल रहे। अब वास्या वांका–व्स्तांका के गत्ता के एगो पुरान डिब्बा में ध देत बा आ कवनो निर्माण सामग्री से ओकर माथा नीचे के ओर ढकेल देत बा। व्स्तांका बवाल मचावत बा आ बेकाबू हो जात बा। बाकिर एकरा से का, अनुशासन त सभसे ऊपर बा। छुट्टी के दिने जब बाप घरे रहत बाड़े त व्स्तांका के चौबीसो घण्टा गत्ता के डब्बा में गुजारे के परत बा। एवज में ऊ काम गुलाबी टोपी पहिरले चीनी मिट्टी के नन्हकू मियाँ के करे परत बा। ई मतारी के देहल उपहार नीमन श्रमिक नइखे। ऊ हरमेसा ढिमलाते रहत बा। बाप ओकरा के लफंगा कहले त एक तरे से ठीके कहले :

"तें देख सकत बाड़े जे जवन टोपी पहिरले बा, ऊ लफंगा बा।"

एकरे चलते वास्या ओकरा के पसन्द नइखे करत। ओकर सेवा के वगैर काम चलावे के कोशिश करत बा।

वास्या समुदाय बदे जवन पहिलका काम कइलस, ऊ बाप के जूता–चप्पल ले आवे आ ले जाये के काम रहे। वास्या के मतारी–बाप ओकरा के आउरो काम देत बा। जइसे माचिस ले आवल, कुरसी के सरिहावल, मेजपोश सोझ कइल, कागज उठावल। बाकिर ई कबो–कबो करे वाला काम रहे। जूता–चप्पल ले आवल आ ले गइल त रोजे के काम रहे। एगो अइसन कर्त्तव्य, जवना के उलंघन ना होखे के चाहीं।

एक बेर खिलौना–संसार में बिपत परल रहे। स्टीम इंजन के चिमनी उखड़ गइल रहे त वास्या टूटल इंजन के हाथ में लेहले अपना बाप से मिलल रहे। एह कदर परेशान रहे जे ऊ बाप के चप्पल ले आइल साफे बिसर गइल। ओकर बाप इंजन के जँचले, जीभ से कुड़कूड़ावे के आवाज़ निकलले आ वास्या के दुःख के तह में पइठ के कहले :

"ई त भारी मरम्मत के काम बा।"

एह शब्द से वास्या आउर निराश हो गइल। ऊ शयन–कक्ष ले अपना बाप के पाछे–पाछे गइल। ओजुगिया खटिया के बगल में परल इंजन के निहारत रहे, तले अचके कमरा के असाधारण खामोशी से चकित हो गइल। ओही घरी ऊ अपना बाप के व्यंग्य भरल आवाज सुनलस : "अच्छा, इंजन के चिमनी गइल त साथ में हमार चप्पलो गइल।"

वास्या बाप के गोड़ के तरफ देखलस, तनी शरमाइल आ ओह घरी इंजन के बारे में सभकुछ भुला गइल। ऊ धउर के चउका के ओर गइल। स्थिति फेर से यथावत हो गइल। बाप तनी असामान्य ढंग से मुसुकियात वास्या के देखले। वास्या उतारल जूता लेहले चउका ओर गइल। ओकरा मन में इंजन के बारे में तले ले

www.bhojpurisahityangan.com

कवनो खेयाल ना आइल, जले ओकर बाप ना कहले : "हम तोर इंजन खातिर एगो आउर चिमनी ले आयेब। अवकी के चिमनी बरियार होखी।"

जब वास्या छव बरीस के रहे त ओकर बाप ओकरा के एगो बड़हन बक्सा देले रहले। ओमे छोट–छोट ईंटा, बल्ली, ब्लाक, गार्डर आ आउरो निर्माण सामग्री रहे। ई सामान असली महल बनावे खातिर रहे। बक्सा में एगो किताबो रहे। ओमे एगो महल के रेखाचित्र रहे, जवना के बनावे के रहे। अपना बाप खातिर सम्मान आ उनकर उठावल गइल कष्ट के देखत वास्या ओह बक्सा में जादे दिलचस्पी देखवलस। ऊ हरेक रेखाचित्र के धैर्य के साथे धेयान से देखलस, होठ दबावत नक्शा के हिसाब से सही टुकड़ा उठवलस। ओकरा बाप के कवनो असाधारण बात लउकल त ऊ पूछले :

"का तोरा ई पसन्द नइखे?"

वास्या ई ना कहे के चाहत रहे जे ओकरा ई काम पसन्द नइखे, बाकिर ऊ कुछुओ ना कह पावल। ऊ ओह इमारत के भौंह सिकुरा के चुपचाप देखत रहल।

"भौंह मत सिकुराव। हमरा के बताव जे ई तोरा पसन्द परल कि ना?" ओकर बाप कहले।

वास्या बाप के देखलस आ एक बेर फेर इमारत के ओर।

"हेतना ढेर मकान बा" ऊ जवाब देहलस। "रउआ एगो मकान बनावत बानीं आ ओकरा के तूर देत बानीं। फेर दोसर बनावत बानीं आ ओकरो के तूर देत बानीं। आखिर में बाँचत कुछुओ हइले नइखे..... आ रउआ लगातारे बनावत जात बानीं .....तले ले बनावत बानीं, जले ले माथा ना दुखाये लागे.....।"

ओकर बाप खिलखिला के हँसले।

"हँ, ई त तें ठीके कहत बाड़े! तें त बनावते जात बाड़े आ का बनवले, ई देखावे खातिर कुछुओ बाँचते नइखे। ई निर्माण ना ह, ई विनाश ह, तोड़फोड़ ह।"

वास्या निर्माण के काम रोक देहलस। लगले दिलचस्पी से अपना बाप के ओर देखलस।

"तोड़फोड़? ई का ह?"

"ई तोर मुसीबते जइसन बा– तोर काम के ढाह देहल गइल। आ कुछ लोग बा सूअर....."।

"सूअर?" ओकर बाप जोर देत कहले, "ऊ लोग जानबूझ के अइसने निर्माण करत बा। फेर जे मन करे, चाहे ओकरा में आग लगा दीं भा ओकरा के ढाह दीं। ऊ कवनो काम के रहते नइखे।"

वास्या रेखाचित्र के ओर मुड़ गइल।

तें एगो आउर मकान बना सकत बाड़े। एगो अइसन भा एगो होइसन....."।

इमारत के नमूना के टुकड़ा ले के वास्या एगो नया आ जादे कठिन मकान बनावे के फैसला लेहलस, जवना से ओकरा बाप के तनी खुशी होखे।

ओकर बाप चुपचाप ओकर काम पूरा करत देखत रहले।

www.bhojpurisahityangan.com

"तें बेजाँय काम नइखी कइले। बाकिर ई अइसने बा, जइसे हवा में मकान बनावल। बा नूँ? एकरा में जरिको धक्का लागी त लगले भहरा जाई.....।"

वास्या हँसत आपन हाथ उठवलस आ इमारत पर धक्का देहलस। ऊ अनोखा मकान भहरा गइल आ साफ–सुथरा टुकड़न के ढेर लाग गइल।

"काहे? एकरा के सोझे ढाह काहे ना देहले?"

"एकरा त हर हाल में गिरहीं के रहे, काहेकि एगो आउर मकान त....."।

"इहे त बात बा। तोर आपन श्रम देखावे बदे कुछुओ नइखे।"

"कतई कुछुओ नइखे" वास्या आपन हाथ पसारत कहलस।

"एह से काम ना फरिआई?"

"हँ, ना फरिआई," वास्या छितराइल टुकड़न का ओर बेरहमी आ उदासी से देखत कहलस।

"तनी रुक" ओकर बाप मुसुकी छोड़त अपना औजार के बक्सा के लगे गइले। ऊ अपना हाथ में असली खजाना ले के लवटले। लकड़ी के ओह बक्सा में काँटी, बिरंजी, पेंच, बोल्ट, तार के टुकी, लोहा आ ताँम्बा के प्लेट आ अइसने आउरो छोट–बड़ सामान रहे, जे लोहार के जिनिगी के एगो अंग बा। बाप के हाथ में अलग से लोहा के छोट–छोट छड़ रहे, जे छुअला पर स्प्रिंग नियर ऊपर–नीचे उछलत रहे।

"हम तोर मकान के छोड़ देब" बाप कहले। आव, हमनी के कवनो बरियार चीज बनावल जाव, बाकिर ऊ होखी का?"

"हम एगो पुल बनायेब, बाकिर नदी त हइले नइखे।"

"नदी नइखे? त हमनी के एगो बनावे के परी।"

"का अइसन कइल जा सकत बा?"

"पहिले त ना, बाकिर अब कइल जा सकत बा। वोल्गा के सोझे मास्को ले ले आवल गइल।"

"कवन वोल्गा?"

"वोल्गा नदी। ऊ पहिले कहँवा बहत रहे? बहुते दूर। बाकिर लोग काम पर लाग–भीर गइल आ ओकरा के खेत से होत बहे पर मजबूर क देहल।"

"फेर का भइल?" वास्या अपना बाप के एकटक निहारत पूछलस।

"ऊ मेमना नियर चल आइल," ओकर बाप आपन हाथ के सामान के जमीन पर फइलावत कहले।

"आईं, एगो..... वोल्गा हम खुदे बनायेब।

"इहे त हम सोचत रहनीं।"

"ओकरा बाद हम एगो पुल बनायेब।"

तबे वास्या के अचके इयाद परल जे पिछला बेर जब ऊ नदी के सवाल उठवले रहे त का भइल रहे। वास्या उदास हो गइल। ऊ अपना बाप के बक्सा के लगे बइठल ई महसूस करे लागल जे ओकरा लगे एह सगरी बाधा से जूझे खातिर

www.bhojpurisahityangan.com

समुचित बल नइखे।

"बाबूजी, हमनी के एगो नदी नइखीं बना सकत। माई ना बनावे दी।"

बाप धेयान से सुने खातिर आपन भौंह तनी टेढ़ कइले आ अपना एड़ी के बले जमीन पर बइठ गइले :

"हूँ, माई? हँ, ई गम्भीर मसला बा।"

वास्या बड़ी उम्मीद से अपना बाप का ओर देखलस, बाकिर बाप ओकर निगाह के जवाब अनिश्चितता से देहले। वास्या हालात के स्पष्ट करत कहलस –"ऊ कही जे तें पानी छलका देबे।"

हँ, इहे त बात बा। ऊ जरूरे अइसन कहिहें आ हमनी से पानी छलकबे करी।

वास्या अपना बाप के सहजता पर मुसुकी छोड़लस –"त रउआ का सोचत बानीं जे नदी बनी त अगली–बगली सभकुछ सुखले रही?"

"देख बेटा, हमार बात सुन। नदी कइसे बहेला? ऊ बहत बा खाली एगो जगह से हो के आ ओकरा अगली–बगली सूखल रहत बा। ओकर तट होखे के चाहीं। तनी सोच, अगर तें एगो नदी के फर्श पर बहवा देबे त ऊ बहत–बहत नीचे के मंजिल ले पहुँच जाई। फेर नीचे रहे वाला लोग जाने के चाही जे ऊपर का हो रहल बा। ऊ लोग कही जे ई पानी कहँवा से आवत बा? ई सगरी काण्ड करे वाली हमनी के नदी होखी।"

"का मास्को में पानी नइखे आइल?"

"मास्को में काहे आई?"

"जब ऊ लोग ओकरा के ले आइल रहे वोल्गा के?

"ना बेटा, ओजुगिया ऊ लोग सगरी काम सलीका से कइल। ऊ लोग नदी के तट बनवले रहे।"

"कवन चीज से?"

"ऊ लोग तरीका निकालल। पत्थर से बनावल। कंक्रीट से बनावल।

"बाबूजी सुनीं! हमहूँ ऊहे करब..... हम तट बनायेब!"

एह तरे वास्या के महान निर्माण परियोजना के जनम भइल। परियोजना जटिल साबित भइल। ओकरा खातिर बहुते शुरुआती काम के जरूरत आ परल। नतीजा ई भइल जे वास्या के महल बनावे के काम पूरा तरे से ठप हो गइल। बाप आ बेटा आगे कवनो महल ना बनावे के फैसला कइल, काहेकि ओह लोग के बेवहारिक मूल्य कुछुओ ना रहे। अब ऊ लोग बक्सा के सामान के पुल बनावे में इस्तेमाल करे के तय कइल, बाकिर रेखाचित्र के किताब के का कइल जाव? वास्या के ओमे कवनो दिलचस्पी ना रहे। ओकर बापो कहत रहले जे अब ई कवन काम के बा, बाकिर एकरा के असहीं फेंकल ठीक नइखे। एकरा के कवनो लइका के दे दीहे!"

"ऊ एकर का करी?"

"देखी....."।

www.bhojpurisahityangan.com

वास्या एह प्रस्ताव के महत्त्वपूर्ण ना मनलस, बाकिर अगिला सबेरे जब ऊ अहाता में गइल त किताब के लेले गइल।

ऊ अहाता शहरी अहाता जस ईंटा के देवार से घेराइल ना रहे। ऊ एगो बड़हन चौक रहे आ ओकरा ऊपर खुलल आसमान रहे। एकोरा में एगो लमहर दू मंजिला इमारत खाड़ा रहे। लकड़ी के लगभग आधा दर्जन छज्जा अहाता के अन्दर निकलल रहे। बकिया सगरी कगरी लकड़ी के नीचे बाड़ लागल रहे। ओकरा से दूर आसमान ले एगो ऊँच–नीच रेतीला क्षेत्र रहे, जवन हमनी किहाँ 'कुचुगुरी' नाँव से जानल जात बा– आजादी के आ रहस्य से भरल ऊ भूमि लइकन खातिर बहुते आकर्षक रहे। इमारत का पाछे आ लगहीं भारी फाटक से बाहर नगर के पहिलका सड़क शुरू होत रहे।

ई इमारत गाड़ी निर्माण कारखाना के श्रमिक आ कर्मचारियन के बड़हन परिवार वाला प्रतिष्ठित लोगन के घर रहे। एकर अहाता हरमेसा लइकन से भरल रहत रहे। वास्या अहाता के एह समाज के अबहीं हाले में जानल–पहचानल शुरू कइले रहे। पिछला गरमी में ऊ जवन कुछुओ रिश्ता बनवले रहे, ओमे से ओकरा बहुते कम इयाद रहे। ओहू में ओह बरीस जाड़ा में ऊ मोसकिल से एक–दू बेर बाहर गइल रहे, काहेकि ओकरा खसरा हो गइल रहे।

अबकी बेर वास्या के परिचित में जादेतर लइका रहले सन। अहाता में कुछ लइकियो आवत रहली सन, बाकिर वास्या से पाँच–छव बरीस जादे उमिर भइला के चलते ऊ अलग रहत रहली सन। ऊ अइसन उमिर रहे, जब लइकियन के साथे–साथे गावत घूमे के गर्वीला सोभाव बन जाला, जवना से ओकनी के बेसी अलभ्य जस बन जात बाड़ी सन। जहँवा ले दू–तीन बरीस के लइकन के सवाल बा त ऊ वास्या जोग साथी ना रहले सन।

रेखाचित्र के किताब लगले सभके दिलचस्पी जगा देहलस। वास्या के हमउमिर मित्या कन्दीबिन किताब देखते चिल्लाइल त वास्या जवाब देहलस– "ई हमार ह।"

"तोरा मिलल कहँवा से?"

"कतहूँ से मिलल ना, हमार बाप कीनले बाड़े।"

"ऊ तोरा खातिर कीनले, साँचो?"

वास्या के मित्या पसन्द ना रहे, काहेकि ऊ बड़ी उपद्रवी आ ढीठ रहे। ओकर छोट–छोट आँख हर चीज आ हर जगह ताक–झाँक करे से बाज ना आवत रहे। वास्या के एह से बहुते उलझन होत रहे।

"ऊ एकरा के तोरा खातिर कीनले। तोरा खातिर?"

वास्या किताब के अपना पीठ के पाछे क लेहलस।

"हँ, ऊ हमरा खातिर कीनले।"

"अच्छा, हमरा के देखाव। देखाव त सही!"

वास्या देखावे के ना चाहत रहे। ओकरा किताब के चिन्ता ना रहे, बाकिर

www.bhojpurisahityangan.com

मित्या के जबरदस्ती के विरोध जतावे के मन करत रहे। मित्या खातिर निष्क्रिय रहल मोसकिल रहे, ऊ ओकरा पीठ के पाछे से किताब ले पहुँचे के कोशिश करत रहे।

"तें बड़ा कमीना बाड़े। देखावहूँ के नइखे चाहत।"

मित्या वास्या से छोट आ कमजोर रहे, तबो ऊ किताब हासिल करे खातिर ओकरा पर हमला करे पर उतारू रहे। तबे ओकर चिल्लाइल सुन के ल्योविक के धेयान गइल।

ल्योविक बड़हन उमिर के रहे आ चौंतीस नम्बर स्कूल के पहिला क्लास में रहे। आक्रामक मित्या के हुलसित देखते ऊ दूरे से चिल्लाइल "जरूरत से जादे चीखत बाड़े आ लड़ाई के कवनो नाँवे नइखे। मार दू हाथ।"

"ऊ ओकरा के छुपवले काहे बा? ना खुदे खात बा आ ना दोसर के खाये देत बा। ऊ केहू के देखावतो नइखे।"

मित्या महज गेलिस से ढँकल आपन नंगा कन्धा से उपेक्षा के भाव का साथे वास्या के धकियावत बा।

"दे, हमहूँ देखीं! ल्योविक हुलास भरल प्राधिकार से आपन हाथ बढ़ावत कहलस। वास्या किताब ओकरा के दे देहलस।

"अरे! ल्योविक हुलसित हो के चिल्लाइल– जानत बाड़े? हमार ठीक अइसने किताब गुम हो गइल बा। हमरा लगे बकिया सभकुछ बा, बाकिर अल्बम नइखे। का खोज बा! आव, हमनी के अदलेन–बदलेन क लेहल जाव।

वास्या अपना जिनिगी में कबहूँ कवनो चीज के अदलेन–बदलेन ना कइले रहे। जाहिर रहे जे ई एगो दिलचस्प कारनामा के शुरुआत रहे। वास्या ल्योविक के हुलसित चेहरा के तरफ व्यग्रता से देखलस। ल्योविक हाली–हाली किताब के पन्ना पलटत रहे।

"बढ़िया! आव, हमरा घरे....."।

"काहे?" वास्या पूछलस।

"अरे मूरख, तें जवना के बदले एकरा के देबे, ऊ देखबे ना?"

"हमहूँ चलब," मित्या दुखी मन से कहलस। बुझात रहे जे ऊ अबहुँओ लड़े खातिर अपना पोंछ पर खाड़ा बा।

"त आ जो..... तें गवाह रहबे, बुझाइल? जब चीज के अदलेन–बदलेन कइल जात बा त गवाह के जरूरे होखे के चाहीं....."।

ओकनी के ल्योविक के छज्जा के लगे पहुँचले सन। जब ऊ सीढ़ी से ऊपर चहुँप गइले सन त ल्योविक मुड़ के पाछे के ओर देखलस।

"हमार बहिन लाल्या पर कवनो धेयान मत दीह सन।"

ऊ स्लेटी रंग के बड़का दरवाजा के धकेललस। अन्दर गलियारा में नम तरकारी आ चुकन्दर के गन्ध आवत रहे। जब ल्योविक दरवाजा बन्द कइलस त वास्या साफे घबरा गइल। ओकरा गन्ध का साथे अँधेरा के मेरावट नीमन ना लागत

www.bhojpurisahityangan.com

रहे। तबे दोसर दरवाजा खुलल त सामने चउका लउके लागल। बाकिर ओने कुछुओ लउकत ना रहे, काहेकि ओजुगिया भाफे–भाफ भरल रहे। ओकरा आँख के सामने कवनो उजर, गुलाबी आ नीला कपड़ा पसारल रहे। ऊ शायद कम्बल भा चादर रहे। एह कपड़ा के बीच वाला जगह खुलल रहे। ओमे से भरल गाल आ सुन्दर आँख वाली एगो गुलाबी चेहरा झाँकत रहे।

"ल्योविक, तें फेर अपना साथी के अन्दर ले आ रहल बाड़े? देख वार्का, तोर जे मर्जी कह, हम त एकनी के ऊहे करब, जवना लायक बाड़े सन।"

टाँगल कपड़ा का पाछे से एगो मेहरारू के हलुक आवाज़ सुनाई परल –"लाल्या तें तउआइल काहे बाड़ी? ऊ तोर का नुकसान क दीहे सन?"

लाल्या बिखियाइले लइकन के तरफ देखलस आ अपना चेहरा के भाव बदलले बिना हाली–हाली कहलस –"ऊ का नुकसान करिहे सन? ऊ हर चीज गोड़ से धाँगत जात बाड़े सन। ओकनी के गोड़ गन्दा बा आ ओकनी के देह से बालू झरत बा....."।

ऊ मित्या के झाबर बाल में आपन अँगुरी घुसवलस। फेर ओकरा के अपना आँख के सोझा ले अइलस –"ओहो! हमरा खेयाल से एजुगिया गौरैया के घोंसला रहे। आ ऊ कहँवा से आइल बा। तनी देख ओकर आँख कइसन बा।"

ऊ लइकी त खाली पनरहे बरीस के रहे, बाकिर ऊ जवन प्रभाव देखवलस, ऊ भयानक रहे। वास्या एक कदम पाछे हट गइल। ल्योविक गलियारा के दरवाजा पहिलहीं बन्द क देले रहे आ अपना साथियन से हिम्मत के साथे कहत रहे :

"कवनो धेयान मत दीह सन। आवत जा सन!"

लइका सभ ओह धोवल कपड़ा के नीचे से ससरत एगो कमरा में घुसले सन। कमरा छोटहने रहे, बाकिर फर्नीचर, किताब, पर्दा आ फूल से ठकचल रहे। खाली एगो छोटहन राह भर बाँचल रहे। तीनो लइका एक दोसरा के पाछे खाड़ा हो के ओजुगिये रुक गइले सन। ल्योविक अपना दुनू मेहमान के धकियावत कहलस जे तहनी के सोफा में बइठ जा सन, ना त चलहूँ के जगह ना बाँची।

वास्या आ मित्या सोफा पर पसर गइले सन। वास्या के घरे सोफा जस कवनो चीज ना रहे। ओह पर ओकरा बइठल नीक लागत रहे, बाकिर कमरा में जगह के तंगी से वास्या घबरात रहे। एजुगिया अजीब किसिम के ढेरे सामान रहे– पियानो, अण्डाकार चौखट में लागल कई गो छविचित्र, पीयर मोमबत्ती, किताब आ संगीत स्वरलिपि के चलते कमरा भरल–भरल आ रहस्यमय लागत रहे। ओकनी के सोझा एगो घूमे वाला स्टूल पर ल्योविक बइठल रहे। ऊ अपना स्टूल के घुमावत कहत रहे –"बदला में तें चाभी के चार गो रिंग ले सकत बाड़े भा मन करे त एगो अबाबील के घोंसला ले सकत बाड़े। फेर एगो बटुवो बा। ई देख, केतना काम के बटुवा बा।"

ऊ घूमे वाला स्टूल से उछलल, एगो छोटहन मेज के दराज घींच के बाहर निकललस आ ओकरा के अपना ठेहुना पर ध लेहलस। सभसे पहिले स्प्रिंग बटन वाला एगो छोटहन बटुवा वास्या के पेश कइलस। वास्या के दिलचस्पी जगावे

www.bhojpurisahityangan.com

खातिर ल्योविक बटन के कई बेर दबा के देखवलस। बाकिर ओह घरी वास्या के बटुवा से जादे दिलचस्प चीज पर नजर परल। दराज के सगरी लम्बाई में टिन के एगो तंग डिब्बा धइल रहे। ओकर रंग करिया आ ओकर चौड़ाई तीन अँगुरी के बराबर रहे।

"ओह!" वास्या टिन के डिब्बा के ओर इशारा करत चिल्लाइल।

"ई डिब्बा?" ल्योविक पूछलस आ बटुवा के बटन दबावल बन्द क देहलस। "बाकिर ..... अच्छा, ई त बेहतर बा।"

मित्या सोफा से उचक के दराज के ऊपर झुक गइल।

वास्या डिब्बा खातिर हामी भरलस —"इहे त हमरा चाहीं।" ऊ अपना बड़का—बड़का, ईमानदार, शान्त आ नीला आँख से ल्योविक का ओर देखलस। ल्योविक अपना अनुभवी, तनी चालाक, भूअर आँख से वास्या के देखलस।

"त तें डिब्बा के बदला में किताब हमरा के देबे। इहे बात बा नूँ? का तें गवाह के सामने एह बात से सहमत बाड़े?"

वास्या गम्भीरता से आपन मुड़ी हिलवलस। ल्योविक दराज से डिब्बा निकललस आ ओकरा के सहरावे लागल।

"डिब्बा तोर बा!"

अपना खुशकिस्मती पर बेहद हुलसित वास्या डिब्बा धइले ओकरा अन्दर देखलस। ओकर पेनी बरियार रहे। कवनो दरार—वरार ना रहे। एकर मतलब बा जे ओमे से पानी चू के नीचे ना गिरी। ई एगो असली नदी होखी। आ ऊ रेत से नदी के तट बनाई। तनी ऊँचाह आ ओह पर जंगल लगाई। नदी जंगल से हो के बही आ ओकरा आर—पार एगो पुल होखी।

"अबाबील के घोंसला देखे के चाहत बाड़े? हमरा लगे बा।" ऊ सुझाव देहलस, "हम देखा सकत बानीं।"

ऊ एगो दोसर कमरा में गइल। वास्या डिब्बा के सावधानी से सोफा पर ध देहलस आ दरवाजा पर खाड़ा हो गइल। कमरा में कई गो खटिया लागल रहे, एगो मछरी घर आ लकड़ी के कुछ रेक राखल रहे, जवन बड़ी घचपच रहे। ल्योविक अबाबील के घोंसला निकललस।

"ई हमनी किहाँ के अबाबील ना ह। जापान के बा। देख, ई कइसे बनल बा?"

वास्या गाढ़ रंग के एगो चिकन हलुक बाल के अपना तरहथी पर सावधानी से धइलस। ओह बाल में नली जस एगो छेद रहे।

"डिब्बा के बदले अबाबील के घोंसला लेबे?"

"बाकिर ई कवन काम के बा?"

"कवन काम के?" से तोर का मतलब बा? अरे, ई संग्रह खातिर बा!"

"संग्रह का ह?"

"संग्रह। अरे तें अइसने भा दोसरा किसिम के एगो आउर कवनो चीज ले लेबे त तोरा लगे एगो संग्रह हो जाई।"

www.bhojpurisahityangan.com

"का तोरा लगे एगो संग्रह बा?"

"हमरा लगे का बा, तोरा एह से मतलब। तोरा लगे एगो संग्रह हो जाई। टिन के डिब्बा कवन काम के?"

बाकिर वास्या आपन मुड़ी हिला के मना क देहलस।

"हमरा टिन के डिब्बा चाहीं। ई ना।

वास्या बड़ी चाव से डिब्बा के इयाद कइलस। फेर मुड़ के सोफा पर देखलस। ओजुगिया डिब्बा ना रहे। ऊ कमरा में चउतरफा नजर धउरवलस। कबो पियानो के तोपना पर देखलस त कबहूँ किताब के ढेर में झँकलस, बाकिर डिब्बा कतहूँ ना रहे।

"ऊ केने बा?" ऊ ल्योविक के पुकरलस।

"कवन? अबाबील? ल्योविक दोसर कमरा से पूछलस।

"ना, टिन के डिब्बा केने बा?"

"बाकिर हम त अबे तोरा हाथ में थमवले रहनी हँ। सोझे तोरा हाथ में धरवले रहनीं!"

वास्या हताश हो के सोफा का ओर देखलस।

"ऊ हेजुगिये परल रहे।"

ल्योविक सोफा पर देखलस, कमरा में चउतरफा नजर धउरवलस, फेर दराज के बाहर घींचलस।

"रुक! मित्या केने बा? जरूर ऊहे चोरवले होखी।"

"कइसे?"

"कइसे? काहे, मूसा आ फरार।"

"माने चल गइल?"

"फरार हो गइल! देखत नइखे? मित्या एजुगिया नइखे!"

वास्या दुखी हो के सोफा पर बइठ गइल। फेर उठ के खाड़ा हो गइल। ओकरा ओह डिब्बा के बहुते मलाल रहे।

"मूस लेहलस?" ऊ ल्योविक से पूछलस।

"हमनी के अदलेन–बदलेन बराबर रहे," ल्योविक मुँह बनावत कहलस – "ई ईमानदारी से कइल गइल अदला–बदली रहे। हम गवाह के सामने तोरा हाथ में देले रहनीं!"

"कवन गवाह?"

"मित्या के सामने! ऊ तोरा बदे गवाह रहे! का मज़ाक बा! कइसन बढ़िया गवाह बा!"

ल्योविक मुसुकी छोड़लस।

"ऊ एगो गवाह रहे! बाकिर तोर का होखी? ऊ त तोरा के लूट ले गइल। हमनी के अदलेन–बदलेन बराबर रहे।"

दुआर पर लाल्या खाड़ा रहे। ऊ विनोद से अपना करिया, तनी तिरछे आँख

www.bhojpurisahityangan.com

से शक के निगाह से अपना भाई के देखत रहे। अचके ऊ भीतर धमक गइल। वास्या घबरा के सोफा से उठ गइल।

"तें हमार बटुवा काहे लेहले?"

ल्योविक हँसल बन्द क देहलस आ वास्या के बगल से होत दरवाजा के ओर सरक गइल।

"का हम लेले बानीं?"

"त मेज पर कइसे आइल?"

"परल रहे। हमरा ओह से का लेवे–देवे के बा!"

लाल्या दराज के बाहर घींचलस, धेयान से ओकरा भीतर देखलस आ चिल्लाइल –"वापस ले आव, फौरन वापस ले आव! सुअर!"

ल्योविक दरवाजा के लगे पहुँच गइल रहे आ भागे के लुक लगवले रहे। लाल्या ओकरा पर झपटल, तले वास्या से टकरा गइल। वास्या एह घटनाक्रम से प्रताड़ित घोर उलझन में परल खाड़ा रहे। ओकरा के सोफा पर चारो खाना चित करत लाल्या अपना पूरा ताकत से दरवाजा के तरफ धउरल, बाकिर ल्योविक फट दे दरवाजा बन्द क देले रहे। ओकरा बाद एगो दोसर दरवाजा, फेर तीसर आ बाहर जाये के फाटक के खुले आ बन्द होखे के आवाज़ सुनाई परल। लाल्या अपना भाई के पाछा करत एह सगरी दरवाजा के हेलत गइल। आखिर में ओही तरे भागत कमरा में लवट आइल। ऊ एक बेर फेर दराज खोललस, ओकरा के टोवत–टावत देखलस। फेर मेज पर झुक के जोर से रोअत टिपुना बहावे लागल। वास्या अचरज आ शक से ओकरा के देखत रहल। वास्या समझ गइल जे लाल्या के रोअला के पाछे ओह टिन के डिब्बा के कवनो ना कवनो सम्बन्ध बा, जवन अबहिंये ओकरा आँख के सोझा गायब भइल रहे। अबहीं ऊ कुछ कहे वाला रहे, तले लाल्या एक कदम पाछे हटल। ओकर छरहर बदन वास्या के बगल में सोफा पर धड़ाम दे गिरल। वास्या के अचरज आउर बढ़ गइल। अपना तरहथी के सोफा में गड़ा के ऊ ओह सुबकत लइकी का ओर झुकल।

"तें काहे रोवत बाड़ी?" ऊ साफ स्वर में पूछलस –"शायद ओह टिन के डिब्बा खातिर?"

लाल्या के सुबकी लगले थम गइल। ऊ आपन मुड़ी ऊपर उठवलस आ बिखियाइले वास्या के देखलस। वास्या ओकरा के देखलस आ इहो देखलस जे ओकर आँख लोराइल रहे।

"का तें ओह डिब्बा खातिर रोअत बाड़ी?" ऊ फेर पूछलस आ मेज का ओर अटकल लगावत आपन माथा हिलवलस।

"डिब्बा खातिर? अहा! लाल्या चिल्लाइल, "बताव केने बा ऊ?"

"कवन? डिब्बा?" वास्या लाल्या के घृणा से तनी चौंक गइल।

लाल्या ओकरा कन्धा में आपन अँगुरी चुभवलस। फेर पहिलहूँ से जादे जोर से चिल्लात बोललस –"जवाब दे। केने बा ऊ? तें जवाब काहे नइखी देत? तें

www.bhojpurisahityangan.com

ओकरा के का कइले? तें हमार पेन्सिलदान के का कइले?"

"पेन्सिलदान?"

वास्या ठीक से समझ ना पवलस। ओकरा बुझाइल जे ऊ डिब्बा ना, कवनो आउर चीज हो सकत बा। बाकिर ओकरा मन में एह सुन्दर तिरछी आँख वाली, दुखी लइकी के मदद करे के मन रहे।

"तें का कहली? पेन्सिलदान?"

"ठीक बा। डिब्बा कह ले, टिन के डिब्बा! तें ओकरा के का कइले?"

वास्या उत्साह का साथे दराज के तरफ इशारा कइलस।

"ऊहे, जे दराज में परल रहे?"

"हमरा के बेवकूफ बनावे के कोशिश मत कर। ई बता दे जे तहनी के ओकरा के का कइल सन?"

वास्या लमहर साँस लेहलस आ आपन कहानी बतावल शुरू कइलस :

"ल्योविक कहलस जे हमरा के आपन किताब दे दे त हम तोरा के बटुवा देब। फेर ऊ कहलस जे चाभी के रिंग ले ले, फेर कहलस जे अबाबील के घोंसला ले ले, बाकिर ई ऊ बाद में कहलस। एकरा पहिले ऊ हमरा के टिन के डिब्बा देले रहे। करिया रंग के..... मजबूत पेनी वाला। तब हम कहनीं जे नीमन बात बा। ऊ गवाह के सामने ओकरा के हमरा हाथ में थमवलस। तब हम....."।

"अच्छा, त ओकरा के लेवे वाला तें रहले। रहले नूँ?"

वास्या के जवाब देवे के मोका ना लागल। ऊ अचके लाल्या के गाढ़ भूअर आँख के पल भर खातिर चौंक के देखलस। ओही घरी ओकर माथा सोफा के मुलायम भाग से टकराइल। ऊ आपन गाल में एगो गजबे अप्रिय जलन महसूस कइलस। वास्या समझ गइल जे लाल्या ओकरा के मरले बिया। वास्या के जिनिगी में ओकरा के केहू मरले ना रहे। ऊ ना जानत रहे जे अइसे पिटाइल अपमानजनक होला। एकरा बादो ओकर आँख लोरा गइल। ऊ सोफा से कूद के अलग हटल आ आपन गाल हाथे थाम लेहलस।

"ओकरा के फौरन हमरा हवाले कर!" हमला करे बदे लाल्या चिल्लाइल।

एह समय ले वास्या समझ गइल रहे जे ऊ ओकरा पर फेर से वार कर सकत बिया। ऊ ना चाहत रहे जे अइसन होखे। बाकिर ओकरा दिमाग में कुछ आउरे विचार रहे– ऊ ई काहे नइखे बूझत जे ऊ डिब्बा एजुगिया नइखे। वास्या के स्थिति के सफाई देवे में देरी ना करे के चाहीं।

"बताव केने बा ऊ?"

"बाकिर ऊ एजुगिया नइखे। एहीजा नइखे, बुझाइल?"

"एजुगिया नइखे" से तोर का मतलब बा?

"ओकरा के मित्या ले गइल।"

"मित्या?"

"हँ, ऊहे! ऊहे..... डिब्बा के मूस लेहलस।" वास्या हुलसित रहे जे ओकरा ई

www.bhojpurisahityangan.com

शब्द इयाद परल– शायद एकरा से लाल्या के हाली समझ में आ जाव।

"ऊ उजर बाल वाला लइका? तें डिब्बा ओकरा के देले रहले? बताव हमरा के!"

लाल्या ओकरा ओर बढ़ल। वास्या अपना अगली–बगली देखलस। ओकर बचाव के एके गो राह पियानो आ मेज के बीच तंग जगह से हो के जात रहे, बाकिर ओह राहे बच के भागे के समय ना रहे। लाल्या ओकरा के अशिष्टता से खिड़की का ओर ढकेल देहलस। फेर एक झापड़ लगवलस आ दोसरका के तइयारी में रहे। ओही घरी अनपेक्षित रूप से वास्या के नन्हीमुकी घूँसा लाल्या के गुलाबी ठुड्ढी से टकराइल। एकरा बाद एगो दोसर छोटहन घूँसा परल आ फेर पहिले वाला घूँसा वापस पलटल। भौंह सिकुरले आ दाँत चिअरले वास्या घूँसा चलावत रहे। जहँवा वार कर सकत रहे, ओजा करत रहे। बाकिर ओकर बेसिए वार चूक जात रहे। लाल्या तनी पाछे हटल, बाकिर घूँसा के चलते ना, बलुक अचरज से। बाकिर ओकर चेहरा के हाव–भाव वास्या खातिर शुभ ना रहे। ओही घरी चश्मा पहिरले पातर लमहर चेहरा वाली एगो मेहरारू ओजा ना चहुँपल रहती त ई लड़ाई वास्या खातिर बहुते मोसकिल रहे।

"लाल्या, एजुगिया का हो रहल बा? ई केकर लइका ह?"

"हमरा का पता जे ई केकर लइका ह," लाल्या पाछे नजर घुमावत कहलस। "ओकरा के ल्योविक अन्दर ले आइल रहे। एकनी के हमार पेन्सिलदान चोरवले बाड़े सन। अब देख कइसन बा!"

लाल्या के भूअर आँख क्षण भर खातिर अचके मुसुकी छोड़लस। बाकिर वास्या के ओह बड़ मेहरारू के रुख में बेसी दिलचस्पी रहे। शायद ई लाल्या के मतारी बाड़ी। अब ई दुनू मिल के हमरा के मरिहे सन।

"लाल्या! का तें एजुगिया लड़त रहली ह, साँचो!"

"ऊ हमार डिब्बा काहे नइखे लवटावत? हम ओकरा के एगो–दूगो आउर लगायेब! का रे!"

लाल्या ओकरा लगे आइल। वास्या मेज के लगे सरक गइल। अब लाल्या के बीख तनी कम लागत रहे। ओह मेहरारू के मौजूदगी में वास्या तनी चैन के साँस लेहलस, बाकिर अबे–अबे के तजुर्बा ओकरा भुलाइल ना रहे।

"लाल्या ओकरा के डेरवाव मत। केतना नीमन लइका बा।"

"वार्का, तें दखल मत दे।" लाल्या चिल्लाइल। "नीमन लइका! तोरा त सगरी लइका नीमने लागे ले सन। तें बेसी नेक दिल जे बाड़ी। रे, तें हमार डिब्बा वापस क दे।"

बाकिर ओही घरी कुमुक आ गइले। दरवाजा से छोटहन कद–काठी के एगो आदमी अन्दर घुसल। ऊ आपन पातर करिया दाढ़ी बेर–बेर घींचते जात रहे।

"ग्रीश्का!" लइकी हुलसित होत कहलस। "देख, ऊ ओकर बचाव करत बिया। ई लइका घर में घुसल, हमार पेन्सिलदान कतहूँ ध देले बा आ वार्का ओकर बचाव

www.bhojpurisahityangan.com

करत बिया।"

"अरे वार्का त हरमेसा सभके बचाव करत रहेली," ऊ आदमी मुसुकी छोड़त कहलस। "बाकिर ई केकर लइका ह?"

"तें कहँवा से आइल बाड़े? तोर नाँव का ह?" लाल्या मुसुकी छोड़त पूछलस।

वास्या सबके देखलस। फेर गम्भीर नम्रता से कहलस –"हमार नाँव वास्या नजारोव ह।"

"ओ, नजारोव!" लइकी जोर से बोललस। अब ऊ सनेह के भाव से ओकरा लगे आइल।

"वास्या? त ठीक बा। भलेमानुष जस वादा कर जे तें हमार डिब्बा खोज देवे। बुझाइल?" वास्या ठीक–ठीक समझ ना सकल –"भलेमानुष" के मतलब साफ ना रहे आ ना इहे साफ रहे जे "खोज देवे" के मतलब का बा।

"ओकरा के मित्या ले गइल," ऊ बिसवास से कहलस।

"साँचो, ई त अति बा" वार्का नाँव के मेहरारू कहलस। "लाल्या ओकरा के पीटलस"।

"लाल्या!" ऊ आदमी उलाहना के स्वर में कहलस।

"ए, ग्रीश्का! तहार आवाज़ हमार माथा में चढ़ जात बा! तूहूँ वार्का जस मन के बाड़।"

लइकी पाछे मुड़लस आ वार्का के ओर आपन मुड़ी झटकत कमरा से बाहर चल गइल। "जो, वास्या, आ डिब्बा के बारे में कुछुओ मत सोच" वार्का कहली, "चल जो"।

वास्या वार्का के चेहरा के ओर देखलस। ऊ ओकरा नीमन लागल। आपन खीस निपोरत ग्रीश्का के अनदेखा क के ऊ बाहर निकल के सीढ़ी ले पहुँच गइल।

लगहीं ल्योविक खाड़ा रहे आ मुसुकी छोड़त रहे।

"अच्छा? त तें फँस गइले?"

वास्या अटपटाहे मुसुकी छोड़लस। ऊ एह भयानक अनुभव के दुष्प्रभाव से निकल के अबहीं ले सहज सोभाविक हाल में ना पहुँचल रहे, काहेकि ओकरा एह पर विचारे के मोका ना लागल। असल में ओकरा अपना अनुभव के अलग–अलग पक्ष में दिलचस्पी रहे। ऊ टिन के ओह डिब्बा के अपना दिमाग से ना निकाल पवले रहे जे ओकरा से केतना सुन्दर नदी बन सकत रहे। ऊ ओजा से मित्या के खोजे खातिर अहाता में नजर धउरावे लागल। एकरा अलावे ओकरा इहो पता लगावे के रहे जे ई वार्का आ ग्रीश्का के रहे। एगो आउरो सवाल रहे जे ल्योविक के मतारी–बाप केने रहे?

ऊ सीढ़ी से नीचे उतरल।

"ल्योविक तोर बाप केने बाड़े?"

बाबूजी? तें उनका के ना देखले?

"ना।"

www.bhojpurisahityangan.com

"बाकिर ऊ त अन्दर गइल रहले। उनकर दाढ़ी बा....."।

"दाढ़ी? ऊ त ग्रीश्का रहले।"

"अरे, ग्रीश्का भा बाप– सभ एके बात बा।"

"ना, बाप खातिर..... लोग कबो–कबो बाबूजी कहत बा। ग्रीश्का से काम नइखे चल सकत।"

"त तें ई बूझत बाड़े जे अगर ऊ बाप बाड़े त उनकर कवनो नाँव नइखे? तोर बाप के का नाँव ह?"

"हमार? ओह, तोर मतलब ई बा जे मतारी उनका के कवन नाँव से बोलावत बाड़ी? मतारी उनका के फेद्या कहत बाड़ी।"

"त तोर बाप के नाँव फेद्या ह आ हमार बाप के ग्रीश्का।"

"ग्रीश्का? एह नाँव से तोर मतारी उनका के बोलावत बाड़ी? बा नूँ इहे बात?"

"ऊँहूँ, तें त गदहा बाड़े। बाप ग्रीश्का हउवन आ मतारी वार्का।"

वास्या अबहुँओ पूरा बात ना समझ सकल, बाकिर ओकरा आउर कुछुओ पूछे के मन ना करत रहे। ल्योविक सभसे ऊपर सीढ़ी पर चहुँप गइल रहे। वास्या के इयाद परल जे ओकरा घरे जाये के बा।

जब ऊ अपना डेहुरी में पहुँच के दरवाजा खोललस त मतारी से टकरा गइल। ऊ ओकरा के गौर से देखली आ आपन पहिले के इरादा के हिसाब से पानी लेवे ना गइली, बलुक फ्लैट में वापस लवट अइली।

"अब हमरा के बताव जे आज तोरा भइल का बा?"

बगैर जल्दीबाजी भा उत्तेजना के वास्या आपबीती सुनवलस। कुछ जगह ओकरा शब्द ना सूझत रहे त ऊ अपना हाव–भाव से काम चलवलस।

"ऊ कइसन नजर से हमरा के देखलस, कइसन नजर से!"

"फेर?"

"फेर ऊ एके बेर हमरा पर टूट परल। हमरा के जोर से मरलस..... सोझे हेजुगिया।"

"अच्छा, फेर का भइल?"

"फेर इहँवा मरलस। हम भागे के रहनीं, तले ऊ फेर मारपीट शुरू क देहलस। हमहूँ ओकरा के मरनीं। तबे वार्का आ गइली।"

"ई वार्का के ह?"

"हम नइखीं जानत। ऊ चश्मा लगावेली। फेर ग्रीश्का आ गइले। जइसे तें बाबूजी के फेद्या कहेली, ओसहीं ऊ लोग एक–दोसरा के ग्रीश्का आ वार्का कहेला। वार्का हमरा से कहली –"अच्छा लइका, जो घर चल जो।"

"वास्या, हमार लाडला, ई त गम्भीर मसला बा।"

"हँ, बा," वास्या हामी भरलस। फेर मुसुकी छोड़त आपन मुड़ी हिलवलस।

फेर बाप कहले –"ई देख ले। वोल्गा के निर्माण कइल केतना कठिन काम बा। अब तोर अगिला कदम का होखी?"

www.bhojpurisahityangan.com

वास्या अपना खिलौना के सामने आपन छोटहन चटाई पर बइठ के सोचे लागल। ऊ बूझ गइल जे ओकर बाप चतुराई करत बाड़े आ एह कठिन जिनिगी में ओकर सहजोग करे के नइखन चाहत। बाकिर वास्या खातिर ओकर बाप बुद्धिमत्ता आ ज्ञान के आदर्श रहले। वास्या उनकर राय जाने के चाहत रहे।

"बाकिर रउआ हमरा के बतावत काहे नइखीं? हम त अबहीं बहुते छोट बानीं!"

"तें छोट हो सकत बाड़े, बाकिर जब तें अदलेन–बदलेन करे गइल रहले त हमरा से पूछ के गइल रहले? एको बात ना पूछले।"

"ल्योविक कहलस जे आव अदलेन–बदलेन क लेहल जाव त हम देखे गइनीं आ ओह डिब्बा पर हमार नजर पर गइल।"

"अब तनी आउर आगे के बात समझ– तें अदलेन–बदलेन कइले, बाकिर तोर डिब्बा केने बा?"

वास्या खुदे पर व्यंग्य भाव से हँसलस। अपना हाथ से हताशा के भाव जतवलस।

"ऊ हमरा लगे नइखे। मित्या..... ओकरा के मूस ले गइल।"

"मूस ले गइल" ई कवना तरे के शब्द बा। हमनी के भाषा में लोग कहेला – 'चोरा ले गइल'।"

"त ल्योविक कवन भाषा में बोलत बा?"

"भगवान जाने ई कवन भाषा ह। एह तरे से चोर बोले ले सन।"

"बाकिर ल्योविक त असहीं बोलत बा।"

"तें ल्योविक के नकल मत कर। ओकर बहिन कला स्कूल में पढ़ रहल बिया। एह से ऊ टिन के डिब्बा ओकरे होखी– रंग के ब्रश राखे खातिर। तोरा बात बुझाइल? ओकर बहिन तोर पिटाई कइलस। कइलस कि ना? ऊ एकदमे ठीक कइलस....."।

"ऊ ल्योविक आ मित्या के कुसूर रहे।"

"ना बेटा, जवन लइका कुसूरवार रहे, ऊ बा वास्या।"

"हा..... हा" वास्या हँसल। "बाकिर बाबूजी रउआ गलत कहत बानीं। हमार कुसूर नइखे।"

वास्या ल्योविक पर भरोसा कइलस। एगो अइसन आदमी पर भरोसा जतवलस, जेकरा के ऊ जानतो ना रहे। ऊ ओकरा बदे साफे अजनवी रहे। वास्या कवनो बात पर विचार ना कइलस। ऊ खुदे अपना के गलती करत रंगे हाथ पकड़े देहलस। डिब्बा के लेहल मंजूर कइलस आ एक बेर फेर चूक कइलस आ ऊहो खुलेआम चूक करत पकड़े जाये देहलस। फेर मित्या आ गइल, डिब्बा गायब हो गइल आ वास्या के पिटाई भइल। अब बताव केकर कसूर रहे?

ओकर बाप जेतने जादे बोलले, वास्या ओतने बेसी झेंपलस। ऊ महसूस कइलस जे साँचहूँ ओकरे कुसूर रहे। ओकरा ई बिसवास बाप के शब्दन से ना, बलुक उनकर स्वर शैली से भइल, जवन ऊ बोलले रहले। वास्या के अहसास भइल जे

www.bhojpurisahityangan.com

ओकर बाप ओकरा से साँचो नाखुश बाड़े। एकर मतलब रहे जे कुसूर साँचहूँ वास्या के रहे। एकरा अलावे शब्दो महत्त्वपूर्ण रहे। नजारोव परिवार में ऊ कई बेर "रंगे हाथ पकड़ल गइल' उक्ति के अकसरे चरचा करत रहले। अबहीं कुछुवे दिन पहिले ऊ बतवले रहले जे टर्नर के एगो प्रशिक्षक मित्या के बाप कवना तरे गलती करत रंगे हाथ पकड़ल गइल रहले। एह प्रक्रिया में एक सौ तीस पुर्जा के कवना तरे सफाया हो गइल। अब वास्या के अपना बाप के सुनावल ऊ किस्सा पूरा तरे इयाद परे लागल।

ऊ पहिलहूँ से जादे झेंपत दोसर ओर आपन मुँह फेर लेहलस। फेर सकुचाले अपना बाप का ओर देखलस। फेर उदास आ भ्रमित हो के तनी मुसुकी छोड़लस। ओकर बाप अपना केहुनी के ठेहुना पर टिकवले कुरसी पर बइठल रहले। उनका जब अपना बेटा पर नजर परल त हँसे लगले। अब वास्या के आपन बाप के नजदीकी सुहावन लागत रहे– उनकर मोलायम मोंछ मधुरता से हिलत रहे आ आँख में वात्सल्य भरल रहे।

वास्या कुछुओ कह ना सकल। ओकरा अचके इयाद परल जे ओकर बाप पुल बनावे खातिर ओकरा के छोट–छोट काँटी देले रहले। ओकरा के राखे के कवनो जगह नइखे। ऊ एगो कपड़ा में मोटरी बान्हल असहीं परल बा। वास्या अपना केहुनी के बले झुक के बिखरल काँटी के नीमन तरे से जाँचत–परखत कहलस :

"एह काँटी के राखे के कवनो जगह नइखे..... माई एगो डिब्बा देवे के कहले रहे, बाकिर ऊ बिसर गइल....."।

"आव हम तोरा के डिब्बा देत बानीं," ओकर मतारी कहली।

वास्या आपन मतारी के पाछे–पाछे धउरल आ जले ले लवट के आइल, तले ले ओकर बाप शयन–कक्ष में पहुँच गइल रहले आ अखबार पढ़े लगले।

नाश्ता कइला का बाद वास्या के अहाता में पहुँचे के जल्दीबाजी रहे। ऊ छुट्टी के दिन रहे। मतारी–बाप शहर में सौदा कीने–बेसहे खातिर जाये के तइयार रहे। वास्या के ओह लोग के साथे गइल नीमन लागत रहे, बाकिर आज ऊ ना जात रहे। ऊ लोग अपना साथे नताशा के ले जात रहे। बाप वास्या से कहले –"तें आज व्यस्त बाड़े नूँ?"

वास्या कवनो जवाब ना देहलस। ऊ अपना बाप के शब्दन में छुपल इशारा समझ गइल। त बाप सभकुछ जानत रहले। वास्या बेचैन रहे, काहेकि का करे के चाहीं, एकर कवनो ठोस योजना ओकरा लगे ना रहे।

ऊ लोग एक साथे बाहर निकलल। फाटक के लगे चहुँपते ओकर बाप वास्या के फ्लैट के चाभी थमवले।

"तें घूमे चल जो। चाभी गुम मत करिहे आ एकरा के केहू से अदलेन–बदलेन मत करिहे।"

वास्या एह आदेश के धेयान से सुनलस आ झेंपबो ना कइलस। ऊ जानत रहे जे चाभी साँचो एगो अइसन महत्वपूर्ण चीज बा, जवना के अदला–बदली ना होखे

www.bhojpurisahityangan.com

के चाहीं।

जब वास्या अहाता में वापस आइल त ऊ लइकन के एगो भीड़ देखलस। एगो गम्भीर युद्ध चलत रहे। एकरा बारे में बहुते समय से बात चलत रहे आ एगो विस्फोट त होखहीं वाला रहे। आज अइसन लागत रहे जे कवनो बजर टूटहीं वाला बा।

वास्या अपना बाप के साथे कई बेर 'कुचुगुरी' घूमले रहे, बाकिर ओकरा एह ओनोखा प्रदेश के रहस्यन के अबहिंयो जानकारी ना रहे।

'कुचुगुरी' नगर के आखिरी मकान से लगभग तीन किलोमीटर दूर ले फइलल एगो लमहर–चाकर इलाका रहे। ओकर पसारा अगली–बगली बहुते दूर ले फइलल रहे। ऊ जगह आदमी से अछूता रहे। एह इलाका में रेतीला टीला के भरमार रहे। ओमे कुछ खासा ऊँच रहे आ कई गो असली पर्वत माला जस लउकत रहे। ओजा जादेतर झाड़–झंखाड़ उगल रहे आ बकिया जगह छोट–छोट बेल उगल रहे। 'कुचुगुड़ी' के बीच में एगो असली पहाड़ रहे। ओकरा के लइका सभ माखी पहाड़ कहत रहले सन, काहेकि ओकरा चोटी पर खाड़ा लोग मक्खी के बराबर लउकत रहे। माखी पहाड़ दूरे से शानदार आ ठोहर लागत रहे। असल में ओजुगिया अइसन चोटी आ खाड़ ढलान के भरमार रहे, जवन लहरात रेत से तोपाइल रहे। ओकरा बीच में चट्टान आ तंग घाटी के अइसन कगार रहे, जे झाड़–झंखाड़ से भरल रहे। माखी पहाड़ के चउतरफा जहँवा ले नजर जा सकत रहे, छोटहन दरार आ छोट–छोट घाटियन वाला छोट पहाड़ लगभग कोर्चागी गाँव ले पसरल रहे। ऊ गाँव दूरे से अपना घनघोर हरियाली में लगभग छिपल रहे।

वास्या देखलस जे कुछ लइका ढलान पर ऊपर से नीचे ले बेधड़क ससरत रहले सन। ओकनी के लुढ़कत आ धूर–गर्दा उड़ावत जमीन पर साफे निशान बनावत जात रहले सन। ऊ सोचलस जे अइसन ढलान पर ससरल आ घाटी के नीचे ले पहुँच के चोटी का ओर देखत अपना कपड़ा, नाक आ कान में भरल रेत के शान से झारत खाड़ा होखे में बड़ी मज़ा आवत होखी। वास्या के अपना बाप के मौजूदगी में अइसन करे में हिचकिचाहट होत रहे, तबो ऊ मने–मन अइसन करे के मन बनावत रहे।

बाकिर अबहीं फिलहाल 'कुचुगुरी' अइसन शान्ति से मन–बहलाव खातिर सुबहित ना रहे। अब ऊ इलाका युद्ध के आशंका से भरल रहे। वास्या अपना क्षेत्र के युवा सेना के सामूहिक कार्यक्रम में अबहीं ले भाग ना लेले रहे। बाकिर अब ओकर भर्ती के उमिर हो गइल रहे आ ऊ सैनिक मामला में दिलचस्पी लेवे लागल रहे। पिछला कई दिन से लइकन का बीच तनाव के माहौल के बारे में गरमा–गरम बहस चलत रहे। अगर आज ना त काल्ह लड़ाई होखहीं वाला रहे। अहाता के जानल–मानल कमाण्डर इन चीफ सेर्योजा रहे। ऊ पाँचवा दर्जा में पढ़त रहे आ कारखाना के कार्य–निरीक्षक के बेटा रहे। ओकर बाप स्काल्कोव्स्की अपना बड़हन परिवार के पूरा नियंत्रण में राखत रहले, बाकिर ऊ खुशमिजाज, बातूनी आ मुक्त परिहास वाला प्रिय आदमी रहले। उनका लाल–झण्डा पदक मिल चुकल रहे।

www.bhojpurisahityangan.com

उनका छापामार लड़ाई के बहुते बात इयाद रहे, बाकिर ऊ ओह समय के आपन सफलता के डींग कबो ना हाँकत रहले। ओकरा विपरीत ऊ सैनिक तकनीक आ संगठन के बारे में चरचा कइल पसन्द करत रहले। एही से सेर्योजा ओजुगिया होखे वाला बेतरतीब झगड़ा के विरोधी रहे। ऊ बेवस्था के माँग करत रहे।

शत्रु विचाराधीन क्षेत्र के एगो बड़हन तीन मंजिला इमारत में आपन डेरा जमवले रहे। ऊ इमारत वास्या के अहाता से आधा किलोमीटर दूर रहे। ओह इमारत पर ओकनी के आपन कब्जा जमवले रहले सन आ अब ऊ माखी पहाड़ पर आपन नजर गड़वले रहले सन। पहिलका झड़प एही पहाड़ के घाटी में भइल रहे। शुरू–शुरू में ऊ व्यक्तिगत टकराव रहे, बाकिर बाद में टोली उलझ परल। हाल के एगो झड़प में शत्रु सेर्योजा के टोली के ढलान के नीचे घाटी ले ढकेल देले रहे आ विजेता अपना विजय से हुलसित हो के गाना गावत आ चोटी पर चलत अपना घर के ओर चल गइले सन। बाकिर काल्ह साँझी के सेर्जोजा एह अपमान के बदला ले लेहलस– ऊ सूर्यास्त से पहिलहीं "पूरबी क्षेत्र" में शत्रु के एगो टोली पर टूट परल। लड़ाई भइल। शत्रु के पाछे हटे के परल। बाकिर एह जीत के असली महत्त्व एह बात में रहे जे एगो युद्धबन्दी के लगे सउँसे इलाका के एगो अधूरा नक्शा बरामद कइल गइल। ई शत्रु के आक्रामक इरादा के पकिया सबूत रहे। वास्या ठीक ओही समय अहाता में पहुँचल, जब सेर्योजा कहत रहे –"तहनी के बुझाइल, ऊ पहिलहीं से नक्शा तइयार करत बाड़े सन आ एजुगिया हमनी के लगे कवनो योजना हइले नइखे। देख सन, ऊ हमनी के घर के खाका बनवले बाड़े सन। ओह पर लिखल बा– नीला के मुख्यालय।"

"ओहो," केहू कहल, "ओकनी के हिसाब से हमनी के नीला बानी सन। का अइसन बा?"

"हँ, नीला!"

"आ ऊ लाल बाड़े सन?"

"एकर त इहे मतलब बा।"

"आ ओकनी के अपना नक्शा में एही तरे लिखले बाड़े सन." एगो आउर आवाज़ आइल।

"ओकनी के अइसन करे के हक के देहल?"

"हँ–हँ, लाल! ई हमरा पसन्द बा!"

"अब नक्शा हमनी के लगे बा। हमनी एकरा के बदल सकत बानी सन।"

जुटल लोग नक्सा के जाँच कइल त ओह लोग के पारा चढ़े लागल। वास्या ओह अपमान जनक चीज के देखे बदे भीड़ में घुसिया गइल। ऊ अबहीं पढ़ ना सकत रहे, तबो समझ गइल जे ओकरा अहाता के अपमान भइल बा। जहँवा ले 'लाल' कहाये के सम्बन्ध रहे, ओकरा एह बात पर तनिको शक ना रहे जे खाली सेर्योजा के योद्धा एह सम्मान के काबिल बा।

वास्या गम्भीर हो के बात सुनलस। ऊ कबहूँ एह चेहरा के देखत रहे त कबहूँ

www.bhojpurisahityangan.com

दोसर। तबे अचके भीड़ के दोसरा छोर पर मित्या के छोटहन पैनी आँख पर ओकर नजर परल। वास्या युद्ध के सगरी बात बिसर गइल आ ओकरा जगह टिन के डिब्बा के समस्या खाड़ा हो गइल। ऊ भीड़ के चक्कर लगावत मित्या के केहुनी से दबवलस। मित्या घूम के देखलस आ तेजी से कगरिया गइल।

"मित्या, काल्ह ऊ टिन के डिब्बा तें ले गइल रहले?"

"हँ, ले गइल रहनीं त का? तें का करबे?"

"मित्या साहस त देखावत रहे, बाकिर पाछे हट गइल। ऊ फिरार होखे के टोह में रहे। वास्या खातिर ओकर ई बेवहार घोर अचरज के बात रहे। ऊ आपन डेग बढ़ावत दृढ़ता से कहलस –"ठीक बा, ओकरा के वापस क दे!"

"ओहो, तें बड़ साहसी बाड़े," मित्या अवज्ञा के भाव से कहलस "वापस क दे! बड़ साहसी बाड़े तें, वाह का बात बा!"

"त तें वापस ना करबे? तें ओकरा के चोरवले बाड़े आ अब तें ओकरा के वापस ना करबे? इहे बात बा नूँ?"

वास्या ई बात जोर से, आवेश में आ शायद बिखियाइले कहलस।

एकर जवाब में मित्या माहुर नियर मुँह बनवलस। एकरा बाद का भइल, केहू नइखे बता सकत, खुदे वास्यो ना। जवन होखे, युद्ध परिषद् के सामरिक सवाल पर आपन बहस रोके के परल। सदस्य लोगन के धेयान एगो विचित्र झमेला में उलझ गइल। मित्या पेटकुनिये जमीन पर परल रहे आ ओकरा पीठ पर वास्या सवार रहे। ऊ ओकरा से पूछत रहे– तें ओकरा के वापस लवटइबे कि ना? बोल, लवटइबे कि ना?

मित्या एह सवाल के कवनो जवाब ना देत रहे। अपना के छोड़ावे के लगातारे जतन करत रहे। ओकर चेहरा धूर में सउनाइल रहे आ तेजी से अगली–बगली आपन देह अँइठत रहे। ऊ जेने–जेने आपन मुँह घुमावत रहे, ओनहीं वास्या ओकरा के देखे के कोशिश करत पूछत रहे : "बोल, वापस करबे कि ना?"

युद्ध परिषद् के लोग ठहाका मार के हँसे लागल। सभसे मजगर बात ई रहे जे हेतना कुछ भइला का बादो वास्या के चेहरा पर ना त तनिको क्रोध रहे आ ना कवनो दुश्मनी के भाव। ओकर बड़का–बड़का आँख खाली एह बात में दिलचस्पी देखावत रहे जे मित्या टिन के डिब्बा वापस करी कि ना। ऊ कवनो तरे के धमकी देहले बिना सामान्य बेवहारिक सवाल पूछत रहे। एकरा साथहीं वास्या कबो–कबो मित्या के जमीन पर दबोचत रहे आ ओकरा गरदन में हाथ लगवले नीचे के ओर दबावत रहे।

आखिर में सभके धेयान आ हँसी के चलते वास्या ऊपर निगाह उठवलस। सेर्योजा ओकर कन्धा धइलस आ धीरे से उठा के खाड़ा कइलस। वास्या मुसुकी छोड़त सेर्योजा से कहलस –"हम ओकरा के बेर–बेर जमीन में दबोचनीं, तबो कुछुओ बोलते नइखे।"

"तें ओकरा के हे तरे से दबोचे में काहे लागल रहले ह?"

www.bhojpurisahityangan.com

"ऊ हमार डिब्बा लेले बा।"

"कइसन डिब्बा?"

"अइसन बड़ ..... टिन के डिब्बा।"

मित्या उठ के खाड़ा हो गइल। ऊ अपना हाथ से चेहरा के पोंछलस, बाकिर तनिको साफ ना भइल।

"तें ओकर डिब्बा वापस काहे नइखी देत?" सेर्योजा पूछलस।

मित्या आपन नाक कुरेदलस। फेर दोसरा ओर नजर घुमा लेहलस आ भारी आवाज़ में जवाब देहलस– हम त वापस क देतीं, बाकिर ओकरा के हमार बाप ले लेहले।"

"बाकिर डिब्बा त एकरे ह?"

मित्या उदास भावे आपन माथा हिलवलस। सेर्योजा एगो ताकतवर, तन्दरुस्त, सुन्दर, साफ–सुथरा आ साँवर बाल वाला लइका रहे। ऊ तनी सोचलस।

"ठीक बा। तोर बाप के ओकरा के वापस करे के परी। आखिर उनकर डिब्बा त ह ना।" सेर्योजा वास्या के तरफ मुड़ल। "त मित्या तोरा से लेले रहे, लेहलस नूँ?"

"ना, ऊ लेहलस ना..... ई काल्हे के बात ह..... ऊ..... एकरा के चोरवले बा।"

लइकन के हँसी आ गइल आ ल्योविक हँसे लागल। ल्योविक के देखते वास्या चिल्ला के कहलस –"ई रहल ल्योविक, ओकरा सभकुछ मालूम बा।"

ल्योविक के हँसी गायब हो गइल। ऊ दोसरा ओर घूम गइल।

"हम एकरा बारे में कुछुओ नइखीं जानत। ई जानल हमार काम नइखे जे ऊ तोरा से का चोरवलस।"

तब सेर्योजा असली कमाण्डर–इन–चीफ जस कार्रवाई कइलस। ऊ मित्या के सख्ती से डाँटत कहलस –"तें ओकरा के चोरवली? बोल!"

"हम ओकरा के ले लेहनीं। चोरवला से एकर का मतलब?"

"बहुत बढ़िया," सेर्योजा कहलस। "हम सम्मलेन के समाप्त करत बानीं। तहनी दुनू एजुगिये रुक सन। तोर नाँव का ह?"

"वास्या।"

अच्छा वास्या, तें एकरा पर नजर गड़वले राख। ऊ गिरफ्तार बा।"

वास्या मित्या के तिरछिया के देखलस आ मुसुकी छोड़लस। ऊ सेर्योजा के आदेश देवे के ढंग से हुलसित त भइल, बाकिर ऊ ई ना समझ सकल जे ऊ कवन चीज रहे, जवना से खुश हो गइल। ऊ सेर्योजा के बिसवास भरल ताकत आ ओकर समर्थन करे वाला लइकन के संगठन के ताकत रहे, जवन वास्या के जादे प्रभावित कइले रहे।

वास्या मित्या पर नजर गड़वले रहे, बाकिर मित्या भागे के ना सोचलस। शायद एह से जे ऊ अपना पहरेदार के पकड़ के महसूस क लेले रहे आ शायद एह से जे कमाण्डर–इन–चीफ ओकरा के गिरफ्तार कइले रहे। वास्या आ मित्या दुनू

www.bhojpurisahityangan.com

एक–दोसरा के देख लेत रहले सन आ एह काम में अतना डूब गइले सन जे ओकनी के युद्ध परिषद् के बहस ले ना सुनले सन।

बइठक में दस गो लइका भाग लेहले सन। ओमे वास्या आ मित्या जइसन कम उमिर के सहभागी शामिल रहले सन। ओकनी के जिम्मेदार काम पावे के कवनो उम्मीद ना करत रहले सन, तबो अपना सहज बुद्धि से बूझत रहले सन जे आगे के लड़ाई में ओकनी के आपन समरथ देखावे से केहू रोक नइखे सकत। एह से ओकनी के युद्ध के शर्त में कवनो दिलचस्पी ना रहे। बाकिर ओकनी के उम्मीद के विपरीत किस्मत ओकनी पर मेहरबान रहे। अचके बइठक का बीच से सेर्योजा के आवाज गूँजल :

"ना, हम अपना मुख्य ताकत के हाथ ना लगायेब। तहनी के जानत बाड़ सन जे हमनी के लगे कुछ नीमन स्काउट बा। होने ऊ लइका बा, जे आज के लड़ाई जीतले बा। वास्या, इहे बा नू? ऊ एगो योद्धा बा। ऊ टोह दल के मुखिया होखी।"

"ना, मुखिया त बड़ लइका होखे के चाहीं," एगो आवाज आपत्ति जतवलस।

"नीमन बात बा। त ऊ सहायक मुखिया होखी। जवन होखे, ओकरा में खराबी का बा?"

सभे वास्या के तरफ देखल आ मुसुकी छोड़े लागल। वास्या लगले समझ गइल जे ओकरा खातिर कइसे काम के राह खुल रहल बा, काहेकि ओकर बाप टोह लगावे के काम के बारे में ओकरा से कई बेर चरचा कइले रहले। ऊ आन्तरिक गर्व से शरमा गइल, बाकिर अपना उत्तेजना के तनिको लखार ना होखे देहलस। ऊ मित्या का ओर आउर पैनी नजर से देखे लागल। मित्या अवज्ञा से मुँह बिजकवलस आ बड़बड़ाइल –"का स्काउट बा!"

ई बात ईर्ष्यावश कहल गइल रहे। ओही घरी सेर्योजा घेरा से बाहर निकलल आ अपना अगली–बगली देखत स्काउट के बाँह धइले वास्या के लगे एगो टोली में जमा करे लागल। ऊ कुल आठ गो रहले सन। टोली में शामिल होखे वाला पहिलका लइका बेशक, मित्या रहे। ओकनी के खुश रहले सन, बाकिर ओकनी के रंग–ढंग से लागत रहे जे ओकनी में असली स्काउट के आत्म–बिसवास ना रहे।

सेर्योजा एगो भाषण देहलस :

"अब तहनी के स्काउट बाड़ सन, बुझाइल? बाकिर तहनी के धेयान राखे के परी जे अनुशासन बनल रहे, ना कि मन–मर्जी हुड़दंग। तहनी के मुखिया कोस्त्या बा आ सहायक मुखिया वास्या। बुझाइल?"

सगरी स्काउट आपन मुड़ी हिलवले सन आ कोस्त्या का ओर देखले सन। ऊ लगभग तेरह बरीस के एगो दुबर–पातर लइका रहे। ओकर चेहरा बड़हन आ हँसमुख रहे आ आँख में मजाकियापन झलकत रहे। ऊ दुनू हाथ पाकेट में घुसावत स्काउट टोली के निरीक्षण कइलस आ फेर आपन मुट्ठी ऊपर उठवलस।

"स्काउट के लड़ाका होखे के चाहीं, बुझाइल! जे केहू गद्दारी करी भा कायरता देखाई त ओकरा के सोझे गोली मार देहल जाई।"

www.bhojpurisahityangan.com

हुलास में स्काउटन के आँख फइल गइल।

ओकनी के मुखिया आदेश देहलस –"आव सन, चल के सभे एकवठ होखे।"

"जे गिरफ्तार बा, ओकर का होखी?" वास्या पूछलस।

"अरे हँ, रुक! कामरेड कमाण्डर–इन–चीफ, का हम गिरफ्तार आदमी के रिहा क दीं?

"कवनो हाल में ना," सेर्योजा क्षुब्ध हो के कहलस। "हम अबहीं मामला के छानबीन करे जा रहल बानीं।"

सेर्योजा निकल के सामने आइल। अपना अगुवाई में ओकरा के कतहूँ ले जाये वाला रहे, तले ओही घरी ऊ बड़का गेट खुलल आ एगारह से तेरह बरीस के तीन गो लइका भीतर अइले सन। ओमे एगो के हाथ में सटही रहे, जवना में एगो उजर चिरकुट लागल रहे।

"अरे, दूत आइल बाड़े सन!" सेर्योजा बहुते उत्तेजित हो के कहलस।

"ऊ आत्म–समर्पण करत बाड़े सन," केहू पाछे से कहल।

"सावधान, खामोश!" कमाण्डर–इन–चीफ जोर से चीखत आदेश देहलस।

भीड़ में शंकित भाव से सभे चुप्पी साध लेहल। आगे का होखी, ई देखे खातिर सभे दमी सधले रहे। शत्रु के अतना सुसंगठित देख के कमाण्डर–इन–चीफ के साथे सभके पसीना छूट गइल। एगो के लगे उजर झण्डा रहे, दोसर के लगे किशोर पायनियर के बिगुल आ तीसर के पुरान टोपी में एगो सोनहुरा पाँख खोंसल रहे, ऊ ओकनी के सरदार में से एगो रहे। लइका सभ अबहीं पहिलका आघात से सम्हरल ना रहले सन, तले शत्रु के संगठन एगो आउर शानदार प्रदर्शन कइलस। तीन गो दूत एक लाइन में खाड़ा हो गइले सन। ओमे एगो आपन बिगुल बजावे लागल। सेर्योजा ईर्ष्या से भकुआइले रह गइल, बाकिर आउर लोग के तुलना में हाली से अपना के सम्हारत सेर्योजा डेग बढ़ावत सामने आइल, सैल्यूट मारत कहलस :

"हम कमाण्डर–इन–चीफ सेर्योजा बानीं। हमरा मालूम ना रहे जे तूँ लोग के आवे के बा। एही से हम गार्ड ऑफ आनर के तइयारी ना कर सकनीं। हम क्षमा चाहत बानीं।"

एह से लइकन के बड़ी राहत मिलल। ऊ लगले समझ गइले सन जे ओकनी के कमाण्डर–इन–चीफ जानत बा जे का कहे के चाहीं।

दूत के मेठ आगे बढ़ल आ एगो भाषण देहलस :

"हम तूँ लोग के बता ना सकनी, काहेकि ओकरा खातिर समय ना रहे। लाल कमाण्ड नीला कमाण्ड के खिलाफ युद्ध के घोषणा करत बा, बाकिर हमनी के नियम पर राजी होखे के चाहीं। तूँ लोग खातिर जरूरी बा जे तूँ लोग नक्शा के लवटा द, काहेकि तूँ लोग नियम के खिलाफ लड़ाई शुरू होखे से पहिले लेले बाड़। हमनी के एह बारे में नियम बना लेवे के चाहीं जे कब लड़ाई होखे। 'लाल आ नीला' के झण्डा का होखे।"

"हमनी के नीला नइखीं सन।" भीड़ से केहू चिल्ला के कहल। "हमनी के नीला

www.bhojpurisahityangan.com

काहे कहल जा रहल बा?"

"च–च–च!" कमाण्डर–इन–चीफ चुप रहे के आदेश देहलस। खुद आगे कहलस "हमनी के कुछ नियम बनावे में कवनो एतराज नइखे, बाकिर तूँ लोग के अपना के लाल दल ना कहे के चाहीं। ई ठीक नइखे। तूँ लोग जवन मन करे, ठीक ऊहे नइख बन सकत ....."

"ई बात पहिले हमनियो के सोचले रहनी सन," दूत कहलस।

"ना, हमनी के पहिले रहनी सन," सैनिकन में से कुछ आवाज आइल।

ई समझ के जे लड़ाई के नियम बनावे से पहिले हो सकत बा, सेर्योजा अपना सैनिकन के चुप करवलस।

"रुक जो! तें चिल्लात काहे बाड़े? आव, बइठ के सगरी बात पर विचार कइल जाव।"

दूत लोग सहमति जतावल। सभे बाड़ के लगे राखल लकड़ी के कुन्दा पर आपन आसन जमा लेहल।

वास्या कैदी के तरफ मुड़ल।

"आव हमनी के होने चलल जाव।"

कैदी राजी हो गइल आ धउरत बाड़ के लगे पहुँचल। वास्या मोसकिल से ओकरा साथे चल पावल। आउर स्काउट के साथे ओकनी के रेत पर बइठ गइले सन।

आधा घण्टा के बतकही के बाद दुनू पक्ष में सहमति बनल। ई तय भइल जे लड़ाई दस बजे सबेरे से साँझी के चार बजे, फैक्ट्री के भोंपू बाजे ले चलत रही। बकिया समय में 'कुचुगुरी' विवादित क्षेत्र ना मानल जाई। ओजुगिया कवनो आदमी जे चाहे से कर सकत बा। केहू के बन्दी ना बनावल जाई। ओही पक्ष के विजयी मानल जाई, जेकर झण्डा माखी पहाड़ पर तीन दिन ले लगातारे फहरत रही। दुनू पक्ष के झण्डा लाल होखी, बाकिर सेर्योजा के सेना के झण्डा के रंग शत्रु के मुकाबले तनी हलुकाहे लाल रंग के होखी। दुनू सेना दल लाल कहल जाई, बाकिर एगो के उत्तरी सेना कहल जाई आ दोसरा के दक्षिणी सेना। बन्दियन के तबे बन्दी बना के राखल जाई, जब ओकनी के खाना के बेवस्था होखे। अगर खाना के बेवस्था नइखे हो पावत त चार बजे के बाद ओकनी के जहँवा मन करे ओजा जाये खातिर रिहा करे के परी, काहेकि फौजी के संख्या बहुते कम बा। एह से अगर बन्दी के पकड़ के राख लेहल जाई त लड़े खातिर केहू बचबे ना करी। उत्तर दल के बनावल नक्शा दक्षिण दल के वापस लवटा देवे के चाहीं।

दूत ओसहीं समारोह के साथे लवटल, जइसे ऊ आइल रहे। अपना सफेद झंडा के फहरावत आ बिगुल बजावत ऊ मार्च करत सड़क पर चल परले सन। तबे उत्तरी दल के ई अहसास भइल जे युद्ध शुरू हो गइल बा। शत्रु जादे एकवठ आ ताकतवर बा। लगले कुछुवो ना कुछुओ करहीं के चाहीं। सेर्योजा कई गो लइकन के फ्लैट में भेजलस, जवना से लामबन्दी कइल जा सके। माने घर में रहे वाली

www.bhojpurisahityangan.com

लइकी सभ दब्बू लइकन के समझा–बुझा के उत्तरी फौज में भर्ती करे बदे राजी करा सके।

"हमनी के लगे अपना इलाका में तैंतीस गो नीमन लइका आ दर्जन से ऊपरे स्काउट बा, बाकिर ओमे जादेतर अपना मतारी के घाघरा से चिपकल बाड़े सन।"

एह बात के सुन के वास्या उदास हो गइल। ऊ जिनिगी के असमाधेय अन्तर्विरोध के बात सोचे लागल। आखिर मतारी त संसार में सर्वोत्तम बा, बाकिर सेर्योजा कहत बा..... बेशक सभ मतारी के घाघरा एक जस ना होखे.....।

पाँच मिनट बादे एगो मतारी लइकन के लगे अइली। सेर्योजा उनकर घाघरा के धेयान से देखलस। ना, ऊ कवनो बाउर ना रहे। हलुक आ चमकदार रहे। एह मतारी से इत्र के खुशबू आवत रहे आ दयालु लागत रहली। उनका साथे उनकर सात बरीस के बेटा ओलेग कुरिलोव्स्की रहे। एह लोग के परिवार के बारे में वास्या कुछ किस्सा–कहानी सुनले रहे।

सेम्योन पाव्लोविच कुरिलोव्स्की फैक्ट्री के नियोजन विभाग के प्रधान रहले। उत्तरी फौज के सगरी इलाका में आउर कवनो अइसन आदमी ना रहे, जेकर महत्त्व के नजरिया से सेम्योन के बराबरी कइल जा सके। प्रसंगवश, ई एगो अइसन तथ्य रहे, जे खुदे सेम्योन खातिर ख़ास चिन्ता के मसला रहे। बाकिर वास्या के बाप उनका बारे में कहले रहले –"नियोजन विभाग के प्रधान! बेशक ऊ बड़हन आदमी बाड़े, बाकिर दुनिया में उनको ले बड़हन लोग मौजूद बा।"

लागत रहे जे सेम्योन के एमे कवनो सन्देह रहे। आउर लोग के ई बूझे में मोसकिल होत रहे जे ऊ साँचो केतना महत्वपूर्ण बाड़े। बाकिर अइसन फैक्ट्री में रहे। सेम्योन परिवार में हर केहू बूझत रहे आ केहू सोचियो ना सकत रहे जे सेम्योन के महानता से अछूता उनकर जिनिगियो हो सकत बा। ई कहल मोसकिल बा जे एह महानता के स्रोत सेम्योन के नियोजन के काम रहे भा लइकन के लालन–पालन से जुड़ल उनकर धारणा में। बाकिर कुछ कामरेड, जे सेम्योन से बतकही के सम्मान पवले रहे, ऊ लोग एह तरे के राय जाहिर करत सुनले रहे –"बाप के लगे प्राधिकार होखहीं के चाहीं। बाप के सभसे ऊपर होखे के चाहीं। बापे सभकुछ बा। प्राधिकार के बगैर का लालन–पालन हो सकत बा?"

सेम्योन साँचो सभसे ऊपर रहले। घर में उनकर आपन अलग अध्ययन कक्ष रहे। ओमे उनका मेहरारु के सिवा आउर केहू के जाये के इजाजत ना रहे। सेम्योन के सगरी फालतू समय अध्ययन कक्ष में कटत रहे। उनका परिवार में केहू ना जानत रहे जे ऊ ओजुगिया का करत बाड़े। ऊ लोग जानियो ना सकत रहे। ओह लोग के आपन अज्ञानता के अहसास ले ना रहे, काहेकि ओजा अध्ययन कक्ष से कहीं जादे साधारण सामान भरल रहे, जवना के बारे में आदर भरल भय से बात कइल जात रहे– बाप के खटिया, बाप के कपड़ा के आलमारी, बाप के पतलून।

काम से लवटला के बाद बाप कमरा से हो के महज चलते भर ना रहले। ऊ सोझे शान से आपन कदम राखत रहले। आपन बड़का भूअर ब्रीफकेस के ओकर

www.bhojpurisahityangan.com

पवित्र जगह पर राखे खातिर सोझे अध्ययन कक्ष में चल जात रहले। ऊ अखबार पढ़े में मगन आ गम्भीरता से बइठल अकेले भोजन करत रहले। जहँवा ऊ आपन वक्त गुजारत रहले, ओजा से लइकन के फ्लैट के कवनो दूर कोना में भगा देहल जात रहे।

सेम्योन अनुशासन के काम के अंजाम देवे खातिर अपना ऊँच आसन से कबो–कबो उतरत रहले। परिवार में जवन कुछ कइल जात रहे, उनके नाँव पर भा उनकर भावी नाखुशी के नाँव पर कइल जात रहे। धेयान देहल जाव नाराजगी ना, नाखुशी। काहेकि बाप के नाखुशी एगो भयानक चीज रहे। उनकर नाराजगी कल्पना के सीमा से परे रहे। मतारी हरमेसा कहस :

"बाप नाखुश हो जइहें।"

"बाप के मालूम हो जाई।"

"हमरा बाप से कहे के परी।"

बाप, शायदे कबहूँ केहू के सोझ सम्पर्क में मोसकिल से आवत रहले। ऊ कबहूँ एगो मेज पर बइठ के खाना खा लेस त कबहूँ एकाध गो अइसन शानदार मज़ाक करस जे ओह पर खुश हो के मुसुकी छोड़ल सभके दायित्व रहे। कबहूँ अपना बेटी के ठुड्ढी पर चिऊँटी काटत कहस –"का हाल बा?"

बाकिर जादेतर बाप आपन सगरी अनुभव भा आदेश मतारी के रिपोर्ट सुनला के बादे मतारी के जरिये कहवावत रहले :

"बाप राजी बाड़े।"

"बाप राजी नइखन।"

"बाप के पता लाग गइल बा। ऊ बहुते नाराज बाड़े।"

अब सेम्योन के मेहरारू ओलेग के साथे ई पता लगावे आइल रहली जे ई उत्तर दल वाला के ह आ ओलेग ओकनी के काम में भाग ले सकत बा कि ना? एकरा अलावे ऊ उत्तर दल के विचारधारा आ बेवहार के बारे में एगो सामान्य धारणा बनावे बदे आइल रहली आ एकर रिपोर्ट अपना मरद के दे पावस।

ओलेग दोहरा ठुड्ढी वाला मोटहन लइका रहे। ऊ अपना मतारी के बगल में खाड़ा हो के सेर्योजा के जवाब के उत्सुकता से सुनत रहे।

"दक्षिण वालन का साथे हमनी के युद्ध चलत बा। ऊ ओह घर में रहत बाड़े सन..... माखी पहाड़ पर आपन झण्डा फहरावे के बा।"

सेर्योजा माखी पहाड़ का ओर मुड़ी हिला के देखलस। ओकर हलुकाहे पीयर शिखर दूरे से चमकत लउकत रहे।

"युद्ध चलत बा" से तोर का मतलब बा? ओलेग के मतारी लइकन के भीड़ पर नजर धउरावत पूछली –"का तहनी के मतारी–बाप एह बारे में जानत बा?"

सेर्योजा मुसुकी छोड़लस।

"काहे, एमे जाने के का बा? हमनी के एकरा के गोपनीय नइखीं रखले। ई त महज एगो खेल बा। अइसन खेल के कवनो कमी नइखे। का रउआ हर खेल

www.bhojpurisahityangan.com

के बारे में पूछत फिरिले?"

"ई हर खेल नइखे! महज खेल ना, ई त युद्ध बा!"

"हँ, ई युद्ध बा। बाकिर कवनो आउर तरे के खेल ह।"

"आ अगर तें केहू के घायल क देवे त?"

"हम केहू के घायल कइसे कर सकत बानीं? का रउआ ई बूझत बानीं जे हम छुरी आ पिस्तौल से लैश बानीं?"

"होने ऊ जे तलवार धइल बा!"

"ऊ त खाली लकड़ी के तलवार ह।"

"जवन होखे, मान ले, तें केहू के घायल क देहले त?"

सेर्योजा जवाब देहल बन्द क देहलस। ओकरा अइसन बतकही नापसन्द रहे, जवना से उत्तर आ दक्षिण के बीच लड़ाई के भयंकरता खतम होखे के खतरा पैदा होत होखे। ऊ ओलेग के बिखियाइले देखे लागल। ओकरा पर साँचो के मुसीबत ढावे में कवनो खराबी ना लागत रहे। बाकिर सेम्योन के मेहरारू मामला के जड़ ले पहुँचे के तय कइले रहली।

"खैर, जवन होखे, तें लड़बे कइसे?"

सेर्योजा बिखिया गइल। ऊ युद्ध के उद्देश्य के संकट में डाले के कोशिश बर्दाश्त ना कर सकल।

"अगर रउआ ओलेग के फिकिर बा त ओकरा एमे परे के कवनो दरकार नइखे। काहेकि हम ओकरा बदे जवाबदेह ना होखब– हो सकेला जे लड़ाई में केहू ओकरा के झकझोर देव। ऊ धउरल शिकायत करे रउआ लगे पहुँची। आखिर युद्ध त युद्ध ह। एह नन्हका लइकन के देखीं, जे हमरा साथे बाड़े सन। ओकनी के कवनो डर नइखे लागत। तें त नइखी डेरात, डेरात बाड़े का?" ऊ वास्या के कन्धा पर हाथ ध के कहलस।

"कवनो डर नइखे," वास्या हुलसित हो के कहलस।

"ई ल, देख ल!" सेम्योन के मेहरारू घबराइले कहली। ऊ एक बेर फेर से लइकन पर नजर धउरवली, जइसे उनका ई पता लगावे के उम्मीद होखे जे ओलेग के झकझोरे के दोषी के हो सकत बा। ई बात केतना खतरनाक होखी।

"डर मत ओलेग!" पाछे से एगो आवाज़ आइल। "हमनी के लगे एगो रेड–क्रॉस बा। अगर कवनो बम से तोर हाथ भा मुड़ी उड़ जाई त हम ओह जगह मरहम–पट्टी लगवा देब। एकरा खातिर लइकी बाड़ी सन।"

सभ लइका ठहाका लगा देहले सन। ओलेग सचेत हो गइल आ हिम्मत बान्हत मुसुकी छोड़लस। ओकरा चोट वाला जगह पर लागल पट्टी के बात आकर्षक लागे लागल।

"हे भगवान!" ओकर मतारी फुसफुसात कहली। फेर सोझे घर के ओर लमी ले लेहली। ओलेग उनका पाछे–पाछे चल देहलस। लइका सभ एक दोसरा के आँख मारत आ मुसुकी छोड़त मतारी बेटा के जात देखले सन।

www.bhojpurisahityangan.com

"अहा!" सेर्योजा इयाद करत कहलस। "तोर कैदी केने बा?"

"हम एहीजा बानीं।"

"चल आव!"

मित्या आपन मुड़ी झुका लेहलस।

"बाकिर ऊ कवनो हाल में ओकरा के वापस ना दीहें।"

"हम देखब।"

"हुँह! तें हमार बाप के नइखी जानत।"

"के जाने का होखी!" सेर्योजा आपन सुन्दर हलुक रंग के बाल वाला माथा झटक के कहलस।

कन्दीबिन परिवार पहिलका मंजिल पर रहत रहे। उनकर फ्लैट के हालात नजारोव परिवार के फ्लैट जइसने रहे। बाकिर वास्या के उनकर आ अपना घर में कवनो समानता ना लागत रहे। जाहिर रहे जे फर्श केतना दिन से बहराइल ना रहे। सउँसे देवार पर दाग परल रहे। ई बतावल मोसकिल रहे जे खाना खाये के मेज पर जूठ जादे रहे कि माछी बेसी भिनभिनात रहली सन। मेज आ कुरसी जेने–तेने बेतरतीब परल रहे। अगिला कमरा में बिछावन अस्त–व्यस्त रहे आ तकिया के खोल किटीहर भइल रहे। देवार से सटल आलमारी गन्दा थरिया आ गिलास से भरल रहे। एजुगिया ले जे आलमारी के जादेतर दराज बेमतलब के खुलल रहे। सेर्योजा, जे सभसे पहिले अन्दर घुसल, के गोड़ फर्श पर गिरल पानी में पर गइल आ ऊ बिछिलाये से बाँचल।

मित्या के बाप मेज के लगे बइठल एगो जूता उलट के अपना ठेहुना पर धइले रहले। उनका लगहीं मेज के एगो कोना पर करिया टिन के डिब्बा धइल रहे। अब ओकरा के कई गो खान्हा में बाँटल देहल गइल रहे। ओह खान्हा में मोची के काम वाला काँटी भरल रहे।

"हम तहनी के का सेवा कर सकत बानीं?" कन्दीबिन नकियात बोलले। फेर अपना मुँह से एगो नवघराहे काँटी निकाल के जूता के पेनी में ठोक देहले। वास्या उनका होठ के बीच में ओइसने कई गो काँटी देखलस। एह से ई बुझा गइल जे ऊ अइसे अजीब ढंग से नकिया के काहे बोलत बाड़े। सेर्योजा अपना केहुनी से वास्या के धीरे से धकियावत इशारा कइलस आ फुसफुसा के पूछलस "ऊहे डिब्बा ह का?"

वास्या नजर उठा के देखलस आ मुड़ी हिला के हामी भरलस। "केहू दोसरा के घरे घुसे आ फुसफुसाये से तोर का मतलब बा?" कन्दीबिन मुँह में काँटी धइला के चलते बड़ी मोसकिल से बड़बड़इले।

"ऊ लोग टिन के डिब्बा खातिर आइल बा," मित्या अपना साथियन के आड़ लेत कहलस।

कन्दीबिन हथौरी से आपन जूता ठोकले, अपना मुँह से आखिरी काँटी निकलले आ तब जा के सामान्य आवाज़ में बोल पवले।

"ओहो, डिब्बा बदे। ओकरा खातिर हमरा लगे आवे के कवनो जरूरते नइखे।

www.bhojpurisahityangan.com

ओकरा खातिर ओकनी के अपने लगे आवे देते।"

अपना कुरसी पर सोझ हो के कन्दीबिन बिखियाइले लइकन का ओर देखले। फेर एह तरे से हथौरी थमले, जइसे वार करे खातिर तइयार होखस। उनका चेहरा से अबहिंयो जवानी झलकत रहे, बाकिर उनकर भौंह एगो बूढ़ आदमी जस साफे उजर रहे।

मित्या सँकरलस जे ऊ टिन के डिब्बा लेले रहे..... माने चोरवले रहे। कन्दीबिन अपना बेटा के तरफ नजर धउरवले।

"अच्छा! चोरवले रहले?"

सेर्योजा के पाछे से निकल के मित्या तेज आक्रामक आवाज़ में रिरियात बोलल शुरू कइलस।

"हम ओकरा के नइखीं चोरवले। 'चोरवले', चोरवले'! ई त ओजुगिये सभका सामने परल रहे। हम त ओकरा के खाली उठा लेहनीं। ऊ लोग झूठ बोलत बा। झूठ बोल रहल बा, बस!"

वास्या अचरज से ओकरा के देखलस। ऊ अपना जिनिगी में अइसन निष्कपट, अपमानित आवाज़ में अइसन साफे झूठ कबहूँ ना सुनले रहे।

कन्दीबिन आपन नजर सेर्योजा के ओर धउरवले।

"ई ठीक नइखे। तें चिल्लात अन्दर घुस अइले जे "ऊ चोरा लेहलस, ऊ चोरा लेहलस"। तें जानत बाड़े, कवनो दिन तोरा अइसन शब्द खातिर जवाबदेही उठावे के पर सकत बा।"

कन्दीबिन उत्तेजित हो के डिब्बा के खान्हा टोवल शुरू क देहले– पहिले एगो खान्हा, फेर दोसर। बाकिर सेर्योजा हिम्मत ना हारल।

"त ठीक बा। मान लेहनीं जे ऊ नइखे चोरवले, बाकिर ई डिब्बा त वास्या के ह। .....राउर ना ह। एह से रउआ एकरा के वापस क दीं।"

"केकरा के, ओकरा के? ना, हम ना देब। अगर तहनी के शरीफ जइसन आइल रहत सन त हम दे सकत रहनीं, बाकिर अब ना देब। "चोरा लेहलस, चोरा लेहलस!" तें एकरा के चोर बनावत बाड़े। अब एजुगिया से निकल जा सन।"

सेर्योजा एगो चाल आउर चलल।

"ठीक बा। हम ई बात कहनीं, बाकिर वास्या त कुछुओ ना कहलस। एह से रउआ ओकर डिब्बा वापस क दीं....."।

कन्दीबिन जूता अपना हाथ में थमले आपन देह के तनी टाइट क लेहले।

"अब सुन! तें हमरा के सिखावे–पढ़ावे खातिर अबहीं तनी छोट बाड़े। तोरा एजुगिया आवे के कवन हक बा? हमरा घर में धड़धड़ाइले घुस अइले आ जोर–जबरदस्ती करे लगले, काहे? का भइल, अगर तोर बाप छापामार रहले। ई त अबहीं पता लगावे के बा। जहँवा ले तहनी के सवाल बा, तहनी के एक समान बाड़ सन। एके गिरोह। निकल, दूर हट!"

लइका सभ दरवाजा के तरफ सरके लगले सन।

www.bhojpurisahityangan.com

"मित्या, तें केने जा रहल बाड़े?" ओकर बाप चिल्ला के कहले। "ना तें एजुगिये रुक।"

सेर्योजा एक बेर फेर दरवाजा के लगे फिसले से बाँचल। चउका से एगो दुबर–पातर बुढ़िया उदास भाव से एकनी ओर देखलस। ओकनी के अहाता में पहुँच गइले सन।

"गन्दा कुकुर बा ऊ," सेर्योजा बिखियाइले कहलस। बाकिर ऊ एह से बच नइखन सकत। हम ऊ डिब्बा बरामद क के रहब।

वास्या के जवाब देवे के समय ना मिलल, काहेकि ओही समय इतिहास के चक्का विकट वेग से नाचे लागल। कई गो लइका धउरत सेर्योजा के लगे अइले सन। ओकनी के हाथ हिलावत एके साथे चिल्लात रहले सन। आखिर में एगो लइका सभसे जादे जोर से चिल्लाये में कामयाब हो गइल।

"सेर्योजा! देख! ओकनी के आपन झण्डा....."।

सेर्योजा देखलस त ओकर चेहरा फक पर गइल। माखी पहाड़ के चोटी पर गाढ़ लाल रंग के झण्डा फहरत रहे, जे एजुगिया से करिया लउकत रहे। सेर्योजा के बोलती बन्द हो गइल। ऊ ओजुगिये थहरा के सीढ़ी पर बइठ गइल। वास्या के मन में दुश्मन से लड़े के पुरान बालकोचित इच्छा कुलबुलाये लागल।

कमाण्डर–इन–चीफ के आफिस के तरफ लइका सभ धउरल आवत रहले सन। ओकनी में खलबली मचल रहे। हर केहू माँग करत रहे जे निर्लज शत्रु के खिलाफ लगले जोरदार आक्रमण शुरू कइल जाव। तेज आवाज़ में बिखियाइले गन्दा हाथे आ चंचल निगाह से ऊ अपना नेता के माखी पहाड़ का ओर ओह शर्मनाक नजारा के देखावे के कोशिश करत रहले सन।

"हमनी के एजुगिया हाथ पर हाथ धइले काहे बइठल बानी सन। ओकनी के आपन ठसक देखावत बाड़े सन आ हमनी के चुपचाप काहे बइठल बानी सन। आव, चलल जाव!"

"धावा, धावा बोले!"

तलवार आ छुरी हवा के काटे लागल। बाकिर उत्तर के शानदार फौज के कमाण्डर–इन–चीफ सोचत रहे जे का करे के बा। ऊ सीढ़ी पर चढ़ गइल आ आपन हाथ उठा के ई जतावे लागल जे ऊ कुछ बोले के चाहत बा। भीड़ खामोश हो गइल। "तहनी के कवन बात पर हेतना चिल्लात बाड़ सन। हर केहू गला फार के चिल्ला रहल बा। अनुशासन हइले नइखे! हम हमला कइसे कर सकत बानीं। हमनी के लगे एगो झण्डा ले नइखे। का हम खलिहा हाथे जाईं। तहनी के इहे चाहत बाड़ सन? आउर कतहूँ कवनो टोह ना लगावल गइल। एही खातिर तहनी के चिल्लत बाड़ सन। जहँवा ले झण्डा के सवाल बा त हम खुदे ले आयेब। मतारी हमारा के झण्डा देवे के वादा कइले बाड़ी। हम माखी पहाड़ पर धावा बोले के समय तय करत बानीं– काल्ह बारह बजे। बाकिर ई गोपनीय रखिह सन। टोह दल के मुखिया केने बा?

www.bhojpurisahityangan.com

उत्तरी दल के सभे मुखिया के खोजे खातिर धउरल।

"कोस्त्या!"

"कोस्त्या– आ – जो!"

"वारेनिक!"

कुछ ओकरा फ्लैट का ओर धउरे के सोचले सन।

"ओकर मतारी कहत बिया जे हम अन्दर नइखीं जा सकत।" ओकनी के वापस लवटला पर बतवले सन, "ऊ खाना खा रहल बा।"

"बाकिर सहायक मुखिया त मौजूद बा।"

"अरे हँ!" सेर्योजा के इयाद परल, "वास्या।"

वास्या आपन जिम्मेदारी निभावे खातिर तत्पर हो के अपना कमाण्डर–इन–चीफ के सोझा खाड़ा हो गइल। बाकिर ओकरा दिमाग में एगो हलुकाहे सन्देह खटकत रहे जे स्काउट के रूप में ओकर हरकत के बारे में ओकर मतारी–बाप का सोची?

"स्काउट के काल्ह दिन के एगारह बजे से कार्यवाही शुरू क देवे के परी। ई पता लगावे के होखी जे शत्रु कहँवा बा आ एकर रिपोर्ट पेश करे के परी।"

वास्या माथा हिलवलस आ अपना सैनिकन के मुआयना कइलस। ऊ सभ हाजिर रहले सन। खाली मित्या घरेलू वजह से घरे में रह गइल रहे।

बाकिर ओही समय मित्या के आवाज़ सुनाई परल। असाधारण शक्ति आ अभिव्यक्ति से भरल ऊ आवाज़ कन्दीबिन के फ्लैट से आवत रहे।

"बाप रे बाप। हम अब अइसन ना करब। ई आखिरी बेर बा। अब अइसन ना करब।"

एगो आउर आवाज़ तनी जादे जोर से गरजल :

"चोरी करत बाड़े? तोरा एगो टिन के डिब्बा चाहीं? चाहीं नूँ? लाज के बात बा ..... मर जो तें, छोटका कमीना!"

उत्तरी दल में खामोशी पसर गइल। ओमे कई गो के चेहरा साफे उतर गइल, जवना में वास्या शामिल रहे। दस कदम के दूरी पर उत्तरी फौज के एगो योद्धा के प्रताड़ित कइल जात रहे आ सभे चुपचाप सुने खातिर मजबूर रहे।

मित्या एगो आउर हताश में कँहरलस। फेर दरवाजा खुलल आ ऊ अपना बाप के गुस्सा के चलते तोप के गोला नियर दनदनात आ के उत्तरी सेना के बीच में गिरल। ऊ आपन काँपत हाथ से देह के ओह अंग के दबवले रहे, जहँवा से काल प्रतिष्ठित परम्परा के हिसाब से एगो लइका में सगरी अच्छाई के प्रवेश होत बा। अपना के अपने जइसन के बीच पा के मित्या यातना स्थल का ओर नजर धउरवलस। ओकर बाप दरवाजा से मुड़ी निकलले, आपन पेट के हथियार जस हिलवले आ कहले –"तोरा इयाद रही, तोरा, कुकुर के औलाद।"

मित्या एह भविष्यवाणी के खामोशी से सुनलस। जब ओकर बाप भीतरी चल गइले त ऊ रोअत सीढ़ी पर कमाण्डर–इन–चीफ के गोड़ के लगे बइठ गइल। उत्तरी सेना ओकर पीड़ा के महसूस करत रहे। जब मित्या के रोहा–रोहट बन्द हो

www.bhojpurisahityangan.com

गइल त सेर्योजा कहलस –"एह बात के मन में मत रखिहे। ई खाली व्यक्तिगत संकट बा। तनी देख, माखी पहाड़ पर का हो रहल बा।"

मित्या उचुक के खाड़ा हो गइल। फेर सक्रिय हो के अपना लोराइल आँखे माखी पहाड़ के घूरे लागल।

"एगो झण्डा? ओह लोग के ह का?"

"आउर केकर? जब तोर पिटाई होत रहे, त ऊ लोग माखी पहाड़ पर आपन कब्जा जमा लेहल। बाकिर तोर पिटाई भइल काहे?"

"टिन के डिब्बा के चलते!"

"का तें आपन गलती मान लेहले?"

"ना, बाकिर ऊ कहले जे ई अपमान बा।"

वास्या मित्या के पतलून ध के कहलस :

"मित्या काल्ह एगारह बजे टोह पर जाये के बा। का तें अइबे?"

मित्या हामी भरलस :

"ठीक बा," ऊ कहलस। आवाज़ में अबहुँओ पीड़ा के भाव झलकत रहे।

बाप वास्या से कहले– "ई नीमन बात बा जे तें टोह दल के मुखिया बाड़े। बाकिर मित्या के मारल–पीटल बाउर बात रहे। ओने ओकर बापो पीटले। बेचारा!"

"बाबूजी, हम ओकरा के पिटनी ना। हम त ओकरा के पटक के दबोचले भर रहनीं। हम ओकरा से डिब्बा वापस करे के कहत रहनीं, बाकिर ऊ कुछुओ बोलते ना रहे।"

"खैर, हो सकत बा अइसन भइल होखे, बाकिर महज एगो टिन के डिब्बा खातिर ई ठीक ना रहे। तें मित्या के एजुगिया ले आव आ ओकरा से दोस्ती क ले।"

"कइसे?" वास्या सहजता से कहलस।

ओकरा से बस अतने कहिहे –"मित्या आव, हमरा घरे चल। आखिर ऊहो एगो स्काउट बा, बा कि ना?"

"हँ, बा .....बाकिर डिब्बा के का होखी?"

"कन्दीबिन ओकरा के वापस नइखन देत। अपना बेटा के पिटाई करत बाड़े आ डिब्बा के अपने ध लेले बाड़े। गजबे आदमी बाड़े। ऊ एगो अच्छा टर्नर आ मोची बाड़े। अब त प्रशिक्षक बन गइलन। नीमन पइसा कामात बाड़े। तबो उनका तनिको समझ नइखे। उनकर घर केतना गन्दा बा।"

वास्या आपन मुँह बनावत कहलस :

"अतना गन्दा, जेतना कि खुदे गन्दगी। फर्श पर आ सगरो गन्दगी पसरल रहे। बाकिर ओह डिब्बा के का होखी?"

"हम कवनो आउर तरकीब सोचब।"

मतारी ओकर बात सुनत रहली। ऊ कहली –"अरे, ओ रे स्काउट, देखिहे कहीं आपन आँख मत फोरवा लिहे।"

बाप आपन बात जोड़त कहले –"बेहतर ई कहतू जे कहीं ओकनी के कैदी

www.bhojpurisahityangan.com

मत बन जइहे। एकर धेयान रखिहे।"

अगिला दिने वास्या हाली से उठ गइल। ऊ अपना बाप के काम पर जाये से पहिलहीं उठ गइल रहे। बाप से पूछलस : "का बजत बा?"

"अरे, जब माखी पहाड़ पर दोसरा के झण्डा लहरात होखे त तोरा बजला से का मतलब," बाप जवाब देहले। एगो नीमन स्काउट कब के पहाड़ पर पहुँच गइल रहित। तें त अबहीं बिछावाने पर परल बाड़े।"

अतना कह के ओकर बाप काम पर चल गइले। एकर मतलब बा जे सात जरूरे बज गइल होखी। उनकर शब्दन से वास्या के दिमाग में एगो नया समस्या खाड़ा हो गइल। काहे ना अबहिंये टोह पर निकल जाइल जाव? वास्या हाली–हाली कपड़ा पहिरलस, जूता पहिरे के अबहीं कवनो दरकार नइखे आ जाँघिया पहिरल त पल भर के काम बा। एकरा बाद ऊ एके झटका में आपन मुँह–हाथ धोवे खातिर धउरल। ऊ अस बवण्डर जस रफ्तार में काम कइलस जे मतारी के धेयान चल गइल।

"अरे, ओ, युद्ध होखे भा ना, बाकिर आपन मुँह–हाथ त ठीक से धो ले। तोर ब्रश सूखल काहे बा? तें कवना सोच में परल बाड़े?"

"माई, ई काम त हम बादो में क लेब।"

"ई का? अइसन बात फेर हमरा से कबहूँ मत कहिहे। तोरा हेतना जल्दीबाजी कहँवा जाये खातिर बा? नाश्ता अबहीं तइयार नइखे भइल।"

"माई, हम खाली एक नजर देखब।"

"ओजुगिया देखे के का बा? खिड़की से बाहर देख ले।"

जवन कुछ देखे के जरूरत रहे, ऊ सभ खिड़की से साँचो लउकत रहे। करिया लउके वाला झण्डा अबहिंयो माखी पहाड़ पर फहरत रहे आ अहाता में उत्तरी फौज के एको सिपाही ना रहे।

वास्या समझ गइल जे एगो स्काउट के जिनिगी प्रकृति के नियम के अधीन बा। ऊ आज्ञाकारी लइका जस नाश्ता करे लागल। अबहीं ले ऊ ओह सभ बातन पर धेयान ना देले रहे, जवन टोह लगावे के कामे आवेला। ऊ अतने भर जानत रहे जे काम खतरनाक बा आ जिम्मेदारी के बा। ओकर कल्पना में कुछ पेचीदगी भरल धुँधराह तस्वीर बनल। वास्या के गिरफ्तार क लेहल गइल बा। शत्रु ओकरा से उत्तरी फौज के स्थिति के खोज–खबर लेत बा। बाकिर वास्या चुप्पी सधले बा भा जवाब देत बा –"तूँ लोग बाउर से बाउर जे करे के बा, ऊ कर, हम कुछुओ ना बतायेब।" ओकर बाप ओकरा के कहानी पढ़ के सुनवले रहले आ सेर्योजा ओह छापामार के अइसने वीरता भरल किस्सा सुनवले रहे, जेकरा के बन्दी बना लेहल गइल रहे। बाकिर वास्या खाली सपना ना देखत रहे। ऊ त यथार्थवादी रहे। एही से नाश्ता करत बेर ओकरा विचार में व्यंग्य के पुट रहे। ऊ अपना मतारी से पूछलस :

"बाकिर मान ले, अगर ओकनी के ई पूछे लाग सन जे तोर फौज कहँवा बा

www.bhojpurisahityangan.com

त एकरा से का फरक परी? ऊ त पहिलहीं से जानत बाड़े सन। काहेकि काल्ह साँझी के ओकनी के एगो बिगुल, एगो झण्डा आ सभकुछ साथे लेहले खुदे, हमनी के अहाता में आइल रहले सन।"

"अगर ओकनी के ई पहिले से मालूम बा त ओकनी के ना पूछिहें सन। ओकनी के कवनो आउर चीज के बारे में पूछिहे सन।" मतारी जवाब देहली।

"ऊ का पूछिहे सन?"

"ऊ पूछिहे सन जे तोरा लगे केतना सैनिक बा, केतना स्काउट बा, केतना बन्दूक बा।"

"वाह! हमनी के लगे त एको गो बन्दूक नइखे। खाली कुछ तलवार बा। माई, का ऊ तलवार के बारे में पूछिहे सन?"

"हम इहे उम्मीद करत बानीं। बाकिर हम सोचले रहनीं जे तें अपना के बन्दी ना बने देवे।"

"तब हमरा भागे के परी। ना त धरइला पर सवाल पूछे लगिहे सन। ऊ कवना तरे के यातना दीहे सन?"

"ई त शत्रु पर निर्भर बा। ई दक्षिणी दल वाला फासिस्ट त नइखन सन?"

"ना, नइखे। ऊ काल्हे एजुगिया आइल रहले सन। हमनिये जइसन बाड़े सन। सभकुछ एके जइसन बा। ओकनी के झण्डा हमनिये जइसन लाल बा आ ओकनी के लाल कहल जात बा, बाकिर ऊ दक्षिणी लाल दल बा।"

"अच्छा, अगर ऊ फासिस्ट नइखन सन त ओकनी के कवनो हाल में यातना ना देवे के चाहीं।"

त वास्या टोह लगावे के पहिलका काम घरे में क लेहलस।

जब वास्या अहाता में पहुँचल त फौजी लोग पहिलहीं से सक्रिय रहे। सेर्योजा के टोपी में एगो उजर–लाल झण्डा लागल रहे। ओकर उत्साह भरल गम्भीर मुद्रा ओकरा अगली–बगली खाड़ा किशोर योद्धा आ स्काउट के भाव जतावत रहे। ल्योविक, कोस्त्या, कुछ आउर बड़ लइका आ खुदे सेर्योजा आक्रमण के योजना पर विचार करत रहले सन। ओलेग अहाता में अगली–बगली भटकत रहे आ ओह बतकही के ईर्ष्या से सुनत रहे।

"काहे, का मतारी–बाप तोरा के आवे दी?" सेर्योजा पूछलस।

ओलेग आपन आँख झुका लेहलस।

"ना, ऊ लोग ना आवे दी। बाप कहत रहले जे हम देख सकत बानीं, बाकिर लड़ाई हरगिज नइखीं लड़ सकत।"

"तब आव, एगो स्काउट बन जो।"

ओलेग अपना फ्लैट के खिड़की ओर देखत मुड़ी हिलवलस। कोस्त्या आपन स्काउट के जुटावे लागल। मित्या वास्या के बगल में लकड़ी के कुन्दा पर बइठल रहे आ तनी गम्भीर लागत रहे। झगड़ा खतम करे के बारे में अपना बाप के सलाह इयाद करत वास्या मित्या के चेहरा के धेयान से देखलस। मित्या के चमकत आँख

www.bhojpurisahityangan.com

के हेने–होने घूरत रहे के लकम खतम ना भइल रहे, बाकिर ओकरा चेहरा मरुआइल आ गन्दा रहे। ओकरा मुड़ी के अस्त–व्यस्त बाल कवनो खेत में उगल खर–पतवार जस छोट–छोट गुच्छा में अझुराइल रहे।

"मित्या," वास्या कहलस, "आव हमनी के ई झगड़ा खतम क के दोस्ती क लेहल जाव।"

"हँ, आव क लेहल जाव, मित्या अपना चेहरा के भाव बदलले बिना कहलस।

"फेर हमनी के साथे–साथे रहल जाई।"

"साथे–साथे?"

"हमनी के साथे–साथे खेलल जाई आ तें हमरा साथे अइबे।"

"कहँवा?"

"हमरा घरे।"

मित्या उदास हो के दूर कतहूँ देखत पहिलहीं जस भाव शून्य स्वर में कहलस :

"नीमन बात बा।"

"का तोर बाप तोरा के बहुते मरले? काल्ह?"

"ना," मित्या अपना चेहरा के अवज्ञापूर्ण बनावत कहलस –"ऊ अपना पेट के असहीं घुमावत रहेले, बाकिर हम जानत बानीं जे ओह से कइसे बचे के चाहीं। उनकर वार हर बेर चूक जात रहे।"

मित्या तनी हुलसित भइल आ अपना साथी का ओर देखे लागल।

"तोर मतारियो तोरा के मारेली?

"ऊ काहे मारी? ओकरा एह से कवन वास्ता?"

कोस्त्या धउरल आइल, स्काउटन के गिनती कइलस, ओकनिये के बीचे बइठ गइल आ फुसफुसा के कहलस –"सुन साथी लोग। माखी पहाड़ के देखत बाड़ सन? लागत बा जे ओकनी के ओजुगिये बाड़े सन, ऊ दक्षिण दल वाला। सेर्योजा हमनी के दल के घुमा के सोझे ओकनी के पाछे से ले जाई आ तंग घाटी से हो के जाई। एह से जे ऊ हमनी के देख ना पाव सन। तबे ऊ ओकनी पर पाछे से हमला करी। बुझाइल?"

स्काउट इशारा कइले सन जे ओकनी के एह रणनीति के समझ गइल बाड़े सन।

"आ हमनी के ओह लोग पर सामने से हमला करे जा रहल बानीं।"

"बाकिर ऊ हमनी के देख लिहे सन," केहू एतराज जतावल।

"देखे दे। ऊ समझिहे सन जे सगरी फौज हमनिये के बानी सन। ऊ पाछे के तरफ देखबो ना करिहे सन।"

मित्या के अइसन उम्मीद पर शक रहे।

"तें बूझत बाड़े जे ऊ बुरबक बाड़े सन। ओकनी के लगले भाँप लिहे सन।"

"बाकिर धउरत खुलल मैदान में मत निकलिह सन। हर समय झाड़ी के

www.bhojpurisahityangan.com

अलोत में लुकाइल रहल ठीक रही, तब ऊ समझिहे सन जे इहे बड़हन लइकन के फौज बा। बुझाइल?"

कोस्त्या अपना आदमी के दूगो भाग में बाँट देहलस। बाँया भाग के ऊ अपने अगुवाई करे वाला रहे आ वास्या के आदेश देहल गइल रहे जे ऊ दाहिना तरफ आवे। आदेश रहे जे अगर दक्षिण दल हमला कइलस त ओकनी से उलझे के बजाय लुका जाइल जाव।

वास्या के लाइन में ओकरा समेत पाँच गो लइकन में मित्या, अन्द्रयूशा, पेत्या आ वोलोद्या रहले सन। एकनी के अपना राय के मामला में उल्लेखनीय रूप से स्वतंत्र रहले सन आ अपना पक्ष के समर्थन में तेज आवाज़ में बोलत रहले सन। लाइन से खाड़ा होखे के वास्या के पहिलके आदेश पर बगावत क देहले सन —"एकर कवनो दरकार नइखे, हमनी के स्काउट बानीं सन। हमनी के झुक के जाये के परी। पेट के बले रेंगत जाये के परी। जानत बाड़े। ओकरा कुछुओ पता नइखे जे ऊ का कहत बा।"

बाकिर वास्या अटल रहे।

"रेंग के जाये के कवनो दरकार नइखे। ई तब होला, जब टोह पर जाये के होला। हमनी के हमला करे जा रहल बानीं।"

वास्या के सेना से जुड़ल मामला में आपन अल्प—ज्ञान के धुँधला अहसास रहे, बाकिर स्काउट के तेज आवाज़ के चलते ओमे प्रतिरोध के भाव पैदा हो गइल। ऊ विद्रोहियन के हाथ धइले युद्ध खातिर जबरन लाइन के ओर धकेले लागल। केहू चिल्लाइल शुरू क देहल —"तोरा हमनी के हेने—होने धकेले के कवनो हक नइखे।"

सहजोग मिलबो कइल त एगो अनपेक्षित जगह से। मित्या सभसे पहिले लाइन में खाड़ा हो गइल। फेर ऊ डाँटत कहलस :

"बहुते चिल्ला लेहले सन," ऊ डाँट के कहलस, "वास्या हमनी के मुखिया बा। ऊ जवन कहत बा, ऊहे होखी।"

जब सभे लाइन में खाड़ा हो गइल त वास्या आपन लाइन के युद्ध स्थल का ओर ले चलल। ऊ अपना आदमी के आगे—आगे गर्व से चलत झण्डा के लगे जुटल फौज के बगल से होत गुजरल। सेर्योजा कूच करत एह लाइन के सराहना के साथे देखलस।

"ई ह तरीका! शाबास वास्या! असहीं हौसला बुलन्द रखिहे!"

वास्या अपना लाइन के तरफ मुड़ल आ अपना के पूरा तरे से कमाण्डर महसूस करत कहलस —"देखली, हम का कहले रहनीं?"

बाकिर स्काउट अपना कमाण्डर—इन—चीफ के सराहना से हुलसित रहे।

वास्या के लाइन माखी पहाड़ के लगहीं कुछ झाड़ी के पाछे आपन मोर्चा सम्हरलस। वास्या के बायें लगहीं एगो चोटी पर कोत्स्या अपना स्काउट के साथे रेत में डटल रहे। नीचे दाहिने ओर उजर—लाल झण्डा के झलक देखल जा सकत रहे। ओकनी के अगली—बगली से मुड़ के शत्रु पर पाछे से हमला करे वाला रहले

www.bhojpurisahityangan.com

सन।

माखी पहाड़ साफ नजर आवत रहे, बाकिर ओकर मुख्य चोटी एगो रेतीला टीला के पाछे तनी छुपल रहे। टीला पर एगो अकेला करिया आकृति खाड़ा रहे।

"ऊ ओकनी के सन्तरी बा," वोलोद्या कहलस।

"काश! हमनी के लगे दूरबीन रहित," अन्द्रयूशा आपन लालसा जाहिर कइलस।

वास्या के अफसोस होखे लागल। ऊ अपना बाप से दूरबीन माँगे के काहे ना सोचलस। आपन प्राधिकार आ सैनिक कुशलता देखावे के अइसन शानदार मोका गँवावल दुःख के बात बा। बाकिर चोटी का पाछे दक्षिण सेना के एगो बड़हन टोली के आगे बढ़त देखे खातिर दूरबीन के कवनो दरकार ना रहे। वास्या गैर–फौजी शत्रु के फौजियन के अइसन बड़हन दल के देख के बेचैनी से कुलबुलाइल। कोस्त्या के लाइन झाड़ी के पाछे से निकल के जोर से चिल्लात आपन हाथ हिलावल शुरू क देहलस। एह पर वास्या हाथ हिलावत अपना मुँह से युद्ध के चीत्कार जस कवनो आवाज़ निकललस। दक्षिणी सेना खामोशी से ओकनी के देखल। स्काउट सभे शोर मचावल बन्द क देहल। ई खामोशी कई मिनट ले बरकरार रहे। बाकिर अचके शत्रु दल के तीन गो आदमी अपना मुख्य सेना के छोड़ के तेजी से ओह टीला के चोटी का ओर लपकल। "हुर्रा" के आवाज़ लगावत ई तीनो ओह टीला पर खाड़ा अकेला आकृति के दबोच लेहले सन। फेर घसेटत अपना मुख्य सेना के लगे ले गइले सन। ऊ आकृति दर्दनाक आवाज़ में चिल्लाइल आ रोअल–धोअल शुरू क देहलस। वास्या आ ओकर स्काउट भय के मारे आपन आँख फरले शत्रु शिविर में होखे वाला एह विचित्र घटना के देखले सन। केहू समझ ना पावल जे हो का रहल बा? अन्द्रयूशा डेराते–डेरात एगो अनुमान लगवलस –"ऊ लोग आपन एगो गद्दार के पकड़ले बा।" बाकिर मित्या, जेकर आँख आउर लोग से जादे तेज रहे, हुलसित हो के कहलस –"हो–हो–हो, ऊ लोग ओलेग के ध लेले बा आ ओकरा के घसेटत ले गइल, ओलेग के!"

'का ऊ हमनी के आदमी ह? का ऊ हमनी के आदमी ह?" कई गो आवाज़ एके साथे आइल।

"ना, ऊ हमनी के आदमी कतई नइखे। ऊ केहू के नइखे। ओकर बाप ओकरा के इजाजत नइखन देले।"

"त ओकनी के ओकरा के काहे पकड़ले बाड़े सन?"

"ओकनी के कइसे पता जे ऊ कवन ह?"

ओलेग के घसीटत दक्षिणी फौज के लगे ले गइले सन। ऊ अइसन बजना बजनी करत रहे आ अतना जोर से चीखत चिल्लात रहे जे ओकरा के सुन के मुर्दा ले खाड़ा हो जाइत। स्काउट लोग हँसे के आवाज़ सुनल। पकिया तरे से ऊ दक्षिणी वालन के हँसी रहे। ओलेग चउतरफा घेराइल रहे।

"हा–हा!" मित्या कहलस, "ऊ तमाशा देखे आइल रहे आ कैदी बना लेहल

www.bhojpurisahityangan.com

गइल।"

एह समय ले कोस्त्या के लाइन झाड़ी के आड़ से बहरी निकल आइल रहे आ माखी पहाड़ का ओर ढलान से नीचे उतरत रहे। वास्या व्यग्र हो गइल।

"आव, चल आव।"

वास्या के आदमी अनुकूल स्थिति से निकल के नीचे उतरे लागल आ दाहिने झाड़ी के ओर बढ़े लागल। माखी पहाड़ ले सगरी ढलान वाला चढ़ाई साफे लउकत रहे। ओह पर शत्रु के झण्डा अपना पूरा शान से लहरात रहे। कवनो अजीब कारण से शत्रु स्काउट के सामना करे बदे आगे ना बढ़ल। अतने भर ना, ओकनी के अपना दल–बल का साथे पाछे आपन झण्डा के तरफ हटे लगले सन। माखी पहाड़ के तलहटी आ गइल रहे। अब ओकर लमहर ढलान पर चढ़ल आ शत्रु के लड़ाई में उलझावल भर ले बाकी रह गइल रहे। बाकिर दक्षिणी सेना "हुर्रा" के नारा लगावत आ धउरत दोसरा ओर चल परल। फेर ऊ गायब हो गइले सन। अब ऊ ना त लउकत रहले सन आ ना ओकनी के आवाज़ सुनात रहे। झण्डा के लगे खाली एगो आदमी रह गइल रहे– शायद एगो सन्तरी रहे। नीचे रेत में स्काउट के लगे ओलेग बइठल रहे आ शायद डर के मारे रोअत रहे।

कोस्त्या के एगो स्काउट धउरत आइल।

"हम सन्देशवाहक बानीं। हम सन्देशवाहक बानीं।" ऊ चिल्लाइल। "कोस्त्या कहलस जे हमनी के आगे बढ़ के ओकनी के झण्डा पर कब्जा क लेहल जाव।"

"वाह, वाह! का बात बा!" मित्या चिल्लात कहलस आ सभसे अगाड़ी माखी पहाड़ के तरफ बढ़ चलल।

वास्या लमहर साँस लेहलस। फेर ओह ढलान वाला चढ़ाई पर चढ़ल शुरू क देहलस।

ढलान बहुते दुर्गम रहे। दक्षिण वालन के गोड़ से अस रऊँदाइल रहे जे ओह पर चलल मोहाल रहे। वास्या के खलिहा गोड़ रेत में ठेहुना ले धँस गइल रहे। जब ऊ मित्या के पाछे–पाछे चलल त तेज हवा के झोंका से रेत उड़ के आँख में परत रहे। कुल्ह मिला के ऊ एगो कठिन धावा रहे। वास्या पसीना से तर–बतर हो गइल। जब ऊ आँख उठा के देखलस त शत्रु के झण्डा अबहिंयो ओतने दूर लागत रहे। वास्या देखलस जे झण्डा के निगरानी पर तैनात सन्तरी उतावला होत रहे। अजबे तरे से ऊपर–नीचे उछलत रहे आ पाछे ओर घबराहट में रह–रह के चीखत रहे।

तेज, आउर तेज! कोस्त्या बगल से झपट के चलत कहलस।

वास्या आउर तेजी से आपन गोड़ आगे बढ़वलस। ऊ एक–दू बेर फिसलबो कइलस। तबो मित्या के लगे पहुँचे में कामयाब हो गइल। मित्या, जे वास्या से कमजोर रहे, हर कदम पर ढिमला जात रहे। अइसन लागत रहे जे ऊ धउरे के जगह रेंगत बा। आउर स्काउट हाँफत पाछे–पाछे आवत रहले सन। कवनो एगो के गोड़ रह–रह के वास्या के एड़ी से टकरा जात रहे।

आपन आँख उठवला पर वास्या देखलस जे मंजिल नियरा गइल बा आ ऊ

www.bhojpurisahityangan.com

बकिया लोग से बहुते आगे बा। सन्तरी, जेकर चेहरा अपरिचित आ शत्रुतापूर्ण रहे, अब कुछुवे दूर रह गइल रहे। ऊ लगभग वास्या के उमिर के एगो छोटहने लइका रहे, बाकिर ओतना तगड़ा ना रहे। नगीच आवत शत्रु के भय से घूरत ऊ छोट–छोट हाथ से अचके झण्डा के डण्डा ध लेहलस आ ओकरा के जमीन से उखाड़े के कोशिश करे लागल। दक्षिण वालन के झण्डा बड़हन रहे। ओकर लाल पताखा वास्या के माथा के ऊपर फरफरात रहे। वास्या ढलान पर चढ़ाई के बाद तनी सपाट जमीन पर आपन रफ्तार तेज क देहलस। दक्षिण के ऊ सन्तरी जमीन से झण्डा उखाड़ लेहलस आ दोसरा ओर आपन बचाव खातिर धउरे लागल। वास्या चिल्ला के कुछ कहलस आ ओकर पाछा करे लागल। ऊ ओह दरद के महसूसो ना कइलस, जवन ओह झण्डा से ओकरा माथा में चोट लाग रहे। दक्षिण के ओह सिपाही में झण्डा के सोझ उठावे के कूबत ले ना रहे। ऊ इहो ना देख पवलस जे ओलेग ओकरा लगे से भाग गइल। वास्या एके झटका में चोटी पार क गइल। ओकर आपने वेग ओकरा के चोटी के दोसरका ढलान के ओर नीचे ले ढकेलत ले गइल, तबो ऊ होश ना गँववलस। ओकरा एह बात के भान रहे जे दक्षिण के सिपाही ओकरा अगली–बगली नीचे फिसलत जा रहल बा। एक सेकेण्ड बादे ऊ देखलस जे ऊ आपन शत्रु के पाछे छोड़त जा रहल बा। वास्या अपना एड़ी के रेत में धँसा देहलस, आपन रफ्तार पर लगाम लगवलस आ जसहीं ऊपर देखलस, तले दक्षिण के सन्तरी फिसलत ओकरा माथा के लगे धड़ाम दे गिरल। वास्या एगो कलाबाजी करत तनी कगरिया गइल। शत्रु झण्डा घसेटत सरसरा के निकल गइल, तले वास्या आपन मुँह नीचे कइले झण्डा पर कूद परल। पेट के बले तनी ससरल आ ओकर बायाँ हाथ झण्डा के कपड़ा में अझुरा गइल। विजय से हुलसित ऊ ऊपर देखलस। खाली मित्या ओकरा लगे रहे आ नीचे ढलान पर आपन वेग पर लगाम लगावे के कोशिश करत रहे। कोस्त्या आ आउर स्काउट शिखर पर खाड़ा रहले सन। ओकनी के चिल्ला के कुछुओ कहत नीचे के तरफ इशारा करत रहले सन। वास्या नीचे देखलस त ओकर छोट–छोट केश खौफ के मारे खाड़ा हो गइल। अजनबी लइका सभ ऊपर चढ़त ओकरा ओर आवत रहले सन। ऊहे मुखिया सभसे आगे धउरल आवत रहे, जेकरा टोपी में मुर्गा के पाँख लागल रहे आ जे दूत के रूप में काल्ह एकनी किहाँ आइल रहे। ओकरा पाछे–पाछे आउर लोग लड़खड़ात चढ़त आवत रहे। ओमे एगो उत्तरी सेना के उजर–लाल रंग के झण्डा दबवले रहे।

वास्या कुछुओ ना समझ सकल, बाकिर बिपत आवे के अन्देशा हो गइल रहे। भय से भकुआइल ऊ देखलस जे मित्या फिसलत सोझे शत्रु के बाँह में जा गिरल। वास्या ढलान के ऊपर भागे के कोशिश कइलस, बाकिर एगो ताकतवर लइका ओकर टँगड़ी ध लेहलस आ विजय के हुलास से गूँजत आवाज़ में चिल्लाइल –"ना, तें भाग नइखी सकत, छोटका चूहा। हम तोरा के ध लेले बानीं।"

उत्तरी सेना के पूरा तरे से सफाया हो गइल। माखी पहाड़ पर शत्रु से घेराइल वास्या दक्षिण सेना के विजय भरल आवाज़ सुनलस आ सभकुछ समझ गइल।

www.bhojpurisahityangan.com

ओकरा बगल में गुलथुल गुलाबी गाल वाला लइका के चेहरा शत्रु भइलो पर बड़ी मनोरम रहे, जे सभसे जादे बोलत रहे :

"का जीत रहल! कइसे लुढ़ुक गइले सन ओकनी के। ऊ, ऊहे ओकनी के कमाण्डर–इन–चीफ रहे।"

"किस्मत के बात बा। हमनी के ई छोकरा मिल गइल, ना त हमनी के जाल में फँसाइये देते सन।" ऊ पाँख वाला मुखिया ओलेग का ओर इशारा करत कहलस।

"ऊ ओकनी के सभकुछ बता देहलस," मित्या वास्या से फुसफुसात कहलस।

शत्रु आपन जीत के राज बतावे में एक दोसरा से होड़ में अझुराइल रहे। वास्या समझ गइल जे ओकनी के ओलेग से सेर्योजा के सगरी राज हासिल क लेले बाड़े सन। इहे कारण रहे जे ऊ आपन झण्डा छोड़–छाड़ के उत्तरी फौज के खदेरे गइल रहले सन। खाड़ा ढलान के किनारे सेर्योजा से सामना भइला पर ओकनी के मुँह पर रेत फेकले सन आ ओह लोग के घाटी के ताल का ओर लुढ़का देहले सन आ उत्तरी सेना के झण्डा समेत ल्योविक के ध लेहले सन। ल्योविक कुछुवे दूर झाड़ी के नीचे बइठल अपना अँगुरी में चुभल एगो काँट निकालत रहे।

"ए कैदी सभ! पाँख वाला मुखिया चिल्लाइल। तहनी के होजुगिये बइठे के बा।"

ऊ ओह जगह का ओर इशारा कइलस, जेने ल्योविक बइठल रहे। ओकरा बगले में अपमानित उत्तर सेना के झण्डा परल रहे। ल्योविक के अलावे तीन गो आउर कैदी रहले सन– वास्या, मित्या आ ओलेग। ओकनी के रेत में चुपचाप बइठल रहले सन। ल्योविक अपना अँगुरी के काँट निकललस। एक–दू बेर कैदियन के सामने ऊपर–नीचे टहललस। फेर एगो कगरी से नीचे ढलान पर भयानक रफ्तार से धड़धड़ात ससरे लागल। नीचे पहुँचते आपन पीयर रंग के टोपी उतरलस आ ओकरा के हवा में लहरावत कहलस –"अच्छा, नमस्ते! हम चलनीं भोजन करे।"

केहू ओकरा के पिठियावल ना। ई सभ वास्या के आँख के सोझा भइल, तबो एगो सपना जस रहे। वास्या पराजय के कड़ुवाहट भूला ना सकल। अब ओकरा शत्रु के कार्रवाई के सामना करे के रहे। ल्योविक के भाग गइला के बाद दक्षिण वाला एगो लइका सुझाव देहलस :

"एकनी के बान्ह देवे के चाहीं, ना त ई सभ भाग जइहें सन।"

"ठीक बा," दोसर कवनो जवाब देहलस –"आव, एकानी के टँगरी बान्ह देहल जाव।"

"आ हाथो।"

"बाकिर, अगर ओकनी के हाथ खुलल रही त ऊ आपन बन्धन खोल लिहे सन। ठीक ओही घरी ओलेग, जे मित्या के बगल में बइठल रहे, चीखत–चिल्लात हवा में कूदे लागल, "अरे, मर गइनीं रे, मर गइनीं! तें हमारा के चिऊँटी काहे कटली?"

दक्षिण वाला ठहाका लगा के हँसे लगले सन, बाकिर ओकनी के मुखिया

www.bhojpurisahityangan.com

मित्या के डँटलस।"

"तोरा चिऊँटी काटे के कवनो हक नइखे! तें खुदे एगो कैदी बाड़े।"

मित्या ओकरा ओर देखबो ना कइलस। एह पर मुखिया बिरनिया गइल।

"एकनी के हाथ–गोड़ बान्ह द सन।"

"हेकरा के?" ओकनी के ओलेग का ओर इशारा कइले सन।

"ना, एकर कवनो दरकार नइखे।"

दक्षिण वाला अपना कैदियन पर झपटले सन, बाकिर ओकनी के लगे बान्हे खातिर कुछुओ रहबे ना कइल। खाली एगो के लगे एगो बेल्ट रहे, बाकिर ऊ देवे से नकार देहलस –"मतारी बवाल खाड़ा क दीहें।"

वास्या शत्रु के भयानक चेहरा देखलस आ मने–मन ओलेग से घृणा करे लागल, काहेकि उत्तर वालन के पराजय आ वास्या के कष्ट के असली कारण ऊहे रहे। एगो दक्षिण वाला कतहूँ से गन्दा चिरकुट ले आइल आ वास्या पर चिल्लाइल –"आपन टँगरी हेने कर।"

बाकिर पहाड़ के चोटी से एगो पुकर आइल –"ऊपर हेजुगिया, ऊपर हेहीजा, ऊ आवत बाड़े सन। आपन रक्षा कर सन।"

दक्षिण वाला उत्तर वालन के धावा के सामना करे खातिर हवा जस लहरात धउरले सन। पहाड़ के चोटी पर खाली कैदी बाँचल रहले सन। लड़ाई लगहीं एगो ढलान पर चलत रहे। ओजुगिया से जयघोष, आदेश के स्वर आ हँसला के आवाज़ आवत रहे। मित्या रेंगत चोटी पर बढ़ल, बाकिर लड़ाई के स्थिति देखे खातिर ना। ऊ ओलेग के लगे पहुँच के ओकर टँगरी ध लेहलस। ओलेग हताश में चीखत मित्या के बगल में झाड़ी का ओर नीचे फिसल गइल। हुलास के मारे हँसत वास्या ओलेग के कमीज के एगो कोर ध लेहलस आ लगले ओकरा पर सवार हो गइल।

"आव, एकर पिटाई कइल जाव" मित्या सुझाव देहलस।

वास्या के जवाब देवे के मोका ना लागल। ओलेग, जे वास्या से जादे उमिर के आ मोट–झोंट रहे, ओकरा पकड़ से अईंठत–रेंगत निकल के भागल। झाड़ी के लगे ऊ फेर से पटका गइल। अबकी बेर मित्या ओकरा के एगो आउर चिऊँटी कटलस। एह पर ओलेग फेर चिल्लाइल आ अतना चीखलस जे ओकर होठ फइल के ओकरा कान ले चल गइल।

"आव, एकरा के एजुगिया से घसीटल जाव," वास्या हँसत कहलस।

"आ, तें चुपचाप चलबे कि ना?" ऊ ओलेग से पूछलस।

"हम कतहूँ ना जायेब। हम का कइले बानीं?"

"चल आव।"

दुनू मिल के ओलेग के ओही ढलान के तरफ ढकेलले सन, जवना राहे ल्योविक भागल रहे। चीखत–चिल्लात ओलेग रेत में लुढ़कत नीचे चलल। वास्या आ मित्या आपन एड़ी के रेत में धँसावत ओकरा बगल से नीचे उतर गइले सन। नीचे पहुँचे से पहिलहीं दक्षिण वालन के विजय के आवाज़ सुनाई परल। ओलेग

www.bhojpurisahityangan.com

अतना जोर से डँहकत रहे जे भागे वाला के कतहूँ लुकाइलो मोहाल रहे। ओकनी के फेर आसानी से धरा गइले सन।

ओह दुनू निर्भीक स्काउट के एक बेर फेर ओह कच्चा रेत पर लड़खड़ात पहाड़ के चोटी का ओर चले के परल। ओलेग चारो हाथ–गोड़े चलत रहे आ चलते–चलते रोअत रहे। राहे–बाटे चलत बेर मित्या ओकरा के एगो आउर चिऊँटी काटे में कामयाब हो गइल।

"ई लइका त आफत बाड़े सन!" पाँख वाला मुखिया कहलस। "एकनी के ओह रोवे वाला लइका के दिन भर परेशान करत रहिहे सन।"

"बेशक अइसने करिहे सन," केहू आउर सहमति जतावत कहल। "हमनी के लगे एकनी खातिर समय कहँवा बा? जसहीं उत्तर वाला हमला करिहे सन त एकनी के फेर से उपद्रव मचावल शुरू क दीहे सन।"

"एकदम सही," मुखिया कहलस, "हम तहनी के जाये देव, बाकिर तहनी के इज्जत के नाँव पर एगो वचन देवे के होखी जे सोझे घरे चल जइब सन आ अपना सेना में लवट के वापस ना अइब सन।"

"आ काल्ह का होखी?" वास्या पूछलस।

"काल्ह तहनी के जवन मन करे, तवन कर सकत बाड़ सन।"

वास्या मित्या के ओर देखलस :

"तोर का राय बा?"

मित्या बिना बोलले ओलेग के देखत आपन मुड़ी हिलवलस।

'हम एकनी के साथे नइखीं जात। एकनी के हमरा के फेर से चिऊँटी कटिहे सन। हम कतहूँ ना जायेब।" ओलेग कहलस।

हट्टा–कट्टा, सुन्दर आ हुलसित वास्या ओलेग का ओर आपन मुँह कइले खाड़ा रहे। ओकर बड़का–बड़का आँख के भाव से साफे झलकत रहे जे ओलेग घर जात समय कवनो तरे के दया के उम्मीद नइखे कर सकत।

मुखिया साफे बिखिया गइल।

"त हम तोरा के का करीं? तें त असहीं भारी–भरकम बाड़े आ ओपर से तोर इहे हाल बा!'

"हम तहनी के साथे चलब," ऊ रोअत कहलस आ स्काउट का ओर शक के भाव से देखलस।

"हमरा का, एजुगिये रह जो, ऊ खतरनाक ना रही! आ तहनी के चल जा सन," मुखिया कहलस।

स्काउट मुसुकी छोड़त घरे चल देहले सन। बाकिर, एकरा पहिले जे ऊ माखी पहाड़ से नीचे उतरते सन, तले दक्षिणी खेमा में फेर से खलबली मच गइल। ओकनी के रुक के देखे लगले सन। फेर दक्षिणी हमलावर के सामना करे खातिर धउर चलले सन।

"आव, हमनी के झाड़ी के पाछे से रेंगत चलल जाव," वास्या फुसफुसा के

www.bhojpurisahityangan.com

कहलस।

ओकनी के हाँफत–काँपत तेजी से वापस लवटले सन। आखिरी झाड़ी के पाछे उत्तर वालन के उजर–लाल झण्डा परल धूप में चमकत रहे। मित्या डण्डा ध के घींचलस आ झण्डा ससरत ओकरा लगे आवत गइल।

"अब भाग,' ऊ फुसफुसात कहलस।

"बाकिर हम ओकनी के....."।

"ओकनी के का?"

"ओकनी के झण्डा!"

"धत्त तेरे की! बाकिर ऊ कवन ओजुगिया खाड़ा बा।"

"ऊ ओलेग ह।"

मित्या हुलसित हो गइल आ एगो सहज मुसुकी ओकरा चेहरा पर पसर गइल, जवना से ऊ सुन्दर लागे लागल। ऊ वास्या के कान्हा धइलस आ सनेह से फुसफुसा के कहलस –"तें ले एकरा के आ ओलेग के हमरा पर छोड़ दे। ठीक बा?"

वास्य खामोशी से हामी भरत आपन मुड़ी हिलवलस। फेर ओकनी के हमला करे बदे आगे बढ़ गइले सन। ढलान पर विकट रफ्तार से नीचे फिसलत ओलेग जोर से चिल्लाइल। अइसन लागल जे कान के चादर फाट जाई। वास्या रेत से झण्डा घींचत बेर नीचे देखलस– ओजुगिया आपन भा शत्रु के फौज के कवनो चिन्हासी ले ना रहे। रण–क्षेत्र कतहूँ दूर सरक गइल रहे।

स्काउट पाछे हटल शुरू क देहल। ओकनी के ढलान से नीचे उतरले सन, बाकिर ओकरा बाद आगे बढ़ल मोसकिल रहे। झण्डा बहुते भारी रहे। तबे ओकनी के सूझल जे झण्डा के डण्डा में लपेट देहल जाव त झाड़ी के बीच घसेटे में सुबहिता होखी। कुछ समय ले ओकनी के पाछे देखले बिना चलत रहले सन। जब ओकनी के अइसन करत रहले सन त देखले सन जे माखी पहाड़ के शिखर पर खलबली मचल रहे। दक्षिण वाला ढलान पर हेने–होने भागत रहले सन आ हरेक खाई–खन्दक में झाँकत रहले सन।

"भाग, भाग," मित्या फुसफुसाइल।

ओकनी के आउर तेजी से धउरे लगले सन। जब ओकनी के मुड़ के देखले सन त माखी पहाड़ पर केहू ना रहे। मित्या के चिन्ता लेस देहलस।

"ऊ सब हमनी के पाछा करत होखिहे सन, सगरी के सगरी। अगर ओकनी के एह घरी हमनी के पकड़ लेहले सन त हमनी के बच नइखीं सकत।"

"त हमनी के का करीं?"

"का करीं? आव हमनी के एजुगिये मुड़ जाइल जाव। झाड़ी बहुते झंखाड़ बा। हमनी के लेट के एजुगिये दमी कछले रहेब सन। ठीक बा?"

ओकनी के बाँया ओर मुड़ गइले सन। हाली–हाली अइसन झाड़ झंखाड़ में पहुँचले सन, जवना के बीच से राह निकालल मोसकिल हो गइल। ऊ एगो छोटहन खुलल जगह पर रुक गइले सन, झण्डा के डण्डा के झाड़ी में खोंस देहले सन आ

www.bhojpurisahityangan.com

अपने रेत में घँस के चुपचाप लेटल रहले सन। अब ओकनी के खाली सुन सकत रहले सन, बाकिर देख ना सकत रहले सन। साँझी के चार बजल त फैक्ट्री के भोंपू बाजे लागल। कुछ समय बाद ओकनी के पीछा करे वालन के आवाज़ सुनाई परल। शुरू में हलुक आवाज़ आवत रहे। फेर आवाज़ तेज होत गइल। कुछुवे समय बाद शब्द साफ सुनाई परे लागल।

"हेजुगिया! ऊ एहीजा बाड़े सन!" एगो पातर आवाज़ में जोर देत कहलस।

"शायद अब ले ऊ अपना घरे पहुँच गइल होइहे सन," एगो आउर गम्भीर आवाज़ आइल।

"ना, अगर ऊ घरे गइल रहिते सन त हमनी के देख लेले रहतीं। एजुगिया से तें सभकुछ देख सकत बाड़े।"

"अच्छा त जो, ओकनी के खोज।"

"ऊ एजुगिये से गइल बाड़े सन। देख, ओकनी के गोड़ के चिन्हासी साफे लउकत बा।"

"हँ, ठीके कहत बाड़े।"

"देख, ओकनी के झण्डा के एही जगे से घसेटले बाड़े सन।"

चार गो नंगा गोड़ के छाप ओकनी के लउकल। स्काउट साफे दमी साध लेहले सन। ओकनी के चप्पा–चप्पा जमीन आ झाड़ी में हेने–होने देखत चलत रहले सन।

मित्या वास्या के कान में फुसफुसा के कहलस –"हमनी के आदमी आ रहल बा।"

"केने?"

"साँचो ऊ आ रहल बाड़े सन।"

वास्या सुनलस। बात सही रहे, दर्जन भर आवाज़ लगहीं से आवत रहे आ एमे कवनो सन्देह ना रहे जे ऊ एकनी के आदमी ह। मित्या उछल के खाड़ा हो गइल आ कानफोड़ आवाज़ में चिल्लाइल –"सेर्योजा आ..... आ..... आ!"

दुनू दक्षिण वाला जस के तस खाड़ा हो गइले सन। फेर हुलसित हो के मित्या पर झपटले सन। बाकिर मित्या के अब कवनो डर ना रहे। ऊ मुक्का चलवलस। ओकर आँख आक्रामक तरे से चमकत रहे।

"पाछे हट, पाछे हट। सेर्योजा– आव–आव!"

वास्या कूद के खुलल जगह में आ गइल आ शान्ति से शत्रु के देखे लागल। ओमे एगो गाढ़ लाल होठ वाला घाम में मरुआइल लइका ओकरा के देख के मुसुकी छोड़लस।

"तें काहे चिल्लात बाड़े? तें त पहिलहीं से धराइल कैदी बाड़े। झण्डा केने बा? बताव केने बा? ऊ वास्या के तरफ घूमत कहलस। वास्या आपन कन्धा उचका देहलस।

"एजुगिया कुछुओ नइखे। देख ले, कुछुओ नइखे! ओही घरी एगो डाढ़ कड़ाक

www.bhojpurisahityangan.com

दे टूट के गिरल। शत्रु दोसरा ओर भाग गइले सन।

मित्या फेर चिल्लाइल –"सेर्योजा आव..... आव!"

"एजुगिया का हो रहल बा?" ओह खुलल जगह में आवते सेर्योजा पूछलस। ओकरा पाछे सउँसे उत्तरी फौज ओकरे ओर देखत रहे।

"देख!" वास्या शत्रु के झण्डा खोलत कहलस।

"आ हमनियो के! हमनियो के!"

"का चमत्कार बा!" सेर्योजा हुलसित भाव से कहलस। "कइसन बहादुरी के कारनामा बा! हुर्रा!" सभे हुर्रा–हुर्रा चिल्लाइल। हरेक आदमी ओह बहादुरन से सवाल करे लागल। सेर्योजा वास्या के अपना कोरा में उठा लेहलस आ ओकरा के गुदगुदावत पूछलस :

"हम तोर आभार कइसे जताईं? तोरा के कवना तरे पुरस्कृत करीं?"

"आ मित्या के, ओकरो के", वास्या हँसत आ हवा में आपन गोड़ उछालत कहलस।

कइसन अद्‌भुत वीरतापूर्ण विजय दिवस रहे ऊ। माखी पहाड़ कइसन सुन्दर लागत रहे, जहँवा अब उत्तरी–सेना मुक्त भाव से घूमत रहे। सेर्योजा कहलस –"साथी सभे, आज जीत हमनी के रहल। हमनी के तीन बेर हमला कइनी सन, बाकिर हथियारबन्द शत्रु हमनी के हर हमला के विफल क देहलस। हमनी के नुकसान भयानक रहे। हम सोचनीं जे हमनी के पराजय हो गइल। हम भारी मन से लवटे लागल रहनीं, तबे हमरा पता चलल जे हमनी के वीर स्काउट वास्या आ मित्या पश्चिमी मोर्चा पर शानदार जीत हासिल कइले बा!....."

सेर्योजा आखिर में कहलस :

"हमनी के ई वीर अब अपना हाथे माखी पहाड़ पर झण्डा फहराई! आव सन एह झण्डा के धर सन।"

वास्या आ मित्या उजर–लाल झण्डा के थामत ओकर डण्डा के रेत में मजबूती से गाड़ देहले सन। उत्तर वालन के विजय घोष हवा में सगरो गूँजे लागल। थोरहीं दूरी पर दक्षिण वाला आपन मुँह लटकवले बइठल रहले सन। ओमे से कुछ लगे आ गइले सन। फेर कहले सन– ई अन्याय बा। हमनी के एह झण्डा के उतारे के हक बा!"

"हम माफी चाहब," सेर्योजा जवाब देहलस। का तहनी के झण्डा चार बजे से पहिले पकड़ल गइल?"

"मान ले अगर अइसने भइल होखे त....."।

"त अब का समय हो रहल बा? एह से तहनीं के चुप रह सन।"

कइसन अनोखा दिन रहे ई– यश आ वीरत्व से भरल।

"चल सन, अब हमरा घरे चल सन," वास्या कहलस।

मित्या सकुचा गइल। पता ना ओकर ओह शाश्वत आक्रमता के का हो गइल!

"हम नइखीं आवे के चाहत," ऊ फुसफुसा के कहलस।

www.bhojpurisahityangan.com

"चल ना। एके संगे खाना खाइल जाई। अपना मतारी से बता दे जे तें हमरा घरे जा रहल बाड़े।"

एमे बतावे के का बा?....."

"महज अतने बता दे जे तें हमरा घरे जा रहल बाड़े!"

"तें बूझत बाड़े जे हम अपना मतारी से डेरात बानीं? माई कुछुओ ना बोली। बाकिर ....."

"त आज सबेरे तें का कहत रहले?"

आखिर में मित्या राजी भइल। बाकिर जब ऊ डेहुरी ले पहुँचल त ऊ ओजुगिये थथम गइल।

"जानत बाड़े, तें एजुगिये रुक। हम एक सेकेण्ड में आवत बानीं।"

जवाब के इन्तजार कइले बिना ऊ अपना फ्लैट के तरफ धउर गइल। फेर दुइए मिनट बाद ओह टिन के डिब्बा के लेहले वापस लवटल। अब ओह डिब्बा में ना त काँटी रहे आ ना कवनो खान्हा।

"ई रहल तोर डिब्बा!"

ओकर चेहरा खुशी से दमकत रहे, बाकिर ओकर आँख स्थिर ना रहे।

वास्या भकुआ गइल।

"मित्या, तोर बाप तोरा के पीटिहें।"

"हुँह, पीटे दे। का तें बूझत बाड़े जे ऊ हमरा के अतना आसानी से पकड़ लिहें?"

वास्या सीढ़ी पर चढ़ल। ऊ फैसला कइलस जे दुनिया में खाली एके गो आदमी एह डिब्बा के समस्या के सुलझा सकत बा– ओकर बाप फ्योदोर नजारोव, सगरी दयालुता आ बुद्धिमता के स्रोत।

वास्या के मतारी लइकन के देख के अचरज में पर गइली।

"अरे वाह, तें त एगो मेहमान के ले आइल बाड़े! का ई मित्या ह। ई नीमन बात बा। बाकिर दइया रे दइया! तहनी के आपन का हाल बनवले बाड़न सन। तनी आपन चेहरा त देख सन। का करत रहले ह सन। चिमनी साफ करत रहले ह सन का।"

"हम लड़ाई लड़त रहनीं हँ," वास्या कहलस।

"हाय रे! जवन करत रहले। का तें देखे जोग बाड़े। फेद्या, तनी आ के एकनी के देख त।"

बाप अइले त खूबे जोर से ठहाका मार के हँसे लगले।

"वास्या, लगले जा के नहा ले।"

वास्या नहा लेहलस।

"बाबूजी, रउरा मालूम बा? ओजुगिया एगो युद्ध चलत रहल ह। हमनी के ओकनी के झण्डा पर कब्जा जमा लेहनी सन, हम आ मित्या!"

"हम ओकरा बारे में सुनहूँ के नइखीं चाहत। सिपाहियन के चाहीं जे पहिले

www.bhojpurisahityangan.com

नहा लेव। फेर बतकही करे।"

ऊ भोजन–कक्ष के दरवाजा के आधा बन्द क देहले। आपन मुड़ी बाहर निकाल के झँकले। फेर बनावटी सख्ती से कहले –"हम तोरा के भोजन–कक्ष में घूसे ना देब। मरूश्या, ओकरा के सोझे पानी में फेंक दे आ हेकरो के नीमन से धो दे। ओह! कइसन कालिया बनल बा। आ ई का ऊहे डिब्बा ह? ओ हो..... हम समझ गइनीं। बाकिर ना, हम तहनी जस फटीचर से बतकही नइखीं कर सकत।"

मित्या फर्श पर जहँवा के तहँवे खाड़ा रहे। ऊ सर्वाधिक हताशा भरल लड़ाइयो ले जादे भयभीत रहे। घबराइल आ भकुआइल ऊ दरवाजा का ओर पाछे हटे लागल, तले वास्या के मतारी ओकरा कन्धा पर आपन हाथ ध देहली।

"घबरो मत, मित्या, खाली नहाये के बा!"

थोरहीं देर में मतारी चउका से बाहर अइली। फेर अपना मरद से कहली –"शायद तूँ मित्या के बाल काटल ठीक समझब? ओकर माथा के धोवल मोसकिल बा।"

"ओकर मतारी–बाप एह पर कवनो एतराज त ना करी?"

"अरे, करे द। अपना बेटा के पीटल बाउर नइखे बूझत। ओकर सउँसे देह नीलाह दाग से भरल परल बा।"

"ठीक बा त हम ओकर बाल काट देत बानीं," नजारोव आलमारी से बाल काटे वाला कैंची निकालत खुशी–खुशी कहले।

पनरहे मिनट के अन्दर दुनू स्काउट साफ–सुथरा, सुघर आ गुलाबी बन के मेज पर बइठ गइले सन..... आपन साहसिक कारनामा से ओकनी के मन अस हुलसित रहे जे ओकनी के खाये के सुध ले ना रहे।

लइकन के कहानी के कबहूँ विस्मय से, कबहूँ हैरानी से, कबहूँ सहानुभूति से, कबहूँ दम ले के आ कबहूँ हँस के नजारोव एगो सैनिक के जिनिगी के उतार–चढ़ाव के आनन्द उठवले।

ओकनी के खाइल जसहीं खतम भइल, तले सेर्योजा धउरत आइल।

"हमनी के शूरवीर केने बाड़े सन? हाली से बाहर आव सन। दक्षिणी सेना के दूत कवनो समय एजुगिया धमक सकत बाड़े सन....."।

"दूत?" नजारोव अपना पेट के नीचे कमीज सोझ करत गम्भीरता से पूछले। "का हम ओजुगिया आ के देख सकत बानीं?"

उत्तरी सेना अपना पूरा दल–बल के साथे दूत से मिले खातिर एक जगे जुटल। ई साँच बा जे एकनी के लगे बिगुल ना रहे, बाकिर उत्तरी झण्डा माखी पहाड़ पर लहरात रहे।

बाकिर दूत के आवे से पहिले, ओलेग के मतारी धमक गइली।

"ओलेग केने बा? का ऊ तहनी के साथे रहे?" ऊ उत्तर वालन से पूछली।

सेर्योजा एह सवाल के टाले के कोशिश कइलस :

"रउआ त ओकरा के खेलहीं ना देहनीं।"

www.bhojpurisahityangan.com

"बाकिर ओकर बाप कहले रहले जे ऊ देख सकत बा....."।

"ऊ हमनी के साथे ना रहे....."।

"लइका सभ, का तहनी के ओलेग के देखल सन?"

"ऊ ओजुगिये घूमत रहे," ल्योविक कहलस, "ओकनी के ओकरा के कैदी बना लेहले सन।"

"कवन कैदी बना लेहलस?"

"काहे, दक्षिण वाला....."।

"ऊ केने बा? ओलेग अब कहँवा बा?"

"ऊ एगो गद्दार बा," मित्या कहलस। "ऊ ओकनी के सभकुछ बता देहलस आ अब ओकरा बापस आवे में डर लागत बा। बेहतर बा जे ऊ नाहिंये आवे।"

ओलेग के मतारी डेराइले मित्या के तरफ देखली।

एह समय मित्या के मुड़ी सोनहुला सेव जस दमकत रहे। ओकर चमकत तेज आँख में धृष्टता ना, बलुक जीवित आ पैनी नजर झलकत रहे। नजारोव आगे के घटना के दिलचस्पी से इन्तजार कइले। ऊ महसूस करत रहले जे घटनाक्रम तेजी से आगे बढ़ी। सुखद साँझ से मोहित हो के कन्दीबिन अपना फ्लैट से बहरी निकल अइले। ऊ नया आ चुस्त मित्या के नापसन्दगी से देखले, बाकिर अइसन लागत रहे जे कवनो कारण से उनका बाप के आपन अधिकार जतावे के कवनो जल्दीबाजी ना रहे।

ओलेग के नियति बदे अपना अगली–बगली लोग के उपेक्षा से दुखी ओलेग के मतारी फिकिराह हो के हेने–होने देखली। नजारोव के कौतुहलपूर्ण नजर के सामना भइला पर ऊ हाली–हाली उनका लगे अइली।

"कामरेड नजारोव बतावल जाव, हम का करी? हमार ओलेग गायब हो गइल बा। हम त फिकिर के मारे मुअल जात बानीं। हमार मरद के एह बारे में अबहीं कुछुओ पता नइखे।"

"ओकनी के ओकरा के कैदी बना लेहले सन," नजारोव मुसुकी छोड़त कहले।

"कइसन भयानक बात बा। कैदी बना लेहले सन। कइसन अजीब बात बा। लइका के हे तरे घसेटल, ऊ त खेल में शामिलो ना रहे!"

"इहे त बात बा। ओकरा खेल में शामिल होखे के चाहत रहे। रउआ ओकरा के अनुमति ना दे के गलती कइनीं।"

"सेम्योन एकरा खिलाफ बाड़े। उनकर कहनाम बा जे ई भयानक खेल बा!"

"खेल में कुछुओ भयावह नइखे। भयावह त राउर रवैया बा। लइका के अइसन हाल में डालल नीमन बात नइखे।"

"कामरेड नजारोव, लइका तरे–तरे के संकट में पर जाले सन। रउआ आँख बन्द कइले ओकनी के पाछे–पाछे नइखीं भाग सकत।"

"काहे आँख बन्द क के? आँख बन्द करे के कवनो दरकार नइखे। बाकिर लइकन के आपन जिनिगी जीये देवे के चाहीं....."।

www.bhojpurisahityangan.com

एही बीचे अहाता के छोटका फाटक खुलल आ तीन गो दूत गम्भीर मुद्रा में भीतर अइले सन। ओकनी के पाछे–पाछे धूर–माटी में सउनाइल आ लोराइल आँख वाला ओलेग के आकृति लउकत रहे। लागत रहे जे ऊ अपना ऊपर बहुते दुखी बा। एगो घबराहट भरल साँस ले के ओकर मतारी धउरत ओकरा लगे गइली। ऊ रोअत–बड़बड़ात आ लइकन का ओर अँगुरी उठावत ओलेग के हाथ धइले घर के तरफ चल देहली।

बाकिर लइकन के लगे ओलेग खातिर समय ना रहे। दक्षिणी सेना अइसन माँग राखत रहे, जे कबहूँ सुनल ना गइल रहे– झण्डा वापस लवटावल जाव आ उत्तर वाला एह बात के सँकारे जे ऊ लोग पराजित हो गइल बा। दूत के अनुसार वास्या आ मित्या के रिहा क देहल गइल रहे, काहेकि ओकनी के प्रतिष्ठा के वचन देले रहले सन जे ओकनी के ओह दिन लड़ाई में आगे भाग ना लिहे सन। ओकनी पर भरोसा कइल गइल, तबो आपन वचन ना निभवले सन।

"प्रतिष्ठा के वचन से तोर का मतलब बा?" सेर्योजा बिखियाइले कहलस, "युद्ध त युद्ध ह!"

"का? तें प्रतिष्ठा के आधार पर देहल वचन के खिलाफ बाड़े? पाँख वाला लइका हार्दिक क्षोभ से चिल्ला के कहलस।

"ओकनी के अइसन शायद जानबूझ के कइले होख सन? शायद ओकनी के प्रतिष्ठा के वचन तहनी के चकमा में डाले खातिर जानबूझ के देले होख सन।"

"प्रतिष्ठा के वचन?" ओहो त तहनी के एह किसिम के बाड़ सन! अरे ना, एक बेर वचन देहला पर ओकरा के निभावे के परेला....."।

"मसलन, मान ले तहनी के कवनो फासिस्ट ध लेहलस? ऊ कहे जे हमरा के प्रतिष्ठा के वचन दे! त? तें प्रतिष्ठा के अपना वचन के का करबे?"

"अच्छा त तहनी के अइसन बात करत बाड़ सन! मुखिया आपन हाथ के आसमान के तरफ नचावत कहलस। "फासिस्ट! आ हमनी के का बानी सन। हमनी के का समझौता भइल रहे? हमनी के समझौता में कहल गइल जे हमनी के लाल बानी सन आ तहनियों के लाल बाड़ सन आ फासिस्ट केहू नइखे! फासिस्ट! का बात कहले!?"

एह आखिरी तर्क से तनी घबरा के सेर्योजा वास्या आ मित्या से कहलस :

"का तहनी के प्रतिष्ठा के वचन देले रहले सन?"

मित्या शत्रु दल के मुखिया का ओर तिरस्कार से आपन आँख सिकोरलस :

"हम? वचन देहनीं?"

"त ना देहले का?"

"ना, हम कतई नइखीं देले।"

"तें देले रहले!"

"ना, हम ना देहनीं!"

"त का हम तोरा से ना कहनीं जे हमरा के आपन प्रतिष्ठा के वचन दे!"

www.bhojpurisahityangan.com

"बाकिर तें का कहले?"

"हम का कहनीं?"

"तोरा इयाद बा जे तें का कहले?"

"इयाद बा।"

"ना, नइखे।"

"का? हमरा इयाद नइखे?"

"नीमन बात बा, बताव हमरा के!"

"हम तोरा के बतायेब। बाकिर तें का सोचत बाड़े जे हम का कहनीं?"

"ना, तें बताव, अगर तोरा इयाद बा त....."।

"चिन्ता मत कर। हमरा इयाद बा, बाकिर तें का सोचत बाड़े?"

"अहा, हम का सोचत बानीं? तें कहले– हमरा के आपन प्रतिष्ठा के वचन दे जे तें वापस आपन सेना में ना जइबे। वास्या का ऊहो इहे ना कहलस?

"का फरक बा?"

बाकिर दुश्मन के दाव बेकार हो गइल रहे। उत्तर वाला हँसे आ चिल्लाये लगले सन।

"आ ओकनी के घरे चल अइले सन। प्रतिष्ठा के वचन। ई त नीमन चालाकी बा।"

एजुगिया ले जे कन्दीबिन, जे सामान्य तरे बहुते गम्भीर रहत रहले, खिलखिला के हँसे लगले।

"शैतान लइका। ओकनी के ठिकाने लगा देहले सन। बाकिर हमरा बेटा के अइसन हजामत के बनावल?

नजारोव कुछुओ ना कहले। कन्दीबिन लइकन के भीरी चल अइले। एह खेल में उनको मज़ा आवे लागल। जब ऊ उत्तर वालन के प्रस्ताव सुनले त बहुते हँसले। उनकर हँसी सहज आ लइकन जस प्रबल रहे। कई बेर त ऊ हँसत–हँसत बेदम हो गइले।

उत्तर वाला एगो प्रस्ताव रखले सन जे ओकनी के झण्डा माखी पहाड़ के चोटी पर तीन दिन ले फहरत रही। ओकरा बादे ऊ शत्रु के झण्डा लवटा दीहे सन आ फेर से एगो नया युद्ध शुरु करिहे सन। अगर शत्रु के ई पसन्द नइखे त "माखी पहाड़ हमनी के बा।"

दूत एह प्रस्ताव के सुन के मज़ाक उड़वले सन।

"वाह! तहनी के बूझत बाड़ सन जे हमनी के नया झण्डा नइखीं बनवा सकत? तहनी के कह सन त दर्जनो झण्डा बनवा सकत बानी सन! तहनीं के देखब सन काल्ह, माखी पहाड़ पर केकर झण्डा लहरात बा।"

"हमनी के देख लेब सन!"

"हमनियो के देख लेब सन!"

विदाई समारोह तनी जल्दीबाजी में भइल। दूत लोग तउआइले लवट गइल।

www.bhojpurisahityangan.com

उत्तरवाला सैनिक–शिष्टाचार के ताखा पर राखत पाछे से तंज कसले सन –"चाह सन त दस गो बनवा ल सन, ऊ सभ हमनी के होखी!"

"अच्छा, सेर्योजा आपन आदमियन से कहलस "हिम्मत हारला के कवनो दरकार नइखे, काल्ह के वक्त कठिन होखी!"

बाकिर ओकनी के एह वक्त के काल्ह ले इन्तजार ना करे के परल।

अपना फ्लैट से नीचे आवे वाला लमहर सीढ़ी से उतरत योजना विभाग के प्रधान, सेम्योन खुदे प्रकट भइले। उनकर भारी भरकम काया बिखियइला के मारे काँपत रहे। उनका पाछे ओलेग के दूबर–पातर आकृति लड़खड़ात आवत रहे।

सेम्योन आपन हाथ उठवले अइसन पातर आ तीखा हुक्मराना आवाज़ में बोलले, जे प्रसंगवश उनकर देह–दवासा से तनिको मेल ना खात रहे।

"ए लइका सभ। सुन सन, तनी एक मिनट रुक जा सन, रुक सन एक मिनट, हम कहत बानीं!"

"का मामला बा? ई काहे चिल्ला रहल बाड़े? के ह ई?"

"देख, कइसन जंगली बा ऊ! ऊ ओलेग के....."।

आखिरी सीढ़ी ले उतरे से पहिलहीं सेम्योन चीखे–चिल्लाये लागल रहले– "ई त गुण्डई, यातना आ हाथापाई बा। हम देखायेब तहनी के हाथापाई कइल का होत बा?"

ऊ धउरत लइकन के लगे पहुँचले।

"तहनी में वास्या कवन ह? ऊ केने बा?"

केहू ना बोलल।

"हम कहत बानीं जे वास्या कवन ह?"

वास्या घबरा के अपना बाप का ओर देखलस। ओकर बाप त अइसन बन गइले, जइसे उनका कवनो मतलबे ना होखे। वास्या झेंपल। फेर ऊ आपन विस्मित चेहरा ऊपर उठावत लयबद्ध आवाज़ में जोर से कहलस :

"वास्या? हमहीं वास्या हईं!"

"ओ हो, तें हईं! सेम्योन तउआइले कहले। "त तें रहले हमार बेटा के साथे गुण्डई करे वाला। आ दोसर? मित्या? केने बा मित्या?"

मित्या बिखिआइले आपन कन्धा उचकावत सेम्योन के घूर के देखलस।

"चिल्लात काहे बानीं? हमहीं मित्या हईं। का भइल?"

सेम्योन मित्या के तरफ छलाँग लगवले आ ओकर कन्धा के अइसन झकझोरले जे मित्या उनका अगली–बगली चक्कर खा के सोझे सेर्योजा के बाँह में जा के गिरल। सेर्योजा मित्या के लगले अपना पीठ के पाछे क लेहलस आ खुद अपने मुसकियात, बुद्धिमानी से सेम्योन के सामने खाड़ा हो गइल।

"केने बा ऊ? तें ओकरा के काहे छिपा रहल बाड़े? का तहनी के मिल के ओकरा पर धौंस जमावत रहले सन?"

सेम्योन सेर्योजा के पाछे अइसन उपहास से झँकले आ मित्या अस चतुराई से

www.bhojpurisahityangan.com

लुकाइल रहे जे लइका सभ जोर–जोर से हँसे लगले सन। सेम्योन के चेहरा लाल हो गइल। ऊ हेने–होने देखले आ समझ गइले जे आपन मज़ाक उड़ववला ले नीमन बा एजुगिया से लगले सरक जाये के चाहीं। अगर तनिको समय मिलल रहित त आपन बीख निकाले खातिर सोझे अपना अध्ययन–कक्ष में सरक गइल रहिते। बाकिर ओही घरी मित्या के बाप उनका सोझा आ गइले।

"हँ, त रउआ हमार बेटा से का चाहत बानीं?" ऊ आपन हाथ पाछे ओर क लेहले आ आपन माथा पाछे तरफ एह तरे ढकेलत पूछले जे उनकर टेंटुआ सोझे लउके लागल।

"का? रउआ का चाहत बानीं?"

"हम कुछुओ नइखीं चाहत। हम अतने जाने के चाहत बानीं जे रउआ हमार बेटा काहे चाहीं? शायद ओकर पिटाई करे के चाहत होखब? हमार नाँव कन्दीबिन ह।"

"अच्छा, त ऊ तहार बेटा ह?"

"ओ रे, ऊ एके मिनट में उनका पर वार करिहें!" मित्या जोर से कहलस।

एगो जोर से ठहाका लागल।

नजारोव हाली से ऊ दूनों बाप के लगे पहुँचले, जे दूगो लड़ाकू मुर्गा नियर एक दोसरा के घूरत रहे। वास्या आपन बाप के मोसकिल से पहचान सकल। ऊ अपना बाप के जोर से त ना, बाकिर अइसन बिखियाइल आवाज़ में कबहूँ ना देखले रहे। नजारोव कहले –"ई का हो रहल बा? एकरा के फौरन बन्द कइल जाव। दोसर जगह चलीं सभे। हमनी के ओजुगिये एह मसला पर बात कइल जाई।"

कन्दीबिन आपन हाव–भाव ना बदललले, बाकिर सेम्योन लगले समझ गइले जे एह हालात से बचे खातिर इहे सभसे नीमन उपाय बा।

"ठीक बा," ऊ बनावटी भाव से कहले। आईं सभे, हमरा अध्ययन– कक्ष में आइल जाव।"

ऊ अपना डेहुरी के तरफ चल परले।

"जा, जहन्नुम....."।

"आव, आव," नजारोव कहले, "अगर अइब त बेहतर होखी।"

"खाक होखी?" कन्दीबिन सेम्योन के पाछे चल परले।

सीढ़ी चढ़े वाला आखिरी आदमी नजारोव रहले। ऊ सीढ़ी चढ़त घरी लइकन के भीड़ से एगो आवाज़ सुनले –"बहुत बढ़िया वास्या! वास्या का ऊ तोर बाप हउवन? इहे त हमरा पसन्द बा।"

अपना अध्ययन–कक्ष में सेम्योन ना त चीख–चिल्ला सकत रहले आ ना कवनो झगड़ा–टण्टा खाड़ा कर सकत रहले– आखिर एगो मामूली लइका खातिर आपन प्रतिष्ठा गँवावल उचित ना रहे। ऊ अदब से कुरसी का ओर इशारा कइले। ऊ खुदे लिखे वाला मेज के पाछे कुरसी पर बइठ गइले आ मुसकइले :

"ई लइका सभ केहू के विक्षुब्ध करे खातिर काफी बाड़े सन।"

www.bhojpurisahityangan.com

बाकिर मेजबान के मुसकइला के अतिथि पर कवनो असर ना परल। नजारोव अपना भौंह के नीचे क के उनका ओर देखले।

"रउआ के विक्षुब्ध क देहले सन? रउरा तनिको अकिल बा?"

"राउर का मतलब बा?"

"रउआ लइकन के बीच में जा के चिल्लइनीं। ओकनी के पकड़ के झकझोरनीं। एकर का मतलब बा? रउआ अपना के बूझत का बानीं?"

"हम बूझत बानीं जे हमरा अपना बेटा के बचावे के हक बा!"

नजारोव खाड़ा हो गइले आ तिरस्कार से हाथ हिलवले।

"केकरा से बचावे के? रउआ ओकरा के कहिया ले अँगुरी ध के ले जायेब? जिनिगी भर?"

"आ रउआ का सोचत बानीं?"

"रउआ ओकरा के खेले काहे ना देहनीं?"

एह पर सेम्योन खाड़ा हो गइले।

"कामरेड नजारोव, हमार लइका हमार आपन मसला बा। हम ओकरा के ना जाये देहनीं, बस! हम समझत बानीं जे हमार प्राधिकार अबहिंयो चलत बा।"

नजारोव दरवाजा के तरफ बढ़ले। बाहर जात बेर ऊ पाछे मुड़ले।"

"खाली ई धेयान राखब जे राउर लइका एगो कायर आ गद्दार मत बन जाव।"

"ई कह के रउआ तनी ज्यादती नइखीं करत?"

"इहे हमार बोले के तरीका बा।"

"ई बतकही, जे संयमित ना रहे, के दरम्यान कन्दीबिन अपना कुरसी में खामोश बइठल रहले। उनका शैक्षिक–सिद्धान्त के बारीकी में कवनो रुचि ना रहे, बाकिर ऊ सेम्योन के अपना बेटा के साथे बेजाँय बेवहार ना करे दे सकत रहले। बाकिर प्राधिकार के मसला पर ऊ सेम्योन के बात से जादे खुश भइले। ऊ ई कहे के समय निकालिये लेहले :

"ई सही बात बा .....प्राधिकार!"

बाकिर ऊ नजारोव के गइला के बाद ओजुगिया जादे देर ले बइठल ना रह सकत रहले। जब ऊ सीढ़ी से नीचे उतरत रहले त नजारोव उनका से कहले– कन्दीबिन तूँ एगो नीमन आदमी आ बढ़िया श्रमिक बाड़। हम तहार आदर करत बानीं। बाकिर अगर तूँ अपना लइका के अब एको बेर पीटब त बेहतर होखी जे तूँ शहर छोड़ के चल जा। ना त हम तहरा के जेल भेजवा देब। समझ ल।"

"जा, जा! तूँ केकरा के डेरवावे के कोशिश करत बाड़?"

"हम अइसने करब, नजरोव कहले।"

"का माजरा बा? तूँ हमरा पाछे काहे परल बाड़? हम ओकरा के पीटत बानीं, ई का असल में पीटे वाला बात बा?"

"आज ऊ हमरा घरे नहइलस। ओकरा सउँसे देह में चोट के नीलाह दाग भरल–परल बा।"

www.bhojpurisahityangan.com

"का कहत बाड़?"

"ऊ एगो नीमन लइका बा। अगर तूँ अइसने करत रहब त तूँ ओकरा के साफे बर्बाद क देब।"

"बाकिर कबो–कबो आपन प्राधिकार जतावे के परत बा।"

"प्राधिकार, प्राधिकार, ई मूरख लोग के सिद्धान्त ह आ तूँ ओही के दोहरावत बाड़।"

"तूँ बड़ हुज्जती बाड़, नजारोव। हमरा से तहरा कवन शिकायत बा। भगवान जानत बाड़े जे ओकरा साथे कइसन बरताव होखे के चाहीं!"

"चल, हमरा घरे चल। ओजुगिये बतकही होखी। कुछ खाइल–पीयल जाई। आज हमार मेहरारू चीखना में पकौड़ी बनावत बाड़ी।"

"ई एकरा खातिर शायद सही मोका बा।"

"इहे चली।"

ग्रीश्का परिवार में प्राधिकार के मसला के अइसन मनोरंजन के साथे जोड़ देहल गइल रहे, जवना के आधार एह विचार पर टिकल बा जे मतारी–बाप आ लइकन के बीच दोस्ताना सम्बन्ध होखे के चाहीं।

अगर ई गम्भीर होखे त कवनो बेजाँय नइखे। बाप आ बेटा दोस्त हो सकत बा आ होखहूँ के चाहीं। बाकिर बाप त हरमेसा बापे रही आ बेटा त फेर बेटे रही। माने अइसन लइका, जेकर लालन–पालन के जरूरत परत बा आ ओकर लालन–पालन बापे करत बा। एह तरे ऊ आपन मित्रवत स्थिति के अलावे कुछ आउरो निश्चित गुण हासिल क लेत बा। बाकिर अगर मतारी–बेटी महज मित्र ना, खेल के सहेली होखे आ अगर बाप–बेटा महज मित्र ना, लँगोटिया यार होखे, लगभग मस्ती वाला संगी होखे त अतिरिक्त गुण लालन–पालन बदे जरूरी गुण, अनजाने में गायब होखे के सम्भावना जादे बढ़ जात बा। ग्रीश्का परिवार में ऊ साफे खतम हो गइल बा। एह परिवार में ई पता लगावल मोसकिल बा जे के केकर लालन–पालन कर रहल बा। खैर, जवन होखे। शैक्षिक प्रकृति के भावना लइका सभ जादे व्यक्त करे ले सन, काहेकि मतारी–बाप खेल के नियम के सही तरे से पालन करत बा आ एह नियम के सम्मान करत बा। जइसन तूँ दोसरा से चाहत बाड़, ओइसने बरताव ओकरो साथे कर– खेल त खेले ह!

बाकिर ई खेल आपन पुरातन के कबे गँवा चुकल बा। पहिले ई अतना नीमन, अतना आनन्दायी होत रहे –"गन्दा बाप, गन्दी मतारी!"

जब लाल्या पहिले–पहिल अपना बाप के ग्रीश्का कह के बोलवलस त ई परिवार बदे कइसन खुशी आ हँसी के मोका रहे। ग्रीश्का! ई ओह अद्‌भुत विचार के चरम बिन्दु रहे, शिक्षण वैज्ञानिक प्रतिभा के पराकाष्ठा रहे– मतारी–बाप आ लइका दोस्त रहत बा। गोलोवीन खुदे एगो मास्टर बाड़े। एह से एह दोस्ती के समझे में उनका ले बेहतर के हो सकत बा भला। ऊ एकरा के समझ लेले बाड़े। ऊ कहत रहले –"दुनिया खातिर हर नया चीज न्यूटन के सेब जस हरमेसा सहज बा।

www.bhojpurisahityangan.com

मतारी–बाप आ लइकन के बीच सम्बन्ध के दोस्ती के आधार पर बनावल केतना सहज बा, केतना सुन्दर बा ई!"

ऊ खुशी अब दुर्भाग से, अतीत के चीज हो गइल बा। अब दोस्ती से ग्रीश्का परिवार के दम घुट रहल बा। ऊ ओह लोग के दम घोटत जा रहल बा आ ओकरा से बाहर निकले के कवनो राह नइखे लउकत– तनी दोस्त के आज्ञाकारी बनावे के कोशिश त करीं।

पनरह बरीस के लाल्या अपना बाप से कहत बिया –"ग्रीश्का, निकोलायेव परिवार में रात के खाना खात बेर तूँ फेर ऊहे सड़ियल बतकही लगवले रहल।"

"कइसन सड़ियल बात?"

"कइसन? अरे ऊहे आपन दर्शन बघारल –"येसेनिन ह्वास के सौन्दर्य बा!" हमरा त सुनिये के लाज लागत रहे। ई अतना पुरान चीज बा। ई त लइकन खातिर बा। तूँ येसेनिन के बारे में का जानत बाड़? तूँ मास्टर अपना स्कूल के नेक्रासोवों आ गोगोलों से सन्तुष्ट नइख रह सकत। अब तूँ येसेनिन पर हाथ आजमावत बाड़...."।

ग्रीश्का नइखन जानत जे अपना सम्बन्ध के अपरोक्षता आ सहजता पर हुलसित होखस भा अपना गँवारु सोभाव पर आपन माथा पीटस। ले दे के हुलसित रहे में जादे शान्ति बा। कबो–कबो ऊ एह समस्या पर विचार करत रहले, बाकिर ऊ एगो दोसर समस्या पर विचार कइल छोड़ देहले– ऊ कवना तरे के आदमी के पाल–पोस के बड़ कर रहल बाड़े? दोस्त बने के खेल अपने बूता पर चलत रहे, काहेकि ऊ एह मामला में कुछुओ करियो ना सकत रहले।

पिछिला बरीस लाल्या सामान्य स्कूल छोड़ देहलस आ कला स्कूल में नाँव लिखवा लेहलस। ऊ कला के जोग नइखे। ऊ महज "कलाकार" शब्द के शानदार माने से आकर्षित बिया। ग्रीश्का आ वार्का दूनों जन एह बात के जानत बा। ऊ लोग एह बारे में लाल्या से बात करे के कोशिश कइल, बाकिर लाल्या ओह लोग के दखल के नकार देहलस।

"ग्रीश्का, हम तहरा कवनो मामला में दखल ना करीं, एह से तूँ हमार मामला में आपन टँगड़ी मत अड़ाव। असहूँ तूँ कला के बारे में जानते का बाड़?"

आ ल्योविक कइसन बन रहल बा। के जाने। जवन होखे, ओकरा में दोस्त जइसन कुछुओ नइखे।

ग्रीश्का आ वार्का के जिनिगी असहाय आ दुखद हो गइल बा। ग्रीश्का ओह के हँसी–खुशी के बात से सँवारे के कोशिश करत बाड़े, बाकिर वार्का त इहो नइखी कर सकत। आज–काल्ह ऊ लोग शिक्षा के ओह महान दोस्ती वाला चरचा ले नइखे करत। दोसरा लइकन पर छुपल ईर्ष्या से देखत बा, जे अपना मतारी–बाप से दोस्ती के एतना बड़हन खुराक नइखे पीयले।

वास्या से मिलला पर ओह लोग के अइसने ईर्ष्या के अनुभव होत बा।

ऊ अबे–अबे टिन के डिब्बा लेहले कमरा में घुसत बा। ग्रीश्का आपन कॉपी

www.bhojpurisahityangan.com

छोड़ देत बाड़े आ वास्या के तरफ देखत बाड़े। शान्त, मिलनसार आ तन्दरुस्त लइका देख के उनका प्रसन्नता होत बा।

"बेटा तोरा का चाहीं?"

"हम डिब्बा ले आइल बानीं। ई लाल्या के ह। लाल्या केने बिया?"

"अरे हँ, हँ, हमरा इयाद परल। तें वास्या हई?"

"हँ, आ रउआ..... राउर का नाँव ह?"

"हमार..... हमार नाँव ग्रिगोरी कोंस्तान्तीनोविच ह।"

"ग्रिगोरी कोंस्तान्तीनोविच? बाकिर ऊ त रउवा के कुछ आउर नाँव से बोलावे ले..... ग्रीश्का? ई ठीक बा नू?"

"हँ..... ठीक बा। अच्छा, बइठ जो। हमरा के बताव जे तोर का हाल बा?"

"एह घरी हम युद्ध पर बानीं। होने..... माखी पहाड़ पर।"

"युद्ध? आ का पहाड़ ह ई?"

"देखीं, रउआ खिड़की से सभकुछ देख सकत बानीं। देखीं, ओजुगिया झण्डा, ऊ हमनी के झण्डा ह।"

ग्रीश्का खिड़की से झँकले आ झण्डा समेत पहाड़ देखले।

"का ई युद्ध लमहर समय से चल रहल बा?"

"दू दिन हो गइल।"

"ओजुगिया के लड़ रहल बा?"

"सगरी लइका। राउरो बेटा ल्योविक बा। काल्ह ऊ बन्दी बना लेहल गइल रहे।"

"अइसन बात बा? बन्दी बना लेहल गइल?" ल्योविक! दोसर कमरा से लाल्या प्रकट भइल।

"सबेरहीं से अब ले ल्योविक लउकाबो ना कइल। ऊ त दिन के खाना खाये ले ना आइल।"

"ऊ युद्ध में व्यस्त होखी। खैर, वास्या तोर डिब्बा ले आइल बा।"

"अरे वाह, वास्या, तें डिब्बा ले अइले। तें भलमानुष बाड़े!"

लाल्या आपन हाथ वास्या के लगे राखत ओकरा के बगल में बइठा लेहलस।

"हमरा एह डिब्बा के दरकार रहल ह। तें केतना प्यारा बाड़े। तें अतना प्यारा काहे बाड़े? इयाद बा, हम तोरा के कइसे मरले रहनीं? इयाद बा?"

"कवनो बात ना। कवनो ख़ास चोट ना लागल रहे। का तें सबके पीटेली? ल्योविको के?"

"देख, ग्रीश्का, केतना प्यारा लइका बा। तनी देख!"

"हँ–हँ, देखत बानीं।"

"काश तोरा आ वार्का के अइसने बेटा रहित!"

"लाल्या!"

"बस! इहे त तूँ कह सकत बाड़ 'लाल्या'! अगर एगो आवारा छोकरा के जगह

www.bhojpurisahityangan.com

हमरो एगो अइसने भाई होखित। ऊ त असली आवारा बा। आज सबेरहीं ऊ हमार हरियर बटुवा बेच अइलस।"

"का कह रहल बाड़ी, लाल्या, साँचो?"

"हँ, कवनो लइका के, पचास कोपेक में। फेर ओह पइसा से अपना खातिर कौवा के एगो बच्चा कीनले आइल। अब ऊ ओकरा के डेहुरी में धइले बा आ ओकरा के सतावे में अझुराइल बा। इहे बा तहार लालन–पालन।"

"लाल्या!"

"तनी उनका के देख, वास्या! ऊ आउर कुछुओ नइखन कह सकत। खाली तोता जस रट लगा सकत बाड़े।"

"लाल्या!"

वास्या जोर से हँसलस आ ग्रीश्का के अइसे घूरे लागल, जइसे ऊ कवनो विचित्र विदेशी परिन्दा होखस।"

बाकिर ग्रीश्का बाउर ना मनले, ना ऊ दरवाजा भड़ाम दे बन्द कइले आ ना कमरा से बहरी निकलले। आउर त आउर ऊ संकोच से तनी मुसकइबो ना कइले।

"हम ल्योविक आ तोरा दुनू के एवज में वास्या के लेवे खातिर तइयार बानीं!"

"ग्रीश्का, तूँ ल्योविक के बारे में जवन मन करे बोल सकत बाड़, बाकिर हमरा बारे में फेर कबहूँ मत बोलिह।"

ग्रीश्का आपन कन्धा उचकवले। ऊ आउर करियो का सकत रहले?

वास्या के 'अहाता' आ 'कुचुगुरी' दुनू जगह जिनिगी चलत रहे। उत्तर आ दक्षिण वालन के युद्ध में दुनू पक्ष के भाग्य के उठा–पटक चलत रहे। अनेक जीत आ हार भइल आ वीरता के कारनामा कइल गइल। बिसवासघात के घटना घटल। ल्योविक उत्तर वालन से बिसवासघात कइलस। ऊ शत्रु पक्ष के साथे दोस्ती क लेहलस भा शायद ऊ दोस्ती ना कुछुओ आउर रहे। जब तीन दिन बाद ऊ उत्तरी सेना में भर्ती होखे के चहलस त सेर्योजा आदेश देहलस जे ऊ सैनिक अदालत के सामने पेश होखे। ल्योविक आदेश के पालन कइलस, बाकिर ओकर कवनो नतीजा ना निकलल– अइसन गद्दार के माफ करे से सैनिक अदालत साफे नकार देहलस। ल्योविक एह बात के बाउर ना मनलस आ बिखिअइबो ना कइलस। ऊ एगो नया मनोरंजन खोज लेहलस। 'कुचुगुरी' के कगरी कतहूँ, ऊ अपना खातिर एगो गुफा खोनल शुरू कइलस। ओकरा बारे में कई गो किस्सा सुनवलस। इहो बतवलस जे ओजुगिया केतना टेबल आ केतना खान्हा बा। बाद में ओह गुफा के बात सभे बिसर गइल आ खुदे ल्योविक के इयाद ले ना रहे।

युद्ध अतना लमहर समय ले ना चल सकल जे कवनो एक पक्ष के पूरा तरे से पराजय हो जाव। जब सैनिक कार्रवाई दूर दक्षिण के तरफ चलत रहे त विरोधी फौज घास के तट वाला एगो सुघर झील के लगे चहुँपल। ओजा झील से परे चेरी के बाग, सूखल घास के ढेर, सारस के शकल के इनार आ कुटिया पर ओह लोग के नजर परल। ऊहे कोर्चागी गाँव रहे।

www.bhojpurisahityangan.com

दक्षिण वालन के पहल पर युद्ध के तुरते बन्द करे आ नया इलाका के खोज खातिर एगो अभियान दल गठन करे के फैसला लेहल गइल। जब वास्या के बाप एमे भाग लेवे के फैसला कइले त अभियान शानदार पैमाना पर विकसित भइल। वास्या त खुशी के मारे कई दिन ले हँसत–मुसकियात अहाता में हेने–होने घूमत रहल।

अभियान चार बजे भोर से देर साँझ ले चलल। एकर सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि कोर्चागी में एगो ताकतवर संगठन के खोज रहे। ओकरा के देख के सेर्योजा आपन उद्‌गार प्रकट कइलस :

"ई बा केहू, जेकरा से लड़ल जा सकत बा। इहे त हम देखल पसन्द करत बानीं।"

कोर्चागियन के आपन फूटबाल के मैदान रहे। ओमे असली गोल पोस्ट बनल रहे। अभियान दल अइसन बेहतरीन सभ्यता के देख के हतप्रभ रहे। कोर्चागी के लइका सभ एगो दोस्ताना मैच खेले के सुझाव देहले सन, बाकिर एह नेवता के जवाब में अभियान दल झेंपला के अलावे कुछुओ ना कह पावल।

वास्या के अपना साथे ले के जिनिगी चलत रहल। ओकरा खिलौना–संसार में मोटर–कार आ रेल अबहिंयो खाड़ा रहे। एगो बूढ़ आ टूटल–फूटल बांका–वस्तांका अबहुँओ ओकर रखवाली करत रहे। पुल निर्माण के सामान आ सुन्दर डिब्बा में राखल काँटी सभ ठीक–ठाक रहे। बाकिर ऊ सभ अतीत के सामान बन गइल रहे।

कबो–कबो वास्या अपना खिलौना संसार के सामने खाड़ा हो जाव आ ओकर नियति पर विचार करे, बाकिर अब ऊ हुलास आ सपना ना जगावत रहे। वास्या के लइकन का साथे अहाता में जाये के मन करत रहे– जहँवा युद्ध लड़ल जात रहे, जहँवा झूला झूलल जात रहे, जहँवा नया शब्द 'इनसाइड लेफ्ट' आ 'हाल्फ बैक' सुने के मिलत रहे आ जहँवा जाड़ा के दिन में पहाड़ी के ढलान पर स्लेजगाड़ी से फिसले के सपना अबहिंये से देखे लागल रहे।

एक दिन बाप आ बेटा दुनू जन एके जस खिलौना संसार के सामने खाड़ा रहे। बाप कहले –"वास्य, अइसन लागत बा जे तें बड़ भइला के बादे ओह पुल के बनइबे त ऊ असली पुल होखी आ असली नदी के ऊपर होखी।"

वास्या क्षण भर विचार कइलस। फेर जवाब देहलस –"बाकिर ओकरा के बनावे में समरथ होखे बदे..... पहिले हमरा ढेर पढ़े के परी। बाकिर एह समय का होखी?"

"एह समय हमनी के एगो स्लेजगाड़ी बनावे जा रहल बानी सन। अब बर्फ गिरे में कुछुवे समय रह गइल बा।"

"एगो हमरा खातिर आ एगो मित्या बदे।"

"जरूर। अच्छा, ई बात तय हो गइल। बाकिर कुछ आउरो बात बा– एह गरमी में तें तनी सुस्त रहल बाड़े।"

"कइसे?"

www.bhojpurisahityangan.com

"तें आलमारी के खान्हा शायदे कबहूँ साफ करत बाड़े। अखबार सरिहा के नइखे राखल, फूल में पानी नइखे पटवल। अब तें बड़ हो गइल बाड़े। हमरा तोर कामकाज बढ़ावे के परी। तोरा रोज सबेरे कमरा में झाड़ू लगावे के परी।"

"बाकिर रउआ एगो नीमन बेहारी कीन दीं– ओइसने जइसन कन्दीबिन के घरे बा।"

"अरे ऊ बेहारी ना बढ़नी ह", ओकर बाप गलती सुधारत कहले।

एह घरी कन्दीबिन परिवार में एगो असली पुनर्जागरण काल चलत रहे। एह युग के प्रतिक ऊ बढ़नी रहे, जवना के कन्दीबिन नजारोव के घरे पकौड़ा खाये आ वोद्का के जाम पीये के दोसरका दिने कीनल बेसहल कइले रहले। ऊ वास्या के बाप के साथे अपना बतकही में बेसी अड़ियलपन देखा सकत रहले। बाकिर जब लगे डिकैन्टर राखल होखे, मेज पर खट्टा मलाई के बड़हन कटोरा भरल होखे आ जब मेजबान उनका थरिया में पकौड़ा राखत कहे –"तहार मित्या केतना नीमन लइका बा। हमरा खुशी बा जे वास्या आ ऊ दोस्त बन गइल बाड़े सन," त ऊ अइसन कइसे कर सकत रहले!

एह से कन्दीबिन ईमानदारी से एगो आज्ञाकारी अतिथि बने के कोशिश कइले। नजारोव जे कहले ऊ उनका नीमन लागल। नजारोव बे–लाग–लपेट के साफ बात कहले–

"हमरा के रोकिह मत! हम तहरा से जादे सीखले आ पढ़ले बानीं। बहुते देश–दुनिया देखले बानीं। तूँ अगर हमरा से ना त केकरा से सलाह लेब? तहरा चाहीं जे तूँ अपना बेटा से आ आपन गिरस्ती में अलग बेवहार कर। तूँ एगो समझदार आदमी बाड़। अइसन नीमन लइका के पीटला के कवन तुक बा। ई त शालीन बात नइखे, बुझाइल। ई त बे पतलून पहिरले सड़क पर चले जइसन हरकत बा। तूँ ई पकौड़ा खा, बड़ सवदगर बा। अफसोस बा जे तहार मेहरारू एजुगिया नइखी .... खैर फेर कबहूँ आउर बेर जुटान होखी।"

कन्दीबिन पकौड़ा खइले, झेंपले आ हर बात से सहमत भइले। जब जाये के समय नियराइल त ऊ नजारोव से कहले– नजारोव, एह बतकही खातिर शुक्रिया। जब तहरा फुर्सत होखे त आ के देख जे हमनी के कइसे रहत बानी सन। हमरो मेहरारू पोल्या नीमन पकौड़ा बनावेली।

वास्या के कहानी खतम हो गइल। एकर मकसद उपदेश देहल नइखे। हम बारीकी के बिना जिनिगी के एगो छोटहन अंश के, ओह हिस्सन में से निकाल के एगो हिस्सा देखावे के चाहत रहनीं, जे रोजे हमनी के आँख के सोझा सैकड़न के संख्या में गुजरत बा आ जे हमनी में से कुछुवे लोग के धेयान देवे जोग लागत बा। ई हमार बड़हन सोभाग रहे जे हम वास्या के जिनिगी के सर्वाधिक जवाबदेह आ निर्णायक क्षण पर ओकरा साथे रहनीं। जब एगो लइका पारिवारिक घोंसला के सुखद गरमाहट छोड़ के जिनिगी के खुलल राह पर आवत बा, जब ऊ पहिला बेर समूह के सदस्य बनत बा, एह से पहिला बेर एगो नागरिक बनत बा।

www.bhojpurisahityangan.com

एह संक्रमण के टालल नइखे जा सकत। ई ओतने सोभाविक आ महत्वपूर्ण बा, जेतना स्कूल के पढ़ाई खतम कइल, पहिलका दिने काम पर गइल भा बियाह कइल। सगरी मतारी–बाप एह बात के जानत बा, तबो ओमे से बेसिए लोग एह निर्णायक मोका पर अपना लइका के असहाय छोड़ देत बा। जे अइसन करत बा, ऊ ऊहे लोग बा जे पैतृक शक्ति के कारण जादे आन्हर बा भा मतारी–बाप होखे के देखावा करत बा।

लइका एगो जीवित आदमी बा। ऊ कवनो हाल में हमनी के जिनिगी के गहना भर नइखे। ऊ खुदे अपने में एगो अलगे जिनिगी बा। एगो लइका के भावना शक्ति, गहन संवेदनशीलता, संकल्प के शुद्धता आ सौन्दर्य के हिसाब से आँकला पर ओकर जिनिगी वयस्क लोगन के तुलना में अतुलनीय रूप से जादे समरथ बा। एही से ओकर विविधता शानदार भइला के साथे खतरनाको बा। एह जिनिगी के सुख–दुःख बेसी गहनता से ओकरा मन के मह देत बा। समूह के सदस्यन का बीच लगले ओकर नीमन चरित्र के आउरो दुराचारी, अबिसवासी आ एकाकी चरित्रन के जनम देवे में समरथ हो जात बा।

जब रउआ एह पूर्ण, विषद आ कमनीय जिनिगी के हरमेसा देखब आ जानब, एह पर सोच–विचार करब आ एमे भाग लेब, तबे राउर मतारी–बाप वाला प्राधिकार कारगर आ उपयोगी होखी। काहेकि ई ऊ शक्ति बा जे रउआ खुद अपना व्यक्तिगत आ सामाजिक जिनिगी में पहिलहीं से जोगा के रखले बानीं।

बाकिर अगर राउर प्राधिकार एगो बेजान रंगल गुड़िया जस लइका के जिनिगी के बाहरी क्षेत्र में खाड़ा रहत बा, अगर लइका के चेहरा, ओकर हाव–भाव, मुसुकी, चिन्तनशीलता आ आँसू रउआ से अनदेखा रह जात बा, अगर राउर बाप रूप से नागरिक रूप बेमेल बा त राउर प्राधिकार चाहे ऊ कवनो तरे के क्रोध भा पेटी–सेटी से लैश काहे ना होखे, ऊ एकदमे गइल गुजरल बा।

अगर रउआ अपना लइका के पीटत बानीं त ऊ लइका खातिर हर हाल में एगो त्रासदी बा, या त दरद आ चोट के त्रासदी भा आदतन उपेक्षा आ हठ भरल बचकाना सहिष्णुता के त्रासदी।

बाकिर ऊ त्रासदी लइकन के बा। रउआ अपने एगो सुदृढ़ वयस्क आदमी, एगो व्यक्ति आ नागरिक, दिमाग आ पेशी वाला एगो प्राणी बानीं, जे विकसित होत लइकन के कमजोर, कोमल शारीर पर घूँसा चलावत बानीं– रउरा का बानीं? सभसे पहिले रउआ असहनीय रूप से उपहास के एगो पात्र बानीं। अगर रउआ लइका खातिर दुःख ना होखित त राउर शैक्षिक बर्बरता देख के अतना हँसी आ सकत बा जे हँसत–हँसत आँख भर जाई। रउरा बारे में सर्वोत्तम बात इहे कहल जा सकत बा जे रउआ अपना लइका के लालन–पालन में जुटल एगो बनमानुष से मिलत–जुलत बानीं।

रउरा बूझत बानीं जे ई अनुशासन खातिर जरूरी बा?

एह तरे के मतारी–बाप के अनुशासन कबहूँ नइखे चलत। ओह लोग के

www.bhojpurisahityangan.com

लइका ओह लोग से महज घबराले सन आ ओह लोग के प्राधिकार आ सत्ता के दायरा से अपना के बचावे के जतन करेले सन।

अकसरे ओतने जंगली आ ओतने विनाशक एगो बचकाना निरंकुशता मतारी–बाप के निरंकुशता के साथे रहल आ परिवार में रहे बदे जोगाड़ बइठा लेले सन। ई बचकाना दुराग्रहिता के, पारिवारिक समूह के वास्तविक अनिष्ट के शुरुआत ह।

जादेतर दुराग्रहिता मतारी–बाप के निरंकुशता के खिलाफ सोभाविक प्रतिरोध के रूप में प्रकट होत बा। मतारी–बाप के ई निरंकुशाता शक्ति के दुरुपयोग में कवनो तरे के अधिक्य में व्यक्त होत बा– प्रेम के आधिक्य में, कठोरता, कोमलता, पालन, चिड़चिड़ाहट, अन्धता आ बुद्धिमत्ता के आधिक्य में। बाकिर बाद में दुराग्रहिता एगो प्रतिरोध नइखे रह जात, बलुक मतारी–बाप आ लइकन के बीच अन्तर्क्रिया के एगो स्थायी आदत के रूप ध लेत बा।

पारस्परिक निरंकुशता के हालत में अनुशासन आ स्वस्थ लालन–पालन के आखिरी अवशेष ले मटियामेट हो जात बा। लइकन के व्यक्तित्व विकास में दिलचस्प आ महत्वपूर्ण बदलाव दुराग्रहपूर्ण आ नासमझ बतंगड़ में, बेमतलब के अभिमान आ अहंकार के पाले–पोसे के विवेकहीन प्रक्रिया में एह तरे गायब हो जात बा, जइसे कवनो दलदल ओकरा के लील गइल होखे।

सही तरे से संगठित पारिवारिक समूह में जहँवा मतारी–बाप के प्राधिकार कवनो विकल्प से नइखे चलत, ओजा भद्दा, अनैतिक, अनुशासनात्मक करामात के दरकार नइखे परत। अइसने परिवार में हरमेसा सही बेवस्था रहत बा आ जरूरी मान–मरजाद आ आज्ञाकारिता बनल रहत बा।

क्षुद्र निरंकुशता, बीख, चीखल–चिल्लाइल, प्रार्थना, समझावल–मनावल ना, बलुक शान्त बेवहारिक हिदायत पारिवारिक लालन–पालन के तरीका के बाहरी अभिव्यक्ति होखे के चाहीं। एह बात पर ना त रउआ आ ना राउर लइकन के कवनो सन्देह होखे के चाहीं जे समूह के एगो जेठ, प्राधिकार वाला सदस्य के हैसियत से रउआ अइसन हिदायत देवे के अधिकार बा कि ना। हरेक मतारी–बाप के हिदायत देवे के सीखे के चाहीं। मतारी–बाप के आलस भा घरेलू शान्ति के आड़ लेवे के बजाय ओह हिदायत के अनुपालन करावे के समरथ होखे के चाहीं। तबे ऊ हिदायत सामान्य, सँकारे जोग पारम्परिक रूप ग्रहण करी आ तब रउआ निर्देश के स्वर से ले के सलाह, मार्ग–दर्शन, व्यंग्य, कटू–उक्ति, निवेदन आ संकेत के स्वर ले, तरे–तरे के स्वर के आभास देहल सीख जायेब। आ आगे, अगर रउआ अपना लइकन के असली आ काल्पनिक जरूरत के बीच फरक कइल सीख लेब त रउआ खुदे ई ना देख पायेब जे राउर मतारी–बाप के हिदायत रउरा आ राउर लइकन के बीच मैत्री के सभसे प्रिय आ सुखद रूप धरत जा रहल बा।

***

www.bhojpurisahityangan.com

सातवाँ अध्याय

कर्तव्य पूरा करत नइखे ऊ
आ रोगी मान–मरजाद ओकर सगरी मर जाता
बाकिर ओने, मेहर से ओकर, सुखद–सुहाना लेपल मुसुकी छोड़ता,
गोड़ से ओकर सिकियोनी जूता गजबे हँसता;
जवना पर बड़हन–बड़हन अनगिनत हरियर किरन बिखेरत
पन्ना आ सोना से झिलमिलात;
आ सागर जस नीला रेशम
ओकर नाजायज प्रेम के नमी समेटता।
पुरखन के जवन संचित रहे, अब कबहूँ
लउकत बा सजावल रिबन में,
माथा में ओकरा, रत्न जड़ल मुकुट के ज्वाला में आउर कबो
अलीदोनियाई साँचा भा कियन के ढीला वस्त्रन में;
.....एही से, कविवाणी के पहिले से जागल तूँ,
धेयान से विचारत बच के ताक लगवले ओह जालन से;
काहेकि एको बेर फिसलित गोड़ अगर तहार?,
त अझुरावेवाला ओह फन्दा के तूर के निकलला से
बहुते सहज बा ओह जाल से बच के रहल।

–लुक्रेशियस, ''दे रेरम नातुरा''

('दे रेरम नातुरा' रोमन कवि आ दार्शनिक के ईसा पूर्व पहिला शताब्दी के शिक्षाप्रद कविता ह, जवना के मकसद बा रोमन दर्शकन के भोगवादी दर्शन के समझावल)।

ल्यूबा गोरेलोवा से हमार मुलाकात संजोगे से ओह घरी भइल, जब ऊ एगो छोटहन मामला पर हमरा से भेंट करे आइल रहली। जवना घरी हम एगो जरूरी पुर्जी लिखत रहनीं, ओह घरी ऊ चुपचाप अपना कुरसी पर बइठल रहली। उनकर हाथ उनका गोदी में एक–दोसरा के ऊपर रहे आ बीच–बीच में लमहर साँस लेत दूर कतहूँ देखत रहली। ऊ लगभग उनइस बरीस के साफ–सुथरा ओह लइकियन में से रहली, जे अपना जादे दुःख के घरी में आपन कपड़ा के नीमन तरे से बेवस्थित

www.bhojpurisahityangan.com

राखल कबहूँ ना भूलात रहली।

"तूँ अइसन दुःख भरल साँस काहे ले रहल बाड़ू?" हम पूछनीं। "का तूँ संकट में बाड़ू?"

ल्यूबा आपन सजल–सँवरल छोटहन मुड़ी के झटकत उठवली। फेर धीरे से साँस छोड़ली आ दयनीय ढंग से मुसुकी छोड़ली।

"ना ..... ई कवनो बड़हन बात नइखे। हम संकट में रहनीं, बाकिर अब नइखे।"

हमरा अपना जिनिगी में लइकियन के संकट के बारे में बहुते बातन से वास्ता रहल बा आ ओह पर सोच–विचार करे के अभ्यास बा।

"अब नइखे आ तूँ अबो ओकरा बारे में आह भारत बाड़ू?" हम आगे सवाल कइनीं।

ल्यूबा एक बेर काँप गइली। फेर हमरा ओर देखली। उनकर उत्सुक भूअर आँख में दिलचस्पी झलकल।

"का रउआ नीक लागी जे हम अपना बारे में सभकुछ बताईं?"

"हँ जरूर।"

"ई एगो लमहर कहानी बा।"

"कवनो बात ना....."।

"हमार मरद हमरा के छोड़ देले बाड़े....."।

हम अचरज से उनका के देखनीं। अइसन बुझाइल जे उनकर लमहर कहानी खतम हो गइल। जहँवा ले विवरण के सवाल रहे त ऊ उनका चेहरा से साफे झलकत रहे– छोटहन गुलाबी मुँह मुसुकी छोड़त काँपत रहे आ आँख लोराइल रहे।

"तहरा के छोड़ देहले?"

"हँ," ऊ फुसफुसा के कहली आ लइकन जस मुड़ी हिलवली।

"का ऊ नीमन आदमी रहले..... तहार ऊ मरद?"

"हँ..... बहुते नीमन! बहुते–बहुत नीमन!"

"तूँ उनका से प्यार करत रहलू?"

"काहे ना? जरूर करत रहनीं। हम उनका से अबहुँओ प्यार करत बानीं।"

"का तहरा एकर दुःख बा?"

"हँ, बहुते जादे।"

"त तहार संकट अबहीं पूरा तरे से दूर नइखे भइल?"

ल्यूबा चुनौती भरल सन्देह के नजर से हमरा ओर देखली, बाकिर हमार ईमानदार ढंग से ऊ फेर आश्वस्त हो गइली।

"ना, हो गइल बा .....सगरी मामला खतम हो गइल बा। हम एमे का कर सकत बानीं?"

उनकर मुसुकी मासूम आ असहाय रहे। हमहूँ ई सोचे लगनीं जे ऊ साँचो का कर सकत बाड़ी।

"हँ, तूँ का कर सकत बाड़ू? तहरा अपना मरद के भुलावे के परी। फेर से

www.bhojpurisahityangan.com

सभकुछ नया सिरे से शुरू करे के परी। तूँ फेर शादी क लेबू...."।

ल्यूबा अवज्ञा से मुँह बिचकवली।

"केकरा से? ऊ सभ अइसने....."।

"त तहार मरद अनोखा ना रहले। ऊ तहरा के छोड़ देहले। ई बात बा कि ना? असल में ऊ प्यार करे जोग नइखन।"

"का कहत बानीं? प्यार करे जोग नइखन? रउआ उनका के जानत ले नइखीं।"

"ऊ तहरा के काहे छोड़ देहले?"

"उनका केहू आउर से प्यार हो गइल।"

ल्यूबा ई बात शान्ति से आ लगभग सन्तोष के साथे कहली।

"ल्यूबा, का तहार मतारी–बाप जीयत बा?"

"हँ, बा। मतारी–बाप! दुनू जने शादी कइला के चलते हमरा के नीमन–बाउर बोलत रहत बा।"

"ई ठीको बा, बिलकुल ठीक।"

"ना, नइखे। एमे ठीक का बा?"

"साँचो, ऊ लोग ठीक कहत बा। तूँ अबहीं बच्ची बाड़ू। ओपर से तहार शादी हो गइल आ तलाको।"

"त..... त का भइल। एकरा से ऊ लोग के कवन वास्ता।"

"का तूँ ओह लोग के साथे नइखू रहत?"

"हमार आपन अलग कमरा बा। हमार मरद हमरा के छोड़ गइले आ अपना .....के साथे रहे चल गइले। ऊ कमरा अब हमार बा। हम दू सौ रूबल कमात बानीं। अब हम बच्ची नइखीं। रउआ हमरा के बच्ची कइसे कहत बानीं?"

ल्यूबा बिखियाइले अचरज से हमरा ओर देखली। हम समझ गइनीं जे जिनिगी में खेले जाये वाला एह खेल में ऊ पूरा तरे से गम्भीर बाड़ी।

हमार अगिला भेंट कुछ अइसने माहौल में भइल। ल्यूबा ओही आराम कुरसी में बइठल रहली। अब ऊ बीस बरीस के हो गइल रहली।

"हँ, त तहार पारिवारिक मामला कइसन चल रहल बा?"

"अतना नीमन जे शब्द में बतावल मोसकिल बा।"

"अरे वाह! त तहरा तहार..... ओह..... ले केहू बेहतर आदमी मिल गइल।"

"ना, अइसन कुछुओ नइखे। हम ओही आदमी से दोबारा बियाह क लेहनीं....।"

"अइसे कइसे भइल?"

"बस हो गइल। ऊ हमरा लगे आ के रोवे लगले आ कहले जे हम कवनो आउर लइकी से बेहतर बानीं। बाकिर ई साँच नइखे नूँ? हम कवनो आउर से बेहतर नइखीं, बानीं का?"

"हँ .... रुचि अलग–अलग होला। तूँ जानते बाड़ू..... जवन होखे, तहरा में

www.bhojpurisahityangan.com

बेजाँय का बा?"

"ई कहनीं रउआ! एकर मतलब ऊ हमरा से प्यार करत बाड़े। मतारी–बाप कहल जे हम बेवकूफी कर रहल बानीं। बाकिर ऊ कहले– "आव, सभकुछ भूला देहल जाव।"

"आ का तूँ सभकुछ भूला गइलू?"

"हँ," ल्यूबा ओसहीं शान्त भाव से फुसफुसात कहली आ लइकन के तरे आपन मुड़ी हिलवली। फेर ऊ हमरा ओर गम्भीर कौतुहल से अइसे देखली जइसे ऊ हमरा के ताड़त होखस जे जिनिगी में जवन खेला ऊ खेल रहल बाड़ी, ओकरा के हम समझनीं कि ना।

ल्यूबा से हमार तीसरका मुलाकात राहे–बाटे भइल। ऊ अपना हाथ में कुछ बड़हन किताब लेहले बगल के एगो मोड़ से अचके प्रकट भइली। फेर ट्राम धरे बदे धउरली, तले हमरा के देखते चिल्लइली :

"हलो! नीके भइल जे रउआ से भेंट हो गइल।"

ऊ ठीक ओइसने युवती रहली, ओसहीं सजल–सँवरल आ उनकर ब्लाउज ओतने साफ–सुथरा आ इस्तरी कइल रहे। बाकिर उनकर भूअर आँख में सुस्ती के, एक तरे के अन्दरुनी थकान के चिन्हासी साफे झलकत रहे। उनकर चेहरा के रंग पहिले से जादे मरुआ गइल रहे। ऊ इक्कीस बरीस के हो गइल रहली।

ऊ हमरा बगल में चलत मधुर आवाज़ में दोहरावत गइली :

"नीके भइल जे रउआ से भेंट हो गइल।"

"तहरा हेतना हुलास काहे बा? का तहरा कवनो चीज बदे हमार दरकार बा?"

"हँ, अइसन केहू नइखे, जेकरा से हम अपना मन के बात कह सकीं।"

ऊ एगो लमहर साँस लेहली।

"का तूँ फेर संकट में पर गइल बाड़ू?"

ऊ सड़क पर निगाह टिकवले शान्त स्वर में कहली :

"हम संकट में रहनीं, भारी संकट में। हमरा रोआई ले छूट गइल रहे। रउआ जानत बानीं जे ऊ अदालत में अर्जी देहलस। अदालत फैसला सुना देले बा। अब हमरा एक सौ पचास रूबल महीना निर्वाह खरच देवे के परत बा। ई रकम कवनो जादे नइखे। हमार मरद के पाँच सौ रूबल मिलत बा आ हमरा ढाई सौ। बाकिर ई अफसोस के बात बा। रउआ जानत बानीं जे अब हमरा एक तरे से शरम आवे लागल बा। हम ईमानदारी से बतावत बानीं जे ऊ गलत रहे। ऊ हमरा मरद के बच्चा कतई ना रहे, तबो ऊ गवाह ले आइल....."।

"सुन ल्यूबा। तूँ ओकरा के निकाल बाहर कर।"

"केकरा के?"

"अपना एह .....मरद के।"

"रउआ अइसन बात काहे कहत बानीं। अब ऊ अइसन कठिन हालात में बाड़े। उनका लगे एको फ्लैट नइखे। धन के भुगतान करे के बा आ आउरो बहुते बात

www.bhojpurisahityangan.com

बा....."।

बाकिर तूँ उनका से प्यार त नइखू करत।"

"नइखीं करत? का कहत बानीं? हम उनका से बहुते प्यार करत बानीं! रउआ नइखीं जानत जे ऊ केतना नीमन बाड़े। ओने बाप कहत बाड़े जे ऊ निकम्मा–निठल्ला बाड़े। मतारी कहत बाड़ी –"तें पंजीकृत नइखी। एह से उनका के छोड़ दे।"

"बाकिर, का तूँ लोग पंजीकृत नइखू?"

"ना, नइखीं। हम पहिले पंजीकृत ना भइनीं। अब एकरा खातिर बहुते देर हो गइल बा।"

"बहुते देर कइसे? तूँ हरमेसा पंजीकृत हो सकत बाडू।"

"हम जानत बानीं। बाकिर एकर मतलब बा– तलाक लेहल बगैरह– बगैरह ....."

"तहार मतलब बा जे तहरा मरद के लेवे के बा? ओकरे से, जेकर लइका के ऊ निर्वाह–खरच देत बाड़े, ओकरे से?"

"ना, ओकरा साथे ऊ कबहूँ पंजीकृत नइखन भइल। केहू आउर से लेवे के बा।"

"कवनो आउर से? त ऊ कवन ह .....ओकर पुरान मेहरारू?"

"पुरान काहे? ओकरा साथे ऊ अबहीं हाले में पंजीकृत भइल रहले।"

हम साफे हकबका गइनीं।

"बाकिर हम कुछुओ ना समझ सकनीं। फेर ऊ उनकर तीसरकी मेहरारू होखी?"

ल्यूबा हमरा के समझावे के बहुते जतन कइली।

"हँ, अगर रउआ हमरो के गिनब त ऊ तिसरकी बिया।"

"बाकिर उनका समय कब मिलल? कइसे ऊ ई कर पवले?"

"ऊ ओकरा साथे, जे निर्वाह–खरच पावत बिया, जादे समय ले ना रहल ....बहुते दिन ले ना रहल। फेर जले ई तीसरकी ना मिलल, असहीं भटकत रहले। ओकरा लगे एके गो कमरा रहे। एह से ऊ लोग साथे रहल शुरू क देहल। बाकिर ऊ कहलस जे ओकरा अइसे रहल पसन्द नइखे। ओह लोग के बियाह–पंजीकरण करवावे के चाहीं। ऊ सोचले जे अइसन कइल बेहतर होखी। एही से ऊ लोग पंजीकरण करवा लेहल। बाकिर पंजीकरण के बाद ऊ लोग खाली दसे दिन ले साथे रहल।"

"फेर का भइल?"

"फेर जसहीं ऊ हमरा के मेट्रो में देखले ..... एगो साथी के साथे .....उनका अचके बहुते दुःख भइल आ ऊ हमरा लगे अइले आ बहुते रोअले।"

"शायद ऊ हर बेर झूठ बोलत रहले आ केहू के साथे पंजीकृत ना भइल रहले....."।

"ना, ऊ एकरा बारे में कुछुओ ना कहले। ई बात ऊ बतवले जे जवना के साथे

www.bhojpurisahityangan.com

ऊ पंजीकृत रहले, ऊ हमरा लगे अइलस आ सगरी बात बतवलस....."।

"का ऊहो रोअलस?"

"हँ," ल्यूबा शान्ति से कहली। बचकाना अन्दाज में मुड़ी हिलवली। फेर ऊ हमरा के धेयान से देखली। हम साफे बिखिया गइनीं। अतना जोर से चिल्लइनीं जे राह–बाट चलत लोग ले सुनल :

"ओकर गरदन पकड़ के बाहर कर, फौरन! तहरा अपने पर शरम आवे के चाहीं।"

ल्यूबा आपन बड़का–बड़का किताब बरियारे हाथे धइले दोसरा ओर मुड़ी घुमा लेहली। शायद उनकर आँख लोराइल होखे। फेर ऊ हमरा से ना, सड़क के दोसर हिस्सा के सम्बोधित करत कहली :

"हम उनका के कइसे निकाल सकत बानीं? हम उनका से प्यार करत बानीं।"

ल्यूबा से हमार चउथा मुलाकात एगो सिनेमाघर में भइल। ऊ आराम कक्ष के कोना में बड़हन सोफा पर एगो युवक का साथे सट के बइठल रहली। ऊ घुँघराला बाल वाला एगो सुन्दर युवक रहे आ मुसुकी छोड़त उनका कान में कुछुओ फुसफुसात रहे। ल्यूबा आपन उदास आँख से दूर कतहूँ निहारत धेयान से ओकर बात सुनत रहली। ऊ हरमेसा के तरे साफ–सुघड़ रहली। हमरा उनका निगाह में कवनो रंज ना लउकत रहे। अब ऊ बाइस बरीस के हो गइल रहली।

हमरा के देखते ऊ हुलसित हो गइली, सोफा से उछल के धउरत अइली आ हमार बाँह ध लेहली।

"आईं, हमरा मरद से भेंट करीं।"

युवक मुसुकी छोड़लस आ हमरा से हाथ मिलवलस। ओकर चेहरा साँचो मनोहारी रहे। ऊ लोग हमरा के बीच में बइठा लेहल। ल्यूबा हमरा से मिल के साँचो हुलसित रहली। ऊ हमार बाँह के बेर–बेर घींचत रहली आ लइकन नियर हँसत रहली।

"हम रउरा बारे में बहुते सुनले बानीं।" ल्यूबा हमरा के बतवली जे रउआ उनकर नियति बानीं। जसहीं ऊ रउआ के देखली, ओसहीं बोललीं– "ई रहले हमार नियति"। उनकर मरद पुरुषोचित संयम से कहले।

"का ई साँच नइखे, नइखे का?" ल्यूबा हर केहू के धेयान अपना ओर घींचत कहली। ऊ हमरा कन्धा से अलोत हो के बनावटी कठोरता से अपना मरद से बोललीं :

"जा। एक गिलास लेमोनेड पी के आव। अरे तूँ एह तरे काहे देखत बाड़? हम इहाँ के बतावे के चाहत बानीं जे तूँ केतना नीमन बाड़। जा ना।"

हमरा पीठ के तरफ से उनका लगे पहुँच के ऊ अपना हाथे उनका के धकेलली। ऊ आपन कन्धा उचकवले। फेर हमरा ओर खिसियात देखले, मुसुकी छोड़ले आ कैण्टीन के तरफ चल देहले। ल्यूबा हमार दुनू हाथ थाम लेहली।

"बताईं, ऊ नीमन बाड़े?"

www.bhojpurisahityangan.com

"ल्यूबा, हम कइसे कह सकत बानीं जे ऊ नीमन बाड़े कि बाउर?"

"बाकिर रउआ उनका के देखनीं। का रउआ बता नइखीं सकत?"

"देखे में त ठीके बाड़े। बाकिर..... अगर तूँ उनकर सगरी कारनामा इयाद कर त..... देख, तूँ खुदे समझ सकत बाड़ू....."।

ल्यूबा के आँख फइल के कई गुना बड़ हो गइल।

"कइसन नासमझी बा। रउआ बूझत बानीं जे ई ऊ बाड़े? अइसन कुछुओ नइखे। ई साफे दोसर आदमी बाड़े। इहे असली बाड़े। रउआ समझनीं..... असली!"

हम भकुआइले खाड़ा रह गइनीं।

"का मतलब बा तहार 'असली' से? आ दोसरका के का भइल– तहार साँच प्यार के?"

ऊ साँच प्यार ना रहे। ऊ निपट निकम्मा रहले। हम बहुते खुश बानीं। काश! रउआ जान पवतीं जे हम केतना खुश बानीं।

"बाकिर का तूँ इनका से प्यार करत बाड़ू? भा तूँ .....फेर से गलती करत बाड़ू?"

ल्यूबा खामोश हो गइली, उनकर सगरी जीवन्तता अचके बिला गइल।

"तूँ उनका से प्यार करत बाड़ू?"

हमरा उम्मीद रहे जे ऊ आपन बचकाना हरकत में मुड़ी हिला के बुदबुदइहें, 'अहा"! बाकिर ऊ हमरा बगल में बइठले रह गइली। दबल–दबल कोमल हाथ से हमार हाथ के सहरावत रहली। उनकर भूअर आँख उनका अपने भीतर कतहूँ गहराई पर केन्द्रित लागत रहे। आखिर, ऊ शान्ति से कहली :

"हम नइखीं जानत जे कइसे कहीं– प्यार करत बानीं। हम ई नइखीं कह सकत..... ई अतना प्रबल बा।"

ऊ हमरा ओर देखली। उनकर नजर एगो अइसन मेहरारू के नजर रहे, जे प्यार में साँचो गिरफ्तार होखे।

युवा जन के प्यार कइल सिखावे, ओकनी के प्यार के जाने के सिखावे, ओकनी के सुखी रहल सिखावे के मतलब बा ओकनी के अपना मान–मरजाद आ मानवीय प्रतिष्ठा के शिक्षा देहल। कामदेव के स्वायत गणतंत्र के कवनो शैक्षिक जतरा एह मामला में राउर सहजोग नइखे कर सकत। मानवीय समाज में, ख़ास क के समाजवादी समाज में सेक्स के शिक्षा शरीर–क्रिया के वैज्ञानिक शिक्षा नइखे हो सकत। काम–क्रिया के मानव संस्कृति के सगरी उपलब्धि से, समाज में आदमी के जिनिगी के दशा से, इतिहास के मानवीय क्रम से, सौन्दर्यबोध से अलग नइखे कइल जा सकत। अगर कवनो मरद आ मेहरारू अपना के मानव समाज के सदस्य महसूस नइखे करत, अगर ओकरा में ओकर जिनिगी बदे, ओकर सौन्दर्य आ विवेक खातिर दायित्व के भावना नइखे त ऊ प्यार कइसे कर सकत बा? ऊ अपना मान–मरजाद आ अपना जइसन कवनो आउर मूल्य में बिसवास कहँवा से हासिल करी, जे महज नर भा मादा होखे के अलावे कतहूँ जादे बा।

www.bhojpurisahityangan.com

सेक्स के शिक्षा सभसे पहिले आ सभसे ऊपर सामाजिक व्यक्तित्व के सांस्कृतिक शिक्षा बा।

कुछुवे समय पहिले अइसन कई गो लोग रहे, जेकरा वास्ते सेक्स शिक्षा के समस्या अइसे पेश कइल गइल– लइकन के शिशु–जनम के रहस्य कइसे बतावल जाव? ई समस्या उदारवादी चोला पहिरले आइल रहे। काहेकि एह बात पर सन्देह ना कइल उदारता बूझल जात रहे जे शिशु जनम के रहस्य लइकन के बेसंकोच आ जरूर बतावे के चाहीं।

बहुते साहसी आ उदार लोग परदा के पूरा तरे से हटावे आ लइकन के साथे सेक्स का बारे में खुला बतकही के माँग करत रहे। तरे–तरे के तरीका से आ हर तरे के आवाज़ में एह आशय के कहानी सुनावल जात रहे। जवन आधुनिक लइकन के शिशु जनम के रहस्य जाने बदे कइसन भयावह आ टेढ़–बाँगुच राहे गुजरे के परत बा। हो सकत बा जे सम्वेदनशील लोगन के अइसन लागल होखे जे शिशु जनम के रहस्य के सामने लइका घोर संकट के हालात में पर जात बा। अचरज खाली इहे रहे जे ई अभागा लइक सभ सामूहिक आत्महत्या काहे ना कइले सन।

हमनी के जमाना में लइकन के शिशु जनम के रहस्य समझावे के अइसन कवनो चाहत नइखे। तबो कुछ परिवार में सहज ज्ञान वाला मतारी–बाप एह सवाल से अबहुँओ पीड़ित रहत बा– एह सवाल के का कइल जाव आ जब लइका एकरा बारे में पूछे त ओकनी के कइसे जवाब देहल जाव?

बाकिर एह बात पर धेयान देवे के चाहीं जे एह फौरी सवाल पर, एकर महातिम के बादो बेवहारिक काम के बजाय बयानबाजी जादे कइल गइल बा। हम खाली एगो अइसन मामला के जानत बानीं, जब एगो बाप आपन पाँच बरीस के बेटा के अपना मतारी के बच्चा जनत देखवले रहले। घोर मूरखता के बकिया सगरी मामला के तरे इहो घटना खाली मनोचिकित्सक के सरोकार वाला बा। एकरो से कतहूँ जादे मरतबा ई भइल जे ईमानदार मतारी–बाप एह रहस्य के समझावे खातिर असल में तरे–तरे के उतजोग भिरावल। बाकिर शुरू करते ओह लोग के बुझाइल जे ऊ लोग कुछुओ करे के हालात में नइखे।

पहिलका बात त ई बा जे मतारी–बाप के उदारवाद आ आदर्शवाद के बीच एगो प्रचण्ड अंतर्विरोध के जनम भइल। ई बात लगले साफ हो गइल– केहू नइखे जानत जे सेक्स के समस्या, ओह लोग के सगरी सफाई का बादो, ओह लोग के वीरतापूर्ण सच्चाई का बादो, अँचार–मुरब्बा के समस्या ना, सेक्स के समस्या जस के तस बनल रहल। एकरे चलते अइसन विवरण के चरचा कइले बगैर हल नइखे कइल जा सकत, जवन सभसे जादे उदार मानक के हिसाब से जरूरे असहनीय रहे आ एकरा के छिपावे के दरकार रहे। आपन इच्छा जग जाहिर भइला से साँच एगो अइसन रूप में प्रकट भइल जे जादेतर साहसी मतारी–बाप के बेहोशी छितराये लागल। अइसन हाल जादेतर ओह मतारी–बाप के भइल, जे सामान्य स्तर से ऊपर रहे, जे आदर्श के सोझे सम्पर्क में रहे आ बेहतर आ पूर्णता खातिर कोशिश में लागल

www.bhojpurisahityangan.com

रहे। असल में ऊ लोग सेक्स के समस्या के एह तरे से समझावे के चाहत रहे जे ऊ कवनो तरे से सेक्सी ना रहे आ कवनो आउर वस्तु जादे शुद्ध आ श्रेष्ठ वस्तु बन जाव।

दोसर बात, दुनिया में सर्वोत्तम संकल्प के जादेतर वैज्ञानिक रवैया का बादो मतारी–बाप लइकन के खाली ऊहे बात बतावल, जे ऊ लोग ओह "भयानक लइकन–लइकियन" से सुनले रहे, जवना से अपना लइकन के बचावे बदे मतारी–बाप के स्पष्टीकरण के बेवस्था कइल गइल रहे। ई साफे जाहिर हो गइल जे शिशु जनम के रहस्य के दू किसिम के विवरण नइखे हो सकत।

आगे जा के लोग के इयाद परल जे संसार के शुरुआत से अबहीं ले एको गो अइसन मामला ना देखल गइल, जब युवाजन शिशु जनम का बारे में पर्याप्त जानकारी के बगैर शादी कइले होखे। जइसे हर केहू जानत बा, ओकर हरमेसा .....एके किसिम के विवरण बा आ ओमे कबहूँ कवनो उल्लेखनीय बदलाव नइखे होत। अइसन लागत बा जे शिशु जनम के रहस्य ज्ञान एगो अइसन क्षेत्र बा, जहँवा ना त कवनो विवाद बा, ना कवनो मत विरोध आ ना कवनो सन्देहास्पद मुद्दा।

अलेक्सान्द्र वोल्गिन एगो नया मकान के पाँचवा मंजिल पर रहत बा। ओकर बाप तिमोफेई पेत्रोविच वोल्गिन गृह मंत्रालय में काम करत बाड़े। उनकर कमीज के बाँह में दूगो चाँदी के सितारा आ उनकर कालर के लाल फीता में दूगो छोटहन सितारा लागल बा। अलेक्सान्द्र खातिर एह सितारा के बेसी महातिम बा। बाकिर एकरो से जादे महातिम के रिवाल्वर बा। ओकर बाप के रिवाल्वर के खोल में जवन पिस्तौल लागल बा ऊ ब्राउनिंग नागण्ट नम्बर–2 बा। अलेक्सान्द्र नीमन तरे से जानत बा जे ब्राउनिंग नागण्ट रिवाल्वर बेहतरीन अस्त्र बा। बाकिर ऊ इहो जानत बा जे ओकर बाप जवन रिवाल्वर के सभसे जादे चाहत बाड़े, ओकरा के ऊ अपना मेज के दराज में धइले बाड़े। ई पुरान प्रिय अस्त्र ऊहे नागण्ट ह– लड़ाई के साथी। ओकरा बारे में ओकर बाप अइसन कई गो रोमांचक कथा सुना सकत बाड़े, जवन ओह घरी घटल रहे, जब उनका लगे नया मकान के अइसन साफ–सुथरा आरामदेह फ्लैट ना रहे, जब खुदे अलेक्सान्द्र, वोलोद्या उवारोव आ कोस्त्या नेचिपोरेंको ना रहे। स्कूल में ओह घरी के जवन कहानी सुने के मिलत बा, ऊ बहुते संक्षेप में बा आ ऊ सगरी किताबी बा। मास्टर लोग ऊहे सुनावत बा, जे असली चीज कबहूँ नइखे देखले आ ओकरा बारे में साँचो कुछुओ नइखे जानत। अगर ऊ लोग ई कहानी सुनले रहित जे चेका के बीस गो आदमी जाड़ा के मौसम में कोहरा भरल सड़क पर घोड़ा पर सवार हो के कवना तरे गइल आ डाकुअन के एगो गिरोह से टकरा गइल। चेका के आदमी नगर के आखिरी बाड़ में कवना तरे शरण लेहल। ऊ लोग चार घण्टा ले डाकुअन से कवना तरे लड़ाई लड़ल– पहिले राइफल से आ फेर नागण्ट से। हरेक आदमी कवना तरे एकहगो कारतूस खुद अपना सुरक्षा खातिर सम्हार के धइले रहे। तबे ऊ लोग ओह नागण्ट के महातिम के समझ सकल, जे बाप के टेबुल के दराज में शान्ति से परल बा। बाकिर अध्यापिका स्कूली किताब

www.bhojpurisahityangan.com

के कहानी के महज सुनवले जा रहल बाड़ी। अगर रउआ उनका के एगो असली नागण्ट देखा दीं त मुमकिन बा जे ऊ चीख मारत कक्षा से सोझे भाग जइहें।

अलेक्सान्द्र के अपना बाप, उनकर रिवाल्वर आ पिस्तौल आ उनकर सितारा पर गर्व बा। ऊ जानत बा जे ओकर बाप के लड़ाकू जिनिगी में कुछ ख़ास अधिकार आ नियम बा। एकरा के पकिया तरे से अनुपालन करे के चाहीं। बाकिर जहँवा ले आउर सभ बातन में बाप के शान्त पैनी नजर, उनकर खामोश चतुर आँख आ उनकर संतुलित मर्दानगी के सम्बन्ध बा, ओकर अहसास अलेक्सान्द्र के ओतने कम बा, जेतना स्वस्थ लोग के अपना स्वास्थ के। ऊ एह सभ बातन के कवनो तरे अपना अनुमान से साफे बाहर क देले रहे। अलेक्सान्द्र के बिसवास रहे जे ऊ अपना बाप के लड़ाई के उनकर कारनामा के चलते प्यार करत बा।

मतारी के नागण्ट देखवलो पर ना त ऊ चीखिहें आ ना भगिहें। ऊ ओवरुच में रहत रहली। ओही घरी बाप पार्टी के बइठक में भाग लेवे गइल रहले त ऊ खुदे डाकुअन से लड़ाई लड़ले रहली। ओजुगिया नाद्या त रहे, बाकिर तब ऊ खाली एक बरीस के रहे। ओकर ओह कहानी में कवनो भूमिका ना रहे। अब नाद्या सतरह बरीस के हो गइल बिया। अलेक्सान्द्र ओकरा से सनेह राखत बा। बाकिर मुद्दा ई नइखे। मतारी, बेशक एगो योद्धा नइखी, भले ओवरुच में उनका बन्दूक के इस्तेमाल काहे ना करे के परल रहे। उनका लगे रिवाल्वर नइखे, सितारा नइखे, राजकीय सुरक्षा के सीनियर लेफ्टिनेण्ट के खिताब नइखे। तबो ऊ सुन्दर बाड़ी, दयालु आ सहृदय बाड़ी। अगर उनका लगे रिवाल्वर आ दुनिया के सगरी पद रहबो करित त अलेक्सान्द्र नइखे जानत जे ओकरा कल्पना में उनकर कवन जगह होखित। अलेक्सान्द्र अपना मतारी से प्यार करत बा, बाकिर उनकर कवनो विशिष्ट सेवा खातिर ना। ऊ महज प्यार करत बा आ बस, इहे बात बा, बस।

अलेक्सान्द्र प्यार के बारे में एह नतीजा पर बरीस से पहिले वाला बरीस में पहुँच गइल रहे। माने ओह समय, जब ओकरा जिनिगी में असली दोस्त मिलल रहे– ऊ मतारी के दुलरुआ ना, जे दर्जी के दोकान के पुतला नियर कपड़ा पहिरले आ पाकेट भरे के अलावे आउर कुछुओ नइखे कर सकत, बलुक जे जिनिगी के अनुभव आ आपन विचार राखे वाला असली साथी रहे। शायद ऊहो अपना मतारी–बाप से प्यार करत रहे, बाकिर ऊ कबहूँ जाहिर ना करत रहे। जवन होखे, ओकरा मतारी–बाप के ले के परेशान होखे के समय ना मिलत रहे। जिनिगी रोजे अतना समस्या खाड़ा क देत बा जे मतारी–बाप के के कहो, रउआ आपन खान–पान ले भूल जात बानीं। एह समस्या के हल करे में जादे ताकत आ ज्ञान खप जात बा– मसलन, एगो फुटबॉल मैच ले लीं भा हवाई जहाज के मामला भा अगिला सड़क पर मकान ढाहे के बात भा लगहीं के बड़हन सड़क पर तारकोल बिछावे के तरीका भा रेडियो। स्कूलो में अतना कुछ करे के बा, अतना समस्या बा, सम्बन्ध के अइसन अझुराइल जाल बा, अतना जादे षडयंत्र बा जे कबो–कबो वोलोद्या के माथा चकरा जात बा आ ऊ कहत बा :

www.bhojpurisahityangan.com

"ई हमरा खातिर बहुत जादे बा। साँच कहत बानीं– ई सभ जाव भाड़ में। एकरा खातिर हमरा के परेशान नइखे कइल जा सकत।"

वोलोद्या कबहूँ नइखे हँसत। हर केहू जानत बा जे ऊ साँचो एगो अँगरेज सरीखा बा। ऊ कबहूँ नइखे हँसत। आउरो लइका सभ ओकरे जस गम्भीर मुँह बनवले राखे के बहुते जतन कइले सन। बाकिर कवनो एक दिन से जादे ओइसन ना कर सकल। अगिले दिन ऊ आपन दाँत चियार देत बाड़े सन आ बानर नियर हँसे लगत बाड़े सन। बाकिर वोलोद्या कबो–कबो अपना होठ के टेढ़ भर क देत बा। एकरा के हँसी नइखे कहल जा सकत। ई अवज्ञा जतावे के ओकर आपन तरीका बा। अलेक्सान्द्र वोलोद्या के सख्त तौर–तरीका के सम्मान करत बा, बाकिर ओकर नकल करे के कवनो इरादा नइखे राखत। ओकर आपन शोहरत ओकरा आपन बोले के लहजा, संक्रामक हँसी आ मज़ाक उड़ावे के सफल प्रतिभा पर टिकल बा। सभ लइका जानत बाड़े सन जे अलेक्सान्द्र के जबान से बच के रहल बेहतर बा। सगरी के सगरी पाँचवा क्लास आ मास्टरो लोग एह बात के जानत बा। हँ .....मास्टरो लोग।

जब मास्टर के मामला आवत बा त निश्चिते तनी बेढब बात हो जात बा। कुछ मास्टरो के चलते संकट पैदा हो जात बा।

कुछुवे दिन पहिले रूसी भाषा के मास्टर इवान किरीलोविच एलान कइले जे ऊ पुश्किन के कविता पढ़ावे के शुरू करिहें। एकरा पहिले, वोलोद्या "येव्गेनी ओनेगिन" क्लास में ले आइल रहे। ऊ ओकर कुछ पंक्ति के पाठ कइले रहे। अब इवान कहले जे ऊ पुश्किन के समुचित शुरुआत करिहें। कहे के त ऊ समुचित कहले रहले, बाकिर असल में ऊ सभसे जादे दिलचस्प हिस्सा छोड़ देहले। अलेक्सान्द्र जोर से, बाकिर नम्रता से पूछलस जे एकर का मतलब बा। "ऊ जे सक्षम बा हरमेसा, देवे में दृष्टि के, अइसन अमूल्य उपहार....." के का माने–मतलब बा?

अलेक्सान्द्र के तीखा नाक–नक्शा रहे आ मुँह अभिव्यक्तिपूर्ण रहे। ऊ इवान का ओर देखलस, बेशरम जस मुसुकी छोड़लस आ जवाब के इन्तजार करत रहल। ओकर आँख चमकत रहे, काहेकि सवाल साँचो दिलचस्प रहे। हर केहू जानत रहे जे "ऊ" के का मतलब रहे। एगो गोड़, एगो मेहरारु के गोड़, पुश्किन ओकरा बारे में सविस्तार लिखले रहले आ लइकन के ऊ पसन्द रहे। ऊ एह पंक्तियन के लइकियन के देखवले आ ख़ास रुचि के साथे गौर कइले जे ओकनी पर एकर का असर परत बा। बाकिर लइकियन पर ओह पंक्तियन के कवनो ख़ास असर ना परल। वाल्या ओह पर एगो नजर धउरवलस, ओकर बाल ले ना हिलल, बलुक ऊ हँस देहलस। फेर ऊ जे कहलस, ओकर महज याद रउआ के शर्मिन्दा क देत रहे।

"हुँह, दुधमुहा। एकरा के पहिले कबहूँ नइखीं देखले।"

बकिया लइकी सभ हँसे लगली सन। अलेक्सान्द्र सकुचा गइल। ऊ वोलोद्या के तरफ देखलस। वोलोद्या के थुलथुल चेहरा के एको पेशी में कवनो हरकत ना भइल।

www.bhojpurisahityangan.com

"कवनो बात नइखे जे हमनी के एकरा के कब देखनीं। तें खाली इहे समझा दे जे एकर का माने बा." ऊ आपन दाँत पीसलस।"

वोलोद्या ई बात बड़ी खूबसूरती से कहलस आ ई उम्मीद कइल जा सकत रहे जे एह टकराव में ओकर जीत होखी। बाकिर आखिरी नतीजा एकरो से जादे दुखद भइल।

वाल्या वोलोद्या के पैनी नजर से देखलस। ओकरा ओह नजर में कइसन श्रेष्ठता आ उपेक्षा के झलक रहे। फेर ऊ कहलस :

"एह पंक्तियन के समझल तनिको मोसकिल नइखे, वोलोद्या। बाकिर तें अबहीं बच्चा बाड़े। जब तें बड़ हो जइबे त समझ जइबे।"

अइसन संकट के सभे शान्ति से बर्दाश्त नइखे कर सकत। एह तरे के झमेला में परला पर नाँव कमाइल खतम हो जात बा। मान–मरजाद मटियामेट हो जात बा। बरिसन से बनल सम्बन्ध लगले टूट जात बा। एह से सभे दमी सधले वोलोद्या के जवाब के इन्तजार करत रहे। बाकिर वोलोद्या के जवाब देवे के समय ना मिलल। वाल्या आपन घुँघराला लट के झटकत गर्व से दरवाजा के तरफ चल गइल। नीना आ वेरा ओकर दुनू केहुनी में आपन हाथ फँसवले, तीनू अलभ्य नजर आवत, अपना कन्धा के ऊपर लापरवाही से देखत आ आपन बाल झटकत चल देहली सन। वोलोद्या खामोशी से ओकनी के जात देखत रहे। ऊ अपना होठ के तिरस्कार के भाव से सिकुरा लेहलस। कोस्त्या के अलावे दोसर केहू ना बोलल। ऊ कहलस :

"का तें ओकनी से आगहूँ उलझत रहे के चाहत बाड़े?"

कोस्त्या क्लास में सभसे तेज रहे आ एह से ऊ बहुते सन्तुष्ट रहे। ऊ आपन व्यक्तिगत राय देवे में कबहूँ ना चूकत रहे। बाकिया सभे सहमत रहे जे वोलोद्या के पराजय भइल बा। ओकरा बदे ई जरूरी बा जे ऊ लगले निर्णायक कार्रवाई करे। देर असम्भव रहे। वोलोद्या अपना डेस्क पर अँगरेजिअत अन्दाज में खामोश बइठल रहे। अलेक्सान्द्र पढ़ाई के बीच के सगरी फालतू समय मामूली से मामूली बहाना पर हँसी–ठट्ठा के बतकही में बितावत रहे। ऊ कमजोर निगाह वाल मीशा के पाछे पर गइल आ एगो सवाल पूछलस :

"बताव, मरद पतलून आ मेहरारू घाघरा काहे पहिरेले?"

मीशा बूझ गइल जे ई निर्दोष वाक्य कवनो पीड़ादायक मज़ाक के शुरुआत बा। ऊ एकर जवाब देहले बिना ओजुगिया से ससरे के चहलस। ओकर चले–फिरे के तरीका कायर जस सतर्कता भरल रहे आ ओकरा चेहरा पर भय के भाव रहे। बाकिर अलेक्सान्द्र ओकर हाथ ध लेहलस आ सउँसे क्लास के सुनावत आपन सवाल के दोहरवलस :

"बताव, मरद पतलून आ मेहरारू घाघरा काहे पहिरेले?"

मीशा फर्श का ओर मुँह फुलवले देखत एगो हलुकाहे प्रतिरोध जतवलस।

"ओकरा के छोड़ दे। ऊ कवनो घरी रोअल शुरू क दी।" वोलोद्या आपन मुँह खोलले बिना दाँत के बीच से बोललस।

www.bhojpurisahityangan.com

"ना ओकरा के जवाब देवे दे।" अलेक्सान्द्र मुसुकी छोड़त कहलस।

मीशा मरुआइले मेज पर ओलर गइल। ऊ साँचो रोअनिया जस मुँह बना लेहलस। जब अलेक्सान्द्र ओकर हाथ छोड़लस त ऊ दूर के एगो कोना ध लेहलस आ ओजुगिये चुपचाप बइठ गइल। ओकर चेहरा देवार के तरफ रहे।

"अजबे आदमी बा।" अलेक्सान्द्र हँसलस। "ऊ त असहीं सोच में परल बा, निर्लज्ज कहीं के।" जवाब त सरल बा :

"ताकि चूक न जाव मीशा कतहूँ
कर ना बइठे शादी मरद से कतहूँ।"

तबे मीशा भोंकार पार के रोवे लागल। ऊ चिड़चिड़ाहट में अपना केहुनी के झटके लागल। बाकिर ओकर केहुनी से केहू के कवनो परवाह ना रहे। वोलोद्या विक्षुब्ध हो के भौंह सिकुरा लेहलस। एक तरे से ऊ सही रहे– कतनो हँसी–ठट्ठा काहे ना होखे, लइकियन के साथे ओह बतकही के अप्रिय सवाद अबहीं ले खतम ना भइल रहे। क्लास के अइसन कई गो लइका रहले सन, जे एकरा से पहिलहूँ वोलोद्या आ ओकर साथी अलेक्सान्द्र के साथे खामोश नापसन्दगी के बेवहार जता चुकल रहले सन। तबो लइकियन के स्वाधीनता के रुखा तिरस्कार मुद्रा में क्लास में आइल आ सीट पर बइठल देखल ख़ास अवसाद के बात रहे। ओकनी के अइसन बनत रहली सन, जइसे पाछे के बेंच के कवनो अस्तित्व ना रहे। अगर रहबो कइल त ओमे ओकनी के कवनो दिलचस्पी ना रहे। ऊ अइसन देखावे के कोशिश करत रहली सन जे ओकनी के सभकुछ मालूम बा आ ओकनी के ज्ञान वोलोद्या आ अलेक्सान्द्र से कतहूँ ओकनी के जादे ऊँच बनवले बा। लइकी सभ आपन मुड़ी गोतले फुसफुसा के बतियावत हँसत रहली सन। एह बात के केहू कइसे ताड़ सकत बा जे ऊ केकरा पर हँसत रहली सन आ ऊ अपना के अतना बड़ काहे सोचत रहली सन।

लगले कुछ करे के रहे। मास्टर से पूछल गइल सवाल के मकसद आपन प्रतिष्ठा वापस पावल रहे। अलेक्सान्द्र इवान के जवाब के गम्भीर मुसुकी के साथे इन्तजार करत रहे। क्लास के निपट कमजोर लइका आ मेहनत से पढ़े वाला लइको सभ एह दिलचस्प बात पर धेयान देत रहले सन। मास्टर जवान रहले, बाकिर अइसन लागत रहे जे ऊ अपना बेढंगा हाल से उबर ना पइहें।

इवान साँचो हकबका गइले। ऊ झेंपत बुदबुदइले :

"बात ई बा ....जे अँ ....अँ ....ई एगो दोसर सवाल बा। तहनी के जानत बाड़ सन ....अँ ....अँ ....ई कुछ दोसर सम्बन्ध के ....सवाल बा। हम ना समझनीं जे तें का पूछ रहल बाड़े?"

अलेक्सान्द्र समुचित पढ़ाकू जस आपन हाव–भाव बनावे के भरपूर जतन कइलस। एकर नतीजा अइसन लागत रहे जे बाउर ना रहे।

"देख सन, जब हमनी के 'अमूल्य उपहार' पढ़ेनी सन त ई समझ ना पावेनी सन जे ओकर कवन उपहार से सरोकर बा।"

www.bhojpurisahityangan.com

बाकिर ऊ मास्टर, अचके एह उलझन से बाहर निकल अइले। निश्चत रूप से नीमन तरे से निकल अइले।

"हमनीं के कुछ आउर बात पर विचार करत रहनी सन। विषय बदलला के कवनो दरकार नइखे। हम एक–दू दिन में तोरा घरे आयेब आ सगरी बात साफ–साफ समझा देब। तोर मतारियो–बाप सुनी।

अलेक्सान्द्र के चेहरा साफे उतर गइल। ऊ एगो विनम्र आ असहाय हाल में पर गइल। "मेहरबानी क के आईं" ऊ बुदबुदइल।

वोलोद्या खून के आँखे अलेक्सान्द्र के देखलस। अपना जगह से खाड़ा भइले बिना कहलस :

"अगर सवाल क्लास में पूछल गइल बा त ओकर जवाब घर में काहे?"

बाकिर मास्टर ओकर बात अनसुना क देहले। अलेक्सान्द्र कुछ आउर कहे वाला रहे, तले कोत्स्या ओकर कमीज घींच के जबरन ओकरा सीट पर बइठा देहलस :

"गुण्डई मत कर, ना त फँस जइबे," ऊ सद्भाव से सलाह देहलस।

पिछला बेंच के इन्तजारी बचल रहे, बाकिर कवना मूल्य पर!

अलेक्सान्द्र तीन दिन बादो एह घटना से चिन्तित रहे। घर पर जब कवहूँ घण्टी बाजे त ऊ घबरा जात रहे। बाकिर मास्टर अबहीं ले ना आइल रहले। अलेक्सान्द्र अपना स्कूल के पढ़ाई ठीक से करत रहे आ क्लास में चुप रहत रहे। वोलोद्या के तरफ देखहूँ के कोशिश ना करत रहे। अगर इवान साँचो घरे आ जइते आ बाप के सगरी किस्सा सुना देते त के जाने अन्त का होखी? अबहीं ले स्कूली मामला में अलेक्सान्द्र के अपना बाप से कबहूँ झगड़ा ना भइल रहे। ओकरा बढ़िया नम्बर मिलत रहे आ कवनो झगड़ा–टण्टा ना होत रहे। घर पर ऊ स्कूल का बारे में ई सोच के कमे बात करे के कोशिश करत रहे जे कुल मिला के इहे सुबहित होखी। अब ई एगो किस्सा हो गइल।

रात के बिछावन पर लेटला के बाद अलेक्सान्द्र, जवन कुछ भइल, ओह पर विचार करत रहे। सभकुछ साफ रहे। क्लास में फालतू सवाल पूछला के बारे में बाप कुछुओ ना बोलिहें, बाकिर जब ओह 'अमूल्य उपहार' के सवाल होखी त बस। ऊ झगड़ा के जड़ हो जाई। ओही घरी अलेक्सान्द्र लमहर साँस लेत करवट बदललस। ऊ अइसन एह से ना करत रहे जे ऊ झगड़ा में पर जाई। बलुक एह से करत रहे जे कुछ एकरो से जादे भयावह बात होखे जात रहे। झगड़ा त रउआ जेतना चाहीं, ओतना बड़ हो सकत बा। बाकिर ई मुद्दा नइखे। ई झगड़ा होखी त कवना तरे के? का बाप ओकर पिटाई करिहें? ना, ऊ अइसन ना करिहें। बाकिर अपना बाप से अइसन चीज के बारे में केहू कइसे बात कर सकत बा– उपहार, पैर, बाप रे! कइसन भयानक, शर्मनाक आ असम्भव विषय बा।

वोलोद्या पूछलस :

"का ऊ अइले?"

www.bhojpurisahityangan.com

"ना"

'अगर ऊ आवस त तें का करबे?"

"कुछुओ पता नइखे?"

"तें कह दीहे जे तें साँचो कुछुओ नइखे समझले।"

"केकरा से कहेब?"

"अपना बाप से, आउर केकरा से। बस कह दीहे जे तें कुछुओ नइखे समझले। असहूँ एह वाहियात चीज के के समझ सकत बा।"

"हँ, तें बूझत बाड़े जे हमार बाप के बेवकूफ बनावल आसान बा। तोरा पता नइखे जे ऊ तोरा आ हमरा जइसन सैकड़न आदमी के देखले बाड़े।"

"हमरा बुझात बा जे .....ई कहल बेजाँय नइखे .....चल सकत बा .....हम त अपना बाप से इहे कहतीं।"

"आ ऊ एह पर बिसवास क लेते?"

"उनका बिसवास करे भा ना करे के परवाह केकरा बा। हमनी के उमिरे का बा? तेरह बरीस। अरे हमनी के बारे में ई बूझल जाला जे हमनी के हे तरे के कवनो बात ना समझेनी सन। ना समझेनी सन। बस!"

"हमनी के ना समझेनी। बाकिर हम ठीक ऊहे पंक्ति काहे चुननी?"

"बस, असहीं सामने आ गइल, पुश्किन पढ़त रहनीं .... आ ई निकल आइल...."।

वोलोद्या ईमानदारी से अपना साथी के सहजोग करे के चाहत रहे। बाकिर कवनो वजह से अलेक्सान्द्र वोलोद्या से साँच बतावे से कतरा गइल। साँच ई रहे जे अलेक्सान्द्र अपना बाप के धोखा ना दे सकत रहे। कवनो वजह से ऊ अइसन ओह तरे से ना कर सकत रहे, जवना तरे ऊ "अइसन सवाल के बारे में" उनका से बात ना कर सकत रहे।

आँधी आइल त अनपेक्षित कोना से : नाद्या! "नाद्या हमरा के बतवलस ....." ओकर बाप एह तरे बात शुरू कइले।

ऊ ओकरा के अइसन पस्त कइलस जे खुद विषय के तीव्रता तनी कम हो गइल। जब बाप बात कइले त अलेक्सान्द्र एगो विचित्र स्थिति में रहे। ओकरा देह के खून जेने चाहे ओनहीं हेने–होने त कबो ऊपर–नीचे बहत जात रहे, ओकर आँख विवेकशून्य उलझन में मिचमिचात रहे, ओकर माथा एह अनपेक्षित आ अक्षम्य साँच से धप–धप करत रहे जे सगरी भेद नाद्या खोल देहलस। अलेक्सान्द्र एह खबर से एह कदर अवसाद में रहे जे ओकरा इहो धेयान ना रहे जे ओकर जबान अपना पेशकदमी पर बड़बड़ा उठल :

"बाकिर ऊ कुछुओ नइखे जानत....."।

ऊ अपना के काबू में करत जबान के लगाम लगवलस। ओकर बाप ओकरा के गम्भीरता आ शान्ति से देखले। बाकिर अलेक्सान्द्र असल में अइसन सही अवस्था में ना रहे जे ऊ देख पावे जे ओकर बाप ओकरा के कइसे देखत रहले। ऊ अपना

www.bhojpurisahityangan.com

सामने बाप के बाँह में लागल दूगो चाँदी के सितारा के अलावे आउर कुछुओ ना देख सकल। ओकर नजर ओह सितारा के कसीदाकारी पर बेमतलब के टिकल रहे। ओकर बाप के शब्द ओकरा कान में घुसल त ऊ ओकरा दिमाग में कुछुओ क देहलस। ओजुगिया कवनो तरे के एगो बेवस्था प्रकट होखे लागल। स्पष्ट, बोधगम्य आ कुछ सँकारे जोग विचार तेजी से घूमत ओकरा सामने आवे लागल। ओकर बाप के बाँह के तरे उनको से एक तरे के उष्मा आवे लागल। अलेक्सान्द्र समझ गइल जे ऊ ओकर बाप के विचार ह आ ओही में भलाई बा। अचके ओकर चेतना से नाद्या गायब हो गइल। तब ओकर गला भर गइल, शरम के भाव घटे लागल, एगो हार्दिकता भरल मैत्री के दमक से ओकर गाल लाल हो गइल आ ओकर मन के तनी राहत मिलल। अलेक्सान्द्र आपन आँख उठा के बाप के तरफ देखलस। बाप के चेहरा मजबूत आ मांसल रहे। ऊ अपना बेटा के समझदारी के सुस्थिर निगाह से देखत रहले।

अलेक्सान्द्र अपना कुरसी से उठल आ फेर बइठ गइल। बाकिर ऊ अपना निगाह के बाप के चेहरा से तनिको टस से मस ना होखे देहलस आ आपन आँसू ना रोक पवलस– नाश होखे एह आँसू के।

"बाबूजी, अब हम समझ गइल बानीं। हम ऊहे करब जे रउआ कहत बानीं। हम जिनिगी भर अइसने करब। रउआ देखब।" ऊ वेदना भरल आवाज़ में कहलस।

"अपना के शान्त कर," ओकर बाप धीरे से कहले। इयाद रखिहे जे तें का कहले बाड़े – जिनिगी भर। ई बात समझ ले जे हम तोरा पर भरोसा करत बानीं आ हम तोर जाँच–पड़ताल ना करब। हमरा बिसवास बा जे तें एगो मरद बाड़े, महज निठल्ला आदमी नइखे।

बाप तेजी से उठले आ अलेक्सान्द्र उनकर चमकीला बेल्ट आ पिस्तौल के खोल के एगो झलक देखलस। बाप बाहर चल गइले। अलेक्सान्द्र अपना हाथ पर माथा ध लेहलस आ आराम से सुखद स्तब्ध अवस्था में डूब गइल।

"हँ, त?"

"त ऊ कह देहले।"

"आ तोर का भइल?"

"हमार? कुछुओ ना....."।

"आ तें शायद ई कहत रोवे लागल होखबे– बाबूजी हो बाबूजी!"

"रोवे से एकरा का लेवे–देवे के बा?"

"अच्छा, तें ना रोअले का?"

"ना।"

वोलोद्या अलेक्सान्द्र के अलसाइल आ उलाहना के भाव से देखलस।

"तें सोचत बाड़े जे ऊ बाप हउअन त हरमेसा सही बात कहिहें? उनका हिसाब से दोष हरमेसा हमनिये के रहत बा। बाकिर ऊ खुद अपना बारे में कुछुओ नइखन कहत, जे कहे ले ऊ हरमेसा हमनिये के बारे में। हमरो बाप जब कबहूँ चालू हो

www.bhojpurisahityangan.com

जाले त अइसने कहेले– तोरा ई जानहीं के चाहीं, तोरा ई समझहीं के चाहीं....."

अलेक्सान्द्र बिना हुलास के वोलोद्या के बात सुनलस। ऊ अपना बाप से बिसवासघात नइखे कर सकत। तबो वोलोद्या बिसवासघात करे के माँग करत रहे। एमे कवनो सन्देह नइखे जे वोलोद्या के पक्ष में एक तरे के मान–मरजाद रहे आ ओहू से बिसवासघात ना कइल जा सकत रहे। एगो बीच के राह जरूरी रहे। अलेक्सान्द्र ओकरा खातिर कवनो सम्मानप्रद रूप ना पा सकल। वोलोद्या के नीचे उतारे के परी आ ऊ नीचे काहे ना उतरी? जवन होखे, ऊ दुनू बहुते आगे बढ़ गइल बाड़े सन।

"त तोर खेयाल बा जे हमार बाप साफे गलत रहले?"

"हँ, इहे खेयाल बा।"

"बाकी, सम्भव बा जे ऊ सही रहले?"

"एमे सही का बा?"

"केहू आउर होखित त दोसर तरीका से काम करित। ऊ कहित जे तोर ई साहस! तोरा शरम आवे के चाहीं आ अइसने आउर बात।"

"त?"

"ऊ ई ना कहले, काहे?"

"त?"

"तोरा खातिर 'त–त' कइल बहुते आसान बा, बाकिर अगर तें उनकर बात सुनले रहिते ....."

"मान ले हम सुननीं..... त का? तें ई मत सोचिहे जे ऊ हरमेसा असहीं कहेले –'तोरा शरम आवे के चाहीं', 'तोरा शरम आवे के चाहीं?' चिन्ता मत कर। ऊ इहो जानत बाड़े जे बात कइसे बनावल जाला।"

"ऊ बनइहें काहे, का ऊ बात बनावत रहले?"

"बिलकुल, इहे करत रहले। तें सोच लेहले जे ई बड़ी शानदार चीज बा– गोपनीय, गोपनीय। हर केहू के गोपनीय रहस्य बा!"

"ऊ एह तरे से कतई कवनो बात ना कहले।"

"त कइसे कहले?"

"साफे दोसरा तरे से।"

"अच्छा, कइसे?"

"देख ना, ऊ कहले जे जिनिगी में कुछ रहस्यमय आ गोपनीय रहबे करेला। ओकरा बारे में मरद आ मेहरारू सभे जानत बा जे एमे बेजाँय कुछुओ नइखे। ई महज गोपनीय बा, तबो लोग जानत बा। बाकिर ओकरा से का, ऊ आवाम के सोझा बिखिन्दी ना निकाले। इहे संस्कृति ह, ऊ कहले। इहो कहले जे तें अबहीं अधकचरा लइका बाड़े, तोरा अबे–अबे पता चलल आ तोर जबान जानवर के दुम नियर हिले लागल। फेर ऊ कहले....."।

"का?"

www.bhojpurisahityangan.com

"फेर ऊ कहले जे एगो आदमी के आपन जबान महत्वपूर्ण चीज खातिर होखे के चाहीं, बाकिर तें ओकरा के खाली माछी भगावे के काम में ले आवत बाड़े।"

"इहे बा, जे ऊ कहले।"

"हँ, इहे रहे।"

"ई ऊ चतुराई के बात कहले।"

"बाकिर असल में ई कोरा शब्द बा। अगर अइसने रहे त पुश्किन ऊ सब लिखले काहे?"

"अरे हँ, ऊ पुश्किन के बारे में कुछुओ कहले, बाकिर हम बिसर गइनीं जे ऊ एकरा के कइसे पेश कइले।"

"साफे बिसर गइले?"

"ना, पूरा त ना .....बाकिर ओह समय समझ गइल रहनीं, बाकिर ऊ जवन शब्द इस्तेमाल कइले .....तें समझ गइले नू....."

"का भला?"

"ऊ कहले जे पुश्किन एगो महान कवि रहले।"

"वाह, ई कवन नया बात बा। का कहे के बा।"

"ना .....तनी रुक जो। मुद्दा ई नइखे जे ऊ महान रहले। बलुक तोरा ई समझे के बा जे....."।

"ओह पंक्तियन के बूझल तनिको कठिन नइखे!"

"हँ, साँचो नइखे। बाकिर ई मुद्दा नइखे। जे ऊ कहले, ऊ रहे..... अहा इयाद परल– ई बिलकुल साँच बा, बिलकुल साँच, इहे रहे, जे ऊ कहले– बिलकुल साँच बा!"

"बन्द कर– बिलकुल साँच!"

बाकिर इहे त ऊ कहले जे ई बिलकुल साँच बा। ई कविता ओकरे बात करत बा .....ओकरे .....तें बूझत बाड़े....."।

"ठीक बा, हम बूझत बानीं। फेर.....?"

"फेर ऊ कहले– पुश्किन ई बात कविता में कहले..... अइसन अद्भुत कविता में, आ तब .....आ हँ एगो आउर शब्द रहे– अहा! कोमल–कान्त कविता। फेर ऊ कहले जे इहे सौन्दर्य बा।"

"सौन्दर्य?"

"हँ, आ ऊ कहले जे तें सौन्दर्य के बारे में कुछुओ नइखे जानत। तें एकरा के कुछुओ आउरे बनावे पर तूलल बाड़े।"

"अइसन कुछुओ नइखे! एकरा के कुछ आउर के बनावे के चाहत बा?"

"भाई, ई ऊ बा, जे ऊ कहले– तें एकरा के एगो अइसन बात में .....ना, असभ्य पियक्कड़ के भाषा में बदल देवे के चाहत बाड़े। तोरा जे चाहीं, ऊ पुश्किन ना, बलुक देवार पर लिखल गन्दा इबारत बा....."।

वोलोद्या सोझे खाड़ा हो गइल आ धेयान से सुनत रहल। फेर ओकर होठ

www.bhojpurisahityangan.com

सिकुरे लागल, बाकिर ओकर निगाह कुछुओ आउर सोचत रहे।

"सगरी बात इहे रहे?"

"हँ, सगरी इहे रहे। ऊ तोरा बारे में कुछुओ कहले।"

"हमरा बारे में?"

"हँ।"

"ई दिलचस्प बा।"

"हँ।"

"सुनाईं तोरा के?"

"तें सोचत बाड़े जे जवन ऊ कहले, ओकर हमरा बदे महत्त्व बा?"

"तोरा खातिर त निश्चिते नइखे।"

"तें त उनका के अपना आँख में धूर झोंके देहले।"

"ना हम अइसन ना कइनीं।"

"ई माने के परी जे ऊ तोरा के पट्टी पढ़ा देहले, बाकिर हमरा बारे में का कहले?"

"ऊ कहले जे तोर वोलोद्या 'अँगरेज' बने के कोशिश करत बा, बाकिर असल में ऊ महज एगो जंगली छोकरा बा।"

"हम?"

"हँ।"

"आ ई कहले जे 'बने के कोशिश' करत बा?"

"हँ?"

"आ जंगली?"

"हँ, इहे ऊ कहले– 'जंगली'।"

"बहुते बढ़िया। आ तें का कहले?"

"हम?"

"तें जरूरे खुश भइल होखबे?"

"हम खुश ना भइनीं।"

"त हम जंगली बानीं। तें तनी सोच जे तें सभ्य आ सुसंस्कृत आदमी बाड़े।"

"आ ऊ एगो आउर बात कहले– अपना वोलोद्या के बता दीहे जे समाजवादी राज्य में ओकरा जस जंगली आ असभ्य बदे कवनो जगह नइखे।"

वोलोद्या एह सगरी बतकही में पहिला बेर तिरस्कार से मुसुकी छोड़लस –"माने के परी जे ऊ तोरा के नीमन पट्टी पढ़वले। बात ई सगरी तोरा गला के नीचे उतर गइल। अब तोरा साथे दोस्ती राखल खतरनाक होखी। अब तें सुसंस्कृत आदमी बाड़े। आ तोर बहिन सगरी बात पहुँचा दी। लइकी सभ ओकरा के जरूरे बता दीहे सन। क्लास में कुछुओ कहल मोहाल हो जाई। आ तें का बूझत बाड़े, ऊ कइसन बिया? का तें जानत बाड़े जे ऊ खुदे कइसन बिया?"

"ऊ कइसन बिया? तोर का मतलब बा?"

www.bhojpurisahityangan.com

अलेक्सान्द्र साँचो ना समझ पावल जे वोलोद्या के का मतलब रहे– ऊ खुदे कइसन बिया? नाद्या सन्देह से परे रहे। साँचो, अलेक्सान्द्र ओह पहिलका प्रबल आघात के अबहीं ले भुलाइल ना रहे, जे ओकरा ओह घरी लागल रहे। जब पता चलल जे नाद्या ओकर पोल खोल देले बिया त कवनो वजह से ऊ अपना बहिन से नाराज ना भइल, बलुक ओकरा अपने पर खीस बरल। ऊ ई काहे भूला गइल जे ओकरा एह बारे में सभकुछ मालूम हो जाई। अब ऊ वोलोद्या के तरफ देखलस। बात साफ रहे जे वोलोद्या कुछ जानत रहे।

"त बताव, कइसन बिया ऊ?"

"ओहो, तें कुछुओ नइखीं जानत? ऊ तोरा बारे में बहुते कुछ कहलस, बाकिर ऊ खुदे कइसन बिया?"

"बताव।"

"तोरा के नइखीं बता सकत .....तें अइसन सुसंस्कृत आदमी जे बाड़े!"

"अरे बताव त सही।"

वोलोद्या हठ करे लागल, बाकिर ओकर थुलथुल चेहरा पर अस्पष्ट चिन्ता के भाव अबहुँओ रहे। ओकरा आँख में जवन निठल्लापन लउकत रहे, अब ओकरा जगह अनेक छोट–छोट सूई जस चमक रहे। अइसन चमक तबे होला जब एगो लइका के शाश्वत श्रेष्टता आ सत्य–निष्ठा ओकर आहत अभिमान से टकरात बा।

एह टकराव में अभिमान के जीत भइल। वोलोद्या कहलस :

"हम तोरा के सभकुछ बता देब, बाकिर .....एगो चीज आउर बा, जे हमरा पता लगावे के परी।"

एह तरे एगो समझौता हो गइल। नाद्या दसवाँ क्लास में रहे आ ओकरा दखल में दोस्तन के कवनो दिलचस्पी ना रहे। तबो बहिन के छल–कपट बर्दाश्त नइखे कइल जा सकत।

नाद्या ओह स्कूल के दसवाँ क्लास में पढ़त रहे। ओमे हमार ई दुनू दोस्त पढ़त रहले सन। ई बात साफे जाहिर रहे जे पुश्किन के मामला कवना राहे उजागर भइल। अपना निगाह के अभिमान जस बनावत आ ओही अभिमान में आपन लट झटकावत लइकी सभ फुसफुसा के बतियावत रहली सन। अब एह बात के पता चल गइल रहे जे ऊ फुसफुसा के कवना बारे में बतियावत रहली सन। ओकनी के लगले एह मोका के लाभ उठवली सन। अगर ई इयाद कइल जाव जे पुश्किन के पंक्तियन के बारे में पूछल गइल सवाल बहुते सभ्य तरे से पेश कइल गइल रहे। असल में ओह कविता के असभ्यन के भाषा में राखे के केहू सोचलहूँ ना रहे। खाली लइकियने ना, बलुक हर केहू ई महसूस कइल जे ऊ पंक्ति सुन्दर रहे। मास्टर के चाहत रहे जे ऊ सभसे पहिले सभकुछ ओकनी के सही तरे से समझवते। अगर ई सभ बात इयाद कइल जाव त लइकियन के घटिया चालाकी लगले उजागर हो जाइत। ओकनी के पुश्किन का बारे में बतकही के ढोंग कइली सन आ मास्टर बहकावा में आ गइले। बाकिर ऊ नाद्या के पुश्किन के लाइन का बारे में बता देले रहले। इहे

www.bhojpurisahityangan.com

ऊ बात रहे, जवना के बारे में ऊ क्लास में पाठ के समय बतियावत रहली सन।

वाल्या पाँचवा क्लास में पढ़े वाली एगो अइसने अभिमानी लइकी रहे। बाकिर ऊ आठवाँ क्लास के लइका गोंचारेंको के साथे एह बहाना से घरे जात रहे जे ऊ दुनू एके इमारत में रहत बाड़े सन। ऊ दुनू आइस–रिंक में संगही गइले सन आ एके साथे लवटले सन। वोलोद्या बहुत पहिले शरद में ओकरा नाँवे एगो चिट्ठी लिख के भेजले रहे।

"वाल्या के?"

"ई मत सोचिहे जे हम कुछुओ नइखीं बूझत। हम सभकुछ समझत बानीं। कोल्या केतना सुन्दर आ चतुर लइका बा, बाकिर शान देखावे बदे ओकरा लगे कुछुओ नइखे।"

ऊ व्याकरण पाठ के समय वाल्या के ई चिट्ठी पावत आ डेस्क का नीचे ओकरा के पढ़त देखले रहे। इहो देखले रहे जे ऊ पूरा पाठ के बीच बिखियाइल बइठल रहे। आखिरी पाठ के समय वोलोद्या के जवाब मिलल।

"वोलोद्या के।"

"नासमझ मूरख। जब तोरा तनी अकिल हो जाव त हमरा के बतइहे।"

एह अपमान के तिलमिलाहट तीन दिन ले बनल रहल। ऊ एगो आउर नोट भेजलस, बाकिर ऊ एगो शर्मनाक हालत में ओह पर लिखल एह इबारत के साथे लवट आइल :

"ई वोलोद्या के लिखल बा। एह से एकरा के पढ़ल जरूरी नइखे।"

एकरा बादो ऊ गोंचारेंको के साथे जात रहल। मास्टर सोचते जे ऊ लइकी बिया, एह से सन्देह से परे बिया। खाली वाल्या ना, ओकरा जइसन ढेरे बाड़ी सन। ओकनी के आपन गोपनीय बात बा, ओकनी के आपने कवनो तरे के रहस्यमय साजिश बा आ पाँचवा क्लास के ओकनी के नाज–नखरा उठावे के परत बा। एह रहस्य के सगरी खबर ऊपर के क्लास ले जात बा– आठवाँ, नौवाँ आ दसवाँ ले। आपन सुघर चेहरा वाला बड़ लइका हर जगह पहुँच जात बाड़े सन। ई सोचल मोसकिल बा जे बड़हन क्लास के लइकी सगरो का करत बाड़ी सन।

एह विषय पर वोलोद्या के विचार शंका भरल रहे। ऊ बड़ लइकियन के बारे में एकदमे असम्भव किस्सा सुनावे आ एह बात के कवनो खास चिन्ता ना करत रहे जे केहू ओह पर बिसवास करी कि ना। किस्सा के सच्चाई में ओकर दिलचस्पी ना रहे। ऊ विषय वस्तु, सम्भावना आ विवरण में दिलचस्पी राखत रहे। दोसर केहू ओमे कुछुओ ना जोड़त रहे। वोलोद्या पर बिसवास त ना कइल जात रहे, तबो ओकर किस्सा दिलचस्पी से सुनल जात रहे।

नौवाँ आ दसवाँ क्लास के लइकी सभ! तनी ओकनी के बारे में सोचीं। एहीजा ले जे वोलोद्या ओकनी से घबरात रहे। का ओकरा दिमाग में ओकनी के एको चिट्ठी लिख के भेजे के बात कबहूँ आ सकत रहे? ऊ कइसे लिखित? केकरा बारे में लिखित? बड़हन क्लास के लइकी सभ समझ में ना आवे वाला लइकी रहली सन।

www.bhojpurisahityangan.com

ओकनी ओर देखलो भय पैदा करत रहे। मान लेहल जाव जे ओकनी के धेयान में आ जाव आ ऊ तोरा ओर देखे लागे– अइसन में कवनो लइका कहिये का सकत बा? सभसे जादे साहसी लइका कबहूँ गलियारा में धड़धड़ात जात घरी कवनो एगो बड़ लइकी के जाँघ भा छाती छू के निकल सकत रहे। बाकिर ऊ मनोरंजन के सभसे खराब तरीका रहे। एह तरे के हरकत भय आ त्रस्त हाल में कइल जात रहे, जवना में खतरा जादे रहे। अगर तें धरा गइले भा ऊ तोरा के देख लेहलस भा तोरा के कुछ कह देहलस त ओह कठोर फर्श पर तोरा बचे के ना त कवनो राह भेंटाई आ ना केहू छुपे के जगह दी। पिछला बरीस ओकरा क्लास में अइसने एगो दुस्साहसी लइका इल्या रहे। बाद में ओकरा के स्कूल से निकाल देहल गइल त ओकर का हाल भइल रहे? लइकन के बीच ऊ अइसन बात करत रहे जे मेज–कुरसी ले झेंप जात रहे। ओकर श्रोता सुने के बजाय दोसरा ओर देखे लागत रहे। आपन अइसन बतकही के बादो अगर ऊ कवनो अशिष्ट हरकत करे आ लइकियन के निगाह ओकरा पर जाव त ऊ पानी–पानी हो जात रहे। ओकर बोलती बन्द हो जात रहे आ ऊ बेशरम जस मुसुकी छोड़े के कोशिश करत रहे। लइकी ओकरा के अतने कहलस –"आपन नाक पोंछ, तोरा लगे एगो रुमाल होखी, बा कि ना?"

स्कूल के अधिकारी एह सभ बात के वजह से ना, बलुक क्लास से भागे आ पढ़ाई ना करे के चलते ओकरा के स्कूल से निकाल देले रहे। जब ऊ गइल त केहू के दुःख ले ना भइल, बलुक सभे राहत के साँस लेहल।

अलेक्सान्द्र के मन में बड़ लड़कियन के खिलाफ कुछुओ ना रहे। तबो ऊ एगो भयानक राज रहे, एगो अइसन राज रहे जवना के असली माने–मतलब सपनों में ना सूझत रहे। अगर सुझबो करित त ओकरा के उजागर ना कइल जा सकत रहे। बाकिर ऊ आउर से बेहतर हाल में रहे, काहेकि नाद्या खुद ओकरा फ्लैट में ओकरा आ ओकर मतारी–बाप के साथे रहत रहे। ऊ एगो अइसन प्राणी रहे, जेकरा के ऊ समझ ना सकत रहे। तबो ऊ ओकरा के जादे पसन्द करत रहे आ ओकरा साथे लगाव महसूस करत रहे। नाद्या के दसवाँ क्लास के सहेली सभ फ्लैट में आवत रहली सन। नाद्या जइसने ओकनियो के प्रबल प्रभावशाली आँख, मधुर सोभाव, साफ–सुथरा, सुन्दर केश वाली कमसिन लइकी रहली सन। ओकनी के देह–दवासा में कुछ अइसन बात रहे, जवना के सपना भा हकीकत में नाहिंये सोचल बेहतर रहे। कबो–कबो अलेक्सान्द्र के ओकनी के संगत में शामिल क लेहल जात रहे। बाकिर ओकरा के निस्वार्थ कारण से शामिल ना कइल जात रहे। ओकनी के साथे ऊ सहज बेवहार राखत रहे, जोर से बोले, हँसी–ठट्ठा करे, आइसक्रीम ले आवे भा सिनेमा के टिकट कटावे बदे धउर के जात रहे। ई सभ बाहर से त एकदम ठीक रहे, बाकिर अन्दर से ओकर दिल धक–धक करे आ ओकर आत्मा बेचैन हो जात रहे। लइकियन के आपन बिसवास ओकरा के उलझन में डाल देत रहे। ओकनी में एक तरे के विवेकपूर्ण शक्ति रहे, जवन आकर्षक ढंग से ओकनी के बनावटी कमजोरी आ पुरुषोचित कुशलता के अभाव के विपरीत रहे। ओकनी के ठीक से पत्थर ले फेंके

www.bhojpurisahityangan.com

के ना जानत रहली सन। जब एक बेर क्लावा अलेक्सान्द्र के गाल अपना मुलायम हाथ में भर के कहलस जे ई लइका एक दिन सुदर्शन पुरुष बनी त अलेक्सान्द्र के सउँसे देह में भावावेश के एगो अजीब सनसनात लहर धउरल, जे ओकर साँस के रोक के डंक मारत निकल गइल। जब ऊ एह लहर के प्रभाव से निकल के आपन आँख खोललस त ऊ देखलस जे लइकी सभ ओह बात के कबे बिसर गइल रहली सन। ओकनी के अपने बीच कवनो चीज पर शान्ति से विचार करत रहली सन। तबे ओकरा धुँधराह अनुभव भइल जे मानवीय सवख के सीमा रेखा कतहूँ लगहीं बा। ओह रात बिछावन पर परल ऊ एह घटना के शान्ति से इयाद कइलस आ जब आँख बन्द कइलस त ऊ लइकी सभ ओकरा कल्पना में उजर बादर जस मँड़रात रहली सन।

ऊ ना जानत रहे जे ओकनी के बारे में कइसे सोचे। बाकिर ओकरा अपना दिमाग में ऊ हरमेसा मनुहारी भाव से जुड़ल रहली सन। एकरा के ना त वोलोद्या के कटु बात रोक सकत रहे आ ना इल्या के ऊ भद्दा बेवहार।

एह से ऊ ओइसन कहानियन पर भरोसा करे के ना चाहत रहे, जे लइका सभ सुनावत रहले सन आ इहो कहत रहले सन जे ओमे लइकियो भाग लेत रहली सन। जब वोलोद्या नाद्या के बारे में संकेत देत रहे, तबो इहे बात रहे। वोलोद्या के सबूत केने बा?

"त तें का चाहत बाड़े जे ऊ सभकुछ तोरा नाक के सोझा कर सन?"

"ना, बाकिर तोरा लगे कवन सबूत बा?"

"तें कबहूँ धेयान देहले जे तोर नाद्या कवना तरे घरे जात बिया?"

"कवना तरे जात बिया?"

"ओकरा पाछे केतना छैला लागल बाड़े सन?"

"केतना से तोर का मतलब बा?"

"का तें ओकनी के कबहूँ गिनले बाड़े? ओकरा में वास्या, पेत्या, ओलेग, तरानोव, किसेल आ फिलिमोनोव बाड़े सन। का तें ओकनी के नइखे देखले?"

"अच्छा, त का भइल?"

"तें बूझत बाड़े जे ओकनी के असहीं ओकरा पाछे परल बाड़े सन? तें बूझत बाड़े जे ऊ असहीं बेवकूफ बाड़े सन? तें आपन आँख खोल के राख।"

अलेक्सान्द्र देखलस जे ओकनी के साँचो संगे–संगे जात रहले सन, खुश रहले सन, हँसत–बोलत रहले सन आ नाद्या आँख झुकवले ओकनी के बीच में चलत रहे। ऊ क्लावा के अइसने चौंधियावे वाला माहौल में देखलस। तनी उदास ईर्ष्या के अलावे ओकरा मन में आउर कवनो सन्देह ना भइल, तबो छैला ओकरा ना सुहात रहले सन।

वसन्त आइल। आसमान में सूरज के अवधि बढ़ गइल। सड़क के कगरी चेस्टनट खिल गइल। अलेस्कान्द्र के पहिले से बहुते काम रहे– मैच खेलल, नाव खेवल, पौंड़ल आ इम्तिहान के तइयारी। नाद्या अपना इम्तिहान खातिर सामान्य से

www.bhojpurisahityangan.com

जादे मेहनत करत रहे। ओकरा कमरा में रोजे लइकियन के जुटान होत रहे। साँझी के ओकनी के आपन मरुआइल आ गम्भीर चेहरा लेहले निकलत रहली सन। अलेक्सान्द्र के हँसी–ठट्ठा के ओकनी पर कवनो असर ना परत रहे। कबो–कबो लइको सभ पढ़े खातिर आवत रहले सन। एह सभ बातन में दसवाँ क्लास के अइसन गहिर छाप रहे जे वोलोद्या के ओकनी का बारे में कवनो घृणित बात कहे के साहस ना होत रहे।

ठीक तबे, ठीक इम्तिहान के गहमागहमी के बीचे कुछुओ हो गइल। देर साँझ के रात के खाना खइला के बाद बाप कहले –"नाद्या केने बिया?"

मतारी देवार घड़ी का ओर निगाह धउरवली।

"हम खुदे इहे सोचत रहनीं जे ऊ चार बजे साँझी के अपना सहेली किहाँ पढ़े गइल रहे।"

"बाकिर अब त रात के एक बज गइल।"

"हम बड़ी देर से फिकिराह बानीं," मतारी कहली।

बाप अखबार उठा लेहले, बाकिर केहू समझ सकत रहे जे उनका पढ़े में कवनो हुलास ना रहे। ऊ अपना बेटा के ओर देखले :

"अलेक्सान्द्र! तें सूतल काहे नइखे?"

"काल्ह छुट्टी बा।"

"जो बिछावन में सूत जो!"

अलेक्सान्द्र भोजन कक्ष में सोफा पर सूतत रहे। ऊ हाली–हाली आपन कपड़ा उतरलस आ बिछावन में घुसिया गइल। बाकिर ओकरा नींद ना परल आ चुपचाप लेटल नाद्या के इन्तजार करत रहे।

नाद्या दू बजे रात के घरे लवटल। अलेक्सान्द्र सकुचाइले घण्टी बजवला आ खामोशी से दरवाजा खोल के ओकरा भीतर घुसला के आवाज़ सुनलस। ऊ बूझ गइल जे ऊ कवनो गलती कइले बिया। हॉल में हलुके आवाज़ में बतकही भइल। ऊ मतारी के कहत सुनलस :

"तें ई सोचत बाड़ी जे ई खाली सफाई देवे के मामला बा?"

एकरा बाद शयन–कक्ष में कुछ बतकही चलल। बाप ओजुगिये रहले। ऊ का बात करत रहले ई रहस्य बनल रहल। अलेक्सान्द्र देर ले सूत ना सकल। ऊ कौतुहल, घबराहट आ भ्रम टूटे के निराशा के विचित्र मेरावट से अभिभूत हो गइल रहे। नींद आवे से पहिले ऊ आखिरी बेर नाद्या आ क्लावा के चेहरा आ ओकनी के अगली–बगली कुछ अप्रिय, असहनीय आ संगही कौतुहल भरल विचारन के तेजी से नाचत देखलस। ओकरा बाद ऊ नींद के वश में आ गइल।

अगिला दिने अलेक्सान्द्र नाद्या के चेहरा के धेयान से देखलस त कुछ बात ओकरा नजर में आइल। ओकरा आँख के नीचे नीला छाँहीं रहे। ओकर चेहरा मरुआइल, उदास आ विचारमग्न रहे। अलेक्सान्द्र ओकरा के सहानुभूति से देखलस। जवन बात के ओकरा सभसे जादे चिन्ता रहे– ऊ ई पता लगावे के रहे

www.bhojpurisahityangan.com

जे काल्ह रात का भइल रहे।

ऊ वोलोद्या के कुछुओ ना बतवलस। ऊ अबहुँओ ओकर दोस्त रहे। दुनू स्कूली मसला पर साथे–साथे बात कर सन, छोट–मोट शरारत कर सन, मछरी मारे जा सन आ लइकियन के आलोचना कर सन। एकरा बादो ऊ अबहुँओ नाद्या के बारे में बात करे के ना चाहत रहे।

घर पर पारिवारिक मामला में जवने दरार पावत रहे, ओकरा में आपन नाक जरूरे घुसेड़त रहे। ऊ नींद के बहाना कइले पटाइल रहत रहे। अध्ययन कक्ष में घण्टो छुप के बइठल अपना मतारी–बाप के बतकही सुनत रहे। नाद्या पर, ओकर मनोदशा पर आ ओकर बोले के तरीका पर नजर राखत रहे।

छुट्टी के दिने ओकर किस्मते जाग परल। ओकर बाप तड़के शिकार पर निकल गइले आ जाये के तइयारी में सउँसे परिवार के जगा गइले। अलेक्सान्द्र जाग त गइल, बाकिर आँख बन्द कइले इन्तजार करत रहे। ऊ कनाखियात देखलस जे नाद्या आधा कपड़ा पहिरले एक घण्टा खातिर अपना मतारी के कमरा में चल गइल। ओकर बाप जब कबहूँ जल्दी चल जात रहले भा रात के काम पर रहत रहले त ऊ हरमेसा असहीं करत रहे।

तनिये देर में शयन कक्ष में बतकही होखे लागल। एकर खासा बड़हन हिस्सा अलेक्सान्द्र के कान ले ना पहुँच पावल। ऊ ना त सुनिये सकल आ ना कुछुओ समझ पावल।

ओकर मतारी कहली –"प्यार के परीक्षा होखे के चाहीं। एगो आदमी ई सोच सकत बा जे ऊ प्यार करे लागल बा, बाकिर असल में अइसन नइखे होत। लोग बे–परखले मक्खन ना कीने, बाकिर हमनी के अपना भावना के अँजुरी भर के आन्हर नियर धउरत बानी सन। ई साँचो मूरखता भरल बा।"

"ओकर परीक्षा लेहल मोसकिल बा," नाद्या फुसफुसात अस्पष्ट स्वर में कहलस।

फेर सन्नाटा पसर गइल। शायद ऊ हलुक आवाज़ में फुसफुसा के बतियावत रहे आ शायद मतारी नाद्या के अझुराइल बाल के नेह से सहरावत रहली। तवने घरी मतारी कहली :

"नादान, ओकर परीक्षा लेहल सहज बा। तें एगो नीमन आ असली भावना के हरमेसा जान सकत बाड़ी।"

"नीमन मक्खन के तरे?"

मतारी के आवाज़ में एगो मुसुकी के आभास मिलल।

"ओकरो से बेसी आसान।"

सम्भव बा जे नाद्या आपन चेहरा तकिया में भा मतारी के गोदी में छुपवले होखी, काहेकि ओकर आवाज़ बहुते धीरे सुनाई परत रहे।

"रे माई, ई केतना मोसकिल बा!"

चिड़चिड़ाइले अलेक्सान्द्र करवट बदले वाला रहे, तले ओकरा इयाद पर

www.bhojpurisahityangan.com

गइल जे ऊ त गहिर नींद में सूते के बहाना कइले पटाइल बा। एह से बिखियाइले आपन मुँह फुला लेहलस। रोहा–रोहट बहुते भइल। फेर एकर मक्खन से का लेवे–देवे के बा। मेहरारुओ सभ अजबे बाड़ी सन, मतलब के बात काहे नइखी सन करत?

"हँ, ई ठीक बा जे थोर अनुभव होखहीं के चाहीं....."।

ओकर मतारी जे आगे कहली, ऊ सुनाई ना परल। फुसफुसा के बतियावे में एकनी के कवनो जवाबे नइखे!

नाद्या हाली–हाली उत्तेजित हो के फुसफुसा के बोले लागल :

"माई, तोरा खातिर ई कहल जादे उचित बा– थोर अनुभव। मान ले हमरा तनिको अनुभव नइखे, थोरहूँ नइखे त? बताव, ई कइसे होला– प्यार के अनुभव? एकर जरूरत परेला का? प्यार के अनुभव के? ओह, हमरा कुछुओ नइखे बुझात।"

अलेक्सान्द्र सोचलस –"अब ऊ रोअल–धोअल शुरू करी," ऊ एगो हलुकाहे आह भरलस।

"ना, दइया रे दइया, दोसर के अनुभव ना। प्यार के अनुभव– ई त बहुते अप्रिय सुनाई परत बा। जिनिगी के अनुभव।"

"हमरा जिनिगी के अनुभवे का बा?"

"तोरा सत्रह बरीस के अनुभव बा। ई ख़ासा बड़हन अनुभव बा।"

"माई, हमरा के कुछुओ बताव। हमरा के बता दे माई।" लागत रहे जे मतारी अपना विचारन के एकवठ करत रहली।

"का तें हमरा के ना बतइबे?"

बहाना जन बनाव, तें खुदे जानत बाड़ी।"

"हम, बहाना बनावत बानीं?"

"तें जानत बाड़ी जे मेहरारुअन के उचित मान–मरजाद आ गर्व का होला। जवना मेहरारू में ई गर्व नइखे, ओकरा के कवनो मरद तनिको इज्जत ना करे। तें जानत बाड़ी जे अपना पर काबू राखल आ पहिला आवेग पर समर्पण ना कइल केतना आसान बा।"

"बाकिर मान ले केहू समर्पण करे के चाहे त?"

अलेक्सान्द्र अब निराश होखे लागल रहे– ऊ ओह साँझ के बारे में कब बात करिहे सन? भइल का रहे? सगरी किताबी बात बा– समर्पण कइल आ आवेग।

मतारी कठोर होत पहिलहूँ से जादे जोर देत कहली :

"अगर तें अइसने कमजोर बाड़ी त शायद समर्पण क देबे। एगो कमजोर आदमी हरमेसा नुकसान में रहत बा आ सगरो संकट में अझुरात जात बा। ई कमजोरिये बा, जे लोग के आपन सगरी खुशी के दम घोटे बदे उकसावत रहत बा। एगो सही आदमी जानत बा जे ओकरा कइसन बेवहार करे के चाहीं। कीचड़ के सही तरे से बान्ह के राखे के परेला, ना त ऊ सगरो टपकते रही।"

"का तें समझत बाड़ी जे हम कीचड़ जस बानीं?"

www.bhojpurisahityangan.com

"काहे।"

तें जानत बाड़ी जे बात का बा– हम प्रेम में आसक्त बानीं.... लगभग प्रेमासक्त।"

अलेक्सान्द्र तकिया से मुड़ी उठा लेहलस, एह से जे दुनू कान से सुन सके।

"लगभग भा साँचो, हमरा ओह से कवनो डर नइखे। तें हमार समझदार बेटी बाड़ी। तोरा में आत्मसंयम बा। इहे वजह बा जे हम तोरा से ओह चीज खातिर नाराज नइखीं।"

"त काहे?

"हमरा तोरा से अइसन दुर्बल बेवहार के कबहूँ उम्मीद ना रहे। हमरा खेयाल रहे जे तोरा में कतहूँ जादे गर्व आ स्त्रियोचित मान–मरजाद होखी। तें एगो आदमी से दोबारा भेंट करे गइली आ ओकरा साथे रात के एक बजे ले रहली।"

"ओह!"

"ई साँचो, दुर्बलता बा। ई अपना साथे सरासर अन्याय बा।"

फेर ओजुगिया खामोशी पसर गइल। शायद नाद्या आपन मुँह तकिया में छुपा लेले होखी आ शरम के मारे कुछुओ बोल ना पावल होखी। अलेक्सान्द्र के तनी बेचैनी लेस देहलस। मतारी शयन–कक्ष से बहरी निकलली आ मुँह–हाथ धोवे खातिर चउका में चल गइली। नाद्या साफे शान्त हो गइल।

अलेक्सान्द्र जोर से अँगड़ाई लेहलस, खँसलस, जम्हाई लेहलस आ अइसने कई गो हरकत कइलस, जवना से ई बुझाव जे ऊ अबे–अबे गहिर नींद से जागल बा आ हलुक मन से दिन के अगवानी करत बा। नाश्ता करत बेर ऊ अपना मतारी आ बहिन के चेहरा धेयान से देखलस। फेर अपना जानकारी पर खुश भइल। नाद्या के चेहरा में देखे के कुछुओ ख़ास ना रहे। ओकर हाव–भाव सामान्य रहे। एहीजा ले जे ऊ हँसी–मज़ाक कइलस आ मुसुकियो छोड़लस। बाकिर ओकर आँख लाल रहे, ओकर बाल हरमेसा के तरे सझुराइल ना रहे आ साधारण तरे ऊ पहिले जस सुन्दर ना लागत रहे। मतारी कप के तरफ देखत बेमन के मुसुकी छोड़त एके बेर चाय गटक गइली। बेसी सम्भव बा जे उनकर मुसुकी में तनी उदासी के भाव रहल होखे। फेर ऊ अलेक्सान्द्र के देखत सही तरे से मुसुकी छोड़ली।

"तें मुँह काहे बनावत बाड़े?"

अलेक्सान्द्र चौंक परल। हाली से अपना चेहरा के हाव–भाव ठीक कइलस। ओकर चेहरा अइसन हरकत करत रहे, जवन ओकरा मतारी के नापसन्द रहे।

"हम मुँह नइखीं बनावत।"

नाद्या अपना भाई के तरफ हुलास आ परिहास भरल नजर धउरवलस, दू भा तीन बेर मुड़ी हिलवलस, बाकिर कहलस कुछुओ ना। ई ओकर घमण्डी बेवहार रहे, जवन शायद काल्ह होखित त चलियो जाइत। बाकिर आज ई अलेक्सान्द्र के जानकारी खातिर एगो अपमानजनक चुनौती रहे। ऊ ओकरा के आसानी से धराशायी कर सकत रहे....। तबो गोपनीयता मान–मरजाद से बढ़ के रहे आ अलेक्सान्द्र के एगो औपचारिक जवाब से सन्तोष करे के परल :

www.bhojpurisahityangan.com

"वाह, हमरा के अइसे काहे देखत बाड़ी?"

नाद्या मुसुकी छोड़लस :

"तोरा के देख के अइसन लागत बा जे तोरा भूगोल में उत्कृष्ट नम्बर आइल होखे।"

एह शब्दन में उपहास के भाव रहे, बाकिर एकर अलेक्सान्द्र पर कवनो असर ना परल। बाकिर अचके ओकरा दिमाग पर भूगोल हावी हो गइल– ओकरा जेहन में नदी आ नहर नाचे लागल, आँकड़ा आ नगर के नाँव घूम गइल। आज इम्तिहान रहे। ऊ बहिन के तरफ हाथ हिलावत भूगोल के किताब लेवे बदे धउर गइल।

स्कूल जात घरी ऊ सबेरे के बतकही के इयाद करत रहल। पृष्ठभूमि सुखद रहे– अलेक्सान्द्र के राज मालूम बा आ एकर केहू के कानोकान खबर ले नइखे। ई पृष्ठभूमि अनेक बिम्बन से जुड़ल रहे, बाकिर अलेक्सान्द्र ओह सभ के पूरा तरे से ना देख पवले रहे। कबो एगो सामने आ के खाड़ा हो जाव, त कबो दोसर। हरेक खाली आपन बात बतावत रहे। एगो सुखद बिम्ब कहत रहे जे ओकर बहिन कवनो गलत काम कइले बिया। एगो आउर बिम्ब रहे, जे ओकरा के चिन्ता में डलले रहे– ई बेजाँय बात रहे जे ओकर बहिन के कुछ हो गइल रहे। लगहीं लमहर–चाकर विषद रेखा से निरूपित ऊँच उजर मेघ के तरे पहिलहीं जस मोहक ओकर ऊ सगरी बालिका संसार रहे। फेर कवनो तरे के बादल बगैर बौना आ बेढब आकृति के नाचत रहे। ऊ ई इशारा करत रहे जे लइकी सभ खाली दिखावा करत बाड़ी सन आ शायद वोलोद्या सही होखे। फेर ई सभ धुँधराये लागल आ दिमाग से बिसर गइल। अलेक्सान्द्र के तड़के सवेरे बोलल गइल मतारी के शब्द इयाद परल। ऊ असाधारण महत्व के शब्द रहे, जवना पर ऊ विचार करे के चाहत रहे। बाकिर ई ना जानत रहे जे विचार कइसे कइल जाव। ऊ उनकर वास्तविक आ सनेह भरल भाव इयाद कर पवलस। ओकरा कवनो मरद के मेहरारुअन के इज्जत ना करे वाला शब्द इयाद परल। एमे कवनो दिलचस्प बात रहे, बाकिर का रहे, ऊ समझ ना सकल, काहेकि दृश्य एगो बड़हन परिचित शब्द 'मरद' से रुक गइल रहे। एगो मरद..... ई ऊहे रहे। ई शब्द बाप के साथे बतकही में बहुते बेर आइल रहे। ई कवनो ताकतवर, कठोर, सहिष्णु आ बहुते रहस्यमय चीज रहे। फेर ई बिम्बो धुँधरा गइल आ शर्मनाक विचार जबरन सतह पर आ गइल, इल्या के गन्दा किस्सा आ वोलोद्या के कटु–कठोर बात। बाकिर इहो बिसर गइल आ एक बेर फेर नीला आसमान में उजर मेघ चमके लागल आ पवित्र कमसीन लइकी सभ मुसुकी छोड़े लगली सन।

ई सभ अलेक्सान्द्र के दिमाग में नाचत रहे। हर केहू आपन कहानी कहत रहे, बाकिर अन्दर खाली ओकर बाप के देहल उपहार रहे– एगो मरद शक्ति, जवन श्रेष्ठता के प्रतिक बा।

अलेक्सान्द्र समय से पहिले स्कूल पहुँच गइल। इम्तिहान एगारह बजे शुरू होखे वाला रहे। अबहीं सवा दस बजत रहे। कई गो शिक्षार्थी नक्शा के लगे पहिलहीं से काम पर जुटल रहले सन। वोलोद्या अपना हाथ के पाछे कइले स्कूल के छोटहन

www.bhojpurisahityangan.com

बगइचा में शान से घूमत रहे। का ऊ भूगोल में साँचो अतना नीमन बा? वोलोद्या अलेक्सान्द्र के मानसिक हालात के बारे में, सैंडविच द्वीप समूह के बारे में कुछ दुनियादारी सवाल कइलस आ अचके पुछलस :

"का अब तोर बहिन के बियाह हो गइल बा?"

अलेक्सान्द्र के देह थरथराये लागल। ऊ भकुआइले वोलोद्या के घूरे लागल :

"काहे?"

"ओ हो! ओकर बियाह हो गइल आ तोरा खबरो ना भइल। का कहल जाव तोरा के।"

"का मतलब बा तोर? बियाह हो गइल? कइसे?"

"का मासूम बछड़ा बाड़े। तोरा इहो पता नइखे जे लोग के बियाह कइसे होला। निहायत आसान बा– एक, दू आ नव महीना में बच्चा।"

वोलोद्या हाथ पाछे कइले अपना सुघर गोल माथा के ऊपर उठवले खाड़ा रहे।

"तें झूठ बोलत बाड़े।"

वोलोद्या सेयान जस आपन कन्धा उचकवलस। फेर ओही दुर्लभ मुसुकी में से एगो ओकरा होठ पर आ गइल।

"तें खुदे देख लेबे।"

ऊ इमारत के तरफ बढ़ गइल। अलेक्सान्द्र ओकरा पाछे ना गइल। ऊ एगो बेंच पर बइठ गइल आ सोच–विचार करे लागल। सोचल मोसकिल रहे आ ऊ कवनो नतीजा पर ना पहुँच सकल। तबे ओकरा इयाद परल जे ओकरा एगो मरद बने के चाहीं। सोभाग से भूगोल के इम्तिहान नीमन गइल आ अलेक्सान्द्र हुलसित मुद्रा में घरे लवटल। जब ऊ अपना बहिन के देखलस त ओकर हुलास मरुआ गइल। नाद्या अध्ययन कक्ष में बइठल अपना कॉपी में कुछ उतारत रहे। अलेक्सान्द्र दरवाजा पर खाड़ा रहल। ओकरा ई देख के अचरज भइल जे ऊ नाद्या का ओर दृढ़ भाव से बढ़त रहे। नाद्या आपन मुड़ी उठवलस।

"काहे, भूगोल कइसन रहल?"

"भूगोल? हमरा उत्कृष्ट नम्बर मिलल बा, बाकिर तें खाली एगो बात बताव।"

"बोल, का जाने के चाहत बाड़े?"

अलेक्सान्द्र एगो लमहर साँस लेहलस आ फटाक दे कहलस :

"सुन, तें बियाह क लेले बाड़ी कि ना?"

"का?"

"बताव..... तें शादीशुदा हो गइल बाड़ी कि ना?"

"हम शादीशुदा? तें का बेमतलब के बतकही लगवले बाड़े?"

"ना तें बताव।"

नाद्या गौर से अपना भाई के चेहरा देखलस। फेर उठ के ओकर कन्धा ध लेहलस :

"तनी ठहर। एकर का मतलब बा? तें पूछली का?"

www.bhojpurisahityangan.com

अलेक्सान्द्र आपन आँख ओकरा चेहरा के ओर उठवलस। ऊ क्रोध भरल आ शत्रुतापूर्ण रहे। नाद्या ओकरा के धकिया के धउरत कमरा से बाहर निकल गइल। शयन कक्ष से ओकर रोवे के आवाज़ सुनाई परल। अलेक्सान्द्र मेज के लगे खाड़ा हो के सोचे लागल, बाकिर सोचल कठिन रहे। ऊ झटकत चउका के तरफ चलल, तले दरवाजा में अपना मतारी से टकरा गइल।

"तें नाद्या से कइसन नफरत वाला बात करत रहले ह।"

अब अलेक्सान्द्र एक बेर फेर अपना बाप के सामने बइठत बा आ एक बेर फेर ओह चाँदी के सितारा के धेयान से देखत बा। बाकिर अबकी अलेक्सान्द्र शान्त बा। ऊ अपना बाप से आँख मिला सकत बा। ओकर बाप मुसकिया के बात करत बाड़े।

"अच्छा त?"

"हम रउआ से वादा कइले रहनीं....."।

"कइले रहले।"

"हम रउआ से कहले रहनीं जे हम मरद बनब।"

"ठीक बा।"

"त, हम रहनीं..... हर मामला में।"

"बाकिर एगो मामला में तें गलती कइले।"

"का हम मरद जस बेवहार नइखीं कइले?"

"ना, तोरा नाद्या से ना पूछे के चाहत रहे।"

"त केकरा से पूछतीं?"

"हमरा से।"

"रउआ से?"

"हँ, चल, सगरी बात हमरा के बताव।"

अलेक्सान्द्र सगरी बात बाप के बतवलस। ऊ ओह बतकहियो के बता देहलस, जे ऊ ओह दिन सबेरे–सबेरे दमी कछले सुनत रहे। जब ऊ आपन बात खतम क लेहलस त आगे कहलस :

"हम जाने के चाहत बानीं जे ओकर बियाह भइल बा कि ना?" हमरा एकर जानकारी होखे के चाहीं।"

बाप धेयान से सुनले आ एको सवाल के बिना पूछले बीच–बीच में आपन मुड़ी हिलावत जात रहले। फेर ऊ मेज के तरफ घूम गइले। मेज पर परल डिबिया में से एगो सिगरेट निकलले आ धुँआ उड़ावत जरत तीली के हिला के बुतवले। एही बीचे सिगरेट के दाँत से दबवत पूछले :

"तोरा ई काहे जाने के चाहीं?"

"एह से जे वोलोद्या ई ना कह सके।"

"का ना कह सके?"

"जे ओकर बियाह हो गइल बा।"

"केहू के अइसन काहे ना कहे के चाहीं?"

www.bhojpurisahityangan.com

"काहे कि ऊ झूठ बोल रहल बा।"

"झूठ बोल रहल बा, त बोले दे।"

"बाकिर ऊ बोलते रही।"

"ऊ जे कहत बा, ओह से का नुकसान बा? का शादी कइल बेजाँय बात ह?"

"ऊ रट लगवले बा जे ओकर शादी हो गइल बा, बाकिर...."।

"त फेर?"

"बाकिर ऊ कहत बा .....ऊ बाउर–बाउर बात कहत बा।"

"ओ हो..... त अब तें समझत बाड़े।"

"हँ, समझत बानीं।"

अलेक्सान्द्र हामी भरलस आ खुदे एह बात के सकरलस जे ऊ साँचो समझ गइल बा।

ओकर बाप ओकरा लगे आ के ओकर ठुड्डी धइले आ गम्भीरता आ कठोरता से ओकरा से आँख मिलवले :

"हँ, तें एगो मरद बाड़े। अच्छा, अब आगे से एह बात के हरमेसा इयाद रखिहे। बस, जो।"

अगिला दिने अलेक्सान्द्र वोलोद्या के भीरी ना गइल। एगो दोसर बेंच पर बइठ गइल। पाठ के बीच के अन्तराल में वोलोद्या अलेक्सान्द्र के कान्हा पर हाथ धइलस त अलेक्सान्द्र ओकरा के झटक देहलस :

"दूर हट!"

वोलोद्या तिरस्कार से ओकरा के देखलस।

"तें बूझत बाड़े जे हमरा तोर जरूरत बा?" ऊ कहलस।

असल में ई कहानी एजुगिये खतम हो जात बा। वोलोद्या आ अलेक्सान्द्र के राह लमहर समय खातिर, शायद हरमेसा बदे एक दोसरा से अलग हो गइल। बाकिर अबहीं एको पखवारा ना बीतल रहे, तले दुनू एक दोसरा से टकरा गइले सन। ऊ स्कूली बरीस के आखिर दिन रहे।

ओही बगइचा में लइकन के एगो टोली के बीच वोलोद्या कहत रहे :

"दसवाँ क्लास के क्लावा पहिलका....."।

लइका सभ वोलोद्या के बतकही रोज के तरे बेमन के धेयान से सुनत रहले सन।

अलेक्सान्द्र भीड़ के चीरत आइल आ वोलोद्या के सामने डट गइल :

"ऊ बात झूठ रहे। तें जानबूझ के झूठ बोललले रहले।"

वोलोद्या ओकरा ओर एगो नजर धउरवलस :

"रहे, त का।"

"तें हरमेसा झूठ बोलत बाड़े आ हरमेसा अइसने करत बाड़े।"

लइकन के अलेक्सान्द्र के आवाज़ में कुछ नया बात सुनाई परल, एगो नया खुशगवार स्वर सुनाई परल। ओकनी के लगे आ गइले सन। वोलोद्या नाक भौंह

www.bhojpurisahityangan.com

सिकुरलस :

"हमरा लगे तोर कचड़ा बतकही सुने के समय नइखे....."।

ऊ जाये लागल, तबे अलेक्सान्द्र ओकर राह रोक लेहलस :

"ना, जो मत!"

"वाह, काहे ना जाईं?"

"अब हम तोरा के थुरब।"

वोलोद्या के चेहरा लाल हो गइल। ऊ अबहुँओ 'अँगरेज' बने के कोशिश में आपन होठ सिकुरवलस आ फटाक दे कहलस :

"तनीं देखीं त सही, कइसे करत बाड़े?"

अलेक्सान्द्र आव देखलस ना ताव, सोझे वोलोद्या के नाक पर एक घूँसा जमा देहलस। वोलोद्या एह चोट के लगले जवाब देहलस। ई ओह अच्छा ख़ासा बालकोचित लड़ाई में से एगो शुरुआत रहे। एजा ई जानल मोसकिल बा जे जीत केकर बा। कवनो बड़हन क्लास के लइकन के पहुँचे से पहिलहीं दुनू के नाक से खून बहे लागल रहे आ जामा के कई गो बटनो टूट गइल रहे।

"लड़ाई काहे हो रहल बा?" दसवाँ क्लास के एगो लमहर लइका पूछलस। "एकर शुरुआत के कइल?"

एगो अकेला आवाज़ सुलह करावे बदे आइल जे बस, असहीं लड़ाई हो रहल बा। दोष दुनू के बा।"

लइकन के भीड़ में अलग–अलग मत के सुगबुगाहट होखे लागल :

"दुनू के बात सुने के चाहीं। ओकरा के त बहुत पहिलहीं पीटे के चाहत रहे।"

ओही कोलाहल के बीच कोस्त्या के सहज सोभाविक आवाज़ उभर के आइल :

"ऊ दुनू के दोष नइखे। दुनू के बीच जमीन आसमान के फरक बा। अलेक्सान्द्र एह साँप के झूठ किस्सा फइलावे खातिर ओकर पिटाई करत रहे त का ऊ पलट के हाथ हिलावत रहो..... ना करे त का करे?"

लइका सभ जोर–जोर से हँसे लगले सन।

वोलोद्या अपना हाथ से नाक पोंछलस। फेर हाली से हेने–होने देखलस आ इमारत का ओर ससर गइल। सभे ओकरा के जात देखल। ओकर ओह चाल में 'अँगरेजियत' के नाँवो निशान ले ना रह गइल रहे।

लइकन के साथे सेक्स के समस्या पर कवनो तरे के बतकही ओह जानकारी में कवनो इजाफा नइखे कर सकत, जे उचित समय पर खुद–ब–खुद हो जाई। बाकिर अइसन बात प्रेम के समस्या के ओछा जरूरे बना देत बा। ओकर ओह संयम के छीन लेत बा, जेकरा बिना प्यार व्याभिचार कहाये लागत बा। राज खोलला से, चाहे कतनो अकिल लगा के काहे ना खोलल जाव, प्रेम के शारीरिक क्रियात्मक पक्ष तीव्र हो जात बा। ऊ सेक्स के बोध नइखे करावत, बलुक सेक्सी कौतुहल के जगावत बा, ओकरा के सरल आ सुगम बनावत बा।

लइकाईं के समय सुबेवस्थित तरे से विचरित संयम के बिना प्रेम भावना के

www.bhojpurisahityangan.com

पालल असम्भव बा। सेक्स के शिक्षा सेक्स के सवालन बदे ओह आन्तरिक सम्मान के बढ़ावा देवे में निहित होखे के चाहीं, जवना के कुमारत्व कहल जाला। अपना भावना के आपन कल्पना आ वासना पर लगाम राखे के समरथ एगो अइसन अनिवार्य योग्यता बा, जवना के सामाजिक महातिम के पूरा तरे से नइखे समझल गइल।

जादेतर लोग सेक्स शिक्षा के बतकही करत घरी सेक्स के क्षेत्र के कल्पना अइसन चीज के रूप में करत बा, जे पूरा तरे से अलग–थलग आ पृथक बा। ऊ अइसन चीज बा, जवना से सम्बन्धित बात बेवहार गोपनीय होखे के चाहीं। एकरा विपरीत कुछ आउर सेक्स भावना आदमी के सम्पूर्ण व्यक्तिगत आ सामाजिक विकास बदे एक तरे के आम आधार बना देत बा। ओह लोग के विचार में एगो आदमी मुख्य रूप से या त नर रहत बा भा माद। सोभाविक बा जे ऊहो लोग एह विचार पर पहुँचत बा जे शिक्षा ख़ास क के सेक्स के शिक्षा होखे के चाहीं। एह दुनू विचार में मतभेद का बादो, ऊ लोग ई मानत बा जे सोझ भा जानबूझ के देहल गइल सेक्स शिक्षा उपयोगी आ जरूरी बा।

हमार अनुभव बतावत बा जे ख़ास आ सोच–समझ के देहल गइल सेक्स शिक्षा के खाली अफ़सोसजनक नतीजा हो सकत बा। ऊ सेक्स के भावना के अइसन माहौल में शिक्षित करी, जइसे आदमी के कवनो लमहर सांस्कृतिक इतिहास के अनुभवे नइखे। माने सेक्सी प्रेम के श्रेष्ठ रूप दाँते, पेट्रार्क आ शेक्सपियर के समये में हासिल ना कर लेहल गइल होखे, जइसे लोग कुमारत्व के विचार के बहुत पहिलहीं प्राचीन ग्रीस में बेवहार में ना ले आइल होखे।

अगर सेक्स भावना के व्यक्तित्व के समहुत विकास से अलग–थलग अस्तित्व के कवनो चीज मानल जात बा त सामाजिक सरोकार में ओकर सही शिक्षा नइखे देहल जा सकत। बाकिर संगही सेक्स का क्षेत्र के मानवीय मानसिकता के आधार कतई ना माने के चाहीं। ओकरा के शिक्षक के धेयान के केन्द्र बिन्दु ना बनावे के चाहीं। सेक्स के जिनिगी प्रेम के सम्पोषण के शुरुआत ना, नतीजा ह। सेक्स के भावना के अलग से सिखा के हमनी नागरिक के शिक्षित नइखीं करत। एकरा बादो नागरिक के शिक्षा दे के हमनी के सेक्स भावना के शिक्षा दे देत बानी सन, बाकिर सेक्स के ई भावना हमनी के शिक्षा के मूल प्रवृति के प्रभाव से पहिलहीं श्रेष्ठता पा चुकल बा।

एह से प्रेम के लालन–पालन महज पाशविक सेक्स आकर्षण से नइखे हो सकत। 'प्रेममय' प्रेम के शक्ति खाली गैर सेक्सी मानवीय सनेह के अनुभव में पावल जा सकत बा। अगर एगो युवक अपना मतारी–बाप से, आपन साथी–समाजी से प्यार ना कइले होखे त ऊ अपना मेहरारुओ से कबहूँ प्यार ना करी। ओकर गैर सेक्सी प्यार के दायरा जेतने व्यापक होखी, ओकर सेक्सी प्यार ओतने श्रेष्ठ होखी।

एगो आदमी जे अपना देश, अपना लोग आ अपना काम से प्यार करत बा, ऊ कबहूँ लम्पट भा दुराचारी ना होखी। ऊ एगो नारी के महज एगो मादा के रूप

www.bhojpurisahityangan.com

में ना देखी। एकरा विलोम नतीजा अतने सही बा– जे आदमी एगो मेहरारू के साथे भद्दा आ बेशरम बेवहार करे के समरथ राखत बा त ओकरा पर एगो नागरिक के हैसियत से भरोसा नइखे कइल जा सकत। लोग के आम मुद्दा बदे ओकर बेवहार भा रवैया ईर्ष्या भरल होखी आ ओकरा पर भरोसा नइखे कइल जा सकत।

सेक्स के सहजवृति एगो विराट प्रेरक शक्ति बा। अपना मूल 'असभ्य' अवस्था में छोड़ देहला पर भा 'असभ्य' शिक्षा से तीव्र हो के ई खाली एगो समाज विरोधी घटना बन सकत बा। बाकिर सामाजिक अनुभव से, आउर लोग के एकवठ भइला से, अनुशासन आ अपना वश के अनुभव से संयमित आ शिष्ट भइला पर ई जादे नीमन, सौन्दर्य बोध वाला, गुण वाला आ सुन्दर मानवीय सवख के एगो ठेहा बन जात बा।

परिवार सभसे जादे एगो महत्त्वपूर्ण ठेहा बा, जहँवा आदमी सामाजिक जिनिगी में आपन पहिलका गोड़ धरत बा। अगर ऊ गोड़ सही तरे से बेवस्थित बा त सेक्स के शिक्षा सही तरे से चली। जवना परिवार में मतारी–बाप सक्रिय रहत बा आ ओह लोग के प्राधिकार ओह लोग के जिनिगी आ काम से सहजे निकलत बा, जहँवा लइकन के जिनिगी समाज के साथे ओकनी के पहिलका सम्पर्क, ओकनी के पढ़ाई–लिखाई, खेल, मनोदशा, हुलास आ निराशा पर मतारी–बाप के हरमेसा धेयान रहत बा, जहँवा अनुशासन, नीमन प्रबन्ध आ लगाम बा, अइसन परिवार में लइकन के सेक्स के सहज वृति हरमेसा सही तरे से विचरित होत बा। अइसन परिवार में कवनो तरे के जोर जबरन आ आकस्मिक आवेग वाला करामात के कबहूँ जरूरत नइखे परत। काहेकि एजुगिया सभसे पहिले मतारी–बाप आ लइकन के बीच सुकुवार आ खामोश बिसवास के पूरा तरे से जरूरी बन्धन रहत बा। एह बन्धन के रहला पर यथार्थवादी विश्लेषण आ तथ्य के इस्तेमाल कइले बिना आपसी समझ–बूझ सम्भव बा। दोसर बात ई बा जे एह आधार पर उचित समय पर बोलल गइल हरेक शब्द में पौरुष आ कुमारत्व के बारे में, जिनिगी के सुन्दरता आ ओकर मान–मरजाद के बारे में कहल गइल हरेक शब्द में आशय आ बुद्धिमत्ता होखी, जवन भविष्य में महान प्यार के, जिनिगी के रचनात्मक बल के जनम देवे में सहजोग करी।

हरेक स्वस्थ परिवार में सेक्स के शिक्षा संयम आ पवित्रता के अइसने माहौल में पूरा होखत बा।

हमनी के अपना लइकन के साथे प्यार के बारे में जेतने जादे बुद्धिमत्ता आ संयम से बात करत बानी सन, भविष्य में ओकनी के प्यार ओतने सुन्दर होखी। बाकिर ऊ संयम हमनी के लइकन के बेवहार पर लगातारे आ नियमित धेयान का साथे चले के चाहीं।

अगर परिवार में सही बेवस्था, बेवहार के समुचित मार्यादा नइखे त कवनो दर्शन भा भाषण से कुछुओ भला ना होखी।

अगर परिवार के कवनो सदस्य ठीक समय पर संगठन आ समझदारी के एगो

www.bhojpurisahityangan.com

कठोर बेवस्था के नइखे मानत त ओकरा से परिवार के सभसे जादे हानि होत बा। युवाजन के सामान्य सेक्स अनुभव में सभसे जादे गड़बड़ी एही से होत बा। अगर बेटा भा बेटी जबे मन करे तबे सूत जाव आ जबे मन करे तबे उठ जाव भा खाली तबे अइसन करे जब ओकरा करे के परे, अगर साँझी के अपने मने कतहूँ घूमे निकल जाव भा "एगो सहेली किहाँ" भा "एगो साथी किहाँ" रात बितावे, जवना के जानकारी आ पारिवारिक माहौल के कुछुओ पता ना होखे त लालन–पालन आ शिक्षा–दीक्षा के बात कइसे कइल जा सकत बा। एह मामला में हमनी के सामने अइसन घरेलू शिथिलता बा, जवना में कवनो तरे के शिक्षा–दीक्षा सम्भव नइखे। अइसन माहौल में हर चीज संजोग के भरोसे बा, अस्त–व्यस्त बा आ गैर जिम्मेदारी से भरल बा।

लइकन के शुरुआती अवस्था से समय के पाबन्द भइल आ बेवहार के सुस्पष्ट रूप से तय सीमा के भीतरे काम कइल सिखावे के चाहीं। परिवार के चाहीं जे ऊ पूरा तरे से स्पष्ट आ भरोसेमन्द मामला के छोड़ के आउर कवनो हाल में अजनबी परिवार में रात गुजारे के अनुमति ना देव। इहे ना, दिनों में लइका केतना देर ले कहँवा रहत बा, एकरा बारे में मतारी–बाप के सभकुछ मालूम होखे के चाहीं। अगर ई जगह एगो साथी के परिवार बा त मतारी–बाप के ओकरा के नीमन तरे से जाने खातिर आलस के सिवा आउर कवनो चीज नइखे रोक सकत।

लइकन के दिन के एगो कठोर समय सारणी लालन–पालन के एगो अनिवार्य शर्त बा। अगर रउआ लगे अइसन समय–सारणी नइखे आ रउआ ओकर बेवस्था राखे के इरादा नइखीं राखत त एह किताब के पढ़े में लालन–पालन से जुड़ल कवनो किताब के पढ़े में राउर वक्त बेकारे बर्बाद हो रहल बा।

समय के पाबन्दी के आदत अपने आप से सख्त माँग करे के आदत बा। बिछावन से उठे के सही समय दृढ़ संकल्प बदे सभसे जरूरी प्रशिक्षण बा। एकरा से निकम्मापन आ लिहाफ के भीतर दिने में सपना देखे से मुक्ति पावल बा। खाये के मेज पर सही समय पहुँचल मतारी, परिवार आ आउरो लोग खातिर सम्मान बा आ खुद अपनो बदे सम्मान बा। वक्त के हर तरे के पाबन्दी के मतलब बा– अनुशासन के आ मतारी–बाप के प्राधिकार के पहुँच में रहल। ई एक तरे के सेक्स–शिक्षा बा।

ओही रोजाना के संस्कृति के एगो अंग के रूप में हर परिवार में डॉक्टर के, ओकरा सलाह के, ओकर रोग निवारण मार्गदर्शन के एगो ख़ास जगह देवे के चाहीं। कुछ ख़ास समय में लइकियन के डॉक्टरी देखभाल के ख़ास जरूरत परत बा। एकरा बदे मतारी के पूरा तरे से डॉक्टर के सहजोग आ समर्थन करे के चाहीं। स्कूल में चिकित्सा के समुचित बेवस्था होखे के चाहीं। सेक्स के सवाल पर गम्भीर बतकही के, लइकन के आरोग्य विज्ञान के, आत्म–नियंत्रण के आ बड़हन उमिर में रति रोग के खतरा से परिचित करावे के बेवस्था खातिर स्कूल सुबहित जगह बा।

ई बात धेयान देवे जोग बा जे अगर सगरी समाज एह समस्या पर सक्रिय रूप से धेयान देव त एगो परिवार के परिधि के अन्दर सही सेक्स शिक्षा के काम सुबहित हो जाई। जनमत आ सार्वजनिक नैतिकता के चाहीं जे ऊ खुदे समाज में

www.bhojpurisahityangan.com

उत्तम आ ठोहर आचरण के आउर जादे आग्रह के साथे माँग करे।

एह नजरिया से हमनी के ख़ास क के बाउर भाषा जस 'छोट बात' के चरचा करहीं के चाहीं।

जिम्मेदार पद पर काम करे वाला जादेतर सुसंस्कृत लोग के रुसी भाषा में महारत हासिल बा। ऊ लोग कबो–कबो गारी देवे में एक तरे के वीरतापूर्ण प्रेरणा खोज निकालत बा आ हर सम्भव मोका पर ओकर इस्तेमालो करत बा। साथहीं अपना चेहरा पर सुसंस्कृत आ प्रज्ञापूर्ण भाव बनवले राखे के जतन करत बा। एह मूरखता आ घृणास्पद परम्परा के वजह बूझल बहुते मोसकिल बा।

पुरनका जमाना में शायद गारी–गलौज के बाउर भाषा कमजोर शब्दावली आ मूक निरक्षरता के चलते सहायक के रूप में कामे आवत रहे। स्तरीय गारी के सहजोग से मूल भाव के जतावल जात रहे, जइसे खीस, हुलास, अचरज, निन्दा आ जरतुआह सोभाव। बाकिर जादेतर ई कवनो भाव ना जतावत रहे, बलुक असंगत मुहाबरा आ विचार के जोड़े के काम करत रहे– एगो सार्विक मुहावरा। एह मामला में ई फॉर्मूला बिना अनुभूति के बोलल जात रहे, जवन बोले वाला के बिसवास आ बतकही के प्रवाह के जतावत रहे।

मूक निरक्षरता हमनी के आज के समाज के लक्षण कतई नइखे। ई साक्षरता खाली किताबे आ अखबार के व्यापक प्रचार–प्रसार के चलते ना, बलुक एहू तथ्य के चलते आइल जे सोवियत समाज के लगे कुछ बोले बदे रहे। अइसन विचार आ भावना रहे, जेकरा के अभिव्यक्त करे के दरकार रहे आ जे अभिव्यक्त कइल जा सकत रहे।

हमनी के देश में गारी–गलौज के शब्दन के 'तकनीकी' महत्त्व खतम हो गइल बा, बाकिर भाषा में ऊ अबहुँओ बा। अब ऊ मिथ्या साहस के, 'लौह चरित्र' के निर्णायक, सहजता, सुरुचि खातिर तिरस्कार के अभिव्यक्त करत बा। अब ऊ एगो अइसन किसिम के नखरा बा, जवना के मकसद सुने वाला के खुश कइल, ओकरा जिनिगी बदे सुनावे वाला के साहसिक रवैया आ पूर्वाग्रह हीनता के देखावत बा।

एह सहज आ बिलकुल स्पष्ट तथ्य के हर केहू नइखे समझत जे गारी के शब्द एगो सस्ता, घृणित आ एकदमे नीच अश्लीलता बा। सभसे असभ्य, सर्वाधिक आदिम संस्कृति के एगो चिन्हासी बा– मेहरारुअन खातिर हमनी के सम्मान के आ गहन आ वास्तविक मानव सौन्दर्य बदे हमनी के प्रयास के जरतुआह. ढीठ आ गुण्डन जस नकारल बा।

बाकिर, अगर बे–लगाम बाउर शब्द मेहरारुअन बदे खाली अपमान जनक बा त लइकन खातिर ई बहुते हानिकारक बा। हमनी के अचरज भरल लापरवाही से एकरा के बर्दाश्त करत बानी सन। हमनी के शिक्षा खातिर अपना महान आ सक्रिय महत्वकांक्षा के साथे–साथे ओकर अस्तित्व के बर्दाश्त करत बानी सन।

ई जरूरी बा जे हमनी के अश्लील भाषा के खिलाफ एगो ठोहर आ लगातार संघर्ष शुरू करी सन। अगर सौन्दर्य–बोध के नजरिया से ना त कम से कम शैक्षिक

www.bhojpurisahityangan.com

नजरिया से। ई उत्तराधिकार हमनी के लइकन आ समाज के भयानक तरे से नुकसान पहुँचावत बा। एकर गणना कइल कठिन बा आ ओकर वर्णन कइल त आउरो मोसकिल बा।

एगो वयस्क आदमी बदे गारी के शब्द महज एगो अपमानजनक बाउर शब्द बा। एकरा के बोलत भा सुनत घरी मन के चोट पहुँचत बा। ओमे अश्लील शब्द ना त कवनो सेक्सी बिम्ब जगावत बा आ ना कवनो अनुभूति के। बाकिर जब एगो लइका ओह शब्द के सुनत भा बोलत बा त ऊ ओह गारी ले कवनो सापेक्ष शब्द के रूप में नइखे पहुँचत, बलुक ऊ अपने में अन्तर्निहित सेक्स के भाव ले के पहुँचत बा। एह दुर्भाग के मूल सार ई नइखे जे सेक्स के राज लइका के सामने खुल जात बा, बलुक ऊ राज आपन सभसे जादे कुरूप, आदमी से ईर्ष्या आ अनैतिक रूप से उभर के आवत बा। अइसन शब्दन के बेर–बेर होखे वाला उच्चारण, ओकर सेक्सी मामला पर जादे धेयान देवे के, विरूपित दिवास्वप्न देखे के आदत बनावत बा। एह से लइकन के मेहरारुअन में अस्वस्थकर दिलचस्पी पैदा होखे लागत बा। नजर के सम्वेदनशीलता सीमित आ आन्हर हो जात बा। चालू शब्द, बाउर किस्सा आ अश्लील मज़ाक के नीचता दोसरा के पीड़ा पहुँचावत बा। ओकरा सामने एगो मेहरारू अपना मानवीय आकर्षण आ सुघरता के गरिमा में, अपना आत्मिक आ शारीरिक लचक के समग्र सामंजस्य में, अपना स्वत्व के सगरी रहस्य आ सगरी शक्ति में प्रकट नइखे होत, बलुक महज हिंसा आ उपयोग के एगो वस्तु के रूप में आ महज एगो अपमानित मादा के रूप में प्रकट होत बा। अइसन युवक प्रेम के ओह भाग से, देखत बा, जहँवा मानव इतिहास बहुत पहिलहीं अपना आदिम शरीर क्रियात्मक मानक के कचड़ा के ढेर में फेंक चुकल बा। ओह लइका के सेक्स के पहिलका अस्पष्ट संकल्पना इतिहास के एही धूरा से उपजत बा।

एह घटना के दुखद नतीजा के बढावल चढ़ावल साँचो बेमतलब बा। लइकाईं, जिनिगी, परिवार, स्कूल, समाज आ किताब ओह लइकन आ युवक के बचावे बदे विपरीत दिशा के तरफ अनेक प्रेरणा आ आवेग पैदा करत बा। हमनी के पूरा जिनिगी के प्रणाली, लइकियन आ मेहरारुअन के साथे बेवहारिक आ साथियन जस संसर्ग, ऊँच भावना आ बेसी मूल्यवान संकल्पना खातिर खाद पानी के काम करत बा।

बाकिर ओकरा के कम क के ना आँके के चाहीं।

हरेक आदमी, जे गारी–गलौज के शब्द से गुरेज करत बा, जे अपना साथी के अइसन करे खातिर प्रोत्साहित करत बा, जे ओकरा से मिले वाला हर उदण्डी 'नायक' से संयम बरते के माँग करत बा, ऊ हमनी के लइकन के आ सउँसे समाज के भला कर रहल बा।

***

www.bhojpurisahityangan.com

आठवाँ अध्याय

वेरा इग्नात्येव्ना कोरोबोवा एगो बड़हन फैक्ट्री के लाइब्रेरी में काम करत रहली, जवन नगर के बाहर एकोरा में बनल रहे। ऊ अमूमन पाँच बजे ले घरे लवट आवत रहली। आज ऊ आ उनकर सहायक देर ले रुकल, काहेकि ऊ लोग एगो सम्मलेन के तइयारी करत रहे। सम्मलेन काल्ह होखे वाला बा। एगो लेखक, जे नामी साहित्यकार बाड़े, सम्मलेन में भाग लेवे वाला बाड़े। पाठक उनकर किताब पसन्द करत बा आ वेरा उनकर किताब पसन्द करत बाड़ी। आज ऊ शो–केस में खुदे हुलसित हो के काम कइली। ऊ लेखक के सगरी आलोचनात्मक साहित्य के खान्हा में प्रेम से, सावधानी से, सिलसिलेवार सहेज देहली। फेर सिफारिश के विवरण के पत्रिका के पन्ना के बगल में सुन्दर तरे से रखली आ शो–केस के बीचोबीच लेखक के एगो फोटो लगा देहली। ऊ एगो नीमन आ असाधारण फोटो रहे। लेखक के नजर में सुन्दर, सहज आ सुपरिचित उदासी भरल रहे। ओकरा से शो–केस मैत्रीवत आ बेहद अंतरंग लागत रहे। काम खतम भइलो पर वेरा देर ले घर खातिर रवाना ना हो सकली। ऊ अबहुँओ कुछ आउर करे के चाहत रहली।

वेरा के साँझी के घरी आपन लाइब्रेरी ख़ास प्रिय लागत रहे। उनका पाठक के लवटावल किताबन के जमा कइल आ ख़ास सावधानी से ओकरा के खान्हा में सरिहावल, पाठक के कार्ड के सहेजल नीमन लागत बा। उनका देखभाल में जब लाइब्रेरी में एगो सुखद, आरामदेह बेवस्था हो जाव, तबे ऊ घरे जा सकत रहली। बाकिर जइसन कि आज भइल, अपने जइसन उत्साही कार्यकर्ता के छोटहन मण्डली के साथे ओजा रुकल रहल आ काम कइल उनका आउरो जादे सुहावत बा।

खान्हा का बीचे छायादार गलियारा में शेल्फ के ऊपर टाँगल लैम्प के रोशनी में कुछुवे किताब नजर आवत बा। ई किताब अइसन लउकत बा, जइसे ऊ रात के अँजोरिया में सड़क पर घूमे निकलल बा। ओकरा आगे आउर किताब छाँह में बइठल सपना देखत बा भा एक दोसरा के साथे मृदु भाव से फुसफुसा के बतियावत बा। ओकनी के खुशी बा जे ऊ आज साँझी के अकेले नइखन सन। दूर अन्हार कोना में ऊ बूढ़ पत्रिका गहीर नींद में सूतल परल बा। ऊ दिनो में अँघुआइल पसन्द करत बा, काहेकि पाठक लोग शायदे कबहूँ ओकरा के परेशान करत बा। वेरा अपना किताबी संसार के नीमन तरे से जानत बाड़ी। उनकर कल्पना में हरेक किताब के आपन चेहरा आ ख़ास प्रकृति बा। ई प्रकृति किताब के बाहरी रूप–सरूप, ओकर

www.bhojpurisahityangan.com

विषय वस्तु के सामान्य रूप–रेखा आ जे सभसे बड़ चीज बा, अपना पाठक का साथे ओकर सम्बन्ध के एगो जटिल मेरावट बा।

वेरा के कल्पना में सगरी किताबन के आपन ख़ास दिलचस्प आ समझदार जिनिगी बा, जवना से उनका तनी ईर्ष्या बा, तबो ऊ ओह से प्यार करत बाड़ी।

वेरा अड़तीस बरीस के बाड़ी। उनकर चेहरा, कन्धा आ उजर गर्दन में अबहुँओ तनी जवानी के उभार बा। बाकिर वेरा एकरा के नइखी जानत, काहेकि ऊ अपना बारे में कबहूँ सोचते नइखी। ऊ खाली किताब के बारे में आ अपना परिवार के बारे में सोचत बाड़ी। ई विचार हरमेसा अतना जादे प्रबल रहत बा जे उनकर दिमाग में उलझन के भीड़ लाग जात बा। ओमे कवनो क्रम नइखे रह पावत।

साँझ के लाइब्रेरी में रुकल सुखद भइलो पर उनकर विचार घर के तरफ मुड़ जात बा। ऊ हाली–हाली में आपन सामान हैण्ड बैग में समेटत बाड़ी। फेर ट्राम धरे बदे चल परत बाड़ी। भीड़–भाड़ से भरल ट्राम में ऊ एगो सीट के पिछला हिस्सा में ओलर के देर ले खाड़ा रहत बाड़ी। एही बीचे किताबी जिनिगी के संयमित फुसफुसाहट गँवे–गँवे खतम होत जात बा आ ओकर जगह घरेलू मामला ले लेत बा।

आज साँझी के ऊ देर से घरे पहुँचिहें। एह से साँझ के जादे व्यस्त रहिहें। ऊ अबहीं ट्रामे में रहली, तले उनका साँझ के चिन्ता लेस देहलस। ऊ समय के आनन्द से काट–छाँट करे लगली। ऊ ना जानत रहली जे ई आनन्द कहँवा से आवत बा। कबो–कबो उनका लागत रहे जे ई प्यार के आनन्द ह। सम्भव बा अइसने होखे। जब पाव्लूशा भा तमारा के चेहरा उनका आँख के सोझा नाचत बा त वेरा के यात्री भा पाछे के तरफ जात सड़क लउकल बन्द हो जात बा। ऊ ट्राम के झटका आ ओकर जगह–जगह ठहराव पर गौर ना करत रहली। उनका अपना देहो के कवनो सहूर नइखे रहत। उनकर हैण्ड बैग के टँगना आ ट्राम के टिकट खाली पुरान आदत के चलते उनका अँगुरी में टिकल रहत बा। पाव्लूशा के चेहरा प्यारा आ ताजगी से भरल बा। ओकर आँख भूअर बा, बाकिर ओकरा आँख के सफेदी में अतना नीलापन बा जे पाव्लूशा पूरा तरे से सुनहरा नीला लागत बा। ओकर चेहरा आ आँख अइसन मोहक बा जे वेरा ओकरा बारे में सोचियो नइखी सकत। ऊ ओकरा के निहारते रहत बाड़ी। बाकिर तमारा के बारे में ऊ सोच सकत बाड़ी। तमारा साँचो सुन्दर बिया। वेरा के ओकरा में हरमेसा कुछ निराला, आकर्षक, स्त्रियोचित आ सुघरता लउकत बा। ओकर लमहर–लमहर बरौनी में, ओकर गर्दन के नीचे ले लटकल करिया केश में, ओकर भूअर आँख के रहस्यमय दृष्टि में आ ओकरा गति के आकर्षण में सुघरता के भरमार बा। ऊ अकसरे तमारा के बारे में सोचत बाड़ी।

खुद वेरा के जिनिगी मुद्दत से एगो पुरान धारा में बहत चलल जा रहल बा। एह सोझ धारा खातिर कठिन मेहनत आ रोजाना के दायित्व के नीरस मैदान के आर–पार राह निकलल बा। एजा छोट–मोट रोजाना के बातन के एगो बेल बूटेदार जाली जस रहे, जे दिन भर उनका के कबहूँ ना छोड़त रहे, बलुक उनका

www.bhojpurisahityangan.com

अगली–बगली ऊहे पुरान फन्दा, वृत्त आ काँटा में घूमत रहे। क्रान्ति कोलाहल करत आइल आ वेरा के लगे से गरजत निकल गइल। ऊ ओकर गरमाहट महसूस कइली आ देखली जे पुरनका जिनिगी, पुरान लोग आ पुरान रीती–रिवाज ओकर प्रबल वेग में समेटाइल जात रहे। एगो कामकाजू नारी के रूप में ऊ एह जीवनदायी चक्रवात पर खुश रहली। बाकिर ऊ ओह जाली से एको मिनट खातिर अपना के विलग ना कर पवली, काहेकि केहू के ओह जाली के दरकार रहे। वेरा एकरा के कर्त्तव्य कबहूँ ना समझली। ऊ कबहूँ सोचियो ना सकली जे अगर तमारा भा पाव्लूशा भा इवान पेत्रिविच एह मामला के ले के सउँसे मकान के माथा पर उठा ली त उनकर जाली के एको फन्दा के कइसे तूरल जा सकत बा। एजा ले जे इवान से उनकर शादी अइसहीं भइल रहे, जइसे ओह जाली के एगो आउर हिस्सा बनावल जात होखे। ऊ नकारियो ना सकत रहली। ओकरा अलावे आउर कुछुओ ना हो सकत रहे, काहेकि इवान रिरियाये लगिते।

वेरा आपन सउँसे जिनिगी में एको बेर शिकायत ना कइली। आखिर में सभकुछ नीके भइल। अब ऊ अपना लइकन के तरफ खुशी से देख सकत बाड़ी। ओकनी के बारे में सोच सकत बाड़ी। एकरा अलावे किताब उनका अस्तित्व के अलगे आकर्षित करत बा। असल में वेरा अपना जिनिगी के कबहूँ विश्लेषण ना कइली। उनका समयो ना मिलल। एमे बाउर का बा आ नीमन का बा, ई बतावल मोसकिल बा। बाकिर जब उनकर विचार तमारा का ओर गइल त ऊ असामान्य तरे से काम करे लागल। एमे कवनो अन्देशा ना रहे जे तमारा के जिनिगी अलग होखहीं के चाहत रहे। अब तमारा वास्तुकला संस्थान में रहे आ कवनो चीज के पढ़ाई करत रहे। ओकरा मेज पर एगो रेखाचित्र रहे, जवना के ऊ बनावल शुरू कइले रहे– कवनो तरे के मेहराब रहे भा कार्निस, फूल के गुच्छा नियर पोंछ आ चिरई के चोंच वाला कुछ सिंह रहे। साँच बा जे तमारा के नियति एह सिंह में ना, कवनो आउर चीज में निहित रहे। ऊ तनिको स्पष्ट ना रहे, बाकिर किताब में ओकरा के सुख कहल जात रहे। वेरा सुख के कल्पना चमकदार सुन्दर नारी के रूप में, ओकर तेजस्वी निगाह पर गर्व के रूप में आ ओह से होखे वाला हुलास के रूप में करत रहली। हर चीज से ई झलकत रहे जे तमारा ओही किसिम के सुख बदे जनमल बिया आ जे ओकरा खुदे एह बात पर कवनो सन्देह नइखे।

वेरा बाहर निकले के दरवाजा के यंत्रवत ठेलली। फेर अपना घर ले थोरकिये दूरी पार करे खातिर हाली–हाली चले लगली। तमारा दरवाजा खोललस। वेरा आपन हैण्डबैग के खिड़की के चौखट पर राखत बइठकखाना के तरफ नजर धउरवली।

"का पाव्लूशा खाना खा लेले बा?"

"हँ।"

"का ऊ कतहूँ बाहर गइल बा?"

"हमरा नइखे मालूम। हम सोचत बानीं जे ऊ स्केटिंग कर रहल बा।"

www.bhojpurisahityangan.com

ई बात साफे जाहिर रहे जे सभे खाना खा लेले बा आ पाव्लूशा स्केटिंग करे चल गइल बा। मेज पर गन्दा थरिया में जूठ छितराइल परल रहे। हाल के फर्श पर माटी के दाग परल रहे। तार आ धागा के टुकी हेने–होने छितराइल रहे।

वेरा आदतन अपना सोझ बाल के चेहरा से हटवली, चउतरफा नजर धउरवली आ हॉल में से झाड़ू उठवली। तमारा एगो बड़हन आराम कुरसी पर बइठल रहे। ऊ आपन बाल खोलले अपना सुन्दर आँख से खिड़की के तरफ ताके लागल।

"माई, बताव हमार जूता के का करे के बा?"

तमारा के आराम कुरसी के नीचे से झाड़ू लगावत वेरा सहज भाव से कहली :

"तमारा, हो सके त तें ओही से काम चलाव।"

तमारा आपन कुरसी के जोर से पाछे धकेल देहलस आ कंघी के मेज पर फेंक देहलस। ओकरा आँख के प्यारापन अचके बिला गइल। ऊ आपन गुलाबी हाथ के अपना मतारी का ओर नचावे लागल। ओकर रेशमी गाउन आगे से खुल गइल आ ओकर अन्दरुनी वस्त्र के गुलाबी रिबन बिखियाइले वेरा के देखे लागल।

"माई! तें एह तरे के बात कइसे कह सकत बाड़ी। गुस्सा भड़क गइल। भूअर लिबास आ गुलाबी जूता। तनी देख त?"

तमारा दुखी हो के सुन्दर गुलाबी जूता पहिरले झटका से आपन एगो गोड़ आगे कइलस। ओह घरी सभकुछ एक दोसरा से मेल खात रहे– गुलाबी गाउन, गुलाबी मोजा। वेरा झाड़ू थमले कुछ देर रुकली आ सहानुभूति से तमारा के गोड़ पर नजर धउरवली।

"हँ..... एक जोड़ी जूता कीने के परी। बाकिर जब दरमाहा मिली तबे।"

तमारा के निगाह झाड़ू के गति पर नाचत रहे। भौतिकी आ ज्यामिति के सगरी नियम का हिसाब से ओकर नजर अपना मतारी के घिसल पिटल, बेढब आ मइल कुचइल जूता का ओर जाये के चाहत रहे, बाकिर कवनो कारण से अइसन ना भइल। तमारा दुखी मन से कमरा के चारु ओर देखलस।

"हम तंग आ गइल बानीं" ऊ कहलस, "कई गो दरमाहा मिल चुकल आ हम अबहीं ले इन्तजार करत बानीं।"

तमारा ठण्ढा साँस भरलस आ शयन–कक्ष के तरफ चल गइल। वेरा बइठकखाना के बेवस्थित कइला के बाद बरतन माँजे बदे चउका में चल गइली।

वेरा गन्दा बरतन के भाव के पढ़ल जानत रहली। एह से ऊ उनका के देख के मुसकुरा परत रहे। ओकर मुद्रा केतना प्यारा आ मनोहारी रहे। ऊ बिसवास भरल निःशब्द अपेक्षा से उनका के धउर धूप करत देखे आ गरम पानी से नहवावे के बेसब्री से इन्तजार करे। ऊ बेसब्री से बेचैन हो गइल होखी।

वेरा अपना अगली–बगली के वस्तुअन के जिनिगी से प्यार करत रहली। जब ऊ ओकनी के साथे अकेले रहत रहली त सुख–चैन के साँस लेत रहली। कबो–कबो ऊ ओकनी से बतियावतो रहली। काम करत घरी उनकर चेहरा साफे जीवन्त हो जात रहे। उनका आँख में कौशल के चमक उभर आवे आ उनकर

www.bhojpurisahityangan.com

भरल–पुरल होठ पर सहज मुसुकी नाचे लागे। बाकिर लोग आ अपना हीत–नात के सामने उनकर ई सगरी जीवन्तता गायब हो जाव– बकिया लोग के सामने बेवकूफ बनल फूहरपन होखित, फूहड़ आ हास्यास्पद। वेरा एकर आदी ना रहली।

आज साँझी के बरतन धोवत घरी तनी हँसी ठिठोली कइली। तबे उनका तमारा के जूता इयाद परल। बकिया समय में ओकरे बारे में सोचत रह गइली।

ऊ जूता के सगरी समस्या के सोच विचार कइली। शायद गुलाबी जूता महज एह से कीनल गलत रहे जे गाउन गुलाबी बा। अमूमन गाउन के मेल के जूता ना कीनल जाला, बाकिर अब त ई हो गइल बा। अब एकरा बारे में केहू कुछुओ नइखे कर सकत। फेर ऊ भूअर लिबास के मसला रहे, जे तनी लमहर समय ले घींचा गइल रहे। लिबास रेशमी रहे आ ओकर रंग असल में तनी हलुकाहे भूअर रहे। तमारा के हलुक भूअर आँख आ करिया केश के साथे ऊ जादे नीक लागत रहे। बाकिर ना जाने कइसे भूअर जूता के ई समस्या पैदा हो गइल। पहिले ऊ सोचले रहली जे भूअर लिबास लिस्ट के आखिरी सामान होखी। परसों जब वेरा घर में रहली त ऊ एगो तुलना कइली। लिबास हलुकाहे भूअर रहे आ जूता गुलाबी, बाकिर गुलाब जइसन गुलाबी ना, बलुक तनी गाढ़ रंग के आ ओकरा से कम उजर। पल भर खातिर वेरा के खेयाल आइल जे अइसन जूतो सहमति जाहिर क देले बा। बाकिर ऊ महज एगो कमजोरी के क्षण रहे। वेरा ओकरा के इयाद ना करे के चाहत रहली। अब उनका खाली तमारा के परेशान चेहरा इयाद परत रहे, जवना से उनका तकलीफ होत रहे।

घर के बाहरी दरवाजा केहू खटखटावल। वेरा बरतन माँजल छोड़ के दरवाजा खोले गइली। ऊ अचरज से देखली जे आन्द्रेई क्लीमोविच स्तोयानोव दुआर पर खाड़ा रहले।

आन्द्रेई के लाइब्रेरी आ ओकरा किताबन से प्यार रहे, जवन शायद वेरा के मुकाबले कम ना रहे। बाकिर ऊ लाइब्रेरियन ना रहले, ऊ मिलिंग मशीन के चालक रहले। अपना काम में माहिर रहले, काहेकि बकिया चालक लोग उनकर नाँव के चरचा दोहरा शब्द के अलावे आउर कवनो तरे से ना करत रहे।

"खुदे–आन्द्रेई।"

"आन्द्रेई–भी।"

"आन्द्रेई–ही।"

"ओहो–आन्द्रेई।"

"ऊहे–आन्द्रेई।"

बाकिर एह सभका बादो वेरा आन्द्रेई में खाली इहे बात देखली जे ऊ एगो किताब प्रेमी बाड़े। उनका बदे ई बात समझल मोसकिल रहे जे अगर उनका किताबन से साँचो अतना प्रेम बा त आपन मिलिंग–मशीन से कइसे निबटत होखिहें।

आन्द्रेई किताबन के अपने ढंग से चाहत रहले। उनका बदे किताब जिल्द के बीच बसल लोग रहे। ऊ कबो–कबो एह बात पर अचरज करत रहले जे किताब

www.bhojpurisahityangan.com

में प्रकृति, बरखा भा जंगल के चरचा काहे होत बा? ऊ वेरा के कमरा में आवते कहले :

"लोग के बूझल मोसकिल बा। लोग में कुछुओ छिपल रहत बा। लेखक बता सकत बा जे ऊ का ह। हम किताब पढ़ के ओकरा बारे में पता लगा सकत बानीं। बाकिर बरखा त महज बरखा ह। अगर हम बरखा के देखत बानीं त लगले बूझ जात बानीं जे ऊ बरखा ह। हम इहो बता सकत बानीं जे ऊ कवना तरे के बरखा ह– झड़ी ह भा आँधी ह, हानिकारक बा भा बिना हानि वाला। इहे बात जंगलो के साथे बा। जे रउआ देखत बानीं, ओकर वर्णन लेखक कबहूँ नइखे कर सकत।"

दोसरा ओर किताब में वर्णित लोग से आन्द्रेई के धेयान हरमेसा आकर्षित होत रहल बा। ऊ एह लोग के बारे में चरचा कइल पसन्द करत बाड़े आ जानत बाड़े जे ओमे अन्तर्विरोध के कइसे पता लगावल जा सकत बा। अगर कवनो लेखक लोग से न्याय नइखे करत त ऊ हरमेसा बाउर मान जात रहले।

अब ऊहे आन्द्रेई मुसुकी छोड़त एजुगिया दुआर पर खाड़ा बाड़े। उनका मुसुकी में तनी लाज रहे– सुन्दर मधुर मुसुकी, ऊहे मुसुकी चालीस बरीस के मिलिंग आपरेटर के मुकाबले एगो बालिका के मुसुकी से जादे मिलत जुलत रहे। बाकिर एकरा साथे उनका में बहुते साहस आ व्यक्तिगत मान–मरजाद रहे।

"वेरा, अगर हम अन्दर आईं त रउआ कवनो एतराज त ना होखी। हमरा एगो छोटहन मामला पर रउरा से बात करे के बा।"

आन्द्रेई किताब के बारे में बात करे पहिलहूँ आइल रहले। ओह घरी ऊ ओही गली में रहत रहले। बाकिर अबकी बेर ऊ कवनो ख़ास काम से आइल रहले।

"का अबहुँओ घरेलू काम में व्यस्त बानीं?"

"ना, असल में ई कवनो घरेलू काम नइखे। खाली दू–चार गो थरिया रहे। आईं, बइठका में बइठीं।"

"ना, एजुगिये चउका में, माने एगो कार्यशाला में बात क लेहल जाव।"

"बाकिर काहे?"

"वेरा, रउआ के बताईं जे मामला..... एक तरे के राज बा।"

आन्द्रेई धूर्तता से मुसुकी छोड़ले। फेर ऊ बइठका के तरफ आपन नजर धउरवले, बाकिर ओजुगिया केहू ना लउकल।

चउका में आन्द्रेई एगो लकड़ी के स्टूल पर बइठ गइले। ओकरा बाद ऊ साफ बाकिर भींजल थरिया के ढेर पर व्यंग्य से देखत पूछले :

"रउरा हेतना बरतन मँजनीं। बाकिर अपना भोजन बदे इस्तेमाल त ना कइनीं। कइनीं का?"

वेरा तौलिया से हाथ पोंछली :

"ना, लइका कइले रहले सन।"

"लइका सभ? अच्छा, बूझनीं। हम फैक्ट्री के ट्रेड यूनियन समिति के तरफ से आइल बानीं। एगो समस्या बा। ओकरे समाधान करे के बा।"

www.bhojpurisahityangan.com

"का ई काल्ह के सम्मलेन के बारे में बा?"

"ना, ई रउरा से व्यक्तिगत रूप से जुड़ल बा। हमनी के कुछ लोग के सांस्कृतिक सेवा बदे पुरस्कार देवे के तय कइले बानी सन। अइसे त ई नवका बरीस पर होखे के चाहीं, बाकिर लाइब्रेरी में एक तरे के समारोह होखे जा रहल बा। एह से हमनी के तय कइले बानी सन जे राउर पुरस्कार अबहिंये दे देहल जाव। अइसे त ऊ लोग नकद पुरस्कार देला, बाकिर एह मामला में हम दखलबाजी क देहनीं —"तूँ लोग वेरा के नकद पुरस्कार नइख दे सकत।" हम कहनीं, "एकर कवनो लाभ ना होखी। खाली खलबली मची, बस।"

"हम समझनीं ना", वेरा मुसुकी छोड़त कहली।

"अरे, ई त निहायत सहज बा। नकद धन बड़ी फिसलनी चीज ह— आज एगो पाकेट में बा त काल्ह दोसरा में। अगिला दिन ओकर कतहूँ नाँव निशान ले नइखे। नकद रउआ मतलब के नइखे आ रउआ लगे त कवनो पाकेटो नइखे। एह से ई पुरस्कार कवनो निश्चित चीज होखे के चाहीं।"

"का चीज?"

"रउआ सोच के बताईं।"

"एगो चीज? समझनीं। ई त नीमन बात बा, बाकिर का हम पुरस्कार के पावे जोग बानीं?"

"ई बात बड़हन स्तर पर तय कइल गइल बा। ओकरा से राउर कवनो सरोकार नइखे। हँ, त ऊ चीज का होखी?"

"आन्द्रेई, हमरा एक जोड़ी जूता चाहीं। साँचो चाहीं। बहुते जरुरी बा।"

आन्द्रेई सावधानी से वेरा के जूता पर नजर धउरवले त ऊ उनको ले जादे सावधानी से लकड़ी के स्टूल के तरफ बढ़ गइली, जहँवा बरतन राखल रहे।

"जूता, ई... हँ अ... अ! जूता नीमन चीज होखी। हम रउआ के एक जोड़ी जूता दे सकत बानीं।"

"बाकिर....."।

वेरा झेंप गइली।

"खाली भूअर.... ऊ भूअर होखे के चाहीं, आन्द्रेई!"

"भूअर?"

आन्द्रेई एक तरे से उदास मुसुकी के साथे बगल में देखले।

"हँ, हम बूझत बानीं जे हम भूअर ले सकत बानीं.... बाकिर जूता, रउआ जानत बानीं जे ओकरा के बे परखले नइखे कीनल जा सकत। हम दोकान में साथे चलब। ओकनी के राउर गोड़ में नाप के देखिहे सन। कबो—कबो ओकर चाप ठीक ना बइठे। फेर डिजाइनो देखे के परेला। ना त ऊ भगवान जानस, रउआ के कइसन डिजाइन दे दीहे सन।"

वेरा झेंप गइली। फेर मुसुकी छोड़ली। आन्द्रेई कनाखिया के उनका के देखले आ कुछ सोचत अपना जूता के नोक से फर्श के थपथपावे लगले।

www.bhojpurisahityangan.com

"त काल्ह चल के जूता कीन लेहल जाव।"

"बाकिर, आन्द्रेई अतना परेशानी के कवन दरकार बा? हम त जूता के कबहूँ ना परखीं। दोकानदार के सोझे आपन साइज बता देनीं।"

"साइज? राउर का साइज बा, वेरा?"

"साइज?.... चौंतीस।"

"चौंतीस? का ई तनी छोटहन ना परी?"

वेरा के अचके इयाद परल जे थरिया पोंछे के समय नियरा गइल बा। ऊ ओकरा के पोंछे वाला कपड़ा उठावे बदे दोसरा ओर मुड़ली।

"वेरा" आन्द्रेई हुलसित स्वर में कहले, "रउआ एकरा से बच के नइखीं जा सकत।"

वेरा पहिले थरिया उठवली, बाकिर ऊ थरियो थरियानुमा मुसुकी से उनका के देखत रहे।

"कवन चीज से बच के नइखीं जा सकत?" वेरा देखावा करत पूछली।

"साइज चौंतीस से। ई बा ऊ चीज, जवना से रउआ बच नइखीं सकत।"

आन्द्रेई जोर से ठहाका लगवले आ स्टूल से उठ के खाड़ा हो गइले। फेर दरवाजा के बरियारी बन्द करत उनका ओर पीठ क के छत के तरफ देखत बोलले :

"अबकी बेर राउर युवा महिला के कुछुओ ना मिली..... काहेकि हमरा के ख़ास क के एही काम पर लगावल गइल बा। ओकरा एको भूअर जूता ना मिली। ऊ ओह जूता के बगैर जादे सुन्दर बिया।"

वेरा ई ना जानत रहली जे कइसे कहल जाव –"रउरा एकरा से कवन मतलब?" जवन होखे, रउआ आन्द्रेई जइसन आदमी से बेजाँय बेवहार नइखीं कर सकत। ऊ उलझन भरल खामोशी में डूब गइली। आन्द्रेई फेर स्टूल पर बइठ गइले।

"रउरा घरकचुआ मामला में दखल देहला खातिर हमरा पर खिसियायेब मत। बिसवास करीं। इहो कबो–कबो जरूरी बा। फैक्ट्री के ट्रेड यूनियन समिति का ओर से काम करत हमरा लगे राजकीय प्राधिकार बा। जे हम कहनीं, ऊ इहे बा जे हम ई पुरस्कार कामरेड वेरा के दे रहल बानीं। राउर ऊ बेटी, बनठन के रहे वाली किशोरी आपन पुरस्कार अपना बाप से पा सकत बिया।"

"रउआ अइसे काहे कह रहल बानीं। ऊ बनठन के रहे वाली लइकी नइखे। एगो जवान लइकी...."।

वेरा बिखियाइले आपन अतिथि के तरफ देखली। ऊ अइसन बात साँचो काहे कहले– बनठन के रहे वाली। ऊहो तमारा के बारे में, लमहर बरौनी, सुघर घुँघराला बाल वाली ओह सुन्दर लइकी के, एगो अइसन सुन्दर औरत के बारे में, जेकरा बदे भविष्य खुशी ले आवे वाला बा। कतहूँ आन्द्रेई उनकर बेटी के शत्रु त नइखन। वेरा शंकित हो के सोचे लगली। ऊ अपना जिनिगी में कुछुवे शत्रु देखले रहली। आन्द्रेई के घूँघरदार मोंछ रहे, जे उनकर मधुर मुसुकी पर रुचिकर ढंग से हिलत डुलत रहे। एकरा से उनकर शत्रुतापूर्ण शब्दन के साँचो निराकरण हो जात रहे। तबो ई

www.bhojpurisahityangan.com

जरूरी रहे जे ऊ आपन शब्द के सफाई देस।

"रउआ तमारा के बारे में अइसन काहे बोलत बानीं।"

आन्द्रेई के मुसुकी बन्द हो गइल। ऊ चिन्तित हो के आपन माथा सहरवे लगले।

"वेरा, अगर इजाजत देहल जाव त रउआ के साँच बात बताईं।"

"कइसन साँच?" वेरा के अचके महसूस भइल जे ऊ साँच सुने के नइखी चाहत।

"हँ, हम रउआ के साँच बता देत बानीं," आन्द्रेई अपना ठेहुना पर थाप मारत गम्भीरता से कहले –"बाकिर एक मिनट खातिर ओह थरिया के पोंछल बन्द करीं आ सुनीं।"

ऊ पोंछल थरिया उनका हाथ से ले लेहले आ सावधानी से सूखल थरिया के ढेर पर ध देहले। फेर ओह ढेर पर हाथ फेरत इहो देखा देहले जे ऊ ठीक तरे से धइले बाड़े। वेरा खिड़की के लगे एगो स्टूल पर बइठ गइली।

"वेरा, बाउर मत मानब। साँच से डेराये के कवनो दरकार नइखे। हम जानत बानीं जे मामला साँचो राउर निजी बा। बेटियो राउरे बिया। बात खाली इहे बा जे एगो श्रमिक के हैसियत से हम रउआ के बहुते चाहत बानीं। हम सभ बातन के देखत बानीं। मसलन, ई देखीं जे रउआ कइसन कपड़ा पहिरले बानीं। हम एह पर गौर कइनीं। राउर ई घाघरा....." आन्द्रेई उनकर घाघरा के एगो सलवट के अपना दूगो अँगुरी से सावधानी से धइले आ कहले :

केहू बूझ सकत बा जे रउआ लगे खाली एके गो घाघरा बा। इहे काम करत घरी पहिरल जात बा, इहे सम्मलेन में काम आवत बा आ एकरे के पहिरले बरतन धोवल जात बा। ओकरा के देख के जाहिर होत बा जे अब ओकर दिन पूरा हो गइल बा। अच्छा बा जे ई करिया बा, ना त.... ई बहुत पहिलहीं नाकाम हो गइल रहित। हम राउर जूता के चरचा ना करब। का ई गरीबी ह? राउर मरद कमात बाड़े। रउआ खुदे कमात बानीं। राउर लइकी के अनुदान मिलत बा। कुल्ह मिला के राउर दुइए गो लइका बा। बा कि ना? कुल्ह दूगो। बात ई बा जे राउर युवा महिला बनठन के रहे के बेहद शौकीन बिया। तनी ओकरा के देखीं। महिला इंजीनियरो ओकर मुकाबला नइखे कर सकत। ऊ क्लब में आवत बिया– सोरहो सिंगार क के। कबहूँ नीला लिबास त कबहूँ करिया आ कबहूँ कवनो आउर रंग। बाकिर मुद्दा ई नइखे, ऊ जे चाहे पहिरे। लोग रउआ बारे में बात करे लागल बा आ रउआ! ई बरतन माँजल खाली रउआ काहे करे के परत बा!"

"आन्द्रेई! हम एगो मतारी बानीं। हम चाहीं त अपना परिवार के देखरेख कर सकत बानीं।"

"रउरा एगो मतारी बानीं– अच्छा त ई बात बा। हमारो मेहरारू येलेना वसील्येव्ना एगो मतारी बाड़ी। बाकिर तनी देखीं हमार बेटी सभ केतना कामकाजू बाड़ी सन। ऊ बाउर ना मान सन। ऊहो जवान बाड़ी सन। ओकनी के सुख भोगे

www.bhojpurisahityangan.com

बदे सउँसे जिनिगी परल बा। हमार येलेना के हाथ रउरा जइसन नइखे। बाकिर जइसन कि लोग कहत बा जे रउआ एगो बौद्धिक कर्मी बानीं। ई शरम के बात बा। हम रउआ के साफ–साफ बतावत बानीं। रउआ सोझा अबहीं सउँसे जिनिगी परल बा। रउआ अबहुँओ जवान आ सुन्दर बानीं त अइसन काहे ना होखे, काहे?"

वेरा आपन नजर झुका लेहली। जइसन कि अइसन हाल में मेहरारू हरमेसा करेली सन। ऊ आपन घाघरा ध के घुटना के लगे सोझ करे खातिर तइयार भइली, तले उनका इयाद परल जे आन्द्रेई उनकर घाघरा के अबे–अबे केतना निन्दा करत रहले। उनका इहो इयाद परल जे ओमे केतना पेवन लागल बा आ जगे–जगे अनगिनत रफू कइल बा। ऊ ठेहुना से हाथ हटा लेहली आ गँवे–गँवे आन्द्रेई से दुखी होखे लगली।

"आन्द्रेई, हर केहू आपन जिनिगी जीयत बा। हम जवना तरे रहत बानीं, ऊ हमरा पसन्द बा।"

आन्द्रेई उनका के बिखियाइले देखले। एजा ले जे उनकर मोंछ बिख के मारे खाड़ा हो गइल रहे :

"बाकिर हमरा ई पसन्द नइखे।"

"केकरा पसन्द नइखे?"

"हमरा आ लोग के पसन्द नइखे। ई का जे हमनी के लाइब्रेरियन, जेकर हमनी सभका बीच एगो मान–मरजाद बा। ऊ अइसन कपड़ा पहिरत बाड़ी जे..... हम नइखीं जानत जे कइसे। राउर मरदो ई पसन्द नइखन करत।"

"हमार मरद? रउआ कइसे जानत बानीं? रउआ त उनका से कबहूँ मिलनी ना?"

पहिलका बात ई जे हम उनका से मिल चुकल बानीं। दोसर, अगर ऊ मरद बाड़े त रउआ जानत बानीं जे मरद सभ एके जस बा। ऊ एक दिन..... बस..... ई मरद, रउआ जानत बानीं जे कइसन होले। रउआ ओह पर नजर राखे के चाहीं।"

आन्द्रेई विनम्रता से मुसुकी छोड़ले। फेर अपना स्टूल से उठ के खाड़ा हो गइले।

"लमहर बात ना क के हम रउआ के बतावत बानीं जे हम रउआ के एगो पूरा लिबास के कपड़ा पुरस्कार में देवे के फैसला कइले बानीं। ऊ रेशम के कपड़ा होखी। ओकर कवना तरे के अजबे नाँव बा– एगो असली जबड़ातोड़ नाँव। हमार मेहरारू ओकर सही उच्चारण कर सकत बाड़ी, बाकिर मरद केहू नइखे कर सकत। राउर ई लिबास हमार फैक्ट्री के दर्जी तइयार करी, काहेकि ऊ रउरा नाप के बन सके।"

वेरा उनका ओर देखली। फेर बे–पोछल थरिया के तरफ देखली आ चुपचाप एगो ठण्ढा साँस लेहली। उनकर शब्दन में थोरथार न्याय के बात रहे। बाकिर एकरा से उनका जिनिगी के बेल बूटेदार जाली के कुछ बेमतलब के फन्दा विस्फोटक ढंग से टूट गइल। ऊ तनी भय पैदा करे वाला रहे। ऊ तमारा का बारे में आन्द्रेई के

www.bhojpurisahityangan.com

बैर भाव से समझौता ना कर सकली। ई सगरी बात अजीब रहे। बाकिर आन्द्रेई के किताबन से प्रेम रहे। ऊ फैक्ट्री के ट्रेड यूनियन समिति के सदस्य रहले। उनका उनकर सोझ आ सहज बिसवासी ढंग पसन्द परल।

"हँ, त रउआ का कहत बानीं?" आन्द्रेई दरवाजा पर खाड़ा हो के हुलसित भाव से कहले।

ऊ जवाब देवे वाला रहली, तले ओही घरी दरवाजा भड़ाम से खुलल आ उनका सोझा एगो आकर्षक नजारा आ के खाड़ा हो गइल– तमारा आगे से साफे खुलल गाउन पहिरले, आपन मोजा, रिबन, जूता आ आउरो सभके प्रदर्शन करत नजर आवत रहे। ऊ एगो कानफाड़ू किलकारी छोड़लस आ दरवाजा बन्द करत भाग गइल। आन्द्रेई आपन मोंछ सहरावे लगले।

"हूँ .... त वेरा राउर का जवाब बा?"

"हम, हम सोचत बानी..... अगर ई जरूरी बा..... हम राउर आभारी बानीं।"

मगर ओह साँझी के ई घटना बहुते सामान्य रहे, तबो ऊ साँझ हरमेसा के तरे सामान्य ना रहे। वेरा बरतन धोवे के काम खतम कइली, चउका बेवस्थित कइली आ रात के खाना पकावल शुरू क देहली। एही बीचे पाव्लूशा भीतर आइल। एकदमे जीवन्त, तमतमाइल आ नीचे ले भींजल रहे। आपन मुड़ी चउका के अन्दर घुसावत कहलस :

"जानत बाड़े, हमरा पेट में चूहा कूदत बा। खाये खातिर का बा? दलिया आ दूध? बाकिर दूध आ दलिया के मेरावट ना चाहीं। हमरा खाली दलिया आ खाली दूध चाहीं अलग–अलग।"

"तें हेतना भींज के कहँवा से आवत बाड़े?"

"हम भींजल नइखीं। हमनी के एक दोसरा पर बरफ फेंकत रहनी सन।"

"काहे? तब काहे तोर कपड़ा नीचे ले भींजल बा?"

"ना, खाली एके जगह पर, खाली हेजुगिये।"

"वेरा हाली–हाली अपना बेटा के कपड़ा बदलवावे में लाग गइली। "खाली एक जगह," तोर त सउँसे पीठ के अलावे आउरो कई जगह भींजल बा। वेरा चाहत रहली जे पाव्लूशा रजाई में घुसिया जाव आ आपन देह गरमावे। बाकिर ओकरा ई पसन्द ना परल। जवना घरी मतारी ओकर कपड़ा सुखावे खातिर चउका में पसारत रहली, ओही घरी ऊ अपना बाप के जूता आ तमारा के काम करे वाला ओवरआल पहिर लेहलस। फेर एह कपड़ा में ऊ अपना के देखावे बदे अपना बहिन के लगे पहुँचल। एकरा खातिर ओकरा भरपूरे इनामो भेंटा गइल।

"एकरा के वापस कर!" तमारा चिल्ला के कहलस। ऊ आपन ओवरआल लेवे खातिर ओकरा पर झपट परल। पाव्लूशा कमरा में धउरे लागल। पहिले बइठाका में, फेर शयन–कक्ष में, अपना बाप के खटिया पर से दू बेर कूदला के बाद ऊ वापस बइठका में पहुँचल। एजुगिया तमारा ओकरा के ध लेत बिया, तबे ऊ ओकरा राह में कुरसी सरका देहलस आ आपन सफलता पर जोर–जोर से हँसे लागल। तमारा

www.bhojpurisahityangan.com

एके बेर जोर से चिल्लइलस "वापस क दे"। फेर ऊ कुरसी से टकराइल आ ओकरा के बगल में धकिया देहलस। धड़ाम–धड़ाम के आवाज़ से वेरा घबरा गइली। ऊ धउरत चउका से बाहर अइली। अपना भाई के पीठियावत तमारा उनका के ना देखलस आ धकियावत निकल गइल। वेरा एगो आलमारी से टकरा गइली। उनका बाँह में जोर से चोट लागल, बाकिर दरद महसूस करे से पहिलहीं ऊ शीशा टूटे के कड़कड़ आवाज़ से भकुआ गइली। गिरत बेर देवार से लागल आलमारी पर से पानी के भरल सुराही खुदे गिरा देहली। ओह समय ले पाव्लूशा तमारा के बात पर हँसत रहे आ आज्ञाकारी जस ओवरआल उतारत रहे। तमारा अपना भाई के हाथ से ओवरआल छीन लेहलस आ एगो जोरदार झाँपड़ जड़ देहलस।

"अगर तें फेर कबहूँ हमार ओवरआल लेवे त हम तोर पिटाई करब।"

"ओ हो, पिटाई! तें बड़ ताकतवर बाड़ी, ना।"

"हम अबे करत बानीं।"

"त आव, तनी कोशिश क के देख ले, आव त सही!"

अपना मतारी के सुराही के टुकी पर झुकत देख के तमारा चिल्ला के कहलस :

"माई, ई त हद हो गइल। ऊ हरमेसा हमार चीज उठा लेत बा। जब हमरा कवनो कपड़ा के जरूरत होत बा त हमरा तीन बरीस ले लगातारे रिरियाये के परत बा। हमरा एक जोड़ी जूता ले नइखे मिलत। जब ऊ कवनो चीज के छीने झपटे आ फारे लागत बा त ओकरा के केहू कुछुओ बोलतो नइखे। ओह! ई जिनिगी हेतना .....भयानक काहे बा।"

आखिरी शब्द ले सुबुकला के मारे ओकर गर भर गइल। ऊ बिखियाइले आपन ओवरआल मेज पर फेंक देहलस। फेर देवार से लागल आलमारी के तरफ मुँह फेर लेहलस। अब आउर बेसी सुबुकी लेवे के जगह ऊ मेज के निहारत चुपचाप खाड़ा हो गइल। सामान्य तरे से एह अन्दाज में ऊ जादे अपमानित आ दुखी लागत रहे। अइसन में ओकर मतारी ओकरा के देखते दुखी हो जात रहली। बाकिर अबकी वेरा ओकरा पर तनिको धेयान ना देहली। ऊ टूटल सुराही के टुकी बटोरे के नीरस काम में अझुराइल रहली। तमारा अपना मतारी का ओर एक बेर आपन आँख तरेर के देखलस। फेर मेज के तराशल कोर पर ताके लागल। ओकर मतारी कुछुओ ना कहली आ शीशा के टुकी समेटत चउका के तरफ चल गइली। तमारा तनी अचरज से अपना मतारी के जात देखलस। उनकर लवटे के आहट सुनते फेर से पहिलहीं जस मुद्रा बना लेहलस। वेरा पोंछा लेहले चउका से वापस अइली आ गिरल पानी पर झुकत सहज आ गम्भीर हो के बोललीं :

"तें पानी में गोड़ धरत बाड़ी..... अलग हट।"

तमारा गिरल पानी के लाँघत निकल गइल। फेर अपना मेज पर बइठ गइल आ ओजुगिये से अपना मतारी के निहारे लागल। असल में घटनाक्रम एकदमे सामान्य रूप से चलत रहे। एह तरे के हँसी–खुशी के खेल आ बरतन के टूटल–फूटल पहिलहूँ होत रहे। एही सामान्य ढंग से वेरा मेज पर भोजन परोसली।

www.bhojpurisahityangan.com

आधा कपड़ा पहिरले पाव्लूशा दलिया पर झपटल। कुछ देर ले ऊ एके हाथे दलिया में मक्खन मिलवलस आ दोसरा हाथे मेज पर राखल दूध के गिलास बरियारे धइले रहे। ओकरा दूध बहुते पसन्द रहे। तमारा दलिया कबहूँ ना खात रहे। ओकरा मांस जादे पसन्द रहे। ओह समय दूगो गरमा–गरम कटलेट थरिया में ओकर इन्तजार करत रहे, तबो तमारा अपना खाये वाला मेज पर चुपचाप बइठल रहे। ऊ अपना मतारी आ कटलेट दुनू के देखलस, बाकिर अनदेखा करत कतहूँ आउर ताकत रहे। वेरा अपना बेटी का ओर देखली त उनकर माया उमड़ परल।

"तमारा! आव, बइठ जो आ कुछ खा ले।"

"ठीक बा", तमारा फुसफुसा के कहलस। ऊ आपन कन्धा के एह तरे कड़वाहट से उचकवलस, जइसे केहू जिनिगी से उबिया के करत बा। बाकिर जिनिगी सामान्य गति से चलत रहल। रात के एगारह बजे इवान घरे अइले। ई एगो लमहर समय से परम्परा बन गइल रहे जे इवान हरमेसा काम से लवटत रहले। एह से कई बरीस से ई सवाले ना उठल जे ऊ कहँवा से आवत रहले। एह परम्परा के अइसन जतन से पालन होत रहे जे इवान आपन अनोखा आ ना बदले वाला सोभाव खातिर जानल जात रहले। एह से दोसर मेहरारुअन के ईर्ष्या होत रहे। वेरा के परिचित उनका से अकसरे कहत रहे :

"तहार मरद केतना अद्भुत बाड़े। अइसन चरित्रवान मरद आसानी से ना भेंटाला। वेरा तहार किस्मत नीमन बा।"

वेरा पर एह शब्दन के हरमेसा सुखद असर परत रहे– जिनिगी में सामान्य रूप से उनका से केहू ईर्ष्या ना करत रहे।

इवान एगो वरिष्ठ नियोजन विशेषग्य रहले। बकिया नियोजन विशेषग्य पिनाकाह सोभाव के रहे। ओह लोग के हेने होने के दशा के विश्लेषण करे आ अपना काम में जादे बदलाव करे के लत परल रहे। ओजुगिये इवान संतुलित सोभाव के आदमी रहले आ उनका विश्लेषण में कवनो रुझान ना रहे। ऊ पिछिला पनरह बरीस से बेसिए समय ले एके नोकरी आ एके पद पर बनल रहले। साँच बा जे ऊ अपना मेहरारू के अपना काम के बारे में कबहूँ ना बतवले। वेरा अतने भर जानत रहली जे ऊ एगो नियोजन विशेषग्य बाड़े। ई बात उनका अपना जवानी के दिन के एगो इयादे भर रहे।

इवान नीमन डिजाइन वाला सूट पहिरत रहले। उनकर चेहरा साफ आ भरल–पुरल रहे। ऊ सुन्दर ढंग से काटल छाँटल छोटहन दाढ़ी राखत रहले। वेरा उनकर सूट के देखभाल ओकरा बनला के बादे करत रहली। उनका एह बात के कवनो जानकारी ना रहे जे ऊ कइसे बनत बा। इवान उनकर सलाह के बिना ई काम करत रहले। ऊ वेरा के हर महीना तीन सौ रूबल देत रहले।

इवान घरे अइला का बाद हरमेसा के तरे सोझे मेज पर बइठ गइले। वेरा उनकर खाना परोस देहली। जवना घरी ऊ खाना परोसत रहली, ओह घरी इवान अपना दाढ़ी के दुनू हाथ पर टिकवले आपन अँगुरी के जोड़ के पुटपुटवले। उनकर

www.bhojpurisahityangan.com

आँख शान्त भाव से कमरा में चारु ओर देखत रहे। उनका सामने थरिया धइल रहे। ऊ आपन प्रतिष्ठित मुद्रा बनवले नैपकिन के अपना कालर के एगो कोना में खोंस लेहले। ऊ बे–नैपकिन के कबहूँ ना खात रहले आ सामान्य तरे से साफ–सुथरा आदमी रहले। ऊ तबे बात करत रहले जब दू चार निवाला उनका गला के नीचे उतरत रहे।

आज हर चीज सामान्य तरे से चलत रहे। इवान आपन कटलेट खइले आ पाकल फल के तरफ हाथ बढ़वले। अइसन करत बेर बोलले –"हँ त तमारा, तोर वास्तुकला कइसन चल रहल बा?"

तमारा अपना मेज पर बइठल नम्र भाव से आपन कन्धा उचका देहलस। वेरा देवार से लागल एगो कुरसी पर बइठ गइली आ कहली :

"तमारा बहुते परेशान बिया। हम ओकरा बदे ऊ भूअर जूता कीन नइखीं पावत।"

इवान आपन माचिस के डिबिया से एगो तीली तूर के दाँत–खोदनी बनवले आ दाँत खोदे लगले। फेर एह काम में जीभ के सहजोग लेत मज़ा से ओकरा के चूसे लगले। कोशिश क के आपन आँख तमारा के तरफ घुमवले। फेर धेयान से आपन दाँत–खोदनी के देखत कहले :

"जूता, ई गम्भीर मसला बा। काहे, का हमनी के लगे भरपूर पइसा नइखे?"

"जब हमार बारी आवत बा त कबहूँ भरपूर पइसा रहते नइखे," तमारा दुखी हो के कहलस।

इवान मेज से उठ के खाड़ा हो गइले। आपन हाथ पतलून के पाकेट में डाल के आपन खाली थरिया के तरफ देखत कुछ सोचे लगले। एही भाव में अपना पंजा के बले खाड़ भइले आ दू चार बेर ऊपर नीचे कइले। फेर घुँघराला छैला के बारे में एगो गाना के हँसोड़ धुन पर सिटी बजावे लगले। अइसन बुझात रहे जे ऊ जूता के बारे में सोच रहल बाड़े। बाकिर जाहिर रहे जे ऊ कवनो नीमन बात ना सोचत रहले। आखिरी बेर पंजा के बले खाड़ हो के ऊ गँवे–गँवे अपना शयन कक्ष के तरफ चल देहले। ओजुगियो से उनकर सिटी बजवला के आवाज़ साफे सुनात रहे। तमारा अपना कुरसी पर बइठल घूम के शयन कक्ष के दरवाजा का ओर बिखियाइले देखलस। वेरा मेज साफ करे लगली।

एह तरे ऊहो साँझ, वेरा के जिनिगी में से एगो साँझ, सामान्य तरे से बीत गइल। एकरा बादो ई साँझ आउर साँझ से अलग रहे। जब से आन्द्रेई गइल रहले, तबे से वेरा के अन्दर कवनो चीज कुलबुलात रहे। ई पहिला मोका ना रहे, जब वेरा घरेलू काम करत घरी दिलचस्प चीज के बारे में सोचले होखस। साधारण तरे ऊ लाइब्रेरी के आपन काम के इयाद करस आ अपना दिमाग में ओह किताबन के कल्पना करस, जे हासिल कइल गइल रहे। पाठक का साथे आपन बतकही आ ओह सलाह के इयाद करस, जे ओह लोग के देले रहली। ऊ सफलता के बुद्धिमानी से कइल टिप्पणी आ प्रोत्साहन के हार्दिक शब्दन के इयाद कइल पसन्द करत रहली।

www.bhojpurisahityangan.com

जब कवनो प्रेरणाप्रद भा उल्लेखनीय विचार उनका इयाद परत रहे त ऊ ओकरा के एगो आन्तरिक मुसुकी से परखत रहली। फेर ओकर बारीक अभ्यास पर धेयान देत हुलसित होत रहली।

अगर आन्द्रेई ना आइल रहिते त ऊ ओह साँझ के काल्ह होखे वाला सम्मलेन के बारे में सोचती। शो–केस आ अपना प्रिय लेखक के चित्र के इयाद करती। सुन्दर स्लेटी–नीला जिल्द में बन्हाइल ओह किताबन के बात सोचती। उनकर किताबन के प्रकृति में एगो जवान आ हुलसित स्वर रहे। ओकर इयाद कइल उनका सुखद लागत रहे।

बाकिर ओह साँझ ऊ एमे से कुछुओ ना सोचली। रात के खाना पकावत घरी आ टूटल शीशा के टुकी बटोरत घरी, थरिया पोंछत घरी आ जब सभे बिछावन में पटाइल रहे त वेरा आन्द्रेई के कहल बात पर विचार करत रहली। कवनो कारण से खाली एके गो बात सामने आइल– उनकर घाघरा का बारे में आन्द्रेई के जादे प्रभाव वाला टिप्पणी। ई जानकारी बहुते निराशाजनक रहे जे उनकर सगरी जतन, मेहनत आ उम्मीद सभकुछ बेकार रहे। ऊ ओह घाघरा में पेवन लगावे भा रफू करे में आपन केतना साँझ बितवले रहली। जब काम खतम क लेत रहली त उनका पकिया बिसवास हो जात रहे जे लक्ष्य पूरा हो गइल। अगिला दिने ओकरा के पहिर के निहायत सम्मानजनक नजर आवत काम पर जा सकत रहली। कबो–कबो उनका अइसन लागत रहे जे उनकर बाहरी रूप–सरूप खाली सम्मानजनक ना, बलुक सुरुचि वाला बा। बाकिर बात साफे उल्टा निकलल –"लोग रउआ बारे में बात करत बा।" त हर केहू देख चुकल रहे आ ऊ एह पर हँसत रहले। आ काल्ह? काल्ह सम्मलेन होखी।

बरतन–बासन साफ कइला आ सभकुछ बेवस्थित कइला के बाद वेरा मेज साफ कइली। फेर आपन घाघरा उतार के मेज पर फइला देहली। ओकर पुरान सलवट साफे लउकत रहे। वेरा ओकरा के गौर से देखली त उनकर आँख लोरा गइल। उनका अपने पर अफसोस होखे लागल। घाघरा उनका ओर आपन जीर्णता के उदास आ थाकल भाव से देखलस। केहू आसानी से समझ सकत रहे जे अब ओकरा आराम करे के दिन नियरा गइल बा। ओकरा आलमारी के कवनो दराज के एगो गरम कोना में परल रहे के आ एगो लमहर नींद के दरकार बा। कवनो जमाना में ऊ रेशम के बनल रहे। तवना घरी ओकरा में कोमलता आ सजीवता रहे। अब ओकर रेशमीपन तबे लउकत रहे, जब आँख गड़ा के देखल जाव। ओकर रेशमीपन साफे स्लेटी हो गइल रहे। ओकर ताना–बाना अतना कमजोर हो गइल रहे जे जगह–जगह मसक गइल रहे। जिनिगी में लागल घाव के बहुते निशान रहे। बहुत पहिले के कइल रफू के जगह कवनो तरे ठीक त रहे, बाकिर टटका छेद पर रफू के धागा के बारीक जाली भर ले रह गइल रहे। ओकरा पार से मेज के सफेद सतह साफे लउकत रहे। वेरा बिजली के इस्तरी के प्लग से जोड़ देहली। फेर ऊ बेहद सावधानी से हलुकाहे हाथे इस्तरी के अपना घाघरा पर चलवली। जहँवा ऊ घूमल,

www.bhojpurisahityangan.com

ओजा के सलवट तनी सोझ हो गइल आ "बूढ़ मेहरारू" जस उदास आ कमनीय लउके लागल।

इस्तरी कइला का बाद वेरा ओकरा के उठा के जाँच–परख कइली। ना, अब अपना के धोखा नइखे देहल जा सकत। इस्तरी कइला का बादो ओकरा में अब सुरुचि के कवनो गुंजाइश ना रहे। बाकिर वेरा बहादुरी से मुसुकी छोड़ली– कवनो बात ना। हमनी एके साथे लमहर जिनिगी बितवले बानी सन। हमहूँ ओकरा साथे–साथे जवाबदेह बानीं।

वेरा के भावना के तनाव तनी घटे लागल। ऊ कल्पना कइली जे ऊ एगो नया रेशमी लिबास पहिरले बाड़ी त उनका ऊहो अजीब..... आ हास्यास्पद लागल। अपना घरेलू काम के धुन से निकलला के बाद ऊ देखली जे ई नया लिबास असम्भव बा। बाकिर ऊ एगो लिबासे ना रहे..... ई सोचल बे मान–मरजाद के आ शर्मनाक बा। एकरा बारे में कवनो चीज रहे, जे जवान सरीखा रहे। वेरा अचरज से आपन मुड़ी हिलवली। ऊ सावधानी से हउदा के ऊपर टाँगल दर्पण के लगे गइली। अबकी बेर ऊ दूगो जवान मुसुकी छोड़त आँख आ भरल पुरल हुलसित होठ देख के साँचो अचरज में पर गइली। लागत रहे जे ऊ फुसफुसा के कुछ कहत होखे। दर्पण में गुलाबीपन ना लउकत रहे, तबो वेरा अपना गाल में ओकर गरमाहट महसूस करत रहली। अचके आवे वाला एगो विचार से उनका इवान के इयाद परल। ऊ दर्पण से परे हो गइली। ई उनका बुझाइल जे ऊ कवना तरे के मेहरारू रहली। ऊ सजल सँवरल वेश–भूषा वाला, सुघर हजामत बनल ओह आत्म–बिसवासी आदमी के मेहरारू कइसे हो सकत बाड़ी। ऊ बहुते लमहर समय से उनकर मेहरारू ना रहली आ ना हो सकत रहली। इवान उनकर अंगवस्त्र आ मोजा नइखन देखले। अइसन बहुत कुछ रहे, जे ऊ ना देखले रहले.....।

सम्मलेन बहुते दिलचस्प तरे से चलल। पाठक लोग हार्दिकता आ भावुकता से बोलल। फेर मंच से उतरे के पहिले लेखक से हाथ मिलावल आ उनका के धन्यवाद देहल। वेरा मंच पर आवे वाला हरेक भाषण देवे वाला के व्यग्रता भरल धेयान से देखली। राहत आ हुलास के भावना के अनुभव महसूस करत ओह लोग के जातो देखली। बूढ़–जवान सभे जानत रहे जे कइसे बोलल जाला आ कइसे महसूस कइल जाला। ई एगो बड़हन सफलता के बात रहे।

आन्द्रेई मंच पर अइले आ संक्षेप में कहले :

"एह साथी के जवन किताब हम पढ़नीं, ऊ हमरा जिनिगी बदे साँचो एगो खतरा रहल बा। हम लगातारे दू रात ले नइखीं सूत सकल। ऊ अइसन अद्भुत लोग के दर्शन करावत बा आ अइसन साहसी युवा लोग के देखावत बा, जे हुलास से भरल पूरल बा। एह तरे के लोग, चाहे कुछुओ काहे ना होखे, अपना ध्येय बदे समर्पित बा। ई बात साँच बा। रउआ रात के किताब पढ़ीं। फेर सबेरे उठीं आ अपना अगली–बगली देखीं त रउआ साँचो अइसन अनेक लोग के देखत बानीं। सही बा, काहेकि हम खुदे ओमे से एगो बानीं.....।"

www.bhojpurisahityangan.com

श्रोतागण जोर से हँसल। आन्द्रेई बूझ गइले जे ऊ अति क देले बाड़े। ऊ उलझन में पर के अपना मोंछ पर तनी ताव देहले। फेर ऊ सम्हर गइले।

"साँच बा जे हमनी के संस्कृति के दरकार बा। ई बिलकुल साँच बा आ रउआ एकर चरचा क के सही काम कइले बानीं। संस्कृति ऊ चीज बा, जवना खातिर हमनी के जतन करत बानी सन। हमनी के लाइब्रेरी के आ एह उत्तम क्लब के देखीं। इहो देखीं जे तरे–तरे के लेखक आ विद्वान हमनी से मिले आवत बा। सोवियत सत्ता के धन्यवाद बा जे ऊ एह काम में वेरा जइसन महिला के लगवले बा।"

सउँसे सभा भवन में एगो पुरजोर हर्षध्वनी गूँजल। वेरा लेखक का ओर देखली, बाकिर ऊ मेज के लगे खाड़ा हो गइल रहले आ उनका ओर मुसकिया के देखत ताली बजावत रहले। सभा भवन में अनेक लोग अपना–अपना जगह पर खाड़ा हो गइल रहे आ सभे वेरा के तरफ देखत रहे। हर्षध्वनि के शोर आउर तेज होत गइल। वेरा घबराहट में दरवाजा का ओर भागहीं वाली रहली, तले लेखक महोदय कोमलता से आपन हाथ उनका ओर बढ़वले आ उनका के सावधानी से मेज पर बढ़वले। ऊ बइठ गइली। अपना खातिर अनपेक्षित तरे से आपन बाँह कुरसी के पीठ पर टिका देहली आ अपना माथा के बाँह पर ध के रोवे लगली। सभा भवन में सन्नाटा पसर गइल। एही बीचे आन्द्रेई बनावटी हताशा जतावत आपन हाथ हिलवले आ हर केहू सदयता आ सनेह से हँसे लागल। वेरा आपन मुड़ी उठवली आ हाली–हाली अपना लोर पर काबू पवली आ खुदे हँसे लगली। श्रोता लोग के बीच बतकही के एगो लहर धउर गइल। आन्द्रेई कागज के एगो टुकी उठवले आ ओकरा के पढ़ले जे फैक्ट्री के ट्रेड–यूनियन समिति आ प्रबन्धक लोग प्रमुख लाइब्रेरियन वेरा के उनकर उत्साह का साथे समर्पित काम बदे क्रेप.....द....शीन के एगो वस्त्र दे के पुरस्कृत करे के फैसला कइले बा। आन्द्रेई एह वस्त्र के नाँव के उच्चारण कुछ सन्देह से कइले। फेर ई जतावे खातिर आपन मुड़ी हिलवले जे ई केतना कठिन बा। जवन होखे एह शब्द के फेर हर्षध्वनी से स्वागत भइल। आन्द्रेई अपना बैग से नीला रिबन से बान्हल एगो हलुक पैकेट निकलले। ओकरा के अपना बायाँ हाथ में धइले। ऊ फेर आपन दाहिना हाथ मिलावे बदे आगे बढ़वले। वेरा पुलिन्दा के लेवे वाली रहली, तले उनका इयाद परल जे अइसन कइल गलत होखी। आन्द्रेई उनकर हाथ थाम लेहले आ खूब जोश से हिलवले। सभा भवन में उपस्थित लोग ताली बजावल आ हुलसित हो के हँसल। वेरा के चेहरा लाज के मारे लाल हो गइल। ऊ आन्द्रेई का ओर उलाहना के नजर से देखली। बाकिर ऊ शान से मुसुकी छोड़ले आ समारोह के सगरी औपचारिकता के धीरज से निभावत रहले। आखिर में पातर कागज में लपेटल नीला रिबन से बान्हल क्रेप–दे–शीन के पुलिन्दा उनका मेज पर ध देहले। ओही धरी वेरा के आपन पुरान घाघरा इयाद पर गइल। ऊ अपना पैर के हाली से कुरसी के नीचे क लेहली। एह से जे दर्शक उनकर जूता ना देख पावे।

www.bhojpurisahityangan.com

बाकिर अबहीं सभकुछ खतम ना भइल रहे। लेखक मंच पर खाड़ा भइले आ एगो नीमन भाषण देहले। लेखकीय जगत में वेरा के अनेक लोग जानत रहे। एगो किताब लिखिये देहल भर काफी नइखे। किताब लिखला का बाद ओकरा के पाठक के व्यक्तिगत सम्पर्क में ले आवे के परेला। ई राजनीतिक, सांस्कृतिक आ नैतिक ज्ञान के बढ़ावे के एगो महान काम बा। वेरा जइसन लोग के अगली–बगली एगो नया समाजवादी संस्कृति परिवर्द्धित आ प्रसारित हो रहल बा। आज के सम्मलेन एगो नया कारखाना के निर्माण, खेती में उपज बढ़ावे, सड़क भा रेल–लाइन बनावे से कम बड़हन उपलब्धि नइखे। हमनी के सोवियत समाज में अइसन अनेक सम्मलेन होत बा, जे नया आ गहन समाजवादी संस्कृति के अभिव्यक्ति बा। हमनी के एह पर आ वेरा जस मेहरारू पर गर्व होखे के चाहीं। जहँवा फासिस्ट राज्य में किताबन के जरावल जा रहल बा आ मानवता के सर्वोत्तम प्रतिनिधि के खोज–खोज के उत्पीड़ित कइल जा रहल बा, ओजुगिये हमनी के देश में किताबन के साथे प्यार आ आभार के सुलूक कइल जात बा। वेरा जस रचनात्मक कर्मी के मान–मरजाद देहल जात बा। ऊ लेखकन के तरफ से वेरा के महान काम बदे आभार जतवले आ सोवियत पाठक के शिक्षा पर लमहर समय ले काम करत रहे खातिर उनकर शक्ति आ सेहत के शुभकामना देहले।

वेरा लेखक के वक्तव्य के धेयान से सुनली। ताज्जुब के साथे ई बात समझली जे ऊ साँचो एगो महान काम कर रहल बाड़ी, जे उनकर किताब–प्रेम कवनो हाल में एगो गोपनीय व्यक्तिगत भावना नइखे, बलुक कवनो महान, उपयोगी आ महातिम के चीज बा। उनका एगो अइसन चीज के साथे सामना भइल, जवना पर ऊ पहिले कबहूँ गौर ना कइले रहली– अपना काम के सामाजिक महातिम। ऊ एह विचार पर गहराई से सोचली आ लगले पूरा माने मतलब के तुरते समझ गइली। ऊ लोग के पढ़ल दसो हजार किताबन के देखली। ऊ खुदे लोग के देखली जे अबहीं हाल ले भोला–भाला आ संकोची रहे। ऊ लोग किताब के लाइन आ शीर्षक के बेढंगा तरे से देखत आ पूछत रहे –"हमरा के डाँकुअन के बारे में कुछ दीं" भा "कवनो चीज, रउआ जानत होखीं..... जिनिगी के बारे में।" फेर ऊ लोग युद्ध के बारे में, क्रान्ति के बारे में, लेनिन के बारे में किताब माँगल शुरू क देहल। अब ऊहे लोग कुछुओ ना माँगत रहे, बलुक आपन नाँव कवनो किताब के प्रतीक्षा सूची में पैंतीसवाँ भा पचपनवाँ जगह पर लिखत आ बड़बड़ात रहे :

"एकरा बारे में राउर का खेयाल बा। अइसन लाइब्रेरी में खाली पाँचे गो प्रति! एकरा से काम नइखे चल सकत।"

ई सभ उनका पहिलहीं से मालूम रहे। ओकरे मातहत आठ गो लाइब्रेरियन काम करत रहे। एकरा के सभे जानत रहे। अकसरे कवनो साँझी के लाइब्रेरी में बइठ के ऊ लोग किताब, पाठक आ अपना काम करे के तौर तरिका पर बतकही करत रहे। उनका आउरो लाइब्रेरी के काम के जानकारी रहे। ऊ कई गो सम्मलेन में गइल रहली। ऊ हर चीज के जानत रहली आ हर सम्मलेन में भाग लेत रहली।

www.bhojpurisahityangan.com

तबो उनका आज जइसन गर्व आ कवनो चीज के रचना के अनुभूति के अइसन अहसास पहिले कबहूँ ना भइल रहे।

अइसन लागत रहे जे लेखक ओह सवालन के जवाब दे रहल बाड़े, जवन पहिलहीं से उनका दिमाग में रहे।

वेरा जस लोग बहुते नम्र सोभाव के बा। ऊ लोग अपना बारे में कबहूँ नइखे सोचत। ऊ लोग अपना काम के बारे में सोचत बा आ ओकर सन्देश से अभिभूत हो जात बा। बाकिर हमनीं, रउआ आ हम उनका बारे में सोचत बानी सन। हम हार्दिक आभार के साथे उनका से हाथ मिलावत बानीं। वेरा के पुरस्कृत करे के अपना फैक्ट्री के विचार बहुते नेक बा। हम उनका से कहत बानीं –"ना रउआ अपनहूँ बारे में सोचीं। सुखी रहीं आ नीमन वस्त्र पहिरीं। रउआ एह लायक बानीं। हमनी के आपन क्रान्ति एही खातिर कइनी सन जे हरेक मेहनतकश आदमी नीमन तरे से रह सके।" ऊ उल्लेखनीय दिन आखिर ले उल्लेखनीय रहल। सम्मलेन का बाद लाइब्रेरी में काम करे वाला आ पाठक लोग के समिलात दावत के बेवस्था कइल गइल रहे। मेज मदिरा, सैण्डविच आ केक से भरल परल रहे। युवा कर्मी लोग वेरा के लेखक के बगल में बइठावल। फेर साँझ ले अपना सफलता, आपन कठिनाई आ शंका के इयाद कइल आ अपना पारस्परिक दोस्त–पाठक, किताब, लेखक के बारे में चरचा कइल।

बाकिर जब ऊ लोग विदा भइल त आन्द्रेई वेरा के काँख में दबल नीला रिबन वाला पुलिन्दा के सावधानी से अपना हाथ में ले लेहले आ कहले :

"एकरा के घरे ले जाये के कवनो दरकार नइखे। हम एकरा के एजुगिये लाकर में बन्द क देब। काल्ह अगर किस्मत साथ देहलस त दर्जी किहाँ पहुँच जायेब।"

एह शब्दन पर लेखक ठठा के हँसले। वेरा पुलिन्दा के चुपचाप ओजुगिये ध देहली।

जब ऊ घरे पहुँचली त अपना रोजाना के काम में लाग गइली। पाव्लूशा फेर स्केटिंग करे चल गइल रहे आ बइठकी के पूरा गन्दा क देले रहे। तमारा घर में रहे आ ऊ दिन भर आपन बाल में कंघी ले ना कइले रहे। ओकरा मेज पर ऊहे पहिलके दिन वाला डायग्राम परल रहे। ओमे एगो सिंह के दुम में रंग लगवला के सिवा आउर कतहूँ कवनो बदलाव ना भइल रहे। तमारा अपना मतारी से मुँह फुलवले रहे– एकर मतलब एगो कारगर घेराबन्दी के शुरुआत रहे, जे हरमेसा एगो तीब्र, बाकिर नाकाम हमला के बाद होत रहे।

एकरा पहिले वेरा एह रणनीति के अपना बेटी के परेशानिये के ना, बलुक खुद आपने कवनो दोष के संकेत बूझत रहली। आज कवनो कारण से वेरा ई महसूस ना कर पवली जे उनकर कवनो कुसूर बा। तमारा के दुखी देखल दुखद रहे। ओकर सुन्दर आ दुखी चेहरा पर नजर धउरवला पर पीड़ाप्रद लागत रहे। ई सोच के बड़ी दया आवत रहे। एह सभका बादो ई बिलकुल साफ रहे जे एकरा बदे वेरा

www.bhojpurisahityangan.com

दोषी नइखी। उनकर विचार इवान के तरफ घूम गइल। जादे सम्भव बा जे ऊहे एकर दोषी होखस। उनका उनकर हँसोड़ गाना के धुन बरबस इयाद परल। इवान के तमारा के जूता का बारे में दिलचस्पी लेवे के चाहत रहे। आ .....तीन सौ रूबल महीना घर–खरची बदे बहुते कम रकम रहे। उनका केतना दरमाहा मिल रहल बा? पहिले उनका सात सौ रूबल मिलत रहे। ना मिलत रहे का? बाकिर ऊ बहुत पहिले के बात ह.....।

एह बात के सोचत घरी वेरा आपन ओह दिन के सफलता से बहुते हुलसित रहली। एकरे वजह से उनकर दिमाग जादे नीमन आ साहसिक तरे से काम करत रहे। ऊ ओह लोकप्रिय प्यार आ मान–मरजाद के उमंग के ना त भूला सकत रहली आ ना अपना महान काम के ओह विषद तस्वीर के, जे ऊ लेखक घींचले रहले। अब उनका आपन घर एकदम सामान्य आ उजड़ल–उजड़ल लागत रहे।

घर के काम–काज केहू ना कइले रहे। ऊ पहिलहीं दिन जस ओसहीं परल रहे। कई दशक के पुरान आदत के चलते उनका ओही चिन्ता, खेयाल आ भावना के साथे अबहिंयो हरमेसा के तरे काम पूरा करे के रहे। वेरा एक बेर फेर तमारा आ पाव्लूशा के साँझ के खाना परोसली। तमारा अपना कटलेट के उदासी भरल आँख से देखलस। ऊ काँटा से थरिया में परोसल भोजन के अइसन बेरुखी से बटोरलस जे वेरा चैन से ना बइठ पवली। उनकर गला भर गइल। तबे अचके उनका ओह नीला रिबन में लपेटल ऊ पुलिन्दा इयाद परल। उनका ऊ पुलिन्दा लालची जस लागे लागल। ई सुन्दर लइकी आपन प्रिय लिबास पहिरियो नइखे सकत आ एने वेरा आपन कीमती क्रेप–दे–शीन के छुपवले बाड़ी। फेर ऊ एगो लिबास बनवइहें आ ओकरा के कवनो अभिनेत्री जस पहिरले घूमिहें। बाकिर एह लाचार लइकी के मदद करे वाला केहू नइखे। अपना कल्पना में वेरा के बट्टा पर चीज कीने वाला दोकान लउके लागल। ओजुगिया ऊ अन्दर जात रहली आ बेचे खातिर पेश करत रहली..... बाकिर उनका लगे बेचे बदे कुछुओ ना रहे। कपड़ा के पैकेट अबहुँओ आन्द्रेई के लगे राखल रहे। पल भर खातिर उनका दिमाग में ई खेयाल आइल जे ऊ एह पुलिन्दा के ले सकत बाड़ी। बाकिर ओतने हाली से आन्द्रेई के मोंछ समेत उनकर मुसुकी झलकल आ बट्टा के दोकान बिसर गइल। वेरा के घुटन महसूस होखे लागल आ ओहू घरी ऊ बेचैनी में रहली, जब इवान घरे पहुँचले।

इवान खाना खाइल शुरू कइले त वेरा देवार से लागल कुरसी पर बइठ गइली आ कहली :

"आज हमरा किहाँ एगो सम्मलेन रहे। रउआ बिसवास ना होखी जे सम्मलेन के बाद ऊ लोग हमरा के एगो पुरस्कार देहल।"

तमारा के आँख फइल गइल। ऊ आपन पीड़ा बिसर गइल। इवान पूछले :

"एगो पुरस्कार? दिलचस्प! का ऊ लोग तहरा के बहुते कुछ देहल?"

"एगो लिबास के कपड़ा।"

इवान चाकू आ काँटा के अपना दुनू हाथे धइले आ थरिया के दुनू कोर के

www.bhojpurisahityangan.com

दबवले गम्भीर भाव से सवाद ले के प्रशंसनीय ढंग से भोजन चबावे लगले।

"पुरान फैशन के तरे पुरस्कार", ऊ चाकू के डण्डी से मेज के ठकठकावत कहले।

तमारा मेज के लगे आ गइल आ ओकरा आधा हिस्सा में ओलर के अपना मतारी के दिलचस्पी से निहारे लागल।

"का तोरा ऊ मिल गइल?"

"ना..... ऊ ओजुगिये बा..... दर्जी किहाँ।"

"त तोरा ऊ, ऊ कपड़ा पहिलहीं मिल गइल बा?"

वेरा हामी भरत मुड़ी हिलवली। फेर लजाइले अपना बेटी के तरफ देखली।

"कवन कपड़ा ह?"

"क्रेप–दे–शीन।"

"क्रेप–दे–शीन? कवन रंग के?"

"हमरा पता नइखे..... हम ओकरा के देखनीं ना।"

तमारा के माथा, सुन्दर आँख, गुलाबी होठ आ सुग्गा नीयर नाक सभकुछ ओकरा तरहथी पर टिकल रहे। तमारा अपना मतारी के ऊपर से नीचे ले निहारत रहे। जइसे ई सोचत होखे जे क्रेप–दे–शीन के लिबास पहिरले ओकर मतारी कइसन लगिहें। ओकर नजर कुछ देर ले मतारी के ठेहुना पर टिकल, फेर उनकर जूता पर आ एक बेर फेर उनका कन्धा पर जा के ठहर गइल।

"का तें ओकरा से अपना बदे लिबास बनवा रहल बाड़ी?" ऊ आपन जाँच–पड़ताल जारी रखलस।

वेरा के आउरो जादे लाज लागे लागल। ऊ कोशिश करत कहली :

"हँ..... इहे खेयाल बा..... हमार ई घाघरा अब बहुते पुरान हो गइल बा।"

तमारा अपना मतारी के आखिरी बेर देखलस, तनी देह सोझ कइलस आ हाथ पाछे समेट लेहलस। फेर ऊपर लैम्प के तरफ नजर धउरवलस।

"के जाने ऊ कवन रंग के होखी?"

इवान छेना वाला कटोरी अपना ओर घींचले आ कहले –"हमरा ऑफिस में पुरस्कार में कवनो चीज उपहार में देहल पुरान बात मानल जाला। नकद राशि हर मामला में सुबहित बा।"

बाकिर ऊ नया लिबास अगिला दिने आपन पूरा असर देखवलस। भोजन के समय आन्द्रेई लाइब्रेरी में आवते कहले –"अच्छा त चलीं, पोशाक बनवावे।"

"रउआ काहे आइल बानीं? का रउआ बूझत बानीं जे हम रउआ बिना ई काम नइखीं कर सकत?" करिया आँख वाली खुशमिजाज मरुस्या किताबन के आलमारी से लागल जीन के उपरे से जवाब देहलस।

"हम जानबूझ के आइल बानीं। वेरा आ हम साथे–साथे दर्जी के दोकान में जा रहल बानी सन।"

वेरा अपना कमरा से मुड़ी निकाल के झँकली। आन्द्रेई दरवाजा के तरफ

www.bhojpurisahityangan.com

अपना मुड़ी से इशारा कइले।

"रउआ कहँवा जाये के सोचत बानीं? रउआ के ओजुगिया के अन्दर जाये दी? ऊ मेहरारुअन के दर्जी ह। हम रउआ बगैर सगरी बेवस्था क लेब।"

मरुस्या जीन से नीचे कूद के आइल।

"रउआ ओजुगिया ना जाये के चाहीं।"

"मरुस्या, हेने आव। हमरा तोरा से एगो गोपनीय बात करे के बा।"

ऊ खिड़की के तरफ गइले। आन्द्रेई फुसफुसा के बतियावे लगले। मरुस्या जोर से हँसत कहलस –"हम समझत बानीं। बेशक! ना ई कइसे हो सकत बा? एमे अइसन गोपनीय का बा? हम रउरा के बे–बतवले एह बात के जानत बानीं। हम बहुते लमहर अरसा से एह बात के जानत बानीं। रउआ चिन्ता मत करीं। ना, ई ना। हम सभकुछ बूझत बानीं।"

ऊ लोग खिड़की से वापस लवटल। एक दोसरा से बहुते हुलसित नजर आवत रहे। मरुस्या कहलस :

"दीं, ऊ पुरस्कार हमरा के दीं।"

आन्द्रेई लाइब्रेरी के दूर कोना में चल गइले। उनकर षडयंत्र के दोसर सहजोगी नताशा, जे खुदे खुशमिजाज, बाकिर हलुक रंग के बाल वाली लइकी रहे। ऊहो आपन लबादा उड़ावत उनका पाछे–पाछे धउरल।

"ऊ त ताला में बन्द बा। रउआ आपन बूता से कबहूँ नइखीं खोल सकत।"

ऊ लोग ओह मशहूर पुलिन्दा के ले आइल। वेरा बिल से घेराइल अपना मेज पर काम करत रहली। नताशा सनेह भरल मुद्रा से उनकर कलम थाम लेहलस आ ओकरा के कलमदान में ध देहलस। फेर बिल के एकोरा कइलस आ किशोरी जस गम्भीरता से रिबन में बान्हल पुलिन्दा के वेरा के सामने ध देहलस। रिबन के गाँठ खोललस आ ओह रिबन के अपना कन्धा पर धइलस। फेर उजर टिशू पेपर के तह के अन्दर से रेशम के हुलसित रूप–सरूप साफे लउके लागल।

"चेरी!" नताशा चिल्ला के कहलस। आपन दुनू हाथ अइसे जोड़ लेहलस जइसे प्रार्थना करत होखे। "केतना प्यारा बा।"

"चेरी! साँचो!" वेरा सकुचाइले उद्‌गार जतवली –"एह रंग के रउआ ना कीने के चाहत रहे।"

बाकिर नताशा ओह कपड़ा के शानदार सलवट पर आपन हाथ फेरलस। फेर ओकरा के वेरा के कन्धा पर त कबहूँ उनका छाती पर ध के आजमावे लागल। वेरा विरोध जतावत नताशा के अँगुरी घींचली। उनका अतना जादे लाज लागे लागल जे उनकर बाल के जर ले लाल हो गइल।

"केतना सुन्दर बा," मरुस्या किलकारी भरत कहलस। एकदमे रउरा माफिक बा। रउआ साँचो सुन्दर बानीं। राउर चेहरा के रंग से साफे मेल खात बा। केतना शानदार पसन्द बा। चेरी के रंग के क्रेप–दे–शीन।"

लइकी सभ वेरा के घेर लेहली सन। ऊ रेशम के गाढ़ लाल रंग, वेरा के

www.bhojpurisahityangan.com

संकोच आ आपन मैत्रीवत उत्साह पर खुशी जतावत रहली सन। मरुस्या आन्द्रेई के कन्धा ध के घींचलस।

"का एकरा के रउआ चुनले बानीं? खुदे?"

"हँ।"

"अकेले?"

"बिलकुल अकेले।"

"आ रउआ चेरी के रंग पसन्द कइनीं?"

"हँ कइनी।"

"हमरा बिसवास नइखे होत। रउआ अकेले ई करिये नइखीं सकत।" रउआ अपना साथे आपन मेहरारू के लिया गइल होखब।"

"जब हम लइकाइये से, साँचो, अइसने रेशम के बीच, हँ साँचो पलल–बढ़ल बानी त हमरा एह काम बदे अपना मेहरारू के कवन दरकार बा?"

"कइसन रेशम? रउआ कहँवा पलल बढ़ल बानीं?"

काहे, एही रेशम में..... ई..... का नाँव, क्रीम–दूशीनो में। साँचो एकरे बीचे।"

आन्द्रेई अपना मोंछ पर ताव देहले। फेर गम्भीर चेहरा बना लेहले। मरुस्या के बिसवास ना होत रहे। ऊ उनका ओर देखलस।

"तब रउआ का रहनीं..... कुलीन सामन्त?"

"आ तें का बूझात बाड़ी? जब हमार मतारी कपड़ा सुखावे के पसारत रहे... धोवला के बाद त ऊ देखे लायक नजारा रहत रहे –"चारु ओर रेशमे–रेशम चेरी, सेब, आड़ू।"

"अहा–आ!" मरुस्या बोललस। "सुखावे खातिर! रेशम धोवे के के कब सोचल?"

"हूँ–ऊँ, त का ओकरा के धोवल ना जाला?"

"ना, ना धोवल जाला।"

"त अइसन हाल में हम आपन बात वापस लेत बानीं।"

लइकी सभ ठाहाका मार के हँसे लगली सन। ओकनी के कपड़ा के एक बेर फेर वेरा के कन्धा पर ध के देखली सन, फेर आपन कन्धा पर लटकवली सन आ आन्द्रेई के कन्धो पर लटका के परखे लगली सन। ऊ फेर आपन पुरान नीति पर आ गइले –"अरे, ई का? हम त एह तरे के चीज के आदी बानीं।

फैक्ट्री के दर्जी किहाँ एही तरे के हँसी–खुशी चलत रहल। फैशन के सवाल पर अइसन घमासान लड़ाई मचल जे आन्द्रेई हार मान के मुड़ी हिलावत पाछे हट गइले। फेर दरवाजा पर खाड़ा हो के बोलले :

"कइसन पागलन के जमात बा।"

वेरा सहज से सहज फैशन पर जोर देत रहली।

"एगो बूढ़ मेहरारू एह तरे के चीज नइखे पहिर सकत।"

अइसन शब्द पर नताशा के साँस रुक जात रहे। ऊ वेरा के बेर–बेर दर्पण

www.bhojpurisahityangan.com

के लगे घींच के ले आवे।

"नीमन बात बा त एजुगिया तनी चुस्त रहे दीं, बाकिर ओजुगिया चुनवट होखे के चाहीं।" उजर बाल वाला अनुभवी दर्जी हामी भरत आपन मुड़ी हिलावत रहे।

"हँ, ई नीमन रही," ऊ कहलस, "एकरा से ऊ भरल–भरल लागी।"

वेरा के अइसन महसूस भइल जे उनका के ओजुगिया एगो लइकन के खेल में भाग लेवे बदे ले आवल गइल बा। उनकर दूर अतीत में, आपन जवानी के दिन में कपड़ा सिलवावे के मामला में अइसन कवनो शोरगुल इयाद ना रहे। अब त ई सगरी हंगामा बेकारे लागत रहे। बाकिर लइकियन के रोकल मोसकिल रहे। जब ऊ फैशन पर चालू हो गइली सन त बाल सँवारे के शैली ले पहुँच गइली सन। ओह क्षेत्र में सर्वाधिक क्रान्तिकारी सलाह देवे लगली सन। फेर मोजा के, जूता के आ अंग–वस्त्र के बारी आइल। आखिर में वेरा ई कह के ओकनी के लाइब्रेरी भेज देहली जे अब लंच के छुट्टी के समय पूरा हो गइल बा।

जब ऊ दर्जी के साथे अकेले रह गइली त ऊ सादा डिजाइन पर जोर देहली। दर्जी एह बात पर राजी हो गइल जे ई चीज जादे मुनासिब रही। समय तय कइला के बाद वेरा वापस अपना काम पर चल गइली। बीच राहे ऊ अचरज से गौर कइली जे ऊ सुन्दर कपड़ा लेवे आ पहिरे के मन बनावत रहली। एह भाव का साथे उनकर एगो नया तस्वीर उभर के आइल रहे। ऊ एगो नया वेरा रहली। दर्जी किहाँ दर्पण में ऊ आपन नया रूप के चेरी के रंग के लिबास में सजल देखली। उनकर नया चेहरा हुलास के मारे खिल गइल रहे। उनका ई जान के सुखद अचरज भइल जे एह नया चेहरा में कुछुओ भड़कीला ना रहे, कवनो मूरखता वाला चपलता ना रहे आ कवनो छिछोरापन ना रहे। ओह गाढ़ लाल सलवट के ऊपर उनकर चेहरा जादे सुन्दर, जवान आ सुखी लागत रहे, बाकिर संगहीं उनका में भरल सम्मान रहे आ एगो बड़हन सच्चाई रहे।

जब वेरा लाइब्रेरी के दरवाजा ले पहुँचली त उनका लेखक के भाषण इयाद पर गइल। ऊ नीचे झुक के आपन जूता पर नजर धउरवली। एमे कवनो सन्देह ना रहे जे अइसन फटही जूता उनका के आ उनकर ध्येय के बदनाम कर सकत रहे, जेकर ऊ सेवा करत रहली।

ओह साँझ के बेरा शान्ति के अनुभव करत घरे लवटली। ऊ पहिलहीं जइसन सनेह से तमारा आ पाव्लूशा के चेहरा के इयाद कइली आ पहिलहीं के तरे ओकनी के बड़ाई कइली। अब ऊ ओकनी का बारे में जादे सोचे के चाहत रहली। छोट–छोट चिन्ता से फिकिराह भइले बिना अइसन कर सकत रहली। अब उनका ओह लइकन के बजाय दिलचस्प लोग जादे नीमन लागे लागल रहे।

घर पर ऊहे, रोजे के तरे जूठ से भरल गन्दा मेज ओसहीं परल रहे। ऊ ओह पर आदतन नजर धउरवली, बाकिर साफ करे बदे आदत आ पैदा होखे वाला चाहत पहिले के तरे ना जागल। ऊ तमारा के मेज के सामने आराम कुरसी पर बइठ गइली। उनका बुझाइल जे एजुगिया बइठे से केतना आराम मिलत बा। अपना माथा

www.bhojpurisahityangan.com

के कुरसी के पाछे टिकवले अँघुआये लगली, तबो उनकर विचार सक्रिय रहे। एक तरे से एगो उन्मुक्त आ हुलसित भीड़ के शक्ल उनका दिमाग में नाचते रहे।

शयन कक्ष से तमारा अइलस।

"तें आजो अपना संस्थान ना गइली का?" वेरा पूछली।

"ना" तमारा खिड़की के तरफ चलत आ बाहर के ओर देखत उदास मन से कहलस।

"आज काल्ह तें ओजुगिया जात काहे नइखी?"

"हमारा लगे कुछुओ पहिरे के हइले नइखे।"

"तमारा, एमे हम का कर सकत बानीं?"

तें जानत बाड़ी जे का करे के चाहीं।"

"का तोरा अबहुँओ जूता के चाहत बा?"

"हँ।"

तमारा अपना मतारी का ओर घूमल आ उनका पर बरस परल –"तें चाहत बाड़ी जे हम गुलाबी जूता आ भूअर कपड़ा पहिरले जाईं? तें चाहत बाड़ी जे लोग हमरा पर हँसे? बोल, इहे चाहत बाड़ी तें? चाहत बाड़ी त बोल।"

"तमारा बेटी, तोरा लगे त दोसरो कपड़ा बा। तोरा करिया जूतो बा। ऊ पुरान जरूर बा, बाकिर नीमन बा। का तोरा साथे पढ़े वाला सगरी लइका अइसने बाड़े सन। का ओकनी के इहे चाहत बाड़े सन जे हर चीज एक दोसरा से मेल खाव?"

"करिया? करिया जूता?"

तमारा कपड़ा के आलमारी का ओर झपटल आ एगो करिया जूता लेहले वापस आइल। ऊ बेहूदगी से ओकरा के अपना मतारी के नाक में घुसेड़त कहलस :

"हमरा हइसन जूता पहिरे के चाहीं? का तें एकरा के जूता कहत बाड़ी? शायद तें एकरा के पेवन नइखे कहत? शायद तें ई सोचत बाड़ी जे एकरा के सिलवावल नइखे गइल?"

"बाकिर तमारा तनी देख जे हम का पहिरले बानीं?"

वेरा एह बात के बहुते नरमी, दोस्ताना आ भरोसा दिलावे के भाव से कहली। ऊ एह उलाहना के जादे से जादे नरम बनावे के चाहत रहली। बाकिर तमारा के एकरा में कवनो उलाहना ना लउकल। ओकरा त ई तुलना साफे बेमतलब लागत रहे।

"तें का कह रहल बाड़ी, माई? तें ई बूझत बाड़ी जे हमरा तोरे जइसन कपड़ा पहिरे के चाहीं? तें आपन जिनिगी बिता चुकल बाड़ी। हम त जवान बानीं। हम जिनिगी जीये के चाहत बानीं।"

"जब हम जवान रहनीं त हमरा लगे तोरा से बहुते कम रहे, जे तोरा कबहूँ मिलल बा। हमरा त कई बेर भूखे पेट सूते के परल रहे।"

"ले, अब शुरू हो गइली। हम का जानीं जे तोरा लगे का रहे आ का ना रहे। ऊ बाबाआदम के जमाना के बात ह। ओकर हमरा से कवनो वास्ता नइखे। अब

www.bhojpurisahityangan.com

हालात में साफे फरक बा। अब मतारी–बाप के लइकन बदे जीये के चाहीं। एह बात के सभे जानत बा। खाली हमहीं नइखीं जानत। बाकिर जब हम बूढ़ होखब त आपन लइकी के चीज देवे में ना नुकुर ना करब।"

तमारा मेज पर ओलरल आ जूता हिलावत चिल्लाते जात रहे। ऊ ना त जूता के देखत रहे आ ना अपना मतारी के। ओकर आँख लोराइल रहे। ऊ तनी साँस लेवे खातिर दम लेहलस, तबे वेरा एगो बात कहे में कामयाब हो गइली :

"हम अतना बूढ़ त नइखीं जे सभकुछ छोड़ के चिरकुट पहिरले घूमत फिरीं।"

"हम का तोरा के चिरकुट पहिरे खातिर मजबूर कइले बानीं? जवन पसन्द होखे पहिर, बाकिर हमार मज़ाक त मत उड़वाव। तें अपना बदे नया कपड़ा बनवावत बाड़ी। नइखी बनवावत का? बेशक, तें बनवावत बाड़ी। तें त कवनो चीज ले सकत बाड़ी, बाकिर हम नइखीं ले सकत। तें एगो नया रेशम के लिबास बनवा रहल बाड़ी। नइखी बनवावत का?"

"बनवावत बानीं।"

"ई बात बा। देख लेहनीं? हम जानत रहनीं। तें त कपड़ा पहिर के बनठन सकत बाड़ी। तोरा केकरा बदे बने ठने के दरकार बा। बाबूजी खातिर?

"तमारा, तोरो लगे त कपड़ा बा।"

"आ तें ओकरा के बेच ना सकली? तें हमार भूअर लिबास के बेच सकत रहले। आ ओकर..... ओह पुरस्कार के रंग का बा? का रंग बा ओकर?"

"चेरी।"

"हई देख, चेरी! केतना मरतबा हम चेरी के माँग क चुकल बानीं। हम बेर–बेर कहनीं, फेर कहनीं। तें त सभकुछ बिसर गइली।"

अब तमारा आँसू ना रोक सकल। ओकर आँख नम हो गइल।

"त तें का चाहत बाड़ी, ऊहे?"

"हँ, हम ऊहे चाहत बानीं। काहे ना चाहीं? तें हमरा के जनमवले बाड़ी आ अब कुछुओ पहिरे के देते नइखी। बाकिर खुदे अपना खातिर नया लिबास बनवावत बाड़ी। तोरा एह उमिर में जवान बने के सवख चरचराइल बा। लाज लागे के चाहीं, लाज।"

अब तमारा उन्माद के हालात में पहुँच गइल रहे। एक बेर आउर 'लाज' चिल्लात ऊ अपन शयन कक्ष में चल गइल। ओकर सुबकी तकिया से रुकला के बादो सउँसे फ्लैट में सुनात रहे। वेरा आराम कुरसी पर बेबस हो के बइठल रहली। उदासी के करिया बादर उनका पर मँड़राये लागल रहे। शायद साँचो उनका लाज लागत रहे। दरवाजा खटखटवला के आवाज़ आइल। ऊ ओही करिया बदरी में घेराइल तमारा के सुबकी सुनत दरवाजा खोले खातिर उठली।

ऊ आन्द्रेई रहले। जसहीं ऊ भीतर अइले त ऊ सुबुकी पर धेयान देत मुसुकी छोड़ले।

"हम सोचनी जे घरे जात घरी एकरा के देते चलीं। ई निःशुल्क कपड़ा

www.bhojpurisahityangan.com

सिलवावे के कूपन ह।"

"भीतरे आईं," वेरा कहली।

अबकी बेर आन्द्रेई चउका में बतकही के कवनो इच्छा जाहिर ना कइले। ऊ सोझे बइठका में आ गइले। वेरा हाली–हाली शयन–कक्ष के दरवाजा बन्द करे खातिर बढ़ली, बाकिर बेकारे। दरवाजा में कवनो बड़हन आ गाढ़ रंग के चीज लेहले तमारा प्रकट भइल आ ओह चीज के अपना मतारी के गोड़ पर फेंक देहलस। ऊ हवा में लहरात जमीन पर गिरल। तमारा तनी देर ओकरा के गिरत देखलस आ शयन कक्ष का ओर भाग गइल। फेर वापस लवटल आ भूअर लिबास वेरा के गोड़ के लगे आ के गिरल।

"ले, पहिर ले हेकरो के।" तमारा चिल्ला के कहलस। "अपना के सजावत सँवारत रह। हमरा तोर आभूषण ना चाहीं।"

तमारा आन्द्रेई के देख लेले रहे, तबो ऊ केहू के लेहाज करे के हाल में ना रहे। ऊ बिखियाइले आपन गोड़ पटकत शयन कक्ष में चल गइल। फेर भड़ाक दे दरवाजा बन्द क लेहलस।

वेरा गिरल वस्त्रन के देखत चुपचाप खाड़ा रहली। ऊ सोचियो ना सकली। उनका कवनो अपमानो ना बुझाइल। अतिथि के सोझा तनी लाज लागे के चाहत रहे, बाकिर उनका कवनो फरक ना परल। आदमी के क्रोध से ऊ हरमेसा हकबका जात रहली।

आन्द्रेई कुछ कागज मेज पर धइले आ फेर हाली से नीचे झुक के दुनू लिबास उठा के कुरसी के बाँह पर ध देहले। ऊ एह काम के सद्विवेक से कइले आ एगो बाँह के सोझ कइले। फेर ऊ सवालिया निगाह से वेरा के देखले आ अपना हाथ के पीठ का ओर करत पूछले –"ई का ह? का रउआ एह..... गोबर के चुरइल से डेरात बानीं.....?"

ऊ एह बात के जान बूझ के अतना जोर से कहले जे तमारा के सुनाई परो। साँचो शयन कक्ष में सन्नाटा पसर गइल।

एह असभ्य शब्दन पर वेरा चौंक गइली। ऊ कुरसी के पिछला हिस्सा थाम लेहली आ अचके..... मुसुकी छोड़ली।

"आन्द्रेई, रउआ का कहत बानीं?"

आन्द्रेई ओही मुद्रा में खाड़ा भइल गम्भीरता से वेरा के देखत रहले। उनकर होठ बे–रंग हो गइल रहे।

"वेरा, हम तनी टाइट बात कह देहनीं। खाली कहले भर काफी नइखे। ई बात सही बा जे हम राउर बहुते आदर करत बानीं। बाकिर हम एह तरे के बात के माँफ नइखीं कर सकत। रउआ एजुगिया केकरा के पाल–पोस के बड़ बना रहल बानीं? वेरा, का रउआ दुश्मन के पोस रहल बानीं?"

"कइसन दुश्मन के, आन्द्रेई?"

"तनी सोचीं। अइसन लोग केहू खातिर कवन काम के बा। का रउआ ई बूझत

www.bhojpurisahityangan.com

बानीं जे ई खाली राउरे परेशानी बा। महज एगो परिवारिक मसला बा। हई देखीं, ऊ आपन खाना खा के बइठल बिया, तबो बरतन असहीं जूठ परल बा। गन्दी छोकरी। बरतन साफ करे के बदले ऊ का करत बिया? आपन लिबास रउआ चेहरा पर फेंकत बिया। ओह चीज के जे रउआ आपन खून–पसीना के कमाई से कीनले बानीं। अगर ऊ रउआ से अइसन बेवहार राखत बिया त सोवियत सत्ता के साथे ओकर कइसन बरताव होखी? हम उम्मीद करत बानीं जे ऊ कोम्सोमोल के सदस्य बिया। बिया कि ना?"

"हँ, हम बानीं, त का भइल?"

आन्द्रेई घूम के देखले। दरवाजा पर तमारा खाड़ा रहे। ऊ उनका ओर तिरस्कार भाव से देखत मुड़ी हिलावत रहे।

"अच्छा, त तें कोम्सोमोल के सदस्य बाड़ी। बाड़ी नू? नीमन बात बात। तें ई बरतन धो के देखाव। बनठन के रहे वाली फूहर छोकरी, तें ई काम कर सकत बाड़ी।"

तमारा बरतन के तरफ तकबो ना कइलस। ऊ आपन घृणा भरल निगाह के आन्द्रेई का ओर से हटइबो ना कइलस।

"तें खाना खइले?" ऊ मेज ओर इशारा करत कहले।

"रउआ कवन मतलब," तमारा घमण्ड से कहलस। "रउआ हमरा से चिल्ला के बोले के कवन हक बा?"

"कोम्सोमोल के सदस्य! का कहल जाव। हम 1918 में कोम्सोमोल के सदस्य रहनीं। हम तोरा जइसन हजारन निकम्मी आ निठल्ली मेहरारुअन के देखले बानीं।"

"हम कहत बानीं जे चिल्लाइल बन्द करीं– निकम्मी निठल्ली। हो सकत बा जे हम रउआ ले जादा काम करत होखीं।"

तमारा आपन कन्धा आन्द्रेई का ओर घुमा देहलस। कुछ देर ले दुनू जन बिखियाइले एक दोसरा के घूरत रहे। बाकिर अचके आन्द्रेई शिथिल पर गइले। ऊ आपन हाथ पसार देहले आ अपना आँख के धूर्तता से सिकुरा लेहले।

"नीमन बात बा। हम तोरा से नीमन तरे से बात करब। हमरा खुशी बदे एह बरतन के धो दे।"

तमारा के चेहरा पर एगो मुसुकी पसरल आ लगले अवज्ञा के भाव में बदल गइल। ऊ आपन शान्त मतारी पर एगो तेज निगाह डललस आ फेर कपड़ा के ओर देखलस।

"काहे? का करे के बा? हमनी के मिल के एकरा के धो देहल जाव।"

तमारा लपक के मेज के लगे गइल। जूठ थरिया के एक के ऊपर एक राखे लागल। ओकर चेहरा भाव शून्य हो गइल रहे। ओकर आँख मँदाइल रहे आ ओकर करिया बरौनी तनी काँपत रहे।

आन्द्रेई के मुँह अचरज से खुल गइल :

"वाह रे लइकी! ई नू भइल बात।"

www.bhojpurisahityangan.com

"रउआ से कवनो मतलब नइखे," तमारा भारी आवाज़ में फुसफुसा के कहलस।

"तें ई सभ धो सकबे?"

"हम तनी आपन ओवरआल पहिरले आईं," ऊ शयन–कक्ष के तरफ जात अइसे कहलस जइसे अपने से बतियावत होखे।

वेरा अपना अतिथि का ओर आँख फरले देखली, बाकिर उनका के पहचान ना पवली। ओह किताब प्रेमी आन्द्रेई के, घुँघरदार मोंछ आ मधुर मुसकियात ओह आदमी के का हो गइल। कमरा के बीच में भारी भरकम देह वाला, रोबीला, धृष्ट, आक्रामक आदमी खाड़ा रहे– भालू जस, बाकिर चालाक। ऊ शयन–कक्ष का ओर कनखिया के देखत रहले आ एगो बूढ़ आदमी जस बड़बड़ात रहले –"तें तनी सम्हर के चल, ढीठ छोकरी। देख जे हम तोरा से कइसे काम करवावत बानीं।"

ऊ आपन आस्तीन समेटे लगले। तमारा आपन ओवरआल पहिरले तेजी से बाहर आइल आ ऊ आन्द्रेई के चुनौती भरल निगाह से देखलस।

"का रउआ बूझत बानीं जे खाली रउआ काम कर सकत बानीं। रउरो एगो श्रमजीवी वर्ग के सदस्य बानीं। अपना बारे में त बड़का–बड़का खेयाल बा राउर। रउआ खुदे धोवे–धावे के काम नइखीं क सकत। घर में त राउर मेहरारू ई काम करत होखिहें आ रउआ नबाब बन के बइठल रहत होखब।"

"हेतना बतकही मत लगाव। थरिया ले आव।"

वेरा के होश आइल त ऊ मेज के तरफ लपकली।

"रउआ ई का करत बानीं?"

आन्द्रेई उनकर हाथ थाम के कुरसी पर बइठा देहले। वेरा ख़ास तरे के सम्मान महसूस कइली।

तमारा थरिया, प्लेट, कटोरी, चम्मच आ काँटा के हाली–हाली सफाई से जमा कइलस। आन्द्रेई गम्भीर हो के देखत रहले। ऊ चउका में गइल त आन्द्रेई ओकरा पाछे–पाछे आपन रोंवादार हाथ हिलावत एह तरे देखत चलले, जइसे बरतन धोवे खातिर ना, बलुक पहाड़ खोने जात होखस।

वेरा कुरसी पर बइठल रह गइली। उनकर अँगुरी कुरसी के हाथ पर परल शीतल रेशम के अहसास करत रहे। अब ऊ कपड़ा के बात ना सोच पवली। उनका दिमाग में आन्द्रेई के खेयाल घुसल रहे। वेरा के उनका से ईर्ष्या होखे लागल।

वेरा उठली आ गँवे–गँवे चउका ओर चल देहली। हॉल में आवते ऊ रुक गइली। अधखुला दरवाजा से ऊ खाली आन्द्रेई के देख सकत रहली। ऊ स्टूल पर बइठल रहले। उनकर गोड़ एक दोसरा से दूर जमीन पर टिकल रहे। उनकर रोंवादार हाथ ठेहुना पर टिकल रहे आ उनका चेहरा पर एगो कुटिल मुसुकी रहे। ऊ एकटक देखत रहले। अब उनकर मोंछ मधुर मुसुकी से हिलत ना रहे। ऊ नीचे के ओर निकलल रहे आ मोंछ के जगह कवनो तेज हथियार से जादे मेल खात रहे।

ऊ कहत रहले :

"अब जब हम तोरा के काम करत देख रहल बानीं त तोरा ओर देखल नीमन

www.bhojpurisahityangan.com

लागत बा। अब तें एगो अलगे लइकी लागत बाड़ी। बाकिर जब तें कपड़ा हेने–होने फेंके लागत बाड़ी त तें साफे चुरइल लागत बाड़ी। एकदमे असली चुरइल। का तें ओकरा के नीमन बूझत बाड़ी?"

तमारा कुछुओ ना कहलस। हउदा में थरिया खड़खड़ात रहे।

"होने तें आपन करेजा निकाल के खूबसूरती के पाछे धउरत बाड़ी। ई अतना बाउर लागत बा जे हम ओह पर थूकलो पसन्द ना करब। तोरा तरे–तरे के फैशन काहे चाहीं– करिया कपड़ा, भूअर कपड़ा, पियर कपड़ा। अरे, तें त असहीं अतना सुन्दर बाड़ी जे केहू तोरा बदे कवनो संकट उठा सकत बा।"

"सम्भव बा जे ई केहू खातिर संकट ना होखे। मुमकिन बा जे ई केहू बदे सुख होखे।"

तमारा एह बात के बिना क्रोध के कहलस, एगो बिसवास भरल हुलसित स्वर में कहलस। ई बात साफ रहे जे आन्द्रेई के बात ओकरा बाउर ना लागल।

"तें कवनो मरद के का सुख दे सकत बाड़ी?" आन्द्रेई आपन कन्धा उचाका के कहले। "अगर तें संकीर्ण विचार के, बदमिजाज आ मूरख लइकी रहबे त ओकरा का सुख मिली?"

"हमरा से बदजबानी मत करीं। कह देत बानीं!"

"तें कइसन एहसान फरामोश छोकरी बाड़ी। तनी अपना मतारी के बारे में सोच..... पूरा फैक्ट्री के लोग इनकर इज्जत करत बा। हम जानत बानीं जे उनका लगे एगो सभसे मोसकिल काम बा..... हम खुदे मेहनत से काम करे वाला आदमी बानीं, बाकिर उनकर तुलना हम अपना श्रम से ना करब.... अब ई देख, एकरा के तें धोवल कहत बाड़ी? एकर दोसर हिस्सा के धोयी....? चन्द्रमा में बइठल बुढ़िया?"

"ओह", तमारा कहलस।

"तें 'ओहो–आह' कर सकत बाड़ी, बाकिर तें अपना मतारी के नइखी देखत। हजारन किताब बा। उनका ओह सभके बारे में जानकारी राखे के परत बा। हरेक के ओकरा बारे में बतावे के परत बा। हरेक के रूचि के हिसाब से छाँटे के परत बा। ख़ास विषय के किताबन खातिर अइसने करे के परत बा। का ई कठिन काम नइखे? ओपर से जब ऊ घर आवत बाड़ी त एगो नोकरानी हो जात बाड़ी। आ केकर? तोर। तें अइसन काहे बाड़ी। तनी हमरा के बताव अइसन काहे बाड़ी? एह से जे तें केहू आउर के गर्दन पर चिपके वाली चुरइल बनबे? अरे, तोरा त ओह धरती के पूजा करे के चाहीं, जे तोरा के जनमवले बा। तोरा उनकर हर खुशी के धेयान राखे के चाहीं। उनकर हर काम में हाथ बटावे के चाहीं। हर काम उनके खातिर कर। सभ जगह उनके बदे। तें जवान बाड़ी, धिक्कार बा तोर काया के। तनी हमरा घरे आ के देख– हमार बेटी सभ तोरा ले बेजाँय नइखी सन। ओकनियो के सुन्दर केश बा। सुशिक्षित बाड़ी सन। ओकनी में से एगो इतिहासज्ञ बने वाली बिया आ एगो डॉक्टर।"

"नीमन बात बा। हम आयेब कबहूँ।"

www.bhojpurisahityangan.com

"हँ, जरूर अइहे, एह से तोरा लाभ होखी। तें नीमन दिल के बाड़ी, बाकिर तें बिगड़ गइल बाड़ी। का तें बूझत बाड़ी जे हमार दुनू बेटी अपना मतारी से नोकरानी जस काम करावेली सन? ओकनी के मतारी, ओहो! एगो रानी बाड़ी, रानी! आ तें बरतनो साफ करे के नइखी जानत। ई का ह..... बरतन के आधा घण्टा से माँजत बाड़ी, तबो थरिया तेलउँस बा।"

"केने?"

"देख, ओकरा के तनी जोर से माँजे के परेला।"

आन्द्रेई स्टूल से उठ के नजर से ओझल हो गइले। तबे तमारा धीरे से कहलस —"धन्यवाद।"

"ई ठीक बा," आन्द्रेई कहले, "धन्यवाद कहे के चाहीं। आभार जतावल जरूरी चीज ह।"

वेरा पंजा के बले चल के बइठका में चहुँपली। ऊ कुरसी से तमारा के कपड़ा उठवली आ आलमारी में टाँग देहली। फेर मेज झार–पोंछ कइली आ कमरा में झाड़ू लगावे लगली।

उनका ई सोच के बेचैनी होत रहे जे दोसरा कमरा में एगो अजनबी आदमी उनकर बेटी के शिक्षा–दीक्षा दे रहल बा। ई त काम उनकर रहे। ऊ जाने के चाहत रहली जे तमारा उनकर बात के जवाब देहले बिना भा बाउर मनले बगैर अतना धेयान से काहे सुनत रहे। शिक्षा के सिलसिला अइसन सुचारु आ नीमन तरे से कइसे चलत रहे?"

तमारा चउका से बरतन ले के आइल आ ओकरा के देवार से लागल आलमारी में सरिहावे लागल। आन्द्रेई दुआर पर खाड़ा रहले। जब ऊ आलमारी के दरवाजा बन्द कइलस त आन्द्रेई आपन हाथ आगे बढ़वले।

"त कामरेड, फेर भेंट होखी।"

तमारा आपन गुलाबी अँगुरी से उनका तरहथी पर थपरी बजवलस।

"माफी माँगी, लगले। जे कुछुओ रउआ कहनीं, जे हमरा से बेजाँय शब्द कहनीं, सभका खातिर माफी माँगी– निठल्ली, चुरइल, गन्दी छोकरी, कूड़ा–कचरा आ एकरो से जादे बाउर बात। का रउआ एगो लइकी से अइसन बात कइल ठीक बूझत बानीं? ओपर से अपना के एगो श्रमिक वर्ग के सदस्य बतावत बानीं। लगले माफी माँगीं!"

आन्द्रेई के मधुर मुसुकी प्रकट हो गइल :

"माफ कर, कामरेड। ई आखिरी बेर बा, अब आगे से अइसन ना होखी। तें ठीक कहत बाड़ी जे श्रमिक वर्ग में लोग के एक दोसरा से सहज आ विनम्र बेवहार करे के चाहीं।"

तमारा मुसुकी छोड़लस। ऊ अचके आन्द्रेई के अँकवारी में ध लेहलस आ उनकर गाल चूमे लागल। फेर ऊ धउर के अपना मतारी के लगे गइल आ एही कार्रवाई के दोहरावत शयन कक्ष के तरफ चल गइल।

www.bhojpurisahityangan.com

आन्द्रेई दरवाजा पर खाड़ा हो के अपना मोंछ पर ताव देत रहले।

"बहुते नीक लइकी बिया, राउर बेटी। बड़ सनेह वाला बिया, बाकिर ओकरा के बिगाड़े के ना चाहीं।"

ओह साँझी के बाद से वेरा के दिन नया तरे से बीते लागल। तमारा आपन सगरी ताकत घर के देखभाल में लगा देहलस। जब वेरा घरे आवस त हर चीज बेवस्थित नजर आवत रहे। साँझी के कवनो काम करे चलस त आपन ओवरआल पहिरले तमारा आन्ही–बतास नियर काम करे आ ओकरा साथे चलल मोसकिल रहे। ऊ अपना मतारी के हाथ से सगरी काम छीन लेत रहे। नम्रता से उनकर कन्धा ध के उनका के बइठका भा शयन कक्ष में बइठा देत रहे। पाव्लूशा त असली आतंक राज में चहुँप गइल रहे। शुरू में ऊ विरोध जतवलस, बाकिर फेर विरोध कइल छोड़ देहलस आ सड़क पर आपन साथियन के साथे खेले चल गइल। कुछ दिन बाद तमारा वसन्तकाल में पूरा फ्लैट के सफाई के भार उठावे के घोषणा कइलस। ऊ कहलस जे ओकर मतारी देर ले लाइब्रेरी में रहिहें ना त ऊ काम में बिघिन डालत रहिहें। वेरा कवनो एतराज ना जतवली, बाकिर काम पर जात घरी अपना विचार में मगन हो गइली।

ऊ अपना बेटी में आइल बदलाव से बहुते हुलसित रहली। ऊ अपना जिनिगी में शायद पहिला बेर आराम महसूस कइली। ऊ तनी मोटाइयो गइल रहली आ पहिले से जादे सुन्दर लागत रहली। एकरा बादो कवनो चीज अबहुँओ उनका दिमाग के परेशान कइले रहे। रह–रह के उनका मन में शंका होत रहे, जे पहिले कबहूँ ना भइल रहे। कबो–कबो उनका लागत रहे जे लइकी पर घरेलू काम के अतना बोझा लादल गलते नइखे, बलुक अपराध के बात बा। पिछला कुछ दिन में तमारा के हाथ पहिले जस साफ आ सुन्दर ना रह गइल रहे। वेरा देखली जे तमारा आपन पढ़ाई जोरशोर से करे लागल रहे। ऊ अद्भुत सिंह आ ओकर फूलनुमा मोंछ खतम हो गइल रहे आ तमारा के मेज से गायब हो गइल रहे। ओही जगह खाये के मेज पर आधा दूर ले कागज के बड़का शीट पसरल रहे। ओह कागज पर तमारा नुक्तेदार रेखा, वर्तुल आ वृत्त अइसन जंगल बनावत रहे, जवना के कोरिन्थी वास्तुकला कहल जात बा। वेरा एह सभ बातन पर विचार कइली। तबो उनका अबहुँओ अइसन लागत रहे जे कतहूँ कुछ गड़बड़ बा। उनकर विचार एगो आउर दिशा के तरफ चल गइल रहे। एह बात में कवनो सन्देह ना रहे जे अब पुरनका जिनिगी वापस लवटे वाला नइखे। जवन तमारा आपन नादानी वाला लोभ का चलते अपना मतारी के जिनिगी के उपयोग करत रहे, जे आपन मतारी के मुँह पर कपड़ा ले फेंक देले रहे, ऊ तमारा अब वापस नइखे आ सकत। अब वेरा अपना जिनिगी के ओह मूरखता वाला गलती के नीमन तरे से बूझ गइल रहली, जवना के ऊ अपना जिनिगी में अब ले करत आइल रहली। देश के भावी शत्रु के पाले–पोसे का बारे में आन्द्रेई के कटु शब्द उनका गम्भीर आ सही लागे लागल। ऊ अबहीं ले ओह आरोप के कवनो जवाब ना देले रहली। जब उनका इयाद परे जे ऊ कइसे

www.bhojpurisahityangan.com

असहाय आ निष्क्रिय ढंग से एगो बाहरी आदमी के अपना लइकी के समझावे बुझावे देहली आ अपने एगो कायर जस गलियारा में खाड़ा हो के उनकर बात सुनली। फेर पंजा के बले चल के चुपचाप घसक गइल रहली। ऊ बेचैनी महसूस करे लागल रहली जे भविष्य में उनका बेटी के के समझाई आ पढाई। पाव्लूशा के लालन–पालन के करी। एकरा बदे उनका फेर से आन्द्रेई के सहजोग लेवे के परी?

वेरा एह बातन पर धेयान से विचार कइली त बेसी सही आ महत्त्व के बात खोज निकलली। तबो उनका लागत रहे जे ई ख़ास चीज नइखे, 'वांछित चीज' नइखे। कवनो आउर चीज रहे, जवना के ऊ एकदमे ना समझ सकली। इहे बात रहे, जे उनका अन्दर शक के भाव जगा देले रहे। पिछला सम्मलेन में ऊ अपने आप में जवन मान–मरजाद पवली, जवन नया वेरा के उभरली, ऊ अबहुँओ सन्तुष्ट ना भइल रहली।

शक के एह अनुभव से फिकिराह आ असन्तोष के भाव से ग्रस्त वेरा लाइब्रेरी पहुँचली।

दिन के काम नीमन तरे से शुरू ना भइल। करिया आँख वाली मरुस्या किताबन के आलमारी के खान्हा से लागल जीन पर कबहूँ ऊपर चढ़े त कबहूँ नीचे। खान्हा–दर–खान्हा देखला का बाद ऊ भरमल वापस पाठक के लाइन के लगे आइल आ एके गो इण्डेक्स कार्ड के बेर–बेर निहारते जात रहे।

वेरा ओकरा लगे गइली।

"का परेशानी बा?"

मरुस्या फेर से इण्डेक्स कार्ड देखलस त वेरा समझ गइली जे मामला का बा।

"कार्ड हमरा लगे बा, बाकिर किताब केने बा?" मरुस्या घबराइले वेरा के तरफ देखलस।

"जो, ओकरा के खोज। तले ले पाठक के लाइन के हम सम्हारत बानीं।"

अपराधी जस मरुस्या वापस खान्हा के तरफ चल गइल। ओकरा ई सोचल आउरो मोसकिल रहे जे ऊ कहँवा किताब के ध देले बिया। अब ऊ जीन पर ऊपर–नीचे ना करत, बलुक चिन्तित हो के लाइब्रेरी में भटकत बिया आ वेरा से आँख मिलावे से डेरात बिया।

वेरा पाठक के लाइन के लगले निबटा देहली। जब ऊ आपन काम शुरू करे जात रहली, तले लगहीं उनका बेवस्था गड़बड़इला के आवाज़ सुनाई परल। वार्या के सामने चश्मा पहिरले एगो तगड़ा लइका खाड़ा रहे। ऊ जोर–जोर से आपन अचरज जतावत रहे।

"समझ में नइखे आवत जे का बात बा? मेहरबानी क के हमरा के मोपांसा के बारे में कवनो किसिम के पुस्तक दीं। कवनो नवसिखुआ लेखक के बारे में ना, मोपांसा के बारे में। रउआ कहत बानीं जे 'अइसन कवनो किताबे नइखे'।"

"एजुगिया अइसन कवनो पुस्तक नइखे....."।

www.bhojpurisahityangan.com

वार्या, हकलात कह त देहलस जे 'कवनो नइखे', बाकिर वेरा के तरफ डेराते देखलस।

"वार्या," वेरा सनेह से कहली, "तें एजुगिया के काम देख, हम देखत बानीं जे हमार कामरेड के का चाहीं।"

वार्या के चेहरा लाज के मारे लाल हो गइल। जगह बदलत घरी ऊ फूहर तरे से वेरा से टकरा गइल, जेकरा हाथ में जरूरी किताब रहे। एह से ओकर गरदन आ कान ले लाल हो गइल आ दबल जबान में "आह" शब्द निकल गइल। काउण्टर के दोसरका छोर पर मरुस्या के आखिर में ऊ किताब मिल गइल। ऊ चुपचाप पाठक के हवाले क देहलस आ आउर पाठक के लगे चल गइल। बाकिर अब ऊ खाली फुसफुसा के बोलत रहे।

वेरा मोपांसा के प्रेमी के सहजोग कइली। फेर वापस अपना कमरा में चल गइली। दस मिनट बादे मरुस्या आपन मुँह लटकवले आइल आ बोललस –"हमरा के माफ करीं, वेरा माफ क दीं।"

"मरुस्या तोरा हेतना लापरवाह ना होखे के चाहीं। तोरा समझे के चाहीं जे अइसन हाल में तें सउँसे दिन किताब खोजते रह जइते।"

"वेरा, नाराज मत होखीं। अब आगे से अइसन ना होखी।"

वेरा ओकरा ओर देख के मुसुकी छोड़ली। ऊ उनकर मुसुकी के इन्तजारी करत रहे। फेर मरुस्या लाइब्रेरी के कवनो बड़हन काम के खुशी–खुशी करे बदे हुलसित हो के चल गइल।

आधा घण्टा बादे वार्या दरवाजा से झँकलस आ गायब हो गइल। लगले फेर झँकलस।

"का हम अन्दर आ सकत बानीं?" ऊ पूछलस।

एकर मतलब रहे जे ऊ कवनो गलती कइले रहे। कवनो आउर मोका रहित त ऊ दनदनाइले अन्दर घुस जाइत।

वेरा समझ गइली जे वार्या के का चाहीं।

"वार्या, तोरा किताब के सूची पढ़े के चाहीं," ऊ सख्ती से कहली, "आ ओकरा के इस्तेमाल करे जोग होखे के चाहीं।" ई कहल केतना बेवकूफी के बात बा जे एजुगिया हइले नइखे।"

वार्या उदास भाव से आधा खुलल दरवाजा पर खाड़ा हो के उदास भावे मुड़ी हिलवलस।

"हम तोरा के दस दिन के समय देत बानीं, बीस तारीख ले। तब हम तोर इम्तिहान लेब जे तोरा किताब सूची के बारे में का मालूम बा।"

"वेरा, हम ओकर भारी भरकम चेहरा आ चश्मा देख के घबरा गइनीं। ओकर बोले के तरीका, ऊ बोलते जात रहे, बोलते जाव ....."

"का तें सफाई देत बाड़ी? का तें खाली दुबर पातर आ कमजोर लोग से आपन बात बेवहार ठीक राख सकत बाड़ी?"

www.bhojpurisahityangan.com

वार्या हुलास से वादा कइलस –"वेरा, रउआ बीस तारीख ले देखब।" ऊ दरवाजा बन्द क देहलस आ हुलसित हो के आपन एड़ी खटखटावत चल गइल।

लइकी सभ नीक बाड़ी सन। वेरा के ओकनी के आज से जादे सख्त झाड़ कबहूँ ना लगावे के परल रहे। ऊ अपना आवाज़ के कबहूँ तेज ना करत रहली। ओकनी के गलती के देर ले ढोवतो ना रहत रहली। एकरा बादो उनकर नाखुशी भा अस्वीकृति के महसूस करे के ओकनी के आपन एगो सम्वेदनशील अन्दाज रहे। तब ओकनी के लगले दुखी हो जात रहली सन। फेर अपना गलती के किताबन के बीच ढोवत आ उदास हो के दुनिया के देखत रहली सन। ओकनी के वेरा से तनी टाइट आवाज़ सुने के दरकार परत रहे, भले ओह शब्द के कवनो बेवहारिक महातिम ना रहत रहे। ओकरा बिना मरुस्या किताबन के बेवस्था में भइल लापरवाही खातिर अपना के कबहूँ माफ ना कर सकत रहे। अब वार्या किताब सूची के ओही साँझी के पढ़े खातिर अलगे से राख लेले रहे। बाकिर ई जरूरी रहे जे केहू ओह पर धेयान देव आ ओकनी के काम के सम्मान देव।

एजुगिया लाइब्रेरी में अजनबी लोग के बीच ई सभ अतना आसान आ सहज लागत रहे, बाकिर घर में आपन लोग के बीच ई अतना कठिन काहे रहे?

वेरा एह समस्या पर विचार करे बदे रुक गइली। ऊ कोशिश क के अपना पारिवारिक आ कामकाजी जिनिगी के विश्लेषण आ तुलना कइली। लाइब्रेरी में कर्त्तव्य रहे, श्रम के सुख रहे आ अपना काम से प्यार रहे। परिवारो में श्रम के खुशी रहे, प्यार रहे आ कर्तव्य रहे। कर्त्तव्य, अगर एह प्रक्रिया के अन्त 'एगो शत्रु के लालन–पालन' में होत रहे त जाहिर रहे जे कर्त्तव्य के मामला में सभकुछ नीक ना रहे। सवाल बा जे परिवार में कर्त्तव्य अतना कठिन काहे रहे, जबकि एजुगिया लाइब्रेरी में काम करत घरी कर्त्तव्य के समस्या सहज रहे। अतना सहज जे ई पहचानल लगभग असम्भव रहे जे कर्त्तव्य कहँवा खतम होत रहे आ काम के सुख आ श्रम के हुलास कहँवा से शुरु होत रहे। एजुगिया कर्त्तव्य आ सुख के मधुर सामंजस्य के मेरावट रहे।

सुख! कइसन अजब पुरान ढंग के शब्द बा। पुश्किन के रचना में ई शब्द कइसे सहज आ आकर्षक सुन्दरता के साथे गूँजत बा। एकरा लगहीं रउआ मधुरता आ यौवन के मेरावटो झलकत बा। ई शब्द सुखी कवियन, प्रेमियन आ पारिवारिक नीड़ बदे बा। क्रान्ति से पहिले एह शब्द के काम–काज पर, श्रम पर आ आफिस के काम पर लागू करे के केहू सोचियो ना सकत रहे। बाकिर अब वेरा कवनो तरे के लाज भा हिचकिचाहट के बिना एकरा के ठीक एही क्षेत्र में लागू कइले रहली। होने उनकर पारिवारिक जिनिगी में एकरा बदे बहुते कम गुंजाइश रहे।

एगो किताब सूची के पन्ना के तरे वेरा अपना जिनिगी के पन्ना के उलट–पलट के देखली। ऊ पारिवारिक सुख के एको गो साफ–सुथरा घटना के इयाद ना कर पवली। एमे कवनो सन्देह ना रहे जे परिवार में प्यार पहिलहूँ रहे आ अबो बा। एह प्यार के चलते रउआ ई बिसर जात बानीं जे रउआ एगो कर्त्तव्य निभावे के बा। दुनिया में सुख जइसन कवनो चीजो बा।

www.bhojpurisahityangan.com

वेरा अपना मेज से उठली। कई बेर हेने–होने टहलली। ई कइसन वाहियात बात बा जे ई प्यार सुख विहीन जिनिगी के कारण बा। अइसन नइखे हो सकत।

वेरा बन्द दुआर के लगे रुक गइली। ऊ आपन हाथ माथा पर धइली। कइसन रहे ई? कइसन? ऊ अपना लइकन के जेतना प्यार कइली, का ओह से जादे केहू अपना लोग के प्यार कर सकत रहे? बाकिर ऊ अपना एह विराट प्यार के कबहूँ ना जतवली। ऊ पाव्लूशा के दुलारे भा तमारा के चुम्मा लेवे में सकुचात रहली। ऊ प्यार के खामोशी आ उदासी में लपेटाइल बिना हुलास के शहादत समझे के अलावे आउर कुछुओ सोच ना पावत रहली। अइसन प्यार में बुझात रहे जे सुख त कतहूँ हइले नइखे। शायद खाली उनके खातिर ना, साफ रहे जे लइकनो खातिर ना। हँ, साँच बा जे हर चीज अपना जगह पर रहे– पिनपिनाह सोभाव, लोभ, अहंकार आ हृदय नदारद। "एगो शत्रु के लालन–पालन।"

का इहे प्यार के नतीजा रहे? उनकर महान मातृत्व प्रेम के?

हँ, महान मातृत्व प्रेम के।

आन्हर मातृत्व प्रेम के।

अचके वेरा के एगो रोशनी लउकल। ऊ समझ गइली जे उनकर व्यक्तिगत जिनिगी में अतना कम सुख काहे बा। एगो नागरिक आ एगो मतारी के रूप में उनकर कर्त्तव्य अइसन खतरा में काहे बा। ई जाहिर हो गइल जे मरुस्या आ वार्या से उनकर प्यार अपना बेटी के प्यार से जादे बुद्धिमत्तापूर्ण आ फलदायक रहे। एजा लाइब्रेरी में ऊ देख सकत रहली जे उनका प्यार के जरिये एगो आदमी के कइसे निर्माण हो रहल बा। एगो शब्द से भा निगाह से भा संकेत से भा सनेह से भा सख्त आवाज़ से ऊ ओह आदमी के अतना आसानी से मदद कर सकत रहली, बाकिर घर पर ऊ एगो आन्हर सहज–वृत्ति के सामने बेमतलब, अहितकर आ तुच्छ काम में अझुरइला के अलावे आउर कुछुओ ना कर पावत रहली।

अब वेरा एको पल ना रुक पवली। ओह समय दुपहरिया के दू बजल रहे। ऊ पाठक के किताब देवे वाला विभाग में गइली आ मरुस्या से बोलली :

"हमरा घरे जाये के बा। का तें एजुगिया के काम सम्हार लेवे?"

लइकी सभ एके सुर में हुलसित हो के हामी भरली सन।

ऊ एह तरे से हाली–हाली घर के ओर भगली, जइसे ओजुगिया कवनो दुर्घटना हो गइल होखे। उनका अपना एह घबराहट के पता तबे लागल जब ऊ ट्राम से नीचे उतरली आ ई इयाद परल जे उनका ओइसने शान्त आ दृढ़ बिसवासी बनल रहे के चाहीं, जइसे लाइब्रेरी में रहेली।

वेरा अपना बेटी के देख के मुसुकी छोड़त बोललीं :

"का पाव्लूशा अबहीं वापस नइखे लवटल?"

"ना, अबहीं नइखे आइल," तमारा जवाब देहलस। फेर अपना मतारी पर हमला करत कहलस –"तें काहे आ गइली? हम कहले रहनीं जे तें आराम से अइहे।"

वेरा अपना बैग के हाल वाला खिड़की के चौखट पर ध देहली। ओकरा बाद

www.bhojpurisahityangan.com

बइठका में चल गइली। तमारा आपन गोड़ पटकलस आ चिल्ला के कहलस –"माई तोर का मंशा बा? हम तोरा से कहले रहनीं जे तें मत अइहे। चल जो, अपना काम पर वापस।"

वेरा चउतरफा देखली। ऊ एगो मानवीय प्रयास से तमारा के जगह वार्या के चेहरा देखे बदे आपन मन बनवली। पल भर खातिर अइसन लागल जे ऊ कामयाब हो गइली। आराम से कुरसी के बाँह धइले औपचारिक आवाज़ में कहली :

"बइठ।"

"माई!"

"बइठ जो!"

वेरा आराम कुरसी पर बइठ गइली। फेर दोसर कुरसी का ओर तमारा के इशारा कइली।

तमारा एतराज करत कुछ बुदबुदइलस। फेर असन्तोष से कन्धा उचकावत कुरसी के कगरी अइसे बइठल, जइसे ऊ एह बात पर जोर देत रहे जे अबहीं बइठल सही नइखे। बाकिर वेरा के नजर में कौतुहल रहे आ ओह कौतुहल में तनी अचरज के मेरावट रहे। ऊ एक बेर फेर जादुई कल्पना कइली जे उनका बगल के कुरसी पर उनकर युवा सहायिका बइठल बिया। ओकरा सन्देह होत रहे जे ऊ अपना स्वर पर लगाम राख सकी कि ना?

"तमारा, समझदारी से ई बताव जे हमरा घर से काहे चल जाये के चाहीं।"

"काहे? हम वसन्त काल के सफाई के काम कर रहल बानीं।"

"एकर फैसला के कइल?"

एह सवाल से तमारा अचरज में पर गइल। ऊ जवाब देवे के कोशिश कइलस, बाकिर एके गो शब्द बोल पावल :

"हम....."।

वेरा ओकरा आँख में देख के ओसहीं मुसुकी छोड़ली जइसे लाइब्रेरी में मुसकियात रहली, जइसे एगो बुजुर्ग साथी गरम मिजाज आ अनुभवशून्य युवक के आँख में देख के मुसकियात बा।

तमारा एह मुसुकी के जवाब देहलस। ओकर जवाब रहे– एक तरे के प्रिय, सुखद आ खेद सूचक संकोच।

"त माई, कइसे?"

"हम एह पर बात कर लेत बानीं। हमरा ई लागत बा जे तें आ हम एक साथे एगो नया जिनिगी शुरू कर रहल बानी सन। त आव, हमनी के एकरा के एगो सार्थक जिनिगी बनावल जाव। तोरा बुझाइल?"

"हम समझ रहल बानीं," तमारा फुसफुसा के कहलस।

"अगर तें बूझत बाड़ी त घर में हमरा पर अइसन हुकुम कइसे चला सकत बाड़ी। घर से बाहर कइसे धकेल सकत बाड़ी। ई का ह– एगो सनक ह, फूहर मज़ाक ह भा महज जिद्द? हम नइखीं मानत जे तें साँचो समझत बाड़ी।"

तमारा चिन्तित हो के कुरसी से उठल, दू कदम खिड़की के तरफ बढ़ल आ

www.bhojpurisahityangan.com

फेर मुड़ के अपना मतारी का ओर देखे लागल।

"का तें साँचो इहे सोचत बाड़ी जे हम वसन्त काल के सफाई करे के चाहत रहनीं?"

"त का चाहत रहले?"

"पता ना..... कवन चीज..... कवनो नीमन चीज....."।

"बाकिर तोर मतलब हमार नुकसान पहुँचावल ना रहे?"

एकरा बाद तमारा के बान्ह टूट गइल। ऊ अपना मतारी के लगे गइल। उनका के भर अँकवारी ध लेहलस। फेर ऊ सुखद अचरज से आपन मुँह दोसरा ओर घुमा लेहलस.....।

नया लिबास समय पर तइयार हो गइल। वेरा ओकरा के पहिले अपना घरे पहिरली। तमारा उनका के पहिरावे में सहजोग कइलस। ऊ बेर–बेर पाछे घसकत जात रहली आ रह–रह के अगली–बगली निहारतो जात रहली। आखिर में उबिया के कुरसी पर बइठ गइली।

"माई, तें एकरा साथे ई जूता कवनो सूरत में नइखी पहिर सकत।"

अचके ऊ उछल गइल आ जोर से कहलस– ओहो, हमहूँ केतना बुद्धू बानीं।"

ऊ तीर जस अपना सूटकेस के लगे गइल। ओजुगिये खाड़ा हो के अइसन मगन हो के गावत रहल जे गीत के लय में ओकर पैर थिरके लागल –"कइसन बुद्धू! कइसन बुद्धू!"

आखिर में ऊ अपना बटुवा में से पाँच रूबल वाला एगो गड्डी निकाल के धउरत अपना मतारी के लगे आइल :

"ई हमार वजीफा ह। एकरा से आपन नया जूता कीने खातिर ले ले।"

जब पाव्लूशा अपना मतारी के देखलस त ओकर सुनहरा–नीला आँख ओकरा कपार ले चढ़ आइल।

"रे माई। ई रहल तोर कपड़ा।" ऊ दम साध के कहलस।

"पाव्लूशा, तोरा ई पसन्द परल?"

"बेशक माई, बेशक!"

"ई हमरा नीमन काम करे बदे पुरस्कार में मिलल बा।"

"वाह, तें....."।

पाव्लूशा ओह साँझी के लगातारे अपना मतारी के हुलसित भाव से निहारते रह गइल। जब ओकर मतारी से नजर मिले त ओकर चेहरा सुखद मुसुकी से खिल जात रहे।

"माई," ऊ आखिर में थूक धोंटत रोमांचित स्वर में कहलस, "तें जानत बाड़ी .....तें अतना सुन्दर बाड़ी त ते..... हरमेसा अइसने बनल रहिहे। अतने..... सुन्दर।"

ई शब्द ओकरा दिल से निकलल रहे, जवन महज शब्द ना, बलुक खाँटी भाव रहे।

वेरा संयमित मुसुकी छोड़त अपना बेटा के देखली।

ई नीमन बात बा। शायद अब तें पूरा साँझ स्केटिंग करत बाहरे त ना घूमत

www.bhojpurisahityangan.com

रहबे?"

"साँचो अब ना घूमेब।"

नाटक के आखिरी भाग देर साँझ ले चलल। इवान जब काम से घर लवटले त ऊ चेरी के रंग के लिबास पहिरले एगो सुन्दर मेहरारू के मेज पर बइठल देखले। कमरा में घुसे से पहिलहीं ऊ आपन टाई सोझ करे बदे हाथ उठावले, तले ओही घरी अपना मेहरारू के चीन्ह गइले। ऊ मुसुकी छोड़त आ आपन हाथ मलत वेरा के लगे अइले।

"अरे वाह, साफे दोसर मूरत!"

वेरा अइसन सहज मुद्रा से बाल के एगो लट हटवली, जवना के पहिले उनका कवनो अहसास ना रहे। ऊ धीरे से कहली –"हमरा खुशी बा जे रउआ पसन्द परल।"

ओह साँझी के इवान अपना अँगुरी के जोड़न के पुटपुटइबो ना कइले। ऊ विचार मगन हो के देवार के तरफ ताकतो ना रहले आ ना गाना के मज़किया धुन पर सीटियो बजवले। ऊ हास परिहास कइले, मज़ाक कइले आ रह–रह के आँख मटकावत रहले। शायद उनकर हुलास खाली तबे कम भइल, जब वेरा शान्ति से कहली :

"इवान, असहीं एगो बात बा। हम रउआ से पूछे के अकसरे भूला जात बानीं जे एह घरी रउआ केतना दरमाहा मिल रहल बा।"

हमनी मतारी सभे समाजवादी देश के नागरिक बा। ओह लोग के जिनिगियो ओतने हुलसित आ पूरा होखे के चाहीं, जेतना हमनी के बाप आ लइकन के। हम नइखीं चाहत जे लोग अपना मतारी के खामोश कुर्बानी पर पोसाव। ओह लोग के लगातार शहादत पर पोसाव..... अपना मतारी के कुर्बानी पर पोसाइल लइका खाली ओही समाज में रह सकत बाड़े सन, जहँवा शोषण होत बा।

हमनी के चाहीं जे ओह मतारी के ओह आत्मबलिदान के विरोध करीं, जे हमनी के देश में हेने–होने होत बा। आउर निम्न कोटि के स्वेच्छाचारियन के अभाव में ई मतारी ओकनी के खुदे..... आपने लइका से बनावत बा। ई कालक्रमित दोष हमनी के परिवार में, ख़ास क के बुद्धिजीवी परिवार में, कमो बेस अबहुँओ मौजूद बा। एजुगिया "सभकुछ लइकन खातिर" नारा के खाली औपचारिक बतकही कइल जात बा। ओकर मतलब "सभकुछ सम्भव" लगावल जात बा– माने मतारी के जिनिगी के मूल्य आ मतारी के जड़ता। ई सभ लइकन खातिर! हमनी के मतारी के जिनिगी आ काम आन्हर प्यार से ना, बलुक सोवियत नागरिक के महान दूरदर्शी अन्दरुनी प्रेरणा से निर्देशित होखे के चाहीं। अइसन मतारी हमनी के उत्तम आ सुखी लोग दी आ अपनहूँ आखिरी समय ले सुखी रही।

***

www.bhojpurisahityangan.com

नौवाँ अध्याय

दू बरीस के जोरा दूध के कटोरी के तिरस्कार से देखत बा। ओकरा के देखते अपना हाथ के झटकत बा। फेर ओह से मुँह फेर लेत बा। ओकर पेट भरल बा। ओकरा दूध पीये के तनिको मन नइखे करत। ई भावी इंसान पोषण के मामला में कवनो तरे के अभाव नइखे महसूस करत। तबो सम्भव बा जे अइसन आउरो कवनो क्षेत्र होखे, जहँवा ओकर जरूरत पूरा तरे से सन्तुष्ट ना कइल जात होखे। शायद ओकरा आउर लोग भा कम से कम आउरो प्राणी बदे सहानुभूति के अनुभव करे के दरकार होखे। अगर जोरा के अबहीं अइसन जरूरत महसूस नइखे होत त शायद ओह जरूरत के जगावल जरूरी होखे।

मतारी जोरा के प्यार से देखत बाड़ी, बाकिर कवनो कारण से एह सवालन में उनकर कवनो दिलचस्पी नइखे। ई सवाल अपना लइकन के पाले–पोसे वाली मुर्गी भा जीव–जगत के कवनो आउर मतारी बदे दिलचस्पी के चीज नइखे।

जहँवा जिनिगी सहजवृति से चल रहल बा, ओजा मतारी के एके गो ध्येय रहत बा– आपन लइकन के खियावल। जीव–जगत के मतारी एह काम के अद्‌भुत सहजता से करत बाड़ी। ऊ जेतने भोजन आपन घोंसला में ले आवे में कामयाब होत बा, ओकरा के बच्चा के खुलल चोंच आ मुँह में ठूँसत जात बा। तब ले अइसने करत बा, जले ले बच्चा पूरा तरे से सन्तुष्ट हो के आपन मुँह नइखे फेर लेत। एकरा बादे जीव–जगत के ऊ मतारी चैन के राँरा ले राकत बाड़ी आ आपन व्यक्तिगत जरूरत पूरा क सकत बाड़ी।

प्रकृति, जीव–जगत के मतारी बदे बुद्धिमानी से बहुते सहज आ सही माहौल पैदा कइले बा। गौरैया आ अबाबील के अपना बच्चा के खियावे खातिर एके दिन में दर्जनो भा सैकड़न बेर फेरा लगावे के परत बा। ओह हर कीड़ा खातिर एगो अलगे फेरा लगावे के परत बा, जेकरा देह में एगो कैलोरी के सौवाँ हिस्सा भर के ताकत रहत बा। ओहू में ई कोशिश अकसरे नाकामयाब हो जात बा। दोसर बात ई बा जे जीव–जगत के मतारी के लगे सुस्पष्ट बतकही के समरथ नइखे। खाली मानव–जाति में एकर समरथ बा।

अइसन लागत बा जे एकरा तुलना में मानवीय मतारी कतहूँ जादे नीमन हाल में बा। तबो अइसन अनुकूल माहौल आदमी के लइकन के लालन–पालन बदे एगो खतरा बनल रहत बा।

www.bhojpurisahityangan.com

आदमी प्रकृति का नियम के साथे मानव समाज के नियम से बन्हाइल बा। सामाजिक जिनिगी के नियम प्रकृति के नियम के मुकाबले जादे सही, सुबहित आ जादे विवेक से काम करत बा। बाकिर प्रकृति के तुलना में ऊ आदमी से कतहूँ बहुते कठोर अनुशासन के माँग करत बा। एह अनुशासन के तूरला पर बहुते कठोर दण्ड देत बा।

अकसरे अइसन होत बा जे मानव–मतारी में खाली प्रकृति के नियम माने के प्रवृत्ति बा। संगहीं ऊ मानव सभ्यता के फायदा के छोड़तो नइखे। एह बेवहार के का नाँव देहल जा सकत बा? जाहिर बा जे ई छल–कपट के सिवा आउर कुछुओ नइखे। आदमी के श्रेष्ठ प्रकृति के खिलाफ मतारी के एह अपराध का चलते लइका सभ भयानक प्रतिशोध के शिकार होत बाड़े सन। ऊ मानव समाज के निकृष्ट सदस्य के रूप में बड़ होत बाड़े सन।

हमनी के मतारी के अपना लइकन के पेट भरे में ओतना ताकत खरच करे के दरकार नइखे परत। आदमी के समझ–बूझ से बाजार, दोकान आ बेवस्थित खाये–पीये के सामान के सुबहित वेवस्था हो गइल बा। एह से लइकन के मुँह में जबरन खाना ठूँसे के जोश घातक आ बेमतलब हो गइल बा। एह बदे मानवीय वाक्–शक्ति जइसन जटिल विधि के उपयोग कइल आउरो जादे खतरनाक बा।

जोरा, दूध के कटोरी के तिरस्कार से देखत बा। ओकर पेट भरल बा। तबो मतारी जोरा से कहत बाड़ी :

"बिलाई दूध पीये के चाहत बिया। ऊ दूध के तरफ ताकत बिया। ना ना! हम बिलाई के दूध ना देब। एकरा के जोरा पी। भाग बिलाई, भाग।"

मतारी के ई शब्द सही लागत बा। बिलाई दूध के ओर ताकत बिया आ ओकरा दूध पीये में कवनो एतराज ना होखी। जोरा बिलाई के सन्देह से देखत बा। आखिर में मतारी के जीत होखत बा– जोरा आपन दूध बिलाई के नइखे देत। ऊ सोझे अपने गटक जात बा।

अइसन छोट–छोट बात अहंकार के जनम देत बा।

लालन–पालन के सगरी विफलता के शायद एगो सूत्र में पेश कइल जा सकत बा –"लोभ के पोसल"। उपभोग करे के हरमेसा सजग आ अथक वासना तरे–तरे के रूप–सरूप में प्रकट हो सकत बा। अकसरे बाहर से देखहूँ में ऊ सभ बेजाँय नइखे लागत। ई वासना जिनिगी के शुरुआती महीना से पनपे लागत बा। जहँवा एह वासना के अलावे आउर कुछुओ नइखे, ओजा सामाजिक जिनिगी आ मानव–संस्कृति मोसकिल बा। बाकिर एह वासना के साथे–साथे हमनी के जिनिगी से जुड़ल ज्ञान आ सभसे ऊपर लोभ के सीमा से जुड़ल हमनी के ज्ञान बढ़त आ विकसित हो रहल बा।

बुर्जुआ समाज में लोभ पर लगाम होड़ से होत बा। एगो आदमी के चाहत के सीमा दोसर के चाहत के सीमा से सीमित हो जात बा। ई एगो सीमित जगह में ठूँसल लाखन झूला के डोलला जस बा। ऊ अलग–अलग दिशा आ अलग–अलग

www.bhojpurisahityangan.com

सतह पर डोलत रहत बा। ऊ सभ एक साथे लटकल बा। ऊ एक दोसरा से टकरात बा, खखोंरात बा आ घिसत–घिसात बा। एह दुनिया में अपने आप में धातु–पिण्ड के शक्ति के संजोवल, बेसी सम्भव प्रचण्डता से झूलल आ अपना पड़ोसियन के गिरावल भा नाश क देहल फायदेमन्द बा। बाकिर एह दुनिया में पड़ोसी के ताकत आ प्रतिरोध के ताड़ल बहुते महत्त्वपूर्ण बा, काहेकि खुद के घवाहिल करे वाला ओह उग्र पंगा से बचल जा सके। बुर्जुआ–जगत के नैतिकता लोभ बदे अनुकूलित लोभ के नैतिकता बा।

खुदे आदमी के चाहत में लोभ नइखे रहत। अगर कवनो आदमी धुँआ भरल नगर से पाइन के जंगल में आवत बा आ ताजा हवा में हीक भर के साँस लेवे के आनन्द उठावत बा त ओकरा पर केहू ई आरोप नइखे लगा सकत जे ऊ जादे लोभ से ऑक्सिजन ले रहल बा। लोभ के शुरुआत ओजुगिया से होत बा, जहँवा से एगो आदमी के जरूरत दोसरा के जरूरत से टकरात बा, जहँवा हुलास भा सन्तोष कवनो पड़ोसी से जबरन, चालाकी भा चोरी से हासिल करत बा।

हमनी के कार्यक्रम में ना त चाहत आ कामना के तेजल शामिल बा, ना अभाव पीड़ित अलगाव आ ना आउर लोग के लोभ के सामने कंगाल जस ठेहुना टेकल।

हमनी के इतिहास में युग बदलाव काल के महत्वपूर्ण समय में जी रहल बानी सन। हमनी के युग मानवीय रिश्ता में एगो नया बेवस्था के, एगो नया नैतिकता के आ एगो अइसन नया कानून के शुरुआत होत देखले बानीं, जवना के आधार मानवीय एकवठ के विजयी विचार बा। हमनी के चाहत के लटकन के झूले खातिर जगह देहल गइल बा। अब हरेक आदमी के सामने आपन चाहत पूरा करे के, अपना हुलास आ भलाई के उपलब्धि के राह खुल गइल बा। बाकिर अगर ऊ एह खुलल, प्रशस्त राह में अपना केहुनी घुसावे के पुरनका आदत के हिसाब से चले लागे त ऊ एगो दुखद गलती होखी। काहेकि आज काल्ह एगो लइको जानत बा जे आदमी के केहुनी आपन राह बनावे खातिर नइखे, बलुक पड़ोसी के महसूस करावे बदे देहल गइल बा। हमनी के युग में दोसरा के टँगड़ी घींच के राह बनावे के हरकत अनैतिक के बजाय मूरखता वाला जादे बा।

एकवठ होखे के विवेकपूर्ण विचार पर टिकल समाजवादी समाज में नैतिक काम नैतिक होखे के साथे सभसे जादे बुद्धिमानी वाला बा। ई एगो अइसन महत्वपूर्ण तथ्य बा, जवना के हरेक मतारी–बाप आ मास्टर लोग के जाने के चाहीं।

एगो रेगिस्तान में भूखल लोगन के एगो समूह के कल्पना करीं। कल्पना करीं जे ई लोग ना त संगठित बा आ ना एह लोग में एकवठ होखे के कवनो भाव बा। एमे से हरेक आदमी आपन बलबूता पर, अपना जोखिम पर खाना के तलाशत बा। तब जा के ओह लोग के तनी खाना भेंटात बा। ऊ लोग उलझन भरल आ वहशी जद्दोजहद करत ओह पर टूट परत बा। एही छीना–झपटी में एक दोसरा के चोट पहुँचावत बा आ भोजनो के नाश करत बा। अगर एह समूह में एगो अइसन आदमी होखे जे एह जद्दोजहद में समिलात नइखे होत त ऊ भूख से मुअल कुबूल करत

www.bhojpurisahityangan.com

बा, तबो दोसरा के गर्दन दबोचे से नकार देत बा। अइसन हाल में ऊ आउर सभके धेयान अपना ओर घींचत बा। सभे आँख फरले ओकरा के मुअत देखी। कुछ लोग कही जे ऊ सदाचारी, वीर आ भगत रहे। कुछ आउर दोसर लोग कही जे ऊ मूरख रहे। एह दुनू आकलन के बीच कवनो अन्तर्विरोध नइखे।

अब एगो आउर हालात के कल्पना कइल जाव। लोग के एगो संगठित दस्ता ठीक अइसने हालात में पर जात बा। ऊ लोग आपन–आपन सवारथ के पारस्परिक सचेत धारणा से, नीमन अनुशासन से आ अपना नेता पर बिसवास से एकवठ भइल बा। अइसन दस्ता खोजल गइल भोजन का ओर अनुशासन से आगे बढ़त बा। खाली एगो नायक के आदेश पावते लगले ओजुगिये रुक जात बा। अगर एह दस्ता में केहू के एकवठ के भाव जवाब दे देत बा त ऊ चीखत–चिल्लात बा। फेर बिखियाइले भोजन हासिल करे बदे ओह पर टूट परत बा। अइसन हाल में आउर लोग ओकर कालर ध के रोक देत बा आ कहत बा :

"तें एगो दुर्जन आ मूरख बाड़े।"

एह दस्ता में नैतिकता के सर्वोत्तम उदाहरण कवन आदमी होखी?

बकिया सगरी लोग।

पुरनका जमाना में नैतिक श्रेष्ठता कुछ विरले लोग के गुण रहे। अइसन लोग अँगुरी पर गिनल जा सकत रहे, जे शायदे कतहूँ भेंटात रहे। नतीजा ई भइल जे नैतिक समग्रता बदे दम्भ भरल रवैया सामाजिक नैतिकता के सँकारे जोग एगो मानक बन गइल। असल में तब दूगो मानक रहे। एगो देखावटी मानक रहे, जे नैतिक प्रवचन आ बेवसायिक भगत खातिर रहे आ दोसर रोजाना के जिनिगी आ बुद्धिमान लोग खातिर रहे। पहिलका मानक का हिसाब से आपन आखिरी कमीज ले गरीब के देवे के परत रहे, आपन जायदाद लोग खातिर देवे के परत रहे, केहू एगो गाल पर चाँटा मारल त दोसरका ओकरा आगे करे के परत रहे। बाकिर दोसरका मानक का हिसाब से एमे से कवनो चीज के दरकार ना रहे। असल में कवनो पवित्र काम जरूरी ना रहे। एजुगिया नैतिकता के मानदण्ड नैतिक श्रेष्ठता ना, बलुक साधारण तरे से रोजाना के पाप–कर्म रहे। लोग पहिलहीं से एह तरे सोचत रहे जे हरेक आदमी पाप करत बा आ एकरा बारे में केहू कुछ करियो नइखे सकत। थोर बहुत पाप करत रहल एगो मानक रहे। सम्भ्रांत होखे खातिर ई जरूरी रहे जे बरीस में एक बेर ओह अवधि के आपन पाप के लेखा–जोखा क लेहल जाव, एगो भा दूगो व्रत राख लेहल जाव, कुछ घण्टा पादरी के नकियावे वाला आवाज़ में भक्तिगीत सुनल जाव, एक मिनट खातिर पादरी के मइल कुचइल चादर के नीचे झुक जाइल जाव आ आपन सगरी पाप धोवा लेहल जाव। रोजाना के नैतिकता मामूली पाप से जादे दूर ना जात रहे। माने अइसन पाप ओतना गम्भीर ना होत रहे, जवना के अपराध कहल जा सके। ऊ अतनो कमजोर ना होत रहे जे ओह पर अइसन भोंदूपन के आरोप लगावल जा सके। हर केहू जानत बा जे ऊ "चोरी से बाउर" बा।

www.bhojpurisahityangan.com

समाजवादी समाज में नैतिकता के माँग हर केहू पर लागू होत बा। हर केहू बदे ई जरूरी बा जे ऊ ओकरे हिसाब से आपन बेवहार करे। हमनी के लगे पवित्रता के देखावटी मानक नइखे। हमनी के नैतिक उपलब्धि जन–समुदाय के बेवहार में साफे झलकत बा।

बेशक, हमनी किहाँ सोवियत संघ के वीर मौजूद बा। बाकिर जब हमनी के सरकार ओह लोग के वीरता के काम पर भेजत बा त ओह लोग के कवनो ख़ास परीक्षा नइखे लेत। ऊ ओह लोग के नागरिक के साधारण समुदाय से छाँटत बा। काल्ह ऊ लाखन नागरिक के अइसने बड़हन कारनामा करे खातिर भेज सकत बा। ओकरा एह बात में कवनो सन्देह नइखे जे ई लाखन लोग ओइसने श्रेष्ठ नैतिकता के प्रदर्शन करी। हमनी के वीर बदे लोग के सम्मान आ प्यार में जवन तत्व विरले कबहूँ मिलत बा, ऊ बा– नैतिक अचरज। हमनी के ओह लोग से प्यार करत बानीं, काहेकि हमनी ओह लोग खातिर लगाव महसूसत बानीं। ओह लोग के वीरता के कारनामा में हमनी के एगो अइसन बेवहारिक उदाहरण के दर्शन होत बा, जवना के हमनी खुदे अपना बेवहार में लागू करे के चाहीं।

हमनी के नैतिकता श्रमजीवी–जन के असली एकवठ सोभाव से जनमल बा।

महज एह कारण से जे ऊ एकवठ के विचार से बनल बा, कम्युनिस्ट नैतिकता संयम के नैतिकता नइखे हो सकत। आदमी से लोभ के मेटावल आ अपना साथियन के हित आ जिनिगी बदे मान–मरजाद के माँग करे में, कम्युनिस्ट नैतिकता बकिया हरेक मामला में ख़ास क के संघर्ष में, एकवठ होखे के माँग करत बा। अगर एकर दार्शनिक सामान्यीकरण कइल जाव त एकवठ होखे के विचार जिनिगी के सगरी क्षेत्र के चउतरफा घेरले बा। जिनिगी के आवे वाला हर दिन खातिर एगो संघर्ष बा। प्रकृति के साथे, अज्ञान के साथे, पिछड़ापन के साथे, पाशविक पूर्वज प्रवृति के साथे आ बर्बरता के अवशेष के साथे संघर्ष बा। जिनिगी जमीन आ आसमान के अक्षय शक्तियन पर लगाम हासिल करे के संघर्ष बा।

एह संघर्ष में सफलता आ आदमी के एकवठ होखे के मात्रा सोझे समानुपातिक बा।

एह नवका नैतिक माहौल में रहत हमनी के अबहीं बीसे बरीस भइल बा। एह छोटहन अवधि में हमनी का आदमी के सोभाव में केतना बड़हन बदलाव महसूस कइले बानी सन।

हमनी के अबहुँओ ई नइखीं कह सकत जे हमनी के कम्युनिस्ट नैतिकता के टकराव पर पूरा तरे से लगाम हासिल हो गइल बा। अपना शैक्षिक काम में हमनी के बहुते हद ले सहज वृत्ति से निर्देशित होत बानी सन आ हमनी के सही चिन्तन के जगह अपना भावना पर जादे भरोसा करत बानी सन।

हमनी में पुरान जिनिगी के अनगिनत अवशेष आ पुरान आदत से निर्धारित नैतिक धारणा अबहुँओ बरकरार बा। हमनी के आपन बेवहारिक जिनिगी में ओह अनेक गलतियन आ ओह मिथ्या धारणा के अबहुँओ अनजाने में दोहरावत बानी सन,

www.bhojpurisahityangan.com

जे मनुष्य जाति के इतिहास में कइल जा चुकल बा। हमनी में से अनेक लोग प्रेम के नाँव पर जानल पहचानल चीज के महत्व के अचेतन रूप से बढ़ा–चढ़ा देत बा। आउर लोग तथाकथित स्वतंत्रता में आपन बिसवास के देखावा करत बा। ऊ लोग अकसरे ई नइखे देख पावत जे प्रेम के बदले हमनी भावुकता आ स्वतंत्रता के बदले स्वेच्छाचारिता के पाल–पोस रहल बानी सन।

हित के एकवठल हमनी के कर्त्तव्य के विचार देत बा, बाकिर ओकरा से कर्त्तव्य के असली पूर्ति नइखे होत। एह से हित के एकवठल अबहीं एगो गोचर नैतिक तथ्य नइखे बनल। अइसन तबे होत बा, जब हमनी के बेवहार में एकवठ होखे। मनुष्य–जाति के इतिहास में मेहनती लोग का बीच हित के एकवठल हरमेसा रहल बा, बाकिर एगो एकीकृत सफल संघर्ष तबे सम्भव बा, जब हमनी के एगो लमहर ऐतिहासिक अनुभव होखे। ऊ अनुभव हमनी के नेता के ऊर्जा आ चिन्तन से सुधारल गइल होखे।

बेवहार खाली चेतना के ना, बलुक ज्ञान, बल, आदत, दक्षता, औचित्य, साहस, तन्दरुस्ती आ सभसे जादे महत्वपूर्ण सामाजिक अनुभव के एगो बहुते जटिल नतीजा से होत बा।

लइकन के शुरुआती बरीस से सोवियत परिवार के एह अनुभव के पाले–पोसे के चाहीं। ओकरा चाहीं जे ऊ लइकन के एकवठ बेवहार के विविध प्रकार में, कठिनाई के दूर करे में, सामूहिक सम्वर्धन के बहुते कठिन प्रक्रिया में अभ्यास करवावत रहे। एह बात के ख़ास अहमियत बा जे एगो लइका भा लइकी में एकवठ होखे के भाव खाली परिवार के संकुचित प्रकार पर आधारित ना होखे, ओकरा परिवार के सीमा से परे सोवियत जिनिगी के व्यापक क्षेत्र में आसाधारण तरे से मनुष्य–जाति के जिनिगी में पसर जाये के चाहीं।

'मतारी–बाप खातिर" एह किताब के पहिलका खण्ड के खतम करत हम ई उम्मीद करत बानीं जे एह से कुछ भला होखी। ख़ास क के हम ई उम्मीद करत बानीं जे एमे पाठक के लइकन के शिक्षा आ लालन–पालन के बारे में आपन सक्रिय चिन्तन बदे उपयोगी शुरुआती बात मिली। हम एह से जादे के भरोसा नइखीं कर सकत। हरेक परिवार के आपन ख़ास लक्षण आ जिनिगी के दशा–दिशा बा। अनेक शैक्षिक समस्या हर परिवार के खुदे हल करे के चाहीं, बाकिर हेने–होने से बटोरल गइल तइयार नुस्खा के लागू क के ना, बलुक खाली सोवियत जिनिगी आ कम्युनिस्ट नैतिकता के साधारण सिद्धान्त पर पूरा भरोसा क के हल करे के चाहीं।

***

www.bhojpurisahityangan.com

परिशिष्ट

मकारेंको आ उनकर 'एगो किताब मतारी-बाप खातिर' पर कुमारिन के आलेख

अन्तोन सेम्योनोविच मकारेंको के शैक्षिक क्रिया–कलाप बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में पूरा भइल रहे। ऊ रूसी बुद्धिजीवियन के ओह पीढ़ी के रहले, जेकरा कन्धा पर नवका समाजवादी संस्कृति के नेंव धरे के महान, सुखद आ बहुते मोसकिल काम में हाथ बँटावे के जिम्मेवारी रहे। ओह महान सोवियत शिक्षाशास्त्री के रचनात्मक विरासत कम्युनिस्ट लालन–पालन में, शिक्षा–दीक्षा के सिद्धान्त में आ बेवहार के तरीका में एगो महान जोगदान बा, जवन हमनी के आज के युग खातिर बहुते महातिम राखत बा।

मकारेंको के जिनिगी उनका जवानिये से शिक्षा–शास्त्र खातिर समर्पित रहे। उनकर जनम 1888 में एगो बड़हन उक्रेनी मजदूर परिवार में भइल रहे। उनकर मतारी–बाप अनपढ़ रहला का बादो ज्ञान के महातिम आ ताकत के बूझत रहे। ऊ लोग एह बात के जादे महत्त्व देत रहे जे ओह लोग के बेटा के लइकाईं से किताबन से लगाव रहे। मकारेंको पाँचे बरीस के उमिर से धाराप्रवाह पढ़ सकत रहले। 1895 में उनका के एगो प्राथमिक पाठशाला में भर्ती करावल गइल।

1900 में उनकर परिवार क्रेमेंचूग नगर के लगे क्रियूकोवो गाँव में रहत रहे। मकारेंको क्रेमेंचूग नगर के स्कूल में आपन पढ़ाई कइले। ओह स्कूल के पाठ्यक्रम बहुते ठोहर रहे। ओजा रूसी भाषा, अंकगणित, भूगोल, इतिहास, प्राकृतिक–विज्ञान, भौतिकी के अलावे रेखांकन, चित्रांकन, संगीत आ व्यायाम के शिक्षा देहल जात रहे।

मकारेंको तेज दिमाग के छात्र रहले। उनका ओह घरी रूसी आ विदेशी क्लासिक साहित्य के जेतना ज्ञान रहे, ओतना हमउमिरया लइकन बदे एगो अचरज के बात रहे। उनका दर्शनशास्त्र, प्राकृतिक विज्ञान आ कला–समालोचना के बुनियादी ज्ञान रहे।

मकारेंको सोराहे बरीस के उमिर में स्कूली पढ़ाई पूरा क लेहले। फेर ओही स्कूल के सालाना शैक्षिक पाठ्यक्रम में भर्ती हो गइले। ऊ स्कूल प्राथमिक स्कूल खातिर मास्टर लोग के प्रशिक्षित करत रहे।

1905 के वसन्त में मकारेंको आपन शैक्षिक पाठ्यक्रम पूरा कइले। फेर ओही बरीस से क्रियूकोव के प्राथमिक स्कूल में पढ़ावल शुरू कइले। उनका ढेर बातन

www.bhojpurisahityangan.com

के ज्ञान रहे। ऊ विद्यादान करे में आ शिक्षार्थी के चिन्तन–विवेचन कइल सिखावे में माहिर रहले। तबो उनका एगो नीमन शिक्षक बने में बहुते समय लागल। अनुभवी शिक्षक भइला के बादो ऊ एगो अइसन गलती क बइठले, जवना से उनका बहुते दुःख भइल। एगो शिक्षा–सत्र के रिजल्ट के मिलान करत घरी ऊ एगो शैक्षिक प्रयोग में हरेक लइकन के औसत अंक के गणना कइले आ एगो लइका के प्रमाण–पत्र देहले –''सैंतीसवाँ आ आखिरी''। बाद में उनका पता चलल जे ओह लइका के एह आधार पर प्रमाण–पत्र ना देहल गइल जे ऊ सुस्त रहे। बलुक एह से ना देहल गइल जे ऊ गम्भीर आ लाइलाज बेमारी से ग्रस्त रहे। एह से ऊ लइका बहुते दुखी भइल.....।

एह घटना से मकारेंको के मन टूट गइल। ऊ आपन कटु अनुभव से सीख लेहले जे स्कूल में सफल होखे खातिर खाली पढ़ावले भर ना, बलुक लइकन के लालन–पालन के योग्यता राखल ओतने जरूरी होला। के जाने, एह घटना से उनका मन में ई भाव जागल होखे जे लालन–पालन के तरीका के खाली पढ़ावे ले सीमित नइखे राखल जा सकत। ई शिक्षा–विज्ञान के एगो अइसन ख़ास आ स्वतंत्र क्षेत्र बा, जेकर आपने विषय आ आपने नियम बा।

1911 में मकारेंको के दोलींस्काया रेलवे टीसन ट्रान्सफर क देहल गइल। ई युवा मास्टर लइकन के अनेक दिलचस्प कार्यकलाप में लगा के ओकनी के फालतू समय के सदुपयोग कइले। ऊ नाटक के मंचन, फैंसी ड्रेस, नृत्य समारोह आ खेल के आयोजन करत रहले। ऊ एह भावना के संज्ञान से मिलावत मास्टरी के आपन काम बड़ी कुशलता से निभवले।

1914 में पोल्टावा में मास्टर लोग खातिर एगो संस्थान खुलल, जवना में अपूर्ण माध्यमिक स्कूल के मास्टर लोगन के प्रशिक्षित कइल जात रहे। मकारेंको सीखे–पढ़े बदे हरमेसा उत्सुक रहत रहले। ऊ एह मोका के लगले लाभ उठवले। शानदार अंक के साथे प्रवेश परीक्षा पास कइला के बाद ऊ एगो विद्यार्थी बन गइले।

एगो पकठोसल आदमी का तरे संस्थान के विद्यार्थी बन के मकारेंको शिक्षा–वैज्ञानिक, ऐतिहासिक आ दार्शनिक साहित्य के गहन अध्ययन कइले। ऊ जवन कुछ पढ़त रहले, ओकरा के लगले समझ जात रहले, काहेकि उनका जिनिगी के आ स्कूल में बरिसन के पढ़ावे के अनुभव रहे।

1917 के गरमी के समय मकारेंको स्वर्ण पदक के साथे परीक्षा पास कइले। संस्थान अपना जारी प्रशस्ति में कहले रहे– "मकारेंको असाधारण योग्यता, ज्ञान, बहुमुखी प्रतिभा के धनी आ मेहनती बाड़े। ऊ शिक्षा–विज्ञान आ मानविकी के विषयन में ख़ास रुचि देखवले आ ओकर अध्ययन कइले। उनकर निबन्ध हरमेसा अत्युतम रहत रहे। ऊ एगो नीमन आ ख़ास क के रुसी भाषा आ इतिहास के अध्यापक बनिहें।"

महान अक्टूबर समाजवादी क्रान्ति का बाद मकारेंको के जिनिगी में एगो नया अवस्था के शुरुआत भइल। पहिले के जारशाही रूस के अन्दर अभूतपूर्व रफ्तार आ

www.bhojpurisahityangan.com

पसारा का साथे एगो नया जिनिगी के रचना होत रहे। संयंत्र, नया नगर आ गाँव के आ लोगन के बीच नया सम्बन्ध के रचना होत रहे।

1918 के शुरुआते में मकारेंको के क्रियूकोव के स्कूल के डायरेक्टर बना देहल गइल। ठीक ओही घरी ओह स्कूल के माध्यमिक स्कूल बना देहल गइल।

1920 में मकारेंको उक्राइना में पोल्टावा के लगे अनाथ लइकन आ बाल अपराधियन बदे एगो बस्ती के संगठित करे के सुझाव सँकार लेहले। एह तरे के शैक्षिक प्रतिष्ठान अइसन समय में स्थापित भइल, जवन नवोदित सोवियत जनतंत्र खातिर बहुते मोसकिल रहे। पहिलका विश्वयुद्ध आ विदेशी हस्तक्षेप के चलते महामारी आ अकाल के समय भारी आर्थिक विनाश भइल रहे। हजारन हज़ार लइका सभ अपना मतारी–बाप के गँवा के बेघर हो गइल रहले सन।

सोवियत सरकार जवन असाधारण बेवस्था कइलस, ओमे लइकन के लगले कारगर सहजोग करे के उपाय शामिल रहे। जनवरी, 1919 में व्ला.इ. लेनिन के पहल पर लइकन के संरक्षण बदे राजकीय परिषद् के गठन कइल गइल। शिक्षा के जन–कमिसार अ.व. लुनाचार्स्की[1] ओकर अध्यक्ष रहले। परिषद् लइकन के समरथ इलाका में पहुँचावे के निर्देश देहलस। एकरा अलावे ओकनी के सामूहिक खान–पान आ पहिरे खातिर कपड़ा सप्लाई के बेवस्था कइलस।

1921 के शुरुआते में फे.ए. द्जेर्जीन्स्की[2] के पेशकदमी पर लइकन के रहे–सहे के दशा सुधारे बदे एगो आयोग के गठन कइल गइल। एकर गठन के कारण के सफाई देत फे.ए. द्जेर्जीन्स्की लिखले– ''ई एगो भयानक बिपत बा। लइकन पर नजर धउरवला पर केहू सोचले बिना नइखे रह सकत जे सभकुछ ओकनी खातिर बा। क्रान्ति के नतीजा हमनी बदे ना, बलुक ओकनी खातिर बा। एजुगिया हमनी के ओकनी के सहायता एह तरे हाली–हाली करे के चाहीं, जइसे हमनी के ओकनी के दरिया में डूबत देखले होखी सन..... सगरी सोवियत जनता खातिर जरूरी बा जे बड़हन पैमाना पर ओकनी के सहजोग करे।''[3]

बेघर भइल लइकन के बचावे बदे राज्य के जोरदार प्रयास से देशभर में लइकन के हजारन प्रतिष्ठान स्थापित भइल। मकारेंको अइसने एगो बस्ती के डायरेक्टर बनले। बाद में ओह बस्ती के नाँव अ.मा. गोर्की[4] के नाँव पर धराइल।

अपना भाषण आ लेख में मकारेंको आपन क्रिया–कलाप के महज बाल अपराधियन के साथे कइल काम के अनुभव माने से अकसरे विरोध करत रहले।'' .....कवनो तरे के केहू ख़ास 'अपराधी' ना होखे, बलुक कुछ अइसनो लोग होला, जे विषम हालात में पर जाला।'' मकारेंको के ख़ास शिक्षा–वैज्ञानिक प्रतिभा के विषय अइसन लइका रहले सन, जे सभसे जादे प्राकृतिक वस्तु, सनेह आ मतारी–बाप के देखभाल से वंचित हो गइल रहले सन। ''कवनो सामान्य लइका, जे सहजोग, समाज, समूह, साथी आ अनुभव के बिना आ तनाव भरल मानसिकता समेत, कवनो नजरिया के बिना बेघर हो के सड़क पर आ गइल बा त ऊ ओइसने बेवहार करी जइसन ओकरा साथे भइल बा,''[5] ऊ अपना शिक्षार्थी के बारे में लिखले बाड़े।

www.bhojpurisahityangan.com

मकारेंको के प्रमुख प्रस्ताव के कवनो मास्टर, चाहे ऊ लइकन के कवनो प्रतिष्ठान में काम काहे ना करत होखे, सफलता से उपयोग कर सकत बा।

शिक्षा आ लालन–पालन के जवन तरीका के मकारेंको गोर्की के नाँव पर बनल बस्ती में इस्तेमाल कइले, ओकरे के ऊ फे.ए. द्जेर्जीन्स्की के नाँव पर बनल कम्यून में सुधरल शैक्षिक आ भौतिक आधार पर आउरो जादे विकसित कइले। कम्यून के अन्दर इस्तेमाल भइल शैक्षिक प्रक्रिया शिक्षार्थी के ज्ञान बढ़ावे, उत्पादक श्रम, सौंदर्य बोध आ शारीरिक विकास के एकता पर आधारित रहे। कम्यून के सदस्य वस्त्र के, काष्ठ–कला आ धातुकर्मीय कार्यशाला में काम करत रहे। बाद में कम्यून में एगो बिजली के उपकरण संयंत्र आ एगो फोटो कैमरा संयंत्र लगावल गइल। कम्यून अपना स्नातकन के माध्यमिक शिक्षा देत रहे। ओमे जे बेवसायिक, माध्यमिक आ उच्चतर शिक्षा लेवे जात रहे, ओकरा के वजीफा देत रहे। शिक्षार्थी के खलिहा समय में तरे–तरे के मण्डली, खेलकूद आ आउरो कार्यक्रम चलत रहे। हरेक शिक्षार्थी के कवनो ना कवनो दिलचस्प काम भेंटा जात रहे। ओकनी के आपन समरथ आ रचनात्मक रुझान के विकसित करत रहले सन।

मकारेंको बस्ती आ कम्यून के आपन पनरह बरीस के काम के अनुभव के चरचा 'जीवन का ओर (शिक्षा के महाकाव्य)', 'मीनार पर झण्डा', '1930 के प्रयाण', 'फेद–1', 'आशावादी शैली' नाँव के किताबन आ कई गो सैद्धान्तिक लेखन में प्रस्तुत कइले।

ई ऊहे अवधि रहे, जवना में मकारेंको लालन–पालन के आपन ओह तरीका के ठोहर रूप देहले। ई सर्वोच्च सिद्धान्त आदमी खातिर, ओकर अनूठा व्यक्तित्व आ ओकर व्यक्तिगत ख़ासियत बदे सम्मान बा।

मकारेंको अपना जिनिगी के आखिरी बरीस मास्को में बितवले। ओजा ऊ आपन सगरी प्रयास के वैज्ञानिक आ साहित्यिक रचना करे में लगवले। ऊ बड़ी हुलास के साथे नीमन काम कइले। उनकर प्रतिभा भरल लेख लगातारे छपत गइल। अपना अनगिनत पाठकन के निहोरा पर ऊ रिपोर्ट पेश कइले आ व्याख्यान देहले।

जनवरी, 1939 में मकारेंको के उनकर लमहर समय ले रचनात्मक सेवा खातिर श्रम के लाल ध्वज पदक से सम्मानित कइल गइल। ऊ एगो छोटहन समय में शिक्षा–विज्ञान पर कई गो लेख आ साहित्यिक निबन्ध लिखले। ऊ आपन ''एक पुस्तक माता–पिता के लिए'' के आगे बढ़ावे आ आपन उपन्यास ''पीढ़ी का पथ'' के पूरा करे के चाहत रहले। एकरा अलावे ऊ लालन–पालन पर एगो आधारभूत ग्रन्थ लिखे बदे तीन बरीस के एगो योजना बनवले रहले। बाकिर पहली अप्रैल, 1939 के ऊ एह दुनिया से चल बसले।

मकारेंको जवन शिक्षा वैज्ञानिक विरासत छोड़ गइले, ऊ वैज्ञानिक विचारन से भरल आ आदमी पर अटूट बिसवास के चलते आजो सराहे जोग बा। सोवियत संघ आ आउरो कई गो देश में मोकारेंको के किताब के संस्करण–दर–संस्करण छपत

www.bhojpurisahityangan.com

रहल।

ऊ परिवार में लइकन के लालन–पालन पर अपना एह किताब के 1935 में लिखल शुरू कइले रहले। 1936 के गरमी के समय में मकारेंको ''जिनिगी का ओर'' के पाठकन से भेंट करे बदे मास्को आइल रहले। किताब के रचना प्रक्रिया के चरचा करत ऊ कहले –''अब 'एक पुस्तक माता–पिता के लिए' छपवावे के जरूरत महसूस हो रहल बा। एकरा खातिर बहुते सामग्री आ सोवियत शिक्षा–विज्ञान के कई गो नियम बा, जवना के बारे में केहू के लिखहीं के चाहीं।'' नवका किताब खातिर पाठकन में अतना जादे दिलचस्पी रहे, जे 'क्रास्नाया नोव्य' नाँव के पत्रिका उनकर पाण्डुलिपि पूरा होखे से पहिलहीं ओकर धारावाहिक प्रकाशन शुरू क देहलस। 1937 में ''एक पुस्तक माता–पिता के लिए'' के पहिलका भाग एगो अलग संस्करण के रूप में छपल।

ई बड़ दुःख के बात बा जे नियोजित चार गो भाग में से खाली इहे एगो भाग लिखा सकल, तबो एह रूप में एकरो के एगो पूरा किताब मानल जा सकत बा।

परिवार में लइकन के लालन–पालन के मुख्य सिद्धान्त के काफी हद ले बिबरण रहला से एह किताब के महातिम बढ़ जात बा। एह सिद्धान्त में लइकन के व्यक्तित्व बदे सम्मान, लइकन के सेहत के देखभाल, ओकनी के सही शारीरिक विकास, खेल, श्रम, भौतिक आ आध्यात्मिक जरूरत के संगत मेल, वयस्क के वास्तविक सम्मान से बल पावे के सोभाव आ परिवार में भावनात्मक सुख के माहौल के रचना कइल समिलात बा। उनकर ई सिद्धान्त शायदे कबहूँ पुरान परी। एह से मकारेंको के किताब के महातिम हरमेसा बनल रही।

परिवार में लइकन के लालन–पालन जइसन नाजुक आ पेचीदा मसला पर आपन विचार जतावे बदे मकारेंको अपना एह किताब में जवन विधि के उपयोग कइले बाड़े, ऊ आधुनिक बा। "एक पुस्तक माता–पिता के लिए" के नुस्खा आ सलाह चाहे ऊ ठीके काहे ना होखे, महज एगो संग्रह नइखे। ऊ लेखक आ पाठक के बीच एगो जियतार आ गोपनीय बतकही बा। सभसे बढ़िया तर्कसंगत भाव मकारेंको के शैक्षिक आ साहित्यिक शैली के ख़ासियत रहल बा। ऊ कवनो तरे के उपदेश वाला आ पण्डिताऊ चीज अपना बतकही में कतहूँ शामिल नइखन कइले।

ई निहायत सोभाविक बा जे सभ मतारी–बाप अपना लइकन के सुखी देखल चाहेला। बाकिर ओमे सभे ई नइखे बूझत जे सुख, सभसे पहिले व्यक्तिगत आ सामाजिक के बीच सामंजस्य बा। ई सामंजस्य एगो दीर्घकालिक कुशलता आ कष्ट सह के लालन–पालन के जरिये हासिल हो सकेला। लालन–पालन के मानवीय श्रम के एगो ख़ास आ जटिल किसिम माने खातिर सभे तइयार नइखे। कुछ लोग किस्मत भा सुखद संजोग के आसरा लगवले बइठल रहेला त कुछ लोग ई बिसवास करेला जे एह मामला में मुसीबत उठावे के कवनो वजह नइखे। काहेकि ओह लोग के पहिलहीं से ढेरे आउरो काम करे के बा– "हमार केहू लालन–पालन नइखे कइले, तबो हम सेयान हो गइनीं आ सम्भ्रान्त जिनिगी जीयत बानीं।" मकारेंको ओह

www.bhojpurisahityangan.com

लोग के नम्रता से इयाद करावत बाड़े– "प्रिय मतारी–बाप! रउआ कबो–कबो ई बात बिसर जात बानीं जे राउर परिवार में एगो आदमी, एगो अइसन आदमी पल–बढ़ रहल बा, जेकर दायित्व रउरे ऊपर बा।"

जवन मतारी–बाप एह तथ्य से समझौता करे के नइखे चाहत, जे शादी के बन्धन में बन्हा के आ खाली एके गो लइका के जनम दे के ऊ लोग मास्टर बन गइल बा। अइसन मतारी–बाप के व्यापक रूप से एके गो बहाना होला– समय के कमी। बाकिर ओह लोग के पसन्द के दायरा बहुते सकरा बा। ऊ लोग हर कठिनाई का बादो अपना लइकन के नीमन तरे से लालन–पालन कर सकत बा भा बहाना के रूप में तरे–तरे के 'वस्तुगत' कठिनाई के हवाला देत खराब तरे से ई काम पूरा कर सकत बा।

जवन होखे, अगर ई समझ लेहल जाव जे नीमन लालन–पालन खातिर जादे समय के होखल जरूरी नइखे, बलुक ओह थोरही समय के सर्वोत्तम उपयोग करे के समरथ होखल महत्वपूर्ण बा। अगर ई रउआ लगे बा त ई काम अतना कठिन ना होखी। ई मकारेंको के राय ह। ऊ अपना किताब के सगरी पन्ना में आपन एह निष्कर्ष के सच्चाई के साबित कइले बाड़े।

अनुभवहीन मतारी–बाप के सभसे बड़हन गलती बा जे ऊ लोग हर तरे के नैतिक प्रवचन पर जादे भरोसा करेला। अइसन जे एह तरे के मतारी–बाप अपना लइकन के हर समय एगो जंजीर से बन्हले राखेला। ओह लोग के लइकन के कवनो कदम आ कवनो हरकत सविस्तार अनुदेश के विषय बन जाला। एह से ई कवनो अचरज के बात नइखे जे लइकन के स्वस्थ शरीर एह मौखिक दबाव के सह नइखे पावत। नतीजा होत बा जे एक दिन ऊ लइका 'जंजीर तूर देला" आ जवना के ओकर मतारी–बाप के सभसे जादे डर रहे, ओही बाउर सोहबत में जा के फँस जाला। मतारी–बाप दुनू भयाक्रान्त हो जाला। ऊ लोग सहायता खातिर पुकारत माँग करेला जे ओह लोग के लइकन के ओही "शैक्षिक जंजीर" से बान्ह देहल जाव, जवना के बिना ऊ लोग अपना लइकन के लालन–पालन नइखे कर पावत। मकारेंको कहत बाड़े जे एह तरे के लालन–पालन बदे मुक्त समय के दरकार होला। साफे जाहिर बा जे ई समय बेकारे जियान कइल जात बा।

एह से साफे अलग ऊ मामला बा, जहँवा लइकन के लालन–पालन शिक्षा–विज्ञान के हिसाब से होला, जहँवा अपना हर शैक्षिक क्रिया में ओह विज्ञान के ज्ञान के उपयोग होला, जवना के रहस्यन के "एगो किताब मतारी–बाप खातिर" के लेखक पाठक के सोझा राखत बा।

विज्ञान के अनुरूप लइकन के लालन–पालन के पहिलका मतलब होला– परिवार में रोजाना के जिनिगी के विवेक सम्मत संगठन। परिवार एगो जीवित सामाजिक संरचना बा। एह संरचना के हर खराबी पकिया तरे से लालन–पालन पर असर डालेला। झगड़ा आ गलत अपवाद, मतारी–बाप खातिर निरादर, घरेलू जिनिगी में अबेवस्था, बेवस्थित प्रणाली के अभाव आ लापरवाही लइकन के चरित्र

www.bhojpurisahityangan.com

पर गहिर छाप छोड़ेला। निपट नादान लोग ई बिसवास करेला जे अबेवस्था आ झगड़ा से भरल पारिवारिक माहौल में एगो स्वस्थ आदमी के रचना हो सकेला, जे अइसन माहौल में एगो आदमी पल–बढ़ सकेला। अइसन कवनो शिक्षा–वैज्ञानिक इलाज नइखे, जे पारिवारिक जिनिगी के गलती के आंशिक रूप में प्रतिपूर्ति करत होखे।

का पारिवारिक जिनिगी के सही दिशा का ओर संगठित करे आ ओकरा के मतारी–बाप के सगरी शैक्षिक प्रयास खातिर एगो भरोसामन्द आधार के रूप देवे बदे बहुते कुछ करे के परेला? "एक पुस्तक माता–पिता के लिए" के लेखक एह सवाल के जवाब वेत्किन परिवार के एगो कहानी के विस्तार से सुना के कइले बाड़े। परिवार के सदस्यन के संख्या अतना ना जादे बा, जे बाप ओह 'तेरह गो' संख्या बतावे में सकुचात बाड़े। तबो परिवार के सदस्य मैत्रीपूर्ण माहौल में रहत बा। मतारी–बाप के बीच सम्बन्ध सम्मान भरल बा। एह से एगो अइसन माहौल बनत बा जे परिवार के हर सदस्य हुलास के साथे काम करत एक साथे रहत बा। एगो अइसन प्रभाव बनत बा जे वेत्किन परिवार में हर नीमन चीज खुद–ब–खुद पैदा हो जात बा। छोट से छोट लइका घरेलू काम में हुलास से भाग लेत बा। परिवार के हर सदस्य एक–दोसरा के सहजोग करत बा। परिवार के कवनो सदस्य आपन व्यक्तिगत जरूरत का बारे में सोचे से पहिले हरमेसा पूरा परिवार के जरूरत के बारे में सोचत बा।

मतारी–बाप के प्राधिकार सुसंगठित पारिवारिक जिनिगी के ठोहर आधार पर टिकल बा। कई लोग ई बिसवास करेला जे लालन–पालन के एगो साधन का रूप में प्राधिकार के ख़ास तरे से लइकन खातिर बनावटी रूप से बनावल जा सकेला। मकारेंको एह नजरिया के खिलाफ बिसवास भरल तर्क पेश कइले बाड़े। असली जिनिगी के विषद उदाहरण के आधार पर ऊ ई देखवले बाड़े जे लइका सभ प्राधिकार के समस्या के बूझेले सन। कबो–कबो ओकनी के सेयानो ले जादे नीमन तरे से बूझेले सन। प्राधिकार के सवाल पर कवनो झूठ के आ कवनो बनावटी चीज के लइका लगले उजागर क देले सन आ हरमेसा सही तरे से करेले सन। एह से ई कवनो अचरज के बात नइखे जे सेयान लोग के अइसन 'चाल' के अनुक्रिया के रूप में लइका, नियम के हिसाब से गुपचुप भा खुलल अवज्ञा, बहाना, झूठ आ खुलेआम उपहास के उपयोग करेले सन। नतीजन के समेटत मकारेंको कहत बाड़े– "अपना लइकन के साथे कवनो तरे के सम्बन्ध का बादो प्राधिकार खुद मतारी–बाप में अन्तर्निहित होखे के चाहीं। बाकिर ई कवनो हाल में ख़ास प्रतिभा नइखे। एकर जड़ हरमेसा एके जगह मतारी–बाप के बेवहार में पावल जाला। एह बेवहार के सगरी पक्ष में मतारी–बाप दुनू के सगरी जिनिगी, ओह लोग के काम, विचार, आदत, भावना आ कोशिश समिलात होला।"

सफल पारिवारिक लालन–पालन के एगो सभसे जादे महत्वपूर्ण शर्त होला जे लइकन के जरूरत के सही तरे से पूरा करे में मतारी–बाप के समरथ होखे चाहीं।

www.bhojpurisahityangan.com

लइकन के हर सनक के ओकर जरूरत ना बूझे के चाहीं। लइकन के अइसन भौतिक सुख–सुबहिता देहल माँफ करे जोग नइखे, जवना के मतारी–बाप अपना कठिन मेहनत से पवले बा।

अगर परिवार बड़हन बा त जादे निहोरा कइल मोसकिल होला, काहेकि अइसन कइल मतारी–बाप के बूता से बाहर होला। एजुगिया समस्या आसानी से हल हो जाला। लइका कतनो तकाजा भा जिद्द काहे ना करे, बाकिर ओकरा खाली जरूरी सामान भेंटाला। ओहीजा इकलौता लइका वाला परिवार के बात साफे फरक होला। एजुगिया बेसी जरूरत आ अहंवाद के विकास के खाली वात्सल्य के बुद्धिमत्ता से रोकल जा सकेला।

इकलौता लइकन वाला परिवार में बेसी जरूरत के अवश्यम्भाविता एह तथ्य के चलते आउरो जादे विकट हो जाला जे अइसन परिवार में नीमन काम में जुटे खातिर नीमन लालन–पालन के बाउर से अलग बनावे वाला बेवहार के आदत बनावे के पर्याप्त आधार नइखे आ ई होइयो नइखे सकत। जादे भा कम उमिर के भाई भा बहिन के ना रहला के चलते लइकन के लगे दुलारे खातिर, मदद करे खातिर, नीमन उदाहरण के अनुसरण करे खातिर केहू हइले नइखे। इकलौता लइका वाला मतारी–बाप के आसान जिनिगी के लालच के खिलाफ आगाह करत मकारेंको लिखत बाड़े :

"बड़हन परिवार के लइकन के बड़हन सफलता के पुष्टि करे बदे लाखन के संख्या में उदाहरण देहल जा सकत बा। एकरा विपरीत इकलौता लइकन के सफलता के मामला बहुते दुलम बा। जहँवा ले हमार व्यक्तिगत अनुभव के सवाल बा त सभसे जादे बेलगाम अहंवाद खाली मतारिये–बाप के खुशी के चउपट ना करे, बलुक खुदे लइकन के सफलता के नाश करेला। अइसन हरमेसा इकलौता बेटा भा बेटी में होला।"

श्रम स्वस्थ लालन–पालन के अमूल्य साधन ह। अगर एगो लइका के लगे काम के कवनो जवाबदेही नइखे, अगर लइका घरेलू काम में मतारी–बाप के सहजोग नइखे करत, अपना स्कूली पढ़ाई के अलावे कवनो आउर काम नइखे करत त ऊ आलसी होखत जाई। आलसीपन चरित्र के एगो अइसन दुर्गुण बा, जेकरा के लोग सही माने में सगरी बुराई के जनक मानेला।

कुछ मतारी–बाप कहेला जे विज्ञान आ तकनीकी क्रान्ति के युग में जहँवा घरेलू काम जादे यंत्रीकृत हो रहल बा, ओजुगिया लइकन खातिर समुचित काम खोज के निकालल आसान नइखे। अइसन बहाना के गम्भीरता से लेबहूँ के ना चाहीं। ओकरा के ओही आलसीपन के एगो अभिव्यक्ति माने के चाहीं– बाकिर एह मामला में लइकन के ना, मतारी–बाप के आलसीपन के। अगर मतारी–बाप ई बूझत होखे जे गम्भीरता से काम करे के आदत के बिना ओह लोग के लइकन के भविष्य अंधकारमय होखी। अइसन हाल में ऊ लोग कवनो ना कवनो राह खोजिये निकाली। हर किशोर लइका घर के सफाई कर सकेला, कपड़ा धो सकेला, बूढ़ आ बेमार के

www.bhojpurisahityangan.com

देखभाल कर सकेला। लइकन के एह मोका से वंचित राखे के मतलब बा ओकरा के भारी नुकसान पहुँचावल।

सुनिश्चित दिनचर्या के उपयोगिता आ ओकर परिपालन से जुड़ल मकारेंको के विचार गम्भीरता से धेयान देवे जोग बा। समय पर सूतल आ जागल, व्यक्तिगत सफाई के नियम के पालन कइल, कबहूँ जल्दीबाजी भा देरी ना कइल– ई सभ बात हर दिन लइकन में कूट–कूट के भर देवे के चाहीं। अगर मतारी–बाप खुदे बेवस्थित जिनिगी बितावत बा त अइसन प्रयास में सफलता सहजे भेंटाई।

परिवार में सेक्स शिक्षा के समस्या सभसे जादे कठिन बूझल जाला। "एगो किताब मतारी–बाप खातिर" के लेखक एह समस्या पर समुचित गम्भीरता से विचार कइले बाड़े। ख़ास क के ऊ कहत बाड़े जे सेक्स से जुड़ल शिक्षा सेक्स के बोध, सेक्स के मामला पर बतकही से कवनो सूरत में प्रतिस्थापित ना होखे के चाहीं। सेक्स शिक्षा के कवनो शर्त पर लालन–पालन के अविभक्त प्रणाली के आउर पक्ष से विलग ना करे के चाहीं।

मकारेंको सामान्य तरे से एह समस्या के नैतिक, दार्शनिक, सामाजिक आ मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कइले बाड़े। उनकर गहन चिन्तन एह समस्या के सगरी पक्ष आ सम्बन्ध के जाँच–परख करत हर चीज के देखत बा। एही कारण से ऊ हर चीज के समुचित मूल्यांकन कइले बाड़े, जे जादेतर अनापेक्षित बा। ऊ अपना विवेचन के कलात्मक रूप में पेश करत बाड़े। उनकर कहनाम बा जे "परिवार" सभसे जादे महत्वपूर्ण क्षेत्र होला, जहँवा आदमी सामाजिक जिनिगी में आपन पहिलका गोड़ धरेला। अगर ऊ गोड़ सही तरे से बेवस्थित बा त सेक्स के शिक्षा सही तरे से चली। जवना परिवार में मतारी–बाप सक्रिय होला, ओजा ओह लोग के प्राधिकार ओह लोग के जिनिगी आ काम से सहज तरे से निकलेला। जहँवा लइकन के जिनिगी, समाज का साथे ओकनी के पहिलका सम्पर्क, ओकनी के अध्ययन, खेल, मनोदशा, हुलास आ निराशा पर मतारी–बाप के हरमेसा धेयान रहेला, जहँवा अनुशासन रहेला, नीमन प्रबन्ध आ लगाम रहेला, अइसन परिवार में लइकन के सेक्स के सहजवृति हरमेसा सही तरे से विचरित होला।"

एह से ओही परिवार में नीमन लालन–पालन सुनिश्चित हो सकत बा, जवना में लइका अपना जिनिगी के शुरुआती दिने से वास्तविक नैतिकता के माहौल में साँस लेत बाड़े सन। एगो नैतिक परिवार के आउर तरे के परिवार से अलग पहचाने खातिर कई गो सहायक चिन्हासी रहेला। बाकिर सभसे जादे अमोध सूचक मतारी के प्रति रवैया होला। मकारेंको एह प्रचलित बिसवास के खण्डन करत बाड़े जे लइकन के खुशी बदे आ ओकनी के नीमन लालन–पालन खातिर मतारी के तपस्विनी जस जिनिगी बितावे के चाहीं, खाली दोसरा के बारे में सोचे के चाहीं आ आपन कवनो परवाह ना करे के चाहीं। ऊ ई देखवले बाड़े जे एगो स्वस्थ परिवार में मतारी के खुदे कुर्बान करे खातिर कवनो जगह नइखे हो सकत। लइकन के खुशी सभसे पहिले मतारी के खुशी होला, उनकर व्यक्तिगत आ सामाजिक जिनिगी

www.bhojpurisahityangan.com

के पूर्णता होला।

किताब के शुरुआते में मकारेंको लिखले बाड़े –"जिनिगी के समृद्ध अनेक राहे–बाटे, ओकर फूल, आँधी आ तूफान के बीच लइकन के बुद्धिमानी आ पूरा बिसवास के साथे आगे ले गइल एगो अइसन काम बा, जवना के हर आदमी, अगर ऊ एकरा के साँचो चाहत होखे त कर सकेला।" एह किताब के पढ़ला आ एह पर विचार कइला का बाद रउआ एगो बाप भा मतारी के सभसे जादे महत्वपूर्ण चाहत के साबिते ना करब, बलुक इहो जान लेब जे ओकरा के हकीकत में कइसे बदलल जाला।

***

टिपण्णी :

(1) लुनाचार्स्की, अनातोली वसील्येविच (1808–1933) एगो प्रमुख सोवियत राजनेता, पार्टी कार्यकर्ता, लेखक आ आलोचक रहले। ऊ अक्टूबर समाजवादी क्रान्ति के बाद शिक्षा के पहिला जन–कमिसार (1929 ले) रहले।

(2) द्जेर्जीन्स्की, फेलिक्स एद्मुन्दोविच (1877–1926) एगो नामी क्रान्तिकारी, कम्युनिस्ट पार्टी आ सोवियत राज्य के प्रमुख नेता, अक्टूबर समाजवादी क्रान्ति के बाद अखिल रूसी असाधारण आयोग के अध्यक्ष रहले।

(3) फे.ए. द्जेर्जीन्स्की, 'एगो चयनित लेख आ भाषण'। गोस्पोलितिज्दात, 1947, पृष्ठ–144 (रूसी भाषा)।

(4) गोर्की अ.मा. (पेश्कोव) (1868–1936) एगो महान रूसी सोवियत लेखक, सामाजिक कार्यकर्ता रहले। उनका अ.से. मकारेंको का साथे बहुत समय से चिट्ठी–पत्री चलत रहे। ऊ उनका खार्कोव के लगे बाल–बस्ती में शैक्षणिक–काज आ उनकर लेखन–काज में दिलचस्पी राखत रहले। 1928 में ऊ अपना नाँव पर बनल बाल–बस्ती में उनकर मेहमान रहले।

(5) अ.से. मकारेंको, 'रचना', रूसी संघ के शिक्षा विज्ञान अकादमी, 1958, खण्ड–5, पृष्ठ–438 (रूसी भाषा)।

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

ढंग–ढर्रा में जे उछाल आइल रहे ऊ श्रम के मानवीय गरिमा आ संबंध–संवेदन के गरमाहट से वंचित होत चल गइल। कारपोरेट हित में राज्य मशीनरी के नंगा नाच आज पूरा दुनिया के तीसरा विश्वयुद्ध के कगार पर खड़ा कर देले बा।

सबसे बड़हन आघात भविष्य के संवाहक लइकन के लालन–पालन आ शिक्षा–दीक्षा पर पड़ल बा। सेहत आ शिक्षा दूनो बाजार के रहमोकरम पर बा। सबकुछ बाजार के हवाले, बेलगाम मुनाफ़ा का आगा आम नागरिक जीवन के कवनो मोल नइखे। गरीब–अमीर के खाई तेजी से बढ़ रहल बा। जादेतर आबादी बेरोजगार बा भा आपन श्रम कौड़ी के भाव बेचे पर मजबूर बा। ओकर जीयल आ पेट पालल मुहाल बा। अइसन हालत में सहकार आ सामुदायिकता पर आधारित समाजवादी बेवस्था के इयाद आइल सोभाविक बा। आम नागरिक के जीवन स्तर में सुधार का साथे राजकीय स्तर पर सेहत आ शिक्षा के क्षेत्र में तब जवन ठोस प्रयास भइल रहे, ओकर सानी नइखे। सोवियत शिक्षाशास्त्री मकारेंको ओह दौर के शैक्षिक अभियानन के अगुआ लोगन में शामिल रहले। लइकन के लालन–पालन, शिक्षा आ पूरा व्यक्तित्व के विकास राज्य के सबसे बड़हन सरोकार रहे। हर चरण आ हर पहलू के धेयान में राखत तरे–तरे के योजना शुरू भइल आ तमाम संस्थन–आयोगन के गठन कइल गइल। मकारेंको के पूरा जीवन एही सेवा–साधना में बीतल। अपना अनुभव–चिंतन के सहेजे खातिर ऊ वृहत योजना बनवले रहले, बाकिर अपना जीवन काल में कुछे के पूरा कर सकले। 'अ बुक फॉर पेरेण्ट्स' उनकर सबसे लोकप्रिय कृति साबित भइल, जवना के दुनिया के दर्जनों भाषा में अनुवाद भइल। सोवियत विखंडन आ समाजवादी खेमा के बिखराव के बादो एह किताब के लोकप्रियता में कमी नइखे आइल।

'फेर ना भेंटाई ऊ पचरुखिया' के चर्चित लेखक डॉ. रंजन विकास बड़ा मनोयोग से एकर भोजपुरी अनुवाद कइले बाड़े। नाँव धराइल बा– "एगो किताब मतारी–बाप खातिर"। हर मतारी बाप, हर गार्जियन के मकारेंको के तरफ से ई एगो नायाब तोहफा त बड़ले बा, ऐतिहासिक महत्त्व के ई कृति नागरिक अधिकार–कर्तव्य का दिसाईं भोजपुरी समाज के जागरुको बनावे में मददगार होई।

– हिमांशु रंजन

www.bhojpurisahityangan.com

एगो किताब मतारी-बाप ख़ातिर

अन्तोन सेम्योनोविच मकारेंको
(13 मार्च, 1888–1, अप्रैल, 1939)
मतारी–बाप : शिमोन मकारेंको, तात्याना मकारेंको।
जिनिगी के साथी : गलीना स्तखीयेव्ना मकारेंको।
शिक्षा : पोल्टावा राष्ट्रीय शैक्षणिक विश्वविद्यालय।

एगो सोवियत अध्यापक, सामाजिक कार्यकर्ता, शिक्षाविद् आ लेखक। शैक्षिक–कलात्मक–सिद्धान्त आ बेवहार में सिद्धान्त के बढ़ावा देवे ख़ातिर 1937 में **''ए बुक फॉर पेरेंट्स''** के रचना कइले, जे लइकन के लालन–पालन आ सामूहिक रूप से पारिवारिक संरचना के सवालन ख़ातिर समर्पित बा। लेखक जिनिगी के हालात, लड़ाई–झगड़ा, पारिवारिक ग़लतफ़हमी के अनेक उदाहरण के सझुरावत विश्लेषण क के व्यक्तिगत सक्रिय शैक्षणिक सोच खातिर उपयोगी शुरुआती बिन्दु देवे के कोशिश कइले बा।

डॉ. रंजन विकास
जनम : 3 फरवरी, 1958
गाँव–गौरी, वाया–दरौली, जिला–सीवान (बिहार)।
मतारी–बाप : सुशीला देवी, शारदानन्द प्रसाद।
जिनिगी के साथी : पूर्णिमा श्रीवास्तव।

शिक्षा : एम.ए., पी.एच.डी. (मनोविज्ञान), पटना विश्वविद्यालय। अनुग्रह नारायण सिन्हा सामाजिक अध्ययन संस्थान, पटना में तीन बरीस ले कई गो समाजशास्त्रीय शोध परियोजना में शामिल। 1984 से 2018 ले भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अधीन मूल्यांकन के काम। एकरा दौरान देश के कई गो सुदूर इलाक़न के भ्रमण करे के मोक़ा मिलल। मूल्यांकन पदाधिकारी के पद से सेवानिवृत। **प्रकाशित किताब** : 'धरती से जुड़कर' (युवा कवियों का कविता–संग्रह, 1983), 'थिगलियाँ कटी धूप की' (कविता–संग्रह, 1995), 'अध्यक्षीय भाषण' अ.भा.भो.सा. सम्मलेन (संकलन, 2021), 'फेर ना भेंटाई ऊ पचरुखिया' (आत्म–संस्मरण, पहिला संस्करण–2022, दोसरका संस्करण–2024), 'एगो किताब मतारी–बाप ख़ातिर' (भोजपुरी अनुवाद, 2025), 'स्पन्दन' (हिन्दी पत्रिका का सम्पादन, 1979–1982)। **संप्रति** : स्वतंत्र लेखन आ 'भोजपुरी साहित्यांगन' के सह–संचालन। **संपर्क** : 204, विश्व शाकुन्तल प्लेस, शिवपुरी पश्चिमी, पटना–800023, मोबाइल : +91 9939592241, ई–मेल : dr.ranjanvikas@gmail.com

भोजपुरी साहित्यांगन चैरिटेबल ट्रस्ट
bhojpurisahityangan.ct2023@gmail.com
+91 8340535561

ISBN : 978-81-973622-8-6

₹ 399.00